بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | |
|---|---|---|
| नाम किताब | ............. | मेरा जीना मेरा मरनां |
| मोलिफ़ | ............. | उम्मे उस्मान |
| नासिर | ............. | अल हुदा पब्लिकेशन्ज़, |
| ऐडीशन | ............. | चौथा (नज़रे सानी शुदा) |
| आई एस बी एन | ............. | 978-969-8665-37-1 |
| तादाद (संख्या) | ............. | पाँच हज़ार |
| क़ीमत | ............. | |
| तारीखे तबीअ | ............. | जनवरी 2015 |


## मिलने के पते:

**INDIA**

PO Box 444 Basavanagudi Bangalore 560004 ,India
+918040924255. +91-9535612224
alhuda.india@gmail.com
**www.alhudapublications.org**

**AMERICA**

PO Box 2256 Keller TX 76244
+1-817-285-9450 +1-480-234-8918
**www.alhudaonlinebooks.com**

**CANADA**

671 McAdam Rd ON L4Z IN9 Mississauga Canada
+1-905-624-2030 +1-647-869-6679
**www.alhudainstitute.ca**

**U.K.**

14 Wangey Road, Chadwell Heath Romford,
Essex RM6 4AJ London U.K.
+44-20-8599-5277 +44-79-1312-1096
**alhudauk.info@gmail.com**
**alhudaproducts.uk@gmail.com**

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

# मेरा जीना मेरा मरना

## अल्लाह रब्बुल आलमीन के लिए

''قُلْ اِنَّ صَلَاتِیْ وَنُسُکِیْ وَمَحْیَایَ وَمَمَاتِیْ لِلّٰہِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ ○
لَا شَرِیْکَ لَہٗ وَبِذٰلِکَ اُمِرْتُ وَاَنَا اَوَّلُ الْمُسْلِمِیْنَ ''
(الانعام:162-163)

तर्जुमा: "कहदो बेशक मेरी नमाज़, मेरी क़ुर्बानी, मेरा जीना और मेरा मरना अल्लाह ही के लिए है जो सब जहानों का रब है, उसका कोई शरीक नहीं, और मुझे इसी बात के ऐलान का हुक्म दिया गया है और मैं सबसे पहला उसका फर्माबरदार हूँ."

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| नम्बर शुमार | फ़हरिस्त मज़ामीन | पेज न० | नम्बर शुमार | फ़हरिस्त मज़ामीन | पेज न० |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. | तआर्रुफ़ (परिचय) | 5 | 24. | नमाज़ जनाज़ह | 128 |
| 2. | हुस्ने सहत | 7 | 25. | तरीक़ा नमाज़ जनाज़ह | 134 |
| 3. | अंदाजे ज़िन्दगी | 8 | 26. | मुसाफ़िर की मंज़िल | 139 |
| 4. | रूहानी सहत | 9 | 27. | क़ब्र | 140 |
| 5. | जिस्मानी सहत | 14 | 28. | क़ब्र का क़याम | 158 |
| 6. | अयादत | 30 | 29. | ताज़ियत | 186 |
| 7. | हुस्ने वसियत | 39 | 30. | ज़ियारत क़ुबूर | 194 |
| 8. | रवानगी की याद दहानी | 51 | 31. | रसूमात व बिदआत | 207 |
| 9. | आख़िरी सफ़र की तैयारी | 58 | 32. | ईसाले सवाब के मसनून तरीक़े | 224 |
| 10. | हुस्ने ख़ातमा | 64 | 33. | उमर में बर्कत | 244 |
| 11. | अलामात | 72 | 34. | बेवा की इद्दत | 252 |
| 12. | वफ़ात के बाद | 75 | 35. | बेवा की ख़िदमत | 255 |
| 13. | सब्र | 81 | 36. | यतीम के साथ हुस्ने सुलूक | 257 |
| 14. | नोहा व बैन | 91 | 37. | बच्चे की मौत | 264 |
| 15. | गुस्ले मय्यत | 97 | 38. | शहादत | 271 |
| 16. | तरीक़ा ग़ुस्ल | 101 | 39. | क़त्ल | 283 |
| 17. | कफ़्न देना | 104 | 40. | ख़ुद कुशी | 293 |
| 18. | कफ़्न लपेटने का तरीक़ा कार | 107 | 41. | नसल कुशी | 301 |
| 19. | मर्द मय्यत को कफ़्न लपेटने का तरीक़ा | 108 | 42. | अद-दुआ | 307 |
| 20. | औरत मय्यत को कफ़्न लपेटने का तरीक़ा | 110 | 43. | बीमारियों का पाकीज़ह दम से इलाज | 324 |
| 21. | गुस्ल व कफ़्न के मराहिल के ग़ैर मसनून तरीक़े | 115 | 44. | मुख़्तलिफ़ दर्दों से निजात के लिए दुआएं | 328 |
| 22. | मय्यत के क़र्ज़ की आदएगी | 116 | 45. | मय्यत की मग़फ़िरत के लिए मसनून दुआएँ | 335 |
| 23. | हुस्ने विदा | 122 | | | |


© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

# तआरुफ़ (परिचय)

ज़िन्दगी इस दुनिया में आने का नाम और मौत दुनिया से वापसी का नाम है इस आने और जाने के दर्मियान थोड़ा सा वक़्त जो हम सबको मिला है, हर चीज़ से क़ीमती है। इस वक़्त का सही हक़ वही अदा कर सकता है और इससे हक़ीक़ी फ़ायदा वही उठा सकता है और अपने आगाज़ (शिरू) और अंजाम (आख़िर) से बाख़बर हो.

इस चंद रोज़ा दुनिया में कामयाब वह नहीं जो ढेरों माल कमाले, बड़े-बड़े महलात तामीर करले,या चंद दिन के लिए शोहरत पाले। असल कामयाब वह है जो अपने वक़्त को फ़ायदा वाले कामों में इस्तेमाल करते हुए अपने ख़ालिक़ की मर्ज़ी के मुताबिक़ ख़ुद को उसी के लिए ख़ालिस कर ले, क्योंकि आख़िरत में भी सिर्फ़ वही आमाल काम आएंगे जो अल्लाह ताला की रज़ा के लिए होंगे।

अल्लाह सुब्हाना व ताला का इर्शाद है:

يَوْمَ لَا يَنْفَعُ مَالٌ وَّلَا بَنُوْنَ ۙ اِلَّا مَنْ اَتَى اللّٰهَ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ (अश शौरा : 88-89)

"जिस रोज़ माल और बेटे काम ना आऐंगे मगर (कामयाब वही है)
जो अल्लाह के पास क़ल्बे सलीम लिए हुए आए"

ये ज़िन्दगी तो असल में इस बात का इम्तिहान है कि अल्लाह ताला की दी हुई नेअमतों को हम किस की मर्ज़ी के मुताबिक़ इस्तेमाल करते हैं, रहमान की या शैतान की।

इर्शादे बारी तआला है:

{الَّذِيْ خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيٰوةَ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا } (सूरह मुल्क : 2)

"उसने मौत और ज़िन्दगी को इसलिए पैदा किया कि तुम्हारा इम्तहान ले कि
तुम में सबसे अच्छे काम कौन करता है"

© AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

मगर हम देखते हैं कि क़ुरआन मजीद की इस तालीम के बरअक्स हमारे माशरे की अकसरियत जहाँ इस अरफ़ा व आला मक़सदे हयात से गाफ़िल है वहाँ दुनिया से वापसी के सफ़र,उसकी कैफ़ियत और मौत के बाद पेश आने वाले हालात और हक़ीक़त से भी बेख़बर है.... इस पर दिल ख़ून के आँसू रोता है.... इसी अहसास के पेशे नज़र यह किताब तरतीब की गई है ताकि क़ुरआन मजीद और अहादीसे नब्वी की रोशनी में सफ़रे वापसी के मुख़्तलिफ मराहिल के बारे में तमाम लोगों को बाख़बर किया जाए, शायद कि हम सबके दिल में यह बात उतर जाए और हम अंजाम से बाख़बर होकर हाल की भी कुछ इस्लाह कर सकें।

अल्लाह करे हम सबका सफ़रे वापसी रब्बुल इज़्ज़त के बताए हुए तरीक़े के मुताबिक़ तय हो जाए, ताकि मुलाक़ात के वक़्त वह हम पर नज़रे करम करे...आमीन!

इस किताब की तैयारी के सिलसिले में, मैं अपनी उस्ताज़ाह मोहतरमा डॉक्टर फ़रहत हाशमी साहिबा और उस्तादे मोहतरम डॉक्टर मौहम्मद इदरीस ज़ुबैर साहब की शुक्रगुज़ार हूँ जिन्होंने हर मरहले पर मेरी रहनुमाई की..... इसके अलावाह जिनका भी इस काम में तआवुन रहा, उन सबके लिए दुआगो हूँ।

इस किताब को मज़ीद बहतर बनाने के लिए
हर क़िस्म के अच्छे मशवरों की मुन्तज़िर
उम्मे उस्मान
अप्रैल 2008 ई०(रबी अल सानी 1429)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

# हुसने सेहत

अल्लाह सुब्हाना व तआला की बनाई हुई इस कायनात में तमाम वक़िआत व हादसात उसी के इरादे और हुक्म से वक़ूअ पज़ीर होते हैं, सेहत व बीमारी भी अल्लाह तआला ही की तरफ से है, अच्छी सेहत अल्लाह की तरफ़ से इन्सान को अता की जाने वाली नेअमतों में से एक अज़ीम नेअमत है, उसे अमानत समझ कर उसकी हिफाज़त और उसकी क़द्र की जाए तो दीन और दुन्यावी फ़राइज़ की बजाआवरी बाआसानी हो सकती है, इसका ख़्याल ना रखना उस नेअमत की नाशुक्री है जिसका नतीजा अक्सर बीमारी व बेकारी की सूरत में सामने आता है, इस तरह इन्सान ना दुनिया के लिए कुछ कर सकता है और ना ही अपनी आख़िरत सँवारने के लिए ख़ैर और भलाई के कामों में हिस्सा ले सकता है।

अल्लाह के रसूल और नबी मौहम्मद ﷺ ने फ़रमाया:

“अल्लाह तआला की दो नेअमतें ऐसी हैं जिनकी अक्सर लोग क़द्र नहीं करते और उनको बर्बाद करते हैं, एक तन्दरुस्ती और दूसरी फ़रागत (फ्री टाइम).” (बुखारी)

तन्दरुस्ती और फ़रागत में नेकी व सवाब के काम और और अल्लाह तआला की इबादत कर ली जाए तो आख़िरत के लिए बहतरीन सामान हो सकता है, बेकार कामों में मशगूल होकर फ़रागत को बेकारी बना लेना या उसमें से भी आख़िरत का नफ़ा तलाश करना अपने बस की बात है, फ़ारिग़ वक़्त में सबसे आसान मगर निहायत फायदेमन्द अमल ज़बान को ज़िक्र से तर रखना है।

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

# अन्दाज़े ज़िन्दगी

इस्लाम ऐतदाल पसंद दीन है, यह इंसान को सादगी और मियानारवी की तालीम देता है, जो उसकी बहुत सी जिस्मानी क़ुव्वतों, माल और वक़्त को ज़ाया होने से महफ़ूज़ रखती है लिहाज़ा इस आरज़ी दुनिया में ऐश निशात और तन आसानी वाली ज़िंदगी गुज़ारना मोमिन की निशानी नहीं।

अबु अमामा رضی اللہ عنہ कहते हैं कि नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया:

"सादा ज़िंदगी गुज़ारना ईमान की अलामत है" (अबु दाऊद)

एक मौक़े पर फ़रमाया:

"सीधे-साधे रहो, मियानारवी इख़्तियार करो और हशाश-बशाश रहो" (मिशकात)
नेअमतों से सिर्फ ऐशो आराम हासिल करना और फिर उनका इतना आदी हो जाना कि छिन जाऐं तो संभल ना सकें, बड़ी नादानी की बात है। सय्यदना उमर رضی اللہ عنہ का क़ौल है:

اِخْشَوْ شِنُوْا فَاِنَّ النِّعَمَ لَا تَدُوْم "सख़्त जान बनो पस नेअमतें हमेशा बाक़ी नहीं रहतीं"

ज़रुरियाते ज़िंगी को बढ़ाते ही चले जाना या वसाइल के होते हुए भी उनको महदूद रखना इंसान के अपने इख़्तियार की बात है।

अब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ عنہ बयान करते हैं कि रसूल अल्लाह ﷺ ने मेरा कन्धा पकड़ कर फ़रमाया:
"दुनिया में इस तरह रहो जिस तरह कोई मुसाफ़िर या राहगुज़र होता है" (बुखारी)

और अब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ عنہ फ़रमाया करते थे कि "जब शाम का वक़्त हो जाए तो सुब्ह का इन्तेज़ार ना करो और जब सुब्ह हो जाए तो शाम का इन्तेज़ार ना करो और अपनी सेहत के अवक़ात (टाइम) में अपनी बीमारी के लिए कुछ बना लो और अपनी ज़िन्दगी में मौत के लिए सामान पकड़ लो" (बुखारी)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

# रूहानी सेहत

जिस्मानी सेहत का इन्हिसार रूहानी सेहत पर है, रूहानी सेहत की कुंजी इत्मिनान क़ल्ब है इत्मिनान और सुकून उसी दिल में होगा जिसमें अल्लाह का ख़ौफ़ और अल्लाह की मोहब्बत एक साथ जमा होंगे, ऐसा इंसान अव्वल तो गुनाह की तरफ़ माइल ही नहीं होगा और अगर वह ग़ल्ती कर बैठे तो फ़ौरन इस्तग़फ़ार और तौबा से उसका इज़ाला करने की कोशिश करेगा, इसी सिलसिले में नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया:

“जब बंदा कोई गुनाह करता है तो उसके दिल के ऊपर एक स्याह धब्बा पड़ जाता है, उसके बाद अगर वह उसे छोड़दे और माफ़ी माँग ले तो वह धब्बा ख़त्म कर दिया जाता है और अगर वह गुनाह करता रहे तो वह धब्बा बढ़ता रहता है, यहाँ तक कि उसके पूरे दिल पर छा जाता है, इसी हालत का नाम रैन है जिसका ज़िक्र अल्लाह तआला ने अपनी किताब में किया है:

(सूरह मुतफ़्फ़िफ़ीन:14) {كَلَّا بَلْ رَانَ عَلٰي قُلُوْبِهِمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ}

“हरगिज़ नहीं, बल्कि दरअसल उनके दिलों पर उनके बुरे आमाल का रंग चढ़ गया है.” (तिरमिज़ी, इब्ने माजा, निसाई)

## क़ुरआन और शिफ़ा

अल्लाह तआला का पाकीज़ा कलाम क़ुरआन मजीद अपने अन्दर और बहुत से अजाइबात क़ुद्रत रखने के अलावा पढ़ने वाले के लिए जिस्मानी और रूहानी सेहत और बीमार के लिए शिफ़ा का ज़ामिन है:

(सूरह बनी इसराइल:82) {وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ}

“और हमने क़ुरआन नाज़िल किया है जो तमाम मोमिनों के लिए शिफ़ा और रहमत है”

ज़हनी उलझनें और अख़्लाक़ी बीमारियाँ मसलन ग़ुस्सा,हसद,कीना,बदख़्वाही,तंगनज़री, तकब्बुर वग़ैरह रूहानी सेहत की दुश्मन हैं जबकि क़ुरआनी तालीमात मोमिन की रूह व क़ल्ब को ख़ैर व ख़ूबी की तरफ़ माइल करती हैं।

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

क़ुरआन मजीद पढ़ने से दिल में सुकून और इत्मिनान उतरता चला जाता है और बीमार जिस्म में बरपा बेएतदालियाँ नॉरमल होती चली जाती हैं, इसी लिए हर रोज़ बाक़ायदगी से क़ुरआन पाक की तिलावत करने वालों को बहुत कम बीमार देखा जाता है, और अल्लाह के नज़दीक सबसे बहतरीन लोग वह हैं जो ख़ुद क़ुरआन सीखते और दूसरों को भी सिखाते हैं।

## नमाज़ और सेहत

पाँच वक़्त की नमाज़ इबादत और बेशुमार दूसरे फ़ायदों के अलावा बहतरीन वर्ज़िश भी है, यह इंसान के तमाम रूहानी व जिस्मानी दुखों का मदावा करती है, और नमाज़ बेहयाई और नाशाइस्ता कामों से रोकते हुए अल्लाह सुब्हाना व तआला के क़रीब होने का भी ज़रिया बनती है, नमाज़ की फ़ज़ीलत देखिए कि रंज ग़म और दुख व अज़ियत की हालत से निजात के लिए अल्लाह सुब्हाना व तआला रहनुमाई फ़रमाते हैं कि:

{وَاسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ} (सूरतुल बक़रह: 45)

"अल्लाह से सब्र और नमाज़ के साथ मदद माँगो"

रसूल अल्लाह ﷺ ने नमाज़ को अपनी आँखों की ठंडक क़रार दिया, नमाज़ का वक़्त क़रीब होता तो आप ﷺ सय्यदना बिलाल رضی اللہ عنہ को अज़ान का हुक्म यूँ फरमाते:

**اَقِمِ الصَّلَاةَ يَا بِلَال! اَرِحْنَا بِهَا**(अबु दाऊद)

"ऐ बिलाल! हमें नमाज़ से राहत पहुँचाओ"

नमाज़ की इतनी आदत हो जाए कि कभी मजबूरन क़ज़ा हो जाए तो अज़ियत और महरूमी का एहसास हो जैसे कि कोई बहुत क़ीमती शै (चीज़) खो गई हो यह भी ईमान की निशानी है, और जिस क़ल्ब में ईमान मोजूद हो वह सेहतमन्द रहता है।

## रोज़ा और तज़किया

साल में एक माह यानि रमज़ानुल मुबारक के रोज़े रखने के अलावा हर माह में कुछ ना कुछ

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

रोज़े रखना भी तबई और रूहानी लिहाज़ से बहुत फायदेमन्द है, रोज़ से इंसान के अन्दर तक़्वा और परहेज़गारी जैसी सिफ़ात पैदा होती हैं जो अल्लाह सुब्हाना व तआला को बहुत महबूब हैं।

अल्लाह तआला का इर्शाद पाक है:

{يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَي الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ}
(सूरह बक़रह:183)

"मोमिनों! तुम पर रोज़े फ़र्ज़ किए गए हैं जिस तरह तुमसे पहले लोगों पर फ़र्ज़ किए गए थे ताकि तुम परहेज़गार बनो"

रोज़ा गल्तियों और गुनाहों का कफ़्फ़ारा भी है।

हुज़ैफ़ा رضی اللہ عنہ कहते हैं कि मैंने यह बात नबी करीम ﷺ से सुनी है कि:

"आदमी को उसके बाल-बच्चों और माल और पड़ोसियों की वज्ह से जिस फ़ितने में पड़ने का इम्कान हो सकता है,नमाज़ और रोज़ा और सदक़ा उसको दूर कर देता है"

रोज़े से जब इंसान को बहुत सी बुराईयों से बचने की तौफीक़ हासिल हो जाती है तो ना सिर्फ़ उसका रूहानी तज़्किया होता है बल्कि जिस्मानी क़ुव्वत भी हासिल होती है मसलन रोज़ा मैदे की इस्लाह करके जिस्म को बेकार अज्ज़ा से पाक व साफ़ करता है और यूँ मोटापे में कमी की वज्ह भी बनता है।

## सदक़ा व ज़कात से तहफ़्फ़ुज़

रोजाना कुछ ना कुछ सदक़ा खैरात करना इंसान के अन्दर माल व दुनिया की मोहब्बत कम से कम करके ईसार क़ुर्बानी,एहसान व हमदर्दी,ग़मख़्वारी व इंकसारी, अख़ुवत और नर्म ख़ोई की आबयारी करता है,इसी तरह ज़कात के बारे में भी अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त फरमाते हैं:

خُذْ مِنْ اَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ وَتُزَكِّيْهِمْ بِهَا وَصَلِّ عَلَيْهِمْ

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اِنَّ صَلٰوتَکَ سَکَنٌ لَّهُمْ ط وَاللّٰهُ سَمِیْعٌ عَلِیْمٌ o (التوبہ:103)

“(ऐ नबी ﷺ!) तुम उनके माल से ज़कात लो ताकि उनको (गुनाह और रन्जो ग़म से) पाक करो और उनका तज़किया करो और उनके लिए दुआए रहमत करो, बेशक आपकी दुआ से उनको सुकून व इत्मिनान हासिल होगा,और अल्लाह तआला सुनने वाला,जानने वाला है” सदक़ा व ख़ैरात के बारे में चंद अहादीस क़ाबिले ज़िक्र हैं:

“एक शख़्स नबी ﷺ के पास आकर कहने लगा, 'या रसूल अल्लाह! कौनसा सदक़ा अज्र व सवाब में अफ़ज़ल हैं '

आप ﷺ ने फ़रमाया:

वह सदक़ा जो तंदरुस्ती की हालत में हो,जबकि तुझ पर माल की हिर्स ग़ालिब हो और नादारी का भी अंदेशा हो और तवंगरी की ख़्वाहिश भी हो,लिहाज़ा उस वक़्त का इन्तेज़ार ना करना जब दम हलक़ में आ जाए और उस वक़्त तुम कहो 'फ़ुलां को इतना दो और फ़ुलां को इतना' हालांकि अब तो वह अज़ख़ुद ही फ़ुलां और फ़ुलां का हो चुका.” (बुख़ारी)

सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद رضی اللہ عنہ कहते हैं कि मैंने नबी करीम ﷺ को यह फ़रमाते सुना:

“दो ही आदमियों पर रश्क किया जा सकता है, एक तो उस शख़्स पर जिसे अल्लाह ने माल व दौलत से नवाज़ा, फिर उसको नेक कामों में खर्च करने की तौफ़ीक़ दी, दूसरे वह जिसको अल्लाह ने क़ुरआन और हदीस का इल्म दिया, वह ख़ुद भी उन पर अमल करता और दूसरों को भी सिखाता है” (बुख़ारी)

### मुस्कुराहट

ज़िन्दगी को ज़िन्दादिली और मुस्कुराहटों से आरास्ता किया जाये तो ना सिर्फ़ जिस्मानी व रूहानी सेहत पर ख़ातिर ख़्वाह असर पड़ता है, बल्कि सुन्नत और सदक़े का भी सवाब हासिल होता है.

अब्दुल्लाह رضی اللہ عنہ बिन हारिस कहते हैं:
“मैंने नबी ﷺ से ज़्यादा मुस्कुराने वाला कोई शख्स नहीं देखा.” (तिरमिज़ी)

अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया:

تَبَسُّمُکَ فِیْ وَجْہِ اَخِیْکَ لَکَ صَدَقَۃٌ

“तुम्हारा अपने भाई के लिये मुस्कुरा देना भी सदक़ा है.” (तिरमिज़ी)

©AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

इल्म फैलाने के हवाले से जो शख़्स दीनी उलूम की सनदें या दुनयावी तालीम की डिग्रियाँ नहीं रखता वह मायूस होने की बजाए जो सलाहियत रखता हो,या कोई सा भी हुनर जानता हो,उसी से दूसरों को फैज़याब करे सदक़े की फ़ज़ीलत पा सकता है।

## शुक्र गुज़ारी

सेहत हो या बीमारी, ख़ुशी हो या ग़म, नफ़ा हो या नुक़्सान गर्ज़ ज़िंदगी के हर उतार-चढ़ाव में अल्लाह का शुक्र अदा करने की आदत अल्लाह तआला को बहुत पसंद है, अल्लाह तआला का इरशाद है:

فَاذْكُرُوْنِىْٓ اَذْكُرْكُمْ وَاشْكُرُوْا لِىْ وَلَاتَكْفُرُوْنِ ٥ (البقرہ :152)

“पस तुम मेरा ज़िक्र करो,मैं तुम्हें याद करूँगा और मेरी शुक्र गुज़ारी किया करो और मेरी नाशुक्री ना करो”

और शुक्र गुज़ारी पर ईनाम की ख़ुशख़बरी इन अल्फ़ाज़ में दी:

... لَئِنْ شَكَرْتُمْ لَأَزِيْدَنَّكُمْ ... (सूरह इब्राहीम :7)

“अगर तुम शुक्र करोगे तो यक़ीनन मैं तुम्हें और ज़्यादा (नेअमतें) दूँगा।”

शुक्र गुज़ार इन्सान को एक और नेअमते इज़ाफ़ी से भी नवाज़ा जाता है कि वह नेअमत की कमी-बेशी पर कभी बेसुकून और बेचैन नहीं होता।

अदायगी शुक्र का एक तरीक़ा यह भी है कि नेअमतों का सही और बेहतर इस्तेमाल किया जाए और उन्हें ज़ाया ना किया जाए।

अच्छे हाल में اَلْحَمْدُ لِلّٰہ और मुश्किल हालात में اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَلٰی کُلِّ حَالٍ कहना रूहानी सेहत के लिए बहतरीन नुस्ख़ा है।

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

# जिस्मानी सेहत

“ताक़तवर मोमिन अल्लाह के नज़दीक कमज़ोर मोमिन से ज़्यादा बहतर और महबूब है” (इब्ने माजा)

मरीज़ और कमज़ोर जिस्म वाले इंसान की ज़िंदगी बेरौनक़ और हसरत व यास का नमूना होती है जबकि सेहतमन्द और मज़बूत जिस्म वाला इंसान ज़िंदगी के वलवलों,उमंगों और पुर मुसर्रत लम्हों से भरपूर फ़ायदा उठाता है, मोमिन के लिए ताक़तवर होना ज़रूरी और पसंदीदा समझा गया है ताकि वह ज़िंदगी में हर वक़्त मुजाहिदाना कार्द-कर्दगी के लिए ख़ुद को तैयार रख सके और दीनी फ़राइज़ की अदायगी की ख़ातिर अपनी जिस्मानी क़ुव्वातों को गैरज़रूरी और बेमक़्सद मशगलों में ज़ाया ना करे।

सय्यदना अबु हुरैरा رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूल ﷺ ने फ़रमाया:

“बहतरीन ज़िंदगी उस शख़्स की ज़िंदगी है जो अपने घोड़े की बागें थामे अल्लाह की राह में उसको उड़ाता फिरे,जहाँ किसी ख़तरे की ख़बर सुनी,घोड़े को उसी सिम्त दौड़ा दिया क़त्ल (फ़ी सबीलिल्लाह) और मौत से ऐसा बे-ख़ौफ़ है जैस वह उसकी तलाश में है” (मुस्लिम)

इसी तरह औरतों के लिए शौहर की जाइज़ कामों में इताअत,रज़ामंदी की तलाश,मवाफ़क़त की कोशिश,घर की देख-भाल और बच्चों की दीनी तरीक़ों पर पर्वरिश के लिए तैयार रहना पसंदीदा क़रार दिया गया है।

बहरहाल जिस्मानी सेहत बरक़रार रखने और बीमारियों से बचने के लिए पहले से हिफ़ाज़त के तौर पर जो एहतियाती तदाबीर और परहेज़ हमें आज की साइंस बता रही है वह चौदह सौ साल पहले सुन्नते नबवी ﷺ के ज़रिए हम मुसलमानों के इल्म में आ चुकी है उनमें से कुछ को भी अगर हम आदत के तौर पर अपना लें तो सेहत से मुताल्लिक़ बहुत से मसाइल हल हो जाएें और बीमारी क़रीब आने का नाम ना ले, इल्ला माशा अल्लाह।

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

# एहतियाती तदाबीर

## जिस्मानी सफ़ाई

जिस्म,लिबास और इस्तेमाल की तमाम अशिया (चीज़ों) की सफ़ाई का ख़्याल रखना,ग़ुस्ल और तहारत का अहतमाम करते रहना,दिन में पाँच दफ़ा वुज़ू करना,मिस्वाक करना,वुज़ू में सर का मसाह, उँगलियों और दाढ़ी का ख़िलाल करना वगैरह।
नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया: "पाँच सिफ़ात ख़साल फ़ितरत में से हैं:
1.ख़तना कराना
2.ज़ेरे नाफ़ बाल मूंडना
3.मूछें काटना
4.नाख़ून तराशना और
5.बग़ल के बाल उखेड़ना. (निसाई)

### मिस्वाक

मिस्वाक ना सिर्फ मुँह के तमाम हिस्सों यानि दांत,ज़बान,हलक़, गला,साँस की नाली और ख़ुराक की नाली के इब्तदाई हिस्सों के अमराज़ के लिए बेहद मुफ़ीद इलाज है बल्कि सवाब हासिल करने का ज़रिया भी है।
रसूल अल्लाह ﷺ का इर्शाद है: "मिस्वाक मुँह की पाकीज़गी और रब की रज़ामंदी का ज़रिया भी है" (मुत्तफ़िक़ अलैह)
इमाम शाफ़ई का क़ौल है कि ज़हानत में चार चीज़ों से इज़ाफ़ा होता है:
1.फ़ज़ूल बातों को छोड़ना,
2.मिस्वाक करना,
3.नेक लोगों की मज्लिस में बैठना
4.उलमा की मज्लिस में बैठना.

## गिज़ाई उसूल

जिस्मानी ज़रूरत मसलन; कद काठ,उम्र और काम-काज की नौइयत के ऐतबार से गिज़ा की क़िस्म और मिक़्दार का तअय्युन करना ज़बान के चटख़ारे और लज़्ज़त वाली ख़ुराक की बजाए सादा और मुतवाज़न गिज़ा इस्तेमाल करना,भूख लगने पर खाना शुरू करना और कुछ भूख रहती हो तो खाना छोड़ देना और इस पर मसनून उसूल याद रखना भी फ़ायदेमन्द है:

"एक तिहाई हिस्सा खाना,एक हिस्सा पानी,एक हिस्सा साँस के लिए खाली रखें।" (तिरमिज़ी)

रसूल अल्लाह ﷺ ने एक शख़्स की डकार की आवाज़ सुनी तो फ़रमाया, "अपनी डकार कम करो, इसलिए कि क़यामत के दिन सबसे ज़्यादा भूखा वह होगा जो दुनिया में ज़्यादा पेट भरता है." (तिरमिज़ी)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

## खाने-पीने से मुताल्लिक़ एहतियातें

> **दायें हाथ से खाना-पीना**
>
> अल्लाह के रसूल ने ﷺ फ़रमाया: "कोई शख़्स ना बायें हाथ से खाना खाये और ना ही कुछ पिये कि बायें हाथ से खाना-पीना शैतान का तरीक़ा है." (मुस्लिम)

☆ हर खाने-पीने से पहले बिस्मिल्लाह पढ़ना।

☆ पानी और दुसरे मशरूबात (बेवरेज) बैठकर पीना।

☆ देख कर पीना,तीन साँस में पीना।

☆ पीने की चीज़ों में फूँक ना मरना।

☆ खाने के बीच बार-बार पानी ना पीना।

☆ बहुत ज़्यादा ठंडा या बहुत ज़्यादा गर्म मशरूब पीने से परहेज़ करना ख़ासकर इन दोनों को ऊपर-तले इस्तेमाल करने से बचना।

☆ ग़ैर क़ुद्रती अजज़ा व कैमिकल्ज़ से बने मशरूबात को आदत ना बनाना।

☆ नशाआवर चीज़ें खाने या पीने से मुकम्मल तौर पर बचना।

☆ चाय और कॉफ़ी का गैरज़रूरी इस्तेमाल छोड़ना वगैरह।

☆ वक़्त पर खाना और जोश ठंडा होने पर खाना।

☆ गर्म गिज़ा को सर्द के साथ और ताज़ा को बासी के साथ मिला कर ना खाना।

☆ सब्ज़ियाँ और फ़ल धो कर इस्तेमाल करना।

☆ खा-पी कर अल्हम्दुलिल्लाह कहना।

☆ मिट्टी खाने से परहेज़ करना।

☆ खाने के बर्तन ढाँप कर रखना वगैरह।

☆ बावर्चीख़ाने की सफ़ाई का ख़ास ख़्याल रखना।

©AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

## क़ैलुला और चहलक़दमी

अरबी का मशहूर मक़ूला है: تَغَدَّ تَمَدَّ , تَعَشَّ تَمَشَّ

"दोपहर का खाना खाओ तो लेट जाओ, रात का खाना खाओ तो चहलक़दमी करो"

(क़ैलुला यानि दोपहर के आराम से मुराद गहरी नींद सोना नहीं बल्कि हल्की नींद लेना है)

After lunch rest a while, after dinner walk a while.

इस उसूल को आदत बना लेना,रोज़ाना हल्की-फुलकी वर्ज़िश और नमाज़े फ़ज्र के बाद ताज़ा हवा में गहरे साँस लेना,फेफड़ों की बहुत सी बीमारियों से बचाव के अलावा जिस्म को चाको चोबंद रखता है।

## औक़ाते नींद व बेदारी

दुआए नबी करीम ﷺ:

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لِاُمَّتِىْ فِىْ بُكُوْرِهَا (ابوداؤد)

"ऐ अल्लाह! मेरी उम्मत के लिए सुब्ह-सवेरे उठने में बर्कत दे। आमीन!

रात को जल्दी सोना और सुब्ह जल्दी जागना, एक इबादत गुज़ार मुसलमान लाज़मन इसका ख़ुद-ब-ख़ुद आदी हो जाता है इसी तरह ज़रूरत से ज़्यादा सोना या बेख़्वाबी का मरीज़ होना पूरी सेहत पर असर कर सकता है,इस ख़राबी से बचने का बहतरीन हल नबी करीम ﷺ ने ये बताया कि:

"सोने से पहले वुज़ू करो." (बुख़ारी)

इस हदीस पर अमल करने के अलावा सोने से पहले मसनून अज़कार और दुआएँ पढ़ना भी फ़ायदेमन्द है. (पेज 313-315) पर मुलाहिज़ा कीजिए।

सय्यदना अबु हुरैरा رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, "जब आदमी (रात को) सो जाता है तो शैतान उसकी गुद्दी पर तीन गिरहें लगा देता है,हर गिरह पर यह फूँक देता है कि अभी तो बहुत रात है सो जाओ,फिर अगर आदमी जाग गया और अल्लाह का ज़िक्र किया तो एक गिरह खुल जाती है,अगर वज़ू कर लिया तो दुसरी गिरह

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

खुल जाती है,इसके बाद अगर इसने नमाज़ पढ़ी तो तीसरी गिरह भी खुल जाती है और वह सुब्ह को ताज़ा दम और ख़ुश मिज़ाज उठता है वर्ना तमाम दिन वह बददिल और सुस्त जिस्म रहता है" (बुख़ारी)

सोने-जागने के वक़्त को अपनी गिरफ़्त में लेने के लिए ज़ेल (नीचे) में दिए गए ....मज़ीद आसान और मुफ़ीद तरीक़े अपना लिए जायें तो सारी मुश्किल आसान हो सकती है।

☆ सोने से पहले सुब्ह फ़ज्र की नमाज़ अदा करने का इरादा बाँध लेना।

☆ सोने से क़ब्ल (पहले) कम खाना खाया जाए ताकि नींद सुब्ह तक गहरी ना रहे।

☆ दोपहर को कुछ देर सो जाना भी सुब्ह उठने में मदद देता है।

☆ ज़्यादा नींद से तबियत बोझल हो रही हो तो चहरे पर पानी छिड़कना।

☆ बेदार होते ही रोशनी कर देना,पंखा या ए.सी.बंद कर देना ताकि नींद का असर जाता रहे। मंदरजा बाला (उपरोक्त) तमाम तदाबीर सोने जागने के वक़्त को सही करती हैं।

## सोने से मुताल्लिक़ एहतियातें

☆ खाने के फ़ौरन बाद सोने से बचना (इसी लिए नमाज़े मग़रिब के बाद खाना बहतर है)

☆ नमाज़े इशा के बाद सोने में ताख़ीर (देरी) ना करना (इशा की नमाज़ के बाद ज़िक्रे इलाही या इल्मी बात और दीनी मुज़ाकरे के लिए,अगर घर वालों से ज़रूरी बात के लिए जागा जा सकता है)

☆ सोने से पहले आग वगैरह बुझा देना (ख़ासकर सर्दी के मौसम में गैस के हीटर वगैरह बंद करके सोना)

☆ ऐसी जगह सोने से परहेज़ करना जहाँ ताज़ा हवा ना पहुँचती हो।

☆ बिस्तर झाड़ कर सोना (रात को उठना पड़े तो दोबारा सोने से पहले तीन बार कपड़ा बिस्तर पर मार कर लेटना मसनून है)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

☆ ज़्यादा आरामदेह बिस्तर इस्तेमाल ना करना (यह तरीक़ा भी नमाज़े फज्र के लिए उठने में मदद देता है)

☆ दायें करवट सोना और दायाँ हाथ रुख़्सार (गाल) के नीचे रख कर सोना, इसके बाद सोते में जो भी करवट बदल जाए तो कोई हर्ज नहीं।

☆ पेट के बल यानि उल्टा होकर ना लेटना।

☆ मुँह लपेट कर ना सोना।

☆ सोने के फ़ौरन बाद उठ कर हाथ धो लेना वगैरह।

जिस्मानी सेहत के लिए यह सब मामूली मगर हिफ़ाज़त के तौर पर एहतियाती तदाबीर हैं जो हमें हमारे दीन ने मौजूदा साइंसी तहक़ीक़ से कई सौ साल पहले ही बता दी हैं।

## परहेज़

“परहेज़ इलाज से बेहतर है” इस उसूल पर ग़ौर करते हुए नीचे लिखी तजवीज़ पर अमल करना बहुत फ़ायदामन्द है।

### दवाइयों से परहेज़

वक़्ती और मामूली जिस्मानी तकलीफ में दवाओं को आदत ना बनाना वर्ना तक्लीफ़ की ज़्यादती में फिर यही दवाऐं बेअसर साबित होने लगती हैं।(बग़ैर ज़रूरत दवाओं और टीकों का शोक़ सेहत के लिए नुक़्सानदह है)

### मौसमों के असरात का ख़्याल

सख़्त सर्दी और सख़्त गर्मी के बुरे असरात से बचने के लिए हर मुम्किन एहतियात और परहेज़ करना यानि घर,लिबास,ख़ुराक वगैरह तमाम मौसम के तक़ाज़े और ज़रुरियात के मुताबिक़ हों।

### वबाई व मुतअद्दी अमराज़

मर्ज़ फैलने से पहले ख़स मोसमों (बर्सात और गर्मी) में ख़ास हिफ़ाज़ती तदबीर करना

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

मसलन पानी के ज़ख़ाइर साफ़ रखना,रहने के इलाक़ों के आस-पास मच्छरों,मक्खियों और दूसरे कीड़े-मकोड़ों के पैदा होने की रोक-थाम के लिए दवाऐं वगैरह छिड़कने का इन्तेज़ाम करना और अपने तमाम आस-पास को हिफ़ाज़ते सेहत के उसूलों के मुताबिक़ बनाना,गले-सड़े या पहले से काट कर रखे हुए फल या सब्ज़ियाँ खाने से परहेज़ करना

## हिफ़ाज़ती टीके

बीमारियाँ फैलने के मौसमों में हिफ़ाज़ती टीके लगवाने की सहूलत से फ़ायदा उठाना, इसी तरह वालिदैन को अपनी ख़ास ज़िम्मेदारी समझते हुए छोटे बच्चों को लगाए जाने वाले हिफ़ाज़ती टीकों का कोर्स मुक़र्रर वक़्त पर मुकम्मल कराना।

## मरीजों को अलग रखना

कोई वबाई मर्ज़ फूट पड़ने पर सेहतमन्द इन्सानों को ऐसे किसी इलाक़े में जाने से रोकना और ऐसा मरीज़ जिससे औरों को भी बीमारी लग सकती हो,उसे अलग रखा जा सकता है।

**वज़ाहत:** ऐसे मरीज़ की इयादत फ़ोन पर या बाहर उसके अहले ख़ाना से पूछ कर भी की जा सकती है,इस एहतियात से मुराद मरीज़ से नफ़्रत नहीं बल्कि उस बीमारी से बचाव और एहतियात का तक़ाज़ा पूरा करना है।

## ताऊन

ताऊन के बारे में इर्शादे नब्वी ﷺ है, “किसी इलाक़े में ताऊन की वबा फैल जाए और तुम उसमें हो तो उससे ना निकलो और अगर तुम ऐसे इलाक़े में नहीं हो तो वहाँ ना जाओ.” (तिरमिज़ी)

## जज़ाम

इसी तरह सय्यदना जाबिर رضی اللہ عنہ से मर्वी है कि वफ़्द सक़ीफ़ में एक आदमी जुज़ाम के मर्ज़ में मुब्तला था,रसूल अल्लाह ﷺ ने कहला भेजा कि “तुम वापस जाओ हमने तुम्हें बैत कर लिया है” (मुस्लिम)

इसी बारे में एक और इर्शादे रसूल अल्लाह ﷺ है:

© AL HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

“जुज़ाम से इसी तरह भागो जैसे शेर से भागते हो.” (बुखारी)

एक और मौक़े पर फ़रमाया,“जुज़ामी की तरफ ज़्यादा देर तक मत देखो.”(इब्ने माजा)

हस्बे इस्तिताअत तमाम तर एहतियाती तदाबीर और परहेज़ के बावजूद अगर बीमारी आ ही जाए तो फिर सब्र व बर्दाश्त का मुज़ाहिरा करना चाहिए ज़रूरत पड़ने पर मुबाह (जाइज़) और हलाल दवाओं से इलाज करवाने का भी हुक्म है।

रसूल अल्लाह ﷺ फ़रमाते हैं:

اِنَّ اللّٰہَ لَمْ یُنْزِلَ دَاءً اِلَّا اَنْزَلَ لَہٗ شِفَاءً فَتَدَا وُوْا (ابن ماجہ)

“बेशक अल्लाह ने कोई बीमारी ऐसी नहीं उतारी जिसका इलाज ना हो पस दवा करो”हराम करदा चीज़ों से इलाज करना या उन्हें दवा के किसी हिस्से के तौर पर इस्तेमाल में लाना इस्लाम में मना है, मसलन शराब (ब्रांडी),हराम जानवर का कोई हिस्सा या उसका दूध,ज़िब्ह का ख़ून।

## हराम बगर्ज़ इलाज मना

सय्यदना अबु हुरैरा رضی اللہ عنہ कहते हैं कि:
“रसूल अल्लाह ﷺ ने इलाज के लिए हराम चीज़ें इस्तेमाल करने से मना फ़रमाया है”
(अहमद,अबु दाऊद,तिरमिज़ी,इब्ने माजा)

जब इंसान ज़मीन पर आबाद हुआ तो उसे ज़िंदगी गुज़ारने का तरीक़ा-सलीक़ा सिखाने के लिए अम्बिया और रसूल भेजे गए उन्हीं हस्तियों ने अल्लाह की तरफ़ से दिए गए इल्म व हिकमत से पहले-पहल बीमारियों के इलाज बताए। दाऊद अलैह सलाम दवाओं के बानी थे,जहाँ-जहाँ चलते दरख़्त,पौधे,पत्थर वगैरह अपना नाम और फ़वाइद बताते,वह लिख लिया करते थे। इल्म व हिक्मत में तिब्ब समेत वह तमाम उलूम शामिल हैं जो इंसानों की रूहानी व जिस्मानी ख़ैर व भलाई के लिए फ़ायदा मंद हैं ।

© AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

अल्लाह तआला का इर्शादे पाक है:

وَ مَنۡ یُّؤۡتَ الۡحِکۡمَۃَ فَقَدۡ اُوۡتِیَ خَیۡرًا کَثِیۡرًا ؕ (البقرہ :269)

"और जो हिक्मत दिया गया उसे लोगों की भलाई का बहुत बड़ा ज़रिया अता कर दिया गया"

यही ज़रिया लुक़्मान अलैहिस्सलाम को भी अता किया गया,इर्शादे बारी तआला है:

وَلَقَدۡ اٰتَیۡنَا لُقۡمٰنَ الۡحِکۡمَۃَ اَنِ اشۡکُرۡ لِلّٰہِ ؕ (لقمان :12)

"हमने जब लुक़्मान को हिक्मत का इल्म अता किया तो उसके लिए शुक्र वाजिब हो गया"

इसी हिक्मत के पेशे नज़र तिब्ब की दुनिया में हकीम लुक़्मान को बतौर मिसाल पेश करना फ़ख़्र की बात और अलामत बन गई।

मसनून इलाज ख़्वाह रूहानी हो या जिस्मानी,उसका दारोमदार इल्हाम और वही पर मब्नी है जिसमें ग़ल्ती का इम्कान नहीं, इसलिए अल्लाह के हुक्म से जब दवाई के असरात बीमारी की नौइयत और माहियत से मुताबक़त रखें तो उस वक़्त शिफ़ा हो जाती है।

# इलाज मुआलजा

## क़ुद्रती गिज़ाओं से इलाज

इस्लाम मुख़्तलिफ़ बीमारियों में मुब्तिला लोगों को क़ुद्रती गिज़ाओं से इलाज भी बताता है जो आज-कल "देसी तरीक़े" कहलाते हैं।

### शहद

शहद के बारे में अल्लाह तआला का इर्शाद है:

... فِیۡہِ شِفَآءٌ لِّلنَّاسِ ... (النحل : 69)

"...इसमें लोगों के लिए शिफ़ा है..."

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, तीन चीज़ों में शिफ़ा है:
1.शहद पीने में,
2.पछने लगवाने में,
3.आग से दाग़ लगाने में और मैं अपनी उम्मत को दाग़ने से मना करता हूँ" (बुखारी)
पेट की ख़राबी (दस्त वगैरह) के लिए भी आप ﷺ ने शहद तजवीज़ फ़रमाया (बहवाला बुखारी)

## खजूर

क़ुरआन पाक में सूरह मरयम में ज़िक्र मिलता है कि अल्लाह तआला ने मरयम अलैहिस्सलाम को दर्दे ज़ेह के वक़्त खजूर खाने और पानी पीने की हिदायत फ़रमाई। जूर जो तवानाई पहुँचाने वाले हरारों से भरपूर,जल्द हज़म और मक़्वी गिज़ा है इंसान की भूख मिटाने के अलावा बहुत सी बीमारियों और जिस्मानी कमज़ोरियों में भी अक्सीर का दर्जा रखती है,ख़जूर के अन्दर दूसरे फ़ायदेमन्द अज्ज़ा के अलावा इस क़िस्म के होरमोंज़ भी पाए जाते हैं जो ना सिर्फ बच्चे की विलादत के वक़्त माँ की तक्लीफ़ में कमी करते हैं बल्कि विलादत के अमल को भी आसान बनाते हैं,मज़ीद फ़ायदा यह होता है कि बच्चे के लिए माँ का दूध भी जल्द और ख़ूब उतर आता है। दिल के मरज़ में भी यह बेहद फ़ायदा देती है।
जादू और ज़हर के इलाज के तौर पर रसूल अल्लाह ﷺ ने मदीना मुनव्वरा की अजवा खजूर (खजूर की एक ख़ास क़िस्म) तज्वीज़ फ़रमाई कि, "जो कोई सुब्ह के वक़्त सात अजवा खजूर खा ले उस दिन कोई ज़हर या जादू उस पर असर नहीं करेगा" (बुखारी)

## जौ

अल्लाह के रसूल ﷺ ने दलिया, सालन, सत्तू और रोटी की शक्ल में जौ इस्तेमाल फ़रमाए।

**दलिया**: जो बारीक कूट कर दूध में पकाने के बाद शहद से मीठा करके इस्तेमाल किया जाता है।

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

इसे तल्बीना या हरीरा भी कहते हैं,बीमारी मैं या बीमारी के बाद की कमज़ोरी,थकन और परेशानी दूर करने के लिए भी जौ के दलिये का इस्तेमाल तिब्बे नब्वी में क़ाबिले ज़िक्र है।

सय्यदा आयशा رضي الله عنه बीमार के लिए तल्बीना का हुक्म देतीं और उसके लिए भी जिसे किसी के मरने का रंज होता (तल्बीना खिलाने के लिए कहतीं) और कहती थीं, "मैंने रसूल अल्लाह ﷺ से सुना है कि:
"तल्बीना बीमार के दिल को तस्कीन देता और बाज़ रंज भी कम कर देता है."(बुखारी)

उर्वाह बिन ज़ुबैर رضي الله عنه से रिवायत है कि उम्मुल मोमिनीन आयशाرضي الله عنه की आदत थी कि जब उनके अज़ीज़ों में से किसी की वफ़ात हो जाती और औरतें जमा हो जातीं फिर चली जातीं मगर घरवाले और ख़ास-ख़ास अज़ीज़ रह जाते तो उनके हुक्म से तल्बीना की एक हाँडी पकाई जाती फिर सरीद बनवा कर तल्बीना उस पर डलवातीं और औरतों से कहतीं,इसे खाओ! क्योंकि मैंने रसूल अल्लﷺ को फ़रमाते सुना है,तल्बीना से बीमार के दिल को तस्कीन होती है और उसका ग़म किसी क़दर हल्का हो जाता है" (बुखारी)
(शोरबे में रोटी के टुकड़े डाल कर पकाऐं तो उसको "सरीद" कहते हैं)

**सालन**: जौ और चकुन्दर का सालन भी मरीज़ के लिए जल्द हज़म और मक़्वी होता है और साथ ही क़ुव्वते मुदाफेअत को भी बढ़ाता है।

एक मर्तबा रसूल अल्लाह ﷺ सय्यदना अली رضي الله عنه के साथ एक सहाबीرضي الله عنه की तरफ़ से पेश की हुई खजूरें तनावुल फ़रमा रहे थे, जब अलीرضي الله عنهथोड़ी खा चुके तो रसूल अल्लाह ﷺ ने उनको रोक दिया और फ़रमाया कि "तुम अभी बीमारी से उठे हो और कमज़ोर हो,लिहाज़ा मज़ीद मत खाओ" इसके बाद उन्हें उसी मेज़बान सहाबी के एहले ख़ाना की तरफ़ से जौ और चकुन्दर का सालन तैयार करके पेश किया गया। आप ﷺ ने अली رضي الله عنه से फ़रमाया, "अब तुम इसमें से खाओ यह तुम्हारे लिए बहतर है" (अबु दाऊद)

**सत्तु**: नबी ﷺ रोज़ा इफ़्तार के लिए अक्सर जौ के सत्तु का मशरूब नोश फरमाते, सफ़र और जंग के दौरान भी थकन,मशक्क़त और कमज़ोरी दूर करने के लिए सत्तु का इस्तेमाल कसरत से होता।

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

रोटी : गन्दुम की तरह जौ को भी पिसवा कर आटा तैयार किया जाता है और रोटी बनाई जाती है जो लज़ीज़ व मक़्वी होती है।

## ज़ैतून

क़ुरआन मजीद में अल्लाह तआला ने इंजीर और ज़ैतून की तारीफ़ फ़रमाई है, इनके फ़वाइद के पेशे नज़र रोज़ाना कमसे कम एक इंजीर,एक ज़ैतून और ख़ालिस ज़ैतून के तेल का एक चमचा इस्तेमाल करना फायदेमंद है। जिस्मानी ताक़त और दिमागी क़ुव्वत के लिए ज़ैतून के तेल की मालिश फायदेमंद है।
नबी ﷺ ने फ़रमाया,"ज़ैतून का तेल खाओ और लगाओ यह एक मुबारक दरख़्त है" (तिर्मिज़ी)

## कलौंजी

सय्यदना अबु हुरैरा رضي الله عنه से रिवायत है कि उन्होंने रसूल अल्लाह ﷺ को फ़रमाते सुना: "स्याह दाने (कलौंजी) में साम (मौत) के अलावा हर बीमारी का इलाज है" (मुत्तफ़िक़ अलै)

## आबे ज़म-ज़म

नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया, "ज़म-ज़म भूखे के लिए खाना और बीमार के लिए शिफ़ा है" (तबरानी)
आबे ज़म-ज़म के अलावा इस्तेमाल का आम पानी भी बहुत सी तकलीफ़ों में फ़ायदेमन्द है, आज की मौजूदा मेडिकल साइंसी तहक़ीक़ यह साबित कर रही है कि तेज़ बुख़ार को पानी से ठंडा करना चाहिए या फिर मरीज़ को ठंडी जगह रखना चाहिए जबकि इस्लाम साइंस से क़ब्ल ही तरक्क़ी याफ़्ता है।
नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया, "बुख़ार दोज़ख़ की भाप है इसको पानी से ठंडा करो"(बुख़ारी)
सय्यदा आयशा رضي الله عنه बयान करती हैं कि जब नबी ﷺ की बीमारी (जिसमें उनकी वफ़ात हुई) शिद्दत इख़्तियार कर गई (और आप ﷺ को बड़े ज़ोर का बुख़ार था) तो उन्होंने फ़रमाया:
"ऐसा करो, सात मशकें पानी की लाओ जिनके मुँह ना खोले गए हों (बिल्कुल भरी हों)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

वह सब मुझ पर बहाओ ताकि मैं लोगों से कुछ अहद व नसिहत की बात करूँ” चुनांचे हमने नबी ﷺ को हफ़्सा رضی اللہ عنہا के गंगाल में बैठाया और ऊपर से ये मशकें डालना शुरू कीं यहाँ तक कि नबी ﷺ इशारा फ़रमाने लगे ताकि हम बस कर दें, फिर नबी ﷺ बाहर निकले,नमाज़ पढ़ाई और लोगों से ख़िताब फ़रमाया(बुखारी)

नेज़ वुज़ू के बचे हुए पानी से बेहोश को होश में लाना भी मसनून है। (बहवाला बुख़ारी)

## मेहंदी

नबी करीम ﷺ की ज़ोजा सलमा رضی اللہ عنہا कहती हैं,“रसूल अल्लाह ﷺ को कभी कोई ज़ख़्म, या पत्थर की चोट वगैरह आती तो उस जगह रखने के लिए मेहंदी लाने को फ़रमाते” (तिरमिज़ी)

## पछने से इलाज

सय्यदना जाबिर बिन अब्दुल्लाह رضی اللہ عنہ ने मक़नाअ बिन सनान (ताबई) की अयादत की फिर कहा,मैं तुम्हारे पास से उस वक़्त तक नहीं जाऊँगा जब तक तुम पछने ना लगवाओ क्योंकि मैंने नबी ﷺ को फ़रमाते सुना:

“पछने में शिफ़ा है.” (बुखारी)

> अब्दुल्लाह बिन मसऊद رضی اللہ عنہ कहते हैं कि मैं नबी ﷺ के पास इस हाल में आया कि आप ﷺ को सख़्त बुख़ार था,मैंने अर्ज़ किया, या रसूल अल्लाह! क्या वज्ह है कि आपको सख़्त बुख़ार आया करता है? आप ﷺ ने फ़रमाया:
> “हाँ, तुम में से दो शख्सों के बराबर मुझ अकेले पर बुख़ार की सख़्ती होती है”
> मैंने अर्ज़ किया, इसलिए कि आपको दोहरा अज्र मिलता है?
> आप ﷺ ने फ़रमाया:
> “हाँ, और (सुनो!) जिस मुस्लमान को कोई भी तक्लीफ़ पहुँचती है तो अल्लाह तआला उसकी वज्ह से उसके गुनाह ऐसे झाड़ देता है जैसे दरख़्त अपने पत्ते झाड़ देता है”
> (बुखारी)

नबी करीम ﷺ ने आधे सर के दर्द (शक़ीक़ा) और पूरे सर के दर्द में और एहराम की हालत में (सफ़र में) और रोज़े में पछने लगवाए (दिन का वक़्त था) (बुख़ारी)
सय्यदना अबु मूसा अशअरी رضی اللہ عنہ ने रात को पछने लगवाए (बुख़ारी)

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, “अगर तुम्हारी दवाओं में कोई दवा मुफ़ीद है तो वह शहद का पीना और पछने लगवाना है या आग से दाग़ लगाना और मुझको आग से दाग़ लगाना पसंद नहीं है” (बुख़ारी)

मसनून इलाज की दूसरी तफ़्सिलें हमें तिब्बे नब्वी ﷺ की किताबों में मिल सकती हैं.

## क़ुरआनी और मसनून दम से इलाज

मुख़्तलिफ़ बीमारियों में क़ुरआनी आयात और मसनून दुआओं से दम करना और करवाना फ़ायदे मन्द है. औफ़ رضی اللہ عنہ बिन मालिक कहते हैं कि हम ज़माना जाहिलियत में दम किया करते थे, हमने नबी ﷺ से पूछा, 'या रसूल अल्लाह! आप इस बारे में क्या फ़रमाते हैं?' आप ﷺ ने फ़रमाया, “मुझे दम पढ़ कर सुनाओ” (सुनने के बाद) आप ﷺ ने फ़रमाया: “ऐसे दम में कोई हर्ज नहीं जो शिर्क से पाक हो”(मुस्लिम)

अबु ख़ुज़ैमा رضی اللہ عنہ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि मैंने रसूल अल्लाह ﷺ से अर्ज़ किया, 'या रसूल अल्लाह! आप फ़रमाइए कि हम दम कराते हैं या इलाज कराते हैं और जिन चीज़ों के साथ हम अपना बचाव करते हैं क्या यह अल्लाह की तक़्दीर रोक देती है?' फ़रमाया, “यह असबाब ख़ुद तक़्दीर में शामिल हैं.”(इब्ने माजा)

### हदीसे क़ुदसी

नज़र या मन्नत मानने से तक़दीर नहीं पलट सकती, नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला फ़रमाते हैं:
“आदमी को मन्नत मानने से वह बात हासिल नहीं होती जो मैंने उसके लिये मुक़द्दर नहीं की बल्कि (मन्नत मानना) भी उसकी तक़दीर में इस लिए लिख दिया जाता है कि मैं ऐसा लिख कर बख़ील से पैसा निकलवाता हूँ (बुख़ारी)

### मसनून दुआ

اَللّٰھُمَّ لَا مَانِعَ لِمَآ اَعْطَیْتَ وَ لَا مُعْطِیَ لِمَا مَنَعْتَ وَ لَا یَنْفَعُ ذَاالْجَدِّ مِنْکَ الْجَدّ

“ऐ अल्लाह! नहीं कोई रोक सकता जो आप अता करें और नहीं कोई दे सकता जो चीज़ आप रोकना चाहें और नहीं फ़ायदा दे सकती किसी दौलतमंद को आपके अज़ाब के मुक़ाबले में दौलत” (बुख़ारी)

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

# शिर्किया इलाज

(हैरतअंगेज़ फवाइद वाले मज़कूरा बाला तरीक़े इलाज के बरअक्स आज भी ज़माना जाहिलियत वाले कुछ तरीक़े और टोटके राइज हैं जो शिर्क जैसे कबीरा गुनाह के अलावा मज़ीद बीमारी में मुब्तिला करते हैं।)

## तावीज़ गंडे

शिर्किया तावीज़ और तिलस्मी मन्त्र पढ़ते हुए गिरह लगाए हुए धागे वग़ैरह इलाज की गर्ज़ से पहनने की हमारे दीन में कोई गुंजाइश व इजाज़त नहीं इसी तरह मनकों और कोड़ियों या सीपियों के हार या किसी धात के टुकड़े इस नियत से पहनना कि इनसे मर्ज़ दूर होगा,यह भी शिर्किया इलाज है।

रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया:
“जिसने तमीमा (शिर्किया तावीज़) गले में डाला उसने शिर्क किया” (मसनद अहमद)

## घोड़े की नाल

जादू, नज़रे बद,बीमारी या हादसात से महफ़ूज़ रहने के लिए गाड़ी,मकान या दुकान वगैरह पर घोड़े की नाल लटकाना या काले धागे वग़ैरह बाँधना अल्लाह तआला पर अदम ऐतमाद का इज़हार है और शिर्क है,इसकी बजाए अल्लाह से पनाह और हिफाज़त तलब करने वाली मसनून दुआएँ पढ़नी चाहिऐं।

## पैदाइशी पत्थर

मुख़्तलिफ़ पत्थरों को अपनी पैदाइश की तारीख़ों से मंसूब करना और इसी तरह उन्हें बीमारियों के इलाज और अच्छे शगुन के तौर पर अँगूठी वग़ैरह में जड़वा कर पहनना भी सुन्नत से साबित नहीं,यह सब शिर्के असग़र की मुख़्तलिफ़ सूरतें हैं।

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया:

“..... मेरी उम्मत के सत्तर हज़ार आदमी बग़ैर हिसाब-किताब के जन्नत में जाएँगे. यह वह लोग होंगे जो ना शिर्क करते हैं, ना शगुन लेते हैं, ना दाग़ लगवाते हैं बल्कि अपने पर्वरदिगार पर भरोसा करते हैं.” (बुखारी)

शगुन (Horoscope) के ज़ेरे उन्वान,आपका दिन कैसा गुज़रेगा? यह हफ्ता या साल कैसा नसीब लेकर आएगा? आपके सितारों की चाल क्या पेशनगोई करती है? और पैदाइशी निशान क्या कहते हैं ? सितारा शनासी और इल्मे नुजूम के ज़रिए मुस्तक़बिल में पेश आने वाले अच्छे-बुरे वाक़िआत,अच्छी-बुरी सेहत हत्ता के ज़िन्दगी-मौत का हाल मालूम कर लेना और उस पर भरोसा कर बैठना यह तमाम के तमाम लग्व और गैर इस्लामी मशागुल हैं।

## इमाम ज़ामिन

मुश्किलात और तक्लीफ़ से बचने के लिए और दुनयवी मक़सद में कामयाबी हासिल करने के लिए इमाम ज़ामिन बाँधना भी शिर्किया अमल है बाज़ क़ौमों में मुसाफ़िरों को सफ़र की इब्तिदा में यह बाज़ू पर बाँधते हैं,जब्कि मुसलमानों को ऐसे मौक़ों के लिए बहतरीन दुआएँ बताई गई हैं।

### मुक़ीम की दुआ मुसाफिर के लिए

اَسۡتَوۡدِعُ اللّٰهَ دِيۡنَكَ وَاَمَانَتَكَ وَخَوَاتِيۡمَ عَمَلِكَ .(ترمذی)

“मैं तुम्हारे दीन, तुम्हारी अमानत और तुम्हारे अमल की तक्मील को अल्लाह के सुपुर्द करता हूँ”

### मुसाफ़िर की दुआ मुक़ीम के लिए

اَسۡتَوۡدِعُكَ اللّٰهَ الَّذِىۡ لَا تَضِيۡعُ وَدَآئِعُهٗ ۔(ابن ماجہ)

मैं तुम्हें उस अल्लाह के सुपुर्द करता हूँ जिसके सुपुर्द की हुई चीज़ें ज़ाया नहीं होतीं”

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

# अयादत

## अयादत क्या है?

सेहतमन्द इंसान का बीमार के पास बतौर हमदर्दी व गम ख़्वारी जाना,उसे तक्लीफ़ पर सब्र की तल्क़ीन करना और तसल्ली देना नीज़ अल्लाह तआला की रज़ा की ख़ातिर उसे तआवुन व मदद की पेशकश करना “अयादत” कहलाता है।

अयादत करना या बीमार पुर्सी करना हुक़ुक़ुल इबाद में से एक है,हदीस मुबारक है:
“मुस्लमान पर मुस्लमान के पाँच हुक़ूक़ हैं,सलाम का जवाब देना,मरीज़ की अयादत करना,जनाज़े के साथ जाना,दावत क़ुबूल करना और छींक का जवाब देना”(मुत्तफ़िक़अलै)

एक दूसरी रिवायत में है:
“भूखे को खाना खिलाना,मरीज़ की अयादत करना और क़ैदी को रहाई दिलाना”(बुखारी)

## फ़ज़ीलत

अयादत करने से अल्लाह तआला से मोहब्बत और ताल्लुक़ भी बढ़ता है,अयादत की फ़ज़ीलत पर बहुत सी अहादीस रसूल ﷺ हैं, जिनमें से चंद एक यह हैं:
“अल्लाह तआला क़यामत के दिन फ़रमाएंगे,“ऐ इब्ने आदम! मैं बीमार हुआ,तुमने मेरी बीमार पुर्सी क्यों ना की?” इब्ने आदम अर्ज़ करेगा,“ऐ मेरे रब! आप रब्बुल आलमीन हैं, आपकी बीमार पुर्सी का क्या मतलब?

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त फ़रमाएंगे,“क्या तुम्हें मालूम नहीं था कि मेरा फुलाँ बंदा बीमार था लेकिन तुमने उसकी अयादत ना की,अगर तुम उसकी बीमार पुर्सी करते तो मुझे (यानि मेरी रज़ा व रहमत को) उस बीमार बन्दे के पास पाते” (मुस्लिम)

सय्यदना अली رضی اللہ عنہ बिन अबी तालिब बयान करते हैं कि रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया:

© ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

तक सत्तर (70) हज़ार फ़रिश्ते उसके लिए दुआ करते हैं और अगर शाम को अयादत करने जाता है तो भी सुब्ह तक सत्तर (70) हज़ार फ़रिश्ते उसके हक़ में दुआ करते हैं और उसके लिए जन्नत में ताज़ा और पके हुए फल हैं। (अहमद,इब्ने माजा,तिरमिज़ी)

“जब कोई मुस्लमान अपने किसी मुस्लमान भाई की अयादत को जाता है तो वह लौटते वक़्त तक जन्नत के बाग़ात से मेवा ख़ोरी (खाता है) में रहता है” (मुस्लिम)

“जब कोई शख़्स मरीज़ की अयादत के लिए जाता है तो वह दरया-ए-रहमत में उस वक़्त तक होता है जब तक कि वह वहाँ रहे” (अहमद)

यह अयादत बक़द्रे हिम्मत व इस्तताअत एक मुस्लमान मन्दरजा ज़ेल तरीक़ों से कर सकता है:

## 1.हमदर्दी व तीमारदारी

मरीज़ के पास मुख़्तसर वक़्त के लिए जाकर उसकी तबियत और बीमारी की मौजूदा कैफ़ियत और इलाज व मुआलजा से मुताल्लिक़ गुफ़्तगू की जाए उससे दिलजोई और हौसला अफ़ज़ाई की बातें की जाएं तीमारदार का लहज़ा बहुत नर्म और हमदर्दाना होना चाहिए।

नबी करीम ﷺ जब किसी मरीज़ के पास पहुँचते तो तसल्ली देते हुए फ़रमाते:

لَا بَأْسَ طَهُورٌ اِنْ شَآءَ اللّٰه

“घबराने की कोई बात नहीं,अल्लाह ने चाहा तो यह मर्ज़ गुनाहों से पाक करने का ज़रिया साबित होगा”(बुख़ारी)

साद رضی اللہ عنہ बिन अबी वक़्क़ास जब मक्का में बीमार हुए तो नबी करीम ﷺ उनकी इयादत को तशरीफ़ लाए साद رضی اللہ عنہ रिवायत करते हैं कि नबी ﷺ ने मेरी पेशानी पर हाथ रखा फिर मेरे मुँह और पेट पर हाथ फेरते हुए यूँ दुआ की:

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

“ اَللّٰهُمَّ اشْفِ سَعْدًا ”

“ऐ अल्लाह! साद को शिफ़ा दीजिए”

साद رضی اللہ عنہ मरते दम तक यह बात (याद करते हुए) कहते थे कि मैं अब तक नबी ﷺ के हाथों की ठंडक अपने जिगर पर पाता हूँ” (बुख़ारी)

ज़बानी हमदर्दी के अलावा मरीज़ अगर आपका क़रीबी दोस्त या अज़ीज़ है तो आप उसकी मज़ीद ख़िदमत भी कर सकते हैं,मसलन: अगर वह तन्हा रहता है या उसके घरवाले दूसरे कामों में मसरूफ़ हैं तो उसके बालों में कंघी कर दें,उसकी ज़रूरत की अश्या दुरुस्त कर दें,उसका बिस्तर ठीक कर दें,दवा का वक़्त हो तो उसे दवा पिला दें,ख़ुद उससे भी मालूम कर लें कि उसे किसी चीज़ या ख़िदमत की ज़रूरत तो नहीं?

इन छोटी-छोटी ख़िदमात से उसका दिल ख़ुश होगा और वह बीमार पुर्सी के लिए आपके आने को क़द्र की निगाह से देखेगा,यही वह लम्हात होंगे जब आपको अल्लाह की रज़ा व रहमत उस बीमार बन्दे के पास मिलेगी।

## 2.बीमार को सब्र की तलक़ीन

बाज़ वक़्त मरीज़ पर बीमारी की सख़्ती या लम्बे टाइम तक बीमार रहने की वजह से बेसब्री की सी कैफ़ियत होने लगती है ऐसे में बीमार पुर्सी करने वाले को चाहिए कि उसे सब्र और उस पर मिलने वाले अज्र के बारे में याद दिहानी कराए और इस सिलसिले में अहादीस नब्वी ﷺ के हवाले से कुछ वाक़िआत सुनाए मसलन:

☆ ज़ैद बिन अरक़म رضی اللہ عنہ की एक बार आँखें दुखने लगीं तो नबी करीम ﷺ उनकी अयादत को तशरीफ़ लाए और फ़रमाने लगे:

“ज़ैद! तुम्हारी आँखों में यह जो तक्लीफ़ है तो तुम क्या करते हो?”

ज़ैद رضی اللہ عنہ ने अर्ज़ किया कि सब्र व बर्दाश्त करता हूँ,आप ﷺ ने फ़रमाया:

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

"तुमने आँख की इस तक्लीफ़ में सब्र व बर्दाश्त से काम लिया है तो तुम्हें इसके सिले में जन्नत नसीब होगी" (मसनद अहमद)

☆ एक दफ़ा नबी करीम ﷺ उम्मुल साइब رضی اللہ عنہا (एक बूढ़ी ख़ातून) की अयादत के लिए तशरीफ़ लाए, उम्मुल साइब رضی اللہ عنہا बुख़ार की शिद्दत से काँप रही थीं पूछा,"क्या हाल है ?" ख़ातून ने कहा,'अल्लाह इस बुख़ार को समझे इसने घेर रखा है' यह सुन कर नबी ﷺ ने फ़रमाया:

"बुख़ार को बुरा-भला ना कहो यह मोमिन के गुनाहों को इस तरह साफ़ कर देता है जैसे आग की भट्टी लोहे के ज़ंग को साफ़ कर देती है" (अलअदब अलमुफ़्रद)

☆ रसूल अल्लाह ﷺ ने एक मरीज़ की अयादत की,अबु हुरैरा رضی اللہ عنہ आप ﷺ के साथ थे,मरीज़ को बुख़ार की शिकायत थी।

रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया,"तुम्हें ख़ुशख़बरी हो,अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: "यह (मर्ज़) मेरी आग है जिसे मैं दुनिया में अपने बन्दे पर (इसलिए) मुसल्लत करता हूँ कि आख़िरत में उसके हिस्से की आग (का बदल) हो जाए" (इब्ने माजा)

☆ एक और हदीसे पाक में अता رضی اللہ عنہ बिन रबाह अपना एक क़िस्सा बयान करते हैं कि एक बार काबे के पास इब्ने अब्बास رضی اللہ عنہما ने मुझसे कहा कि देखो यह जो काली-कलौटी औरत है यह एक बार नबी ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुई और बोली,"या रसूल अल्लाह! मुझे मिर्गी का ऐसा दौरा पड़ता है कि तन-बदन का होश नहीं रहता और मैं इस हालत में बेपर्दा होने लगती हूँ,आप ﷺ मेरे लिए अल्लाह से दुआ कीजिए"

नबी ﷺ ने फ़रमाया, "अगर तुम इस तक्लीफ़ को सब्र के साथ बर्दाश्त करती रहो तो अल्लाह तआला तुम्हें जन्नत से नवाज़ेंगे और अगर चाहो तो मैं यह दुआ कर दूँ कि अल्लाह तुम्हें अच्छा कर दें।"

वह ख़ातून बोली,"या रसूल अल्लाह! मैं इस तक्लीफ़ को सब्र के साथ बर्दाश्त करती

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

रहुँगी लेकिन ये दुआ फ़रमा दीजिए कि मैं इस हालत में बेपर्दा ना होजाया करूँ।

नबी ﷺ ने उसके लिए दुआ फ़रमाई,अता رضی اللہ عنہ कहते हैं कि मैंने इस दराज़ क़द ख़ातून उम्मे ज़फ़र को काबे की सीढ़ियों पर देखा। (बुखारी)

☆ अता बिन यसार رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया:

“जब बंदा बीमार होता है तो अल्लाह तआला उसके पास दो फ़रिश्ते यह फ़रमा कर भेजते हैं कि देखो! वह (बीमार) अपने अयादत करने वालों से क्या कहता है,जब अयादत करने वाले उसके पास आते हैं तब अगर वह अल्लाह की हम्दो सना करता है तो (फ़रिश्ते) अल्लाह तआला तक यह बात जा पहुँचाते हैं जबकि अल्लाह तआला (पहले से ही) ज़्यादा बेहतर जानते हैं और फ़रमाते हैं:

“मेरे ऊपर मेरे बन्दे का यह हक़ है कि मैंने उसे वफ़ात दी तो उसे जन्नत में दाख़िल करूँगा और अगर शिफ़ा दे दी तो उसके (पहले वाले) गोश्त व ख़ून से बेहतर गोश्त व ख़ून पैदा कर दूँगा और उसकी बुराईयों को भी दूर कर दूँगा”(मौता इमाम मालिक )

☆ तकालीफ़ पर सब्र करने और उस सब्र पर अज्र मिलने के सिलसिले में एक ख़ूबसूरत और क़ाबिले ज़िक्र हदीस यह भी है।
रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया:
“जिस मुस्लमान को भी कोई क़ल्बी अज़ियत,जिस्मानी तकलीफ़ और बीमारी,कोई रंज ग़म और दुःख पहुँचता है यहाँ तक कि अगर उसे एक काँटा भी चुभ जाता है (और वो उस पर सब्र करता है) तो अल्लाह उसके गुनाहों को माफ़ फ़रमा देते हैं”
(मुत्तफ़िक़ अलैह)

☆ रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया:
“जब बंदा बीमार हो या मुसाफ़िरी में हो तो उसके आमाल नामा में वह अमल लिख दिए जाते हैं जो वह सेहतमन्द या मुक़ीम होने की हालत में करता था” (बुख़ारी)

☆ एक शख़्स ने नबी ﷺ के सामने किसी मरने वाले का ज़िक्र किया कि वह बड़ी क़िस्मत वाला था बग़ैर बीमारी के मरा, तो आप ﷺ ने फ़रमाया,“तुझ पर

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

अफ़सोस है, तुझे क्या मालूम अगर अल्लाह तआला उसको बीमारी में मुब्तिला करते तो वह बीमारी उसके गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो जाती” (मौता इमाम मालिक)

इन तमाम हदीस को बातों ही बातों में मरीज़ के सामने बयान करने से उसका ज़हन आख़िरत के अज्रो सवाब की तरफ़ मुतवज्जा होगा और बीमारी की शिद्दत व बेचैनी की वजह से शिकवा-शिकायत का कोई कलमा उसकी ज़बान पर ना आएगा।

## 3. दुआ करना

बीमारी अल्लाह ही की तरफ़ से है और बीमारियों से बचाने वाली भी अल्लाह ही की ज़ात है, इसलिये इयादत के लिए आने वाला सच व इख़्लास से मरीज़ की सेहतयाबी के लिए अल्लाह तआला से दुआ करे,वैसे भी एक मुस्लमान की दूसरे मुस्लमान के लिए की जाने वाली दुआ जल्द क़ुबूलियत के दर्जे को पहुँचती है लिहाज़ा इस मौक़े पर मरीज़ की तक्लीफ़ और अज़ियत को दिल की नरमी से महसूस करके ख़ुसूसी असर व बर्कत रखने वाली मसनून दुआएं की जाऐं।

सय्यदा आयशा رضی اللہ عنہا से रिवायत है कि रसूल अल्लाह ﷺ जब कभी किसी बीमार के पास जाते या बीमार आपके पास लाया जाता तो आप ﷺ यूँ दुआ करते:

اَذْهِبِ الْبَاْسَ رَبَّ النَّاسِ اشْفِ وَاَنْتَ الشَّافِىُ

لَا شِفَآءَ اِلَّا شِفَآؤُکَ شِفَآءً لَّا يُغَادِرُ سَقَمًا.

“ऐ परवरदिगार लोगों के! बीमारी दूर कर दीजिए, शिफ़ा अता फ़रमाइए,आपके सिवा कोई शिफ़ा देने वाला नहीं,आप ही शिफ़ा देने वाले हैं, ऐसी शिफ़ा दीजिए कि कोई बीमारी बाक़ी ना रहे” (बुखारी)

अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضی اللہ عنہ कहते हैं कि रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया:

“जब कोई मुस्लमान दूसरे मुस्लमान की बीमार पुर्सी करे और सात मर्तबा यह कलिमात कहे:

اَسْأَلُ اللّٰهَ الْعَظِيْمِ رَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ اَنَّ يَشْفِيَکَ

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

मैं अर्शे अज़ीम के मालिक बुज़ुर्ग व बरतर अल्लाह से तुम्हारे लिए शिफ़ा का सवाल करता हूँ, तो अल्लाह तआला उसे उस बीमारी से ज़रूर शिफ़ा देगा” (अबु दाऊद)

## दायाँ हाथ फेर कर दम करना

अयादत के बाज़ मौक़ों पर अल्लाह के रसूल ﷺ मरीज़ की पेशानी या जिस जगह भी तक्लीफ़ होती वहाँ अपना दायाँ दस्ते मुबारक रखते या फेरते फिर दुआ फ़रमाते दम करने का मसनून तरीक़ा भी यही है और यही तरीक़ा आज तक मुसलमानों में राइज है,मसनून दम और दुआएं सफ़ह नम्बर (320) पर मुलाहिज़ा फ़रमाएं

## 4.तआवुन व मदद

अच्छे मुस्लमान आम हालात में भी एक-दूसरे के मआवुन व मददगार साबित होते हैं, बीमार पुरसी के वक़्त भी अगर मरीज़ को माली मदद या ऐसी ख़िदमत की ज़रूरत है जो बैरूने ख़ाना से मुताल्लिक़ है; जैसे डाक्टर के पास ले जाना या कमज़ोरी और नक़ाहत के सबब वह अपना हाल बयान ना कर सकता हो तो घर वालों से पूछ कर डाक्टर से दवा वगैरह ला देना,ज़रूरत हो तो उसे अस्पताल दाख़िल करवा देना, उसके अहले ख़ाना के लिये सौदा सल्फ़ लादेना या अपने घर से खाना पकवा कर उनके यहाँ भिजवाना,उनके बच्चों को स्कूल/कॉलेज से लाना,ले जाना हो या कोई यूटिलिटी बिल्ज़ जमा कराने हों तो अपनी ख़िदमात की पेशकश कर देना,या हस्बे मौक़ा दूसरी ज़रुरियात व सहूलियात बाहम पहुँचाना,वगैरह।

### अल्लाह की ख़ातिर

रसूल अल्लाह ﷺ ने यह हदीसे क़ुदसी बयान फ़रमाई कि अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: “मेरी मोहब्बत उनके लिए साबित हो चुकी है जो मेरे लिए एक-दूसरे से मिलते हैं और मेरी मोहब्बत उन लोगों पर साबित हो चुकी है जो मेरी ख़ातिर एक-दूसरे की मदद करते हैं”

(मसनद अहमद,मुस्तदरक हाकिम)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

## अयादत पैकेज

अयादत को जाने से पहले एक पैकेज बना लिया जाए जो क़ुरआनी और मसनून दुआओं वाले कार्डस या इस मौक़े की मुनास्बत से किसी इस्लामी लेक्चर वाली या तिलावते क़ुरआन वाली कैसेट या सी.डी.या किसी अच्छी किताब वग़ैरह पर मुश्तमिल हो,अयादत के मौक़े पर उसे मरीज़ को पेश करना एक बेहतरीन तोहफ़ा साबित हो सकता है,ख़ुसूसन ऐसा मरीज़ जो उठने और काम-काज करने से माज़ूर होता है,उसके लिए यह पैकेज बिस्तरे मर्ज़ पर वक़्त गुज़ारी के साथ-साथ फ़हमे दीन के लिए बेहतरीन मआवन और अपने मुस्लमान भाई/बहन की तरफ़ से ख़ैर सग़ाली का बेहतरीन पैग़ाम साबित हो सकता है, यूँ आपकी यह कोशिश आपके लिए एक अच्छा सदक़ा जारिया बन सकती है।

## चंद और मुफ़ीद बातें

अयादात के सिलसिले में चंद और मुफ़ीद बातें जानना ज़रूरी हैं:

☆ मरीज़ के पास ज़्यादा देर तक ना बैठा जाए और ना ही ज़्यादा बातें और शोर किया जाए।

☆ अगर मरीज़ बेतकल्लुफ़ दोस्त या अज़ीज़ है, और आपको देर तक बिठाए रखना चाहता है तो फिर ज़रूर उसकी ख़ुशी पूरी की जाए।

☆ मुम्किन हो तो मिज़ाज पुरसी को जाते हुए मरीज़ के लिए कुछ फूल या फल साथ ले लिए जाएं इससे भी बाहम उल्फ़त बढ़ती है और मरीज़ का दिल भी ख़ुश होता है।

☆ मरीज़ के घर पहुँच कर इधर-उधर तांक-झांक से परहेज़ किया जाए ताकि घर की परदादार ख़्वातीन पर निगाह ना पड़े।

☆ औरत के लिए ग़ैर महरम मर्द और मर्द के लिए ग़ैर महरम औरत की इयादत को अकेल जाना हरगिज़ मुनासिब नहीं।

☆ ग़ैर मुस्लिम मरीज़ की इयादत को जाना भी मसनून है, बीमारी में इंसान का ध्यान दीन की तरफ़ निस्बतन ज़्यादा होता है,इस मौक़े को ग़नीमत समझते हुए उसे दीने हक़ की दावत दी जाए तो मुम्किन है वह उसे क़ुबूल कर ले।

© AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

सय्यदना अनस رضی اللہ عنہ का बयान है कि एक यहूदी लड़का नबी ﷺ की ख़िदमत किया करता था, एक बार वह बीमार पड़ा तो आप ﷺ उसकी अयादत को तशरीफ़ ले गए।
आप ﷺ उसके सरहाने बैठे तो उसको इस्लाम की दावत दी,लड़का अपने बाप की तरफ़ देखने लगा जो पास ही मौजूद था (कि बाप का क्या ख़्याल है) बाप ने उसे कहा, बेटे! अबुल क़ासिम (नबी ﷺ की कुन्नियत) की बात मान लो,चुनाँचे लड़का मुस्लमान हो गया,अब नबी ﷺ उसके यहाँ से यह फ़रमाते हुए बहार आए: "

शुक्र है अल्लाह का जिसने इस लड़के को मेरे ज़रिए से जहन्नम से बचा लिया"(बुखारी)

ऐसे नाफ़रमान लोग (ख़्वाह मुस्लमान हों या ग़ैर मुस्लिम) अगर सेहतमंदी की हालत में ऐलानिया और दानिस्ता गुनाहों पर भी जमे रहे थे और अल्लाह और उसके रसूल ﷺ की मुक़र्रर की हुई हुदूद की पामाली करते रहे थे तो उनकी शदीद बीमारी में उनकी अयादत इस उम्मीद में की जा सकती है कि शायद उनका दिल नर्म हो और वह अल्लाह से रुजूअ कर लें।

## ना बीमारी,ना महरूमी,ना परेशानी, ना बुढ़ापा,ना मौत

रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: जो शख़्स जन्नत में दाख़िल हो गया वह नेअमतों में रहेगा,कभी परेशान नहीं होगा,ना उसके कपड़े पुराने होंगे और ना उसकी जवानी पर ज़वाल आएगा"

नीज़ फ़रमाया: "ऐलान करने वाला पुकारेगा: (ऐ जन्नत वालो!) अब तुम यहाँ हमेशा सेहतमन्द रहोगे,कभी बीमार नहीं पड़ोगे,हमेशा ज़िन्दा रहोगे,कभी मौत नहीं आएगी,हमेशा जवान ही रहोगे,कभी बुढ़ापा नहीं आयेगा,हमेशा नेअमतों से लुत्फ़ अन्दोज़ होगे,कभी महरूमी नहीं देखोगे" (मुस्लिम)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

# हुसने वसियत

अल्लाह तआला ने क़ुरआन करीम में क़ानूने विरासत बताने के बाद इरशाद फ़रमाया: (सूरह निसा:12-14)

...مِنۢ بَعۡدِ وَصِيَّةٍ يُّوۡصٰى بِهَآ اَوۡ دَيۡنٍ ۙ غَيۡرَ مُضَآرٍّ ۚ وَصِيَّةً مِّنَ اللّٰهِ ؕ

وَاللّٰهُ عَلِيۡمٌ حَلِيۡمٌ ۝ تِلۡكَ حُدُوۡدُ اللّٰهِ ؕ وَمَنۡ يُّطِعِ اللّٰهَ وَ رَسُوۡلَهٗ

يُدۡخِلۡهُ جَنّٰتٍ تَجۡرِىۡ مِنۡ تَحۡتِهَا الۡاَنۡهٰرُ خٰلِدِيۡنَ فِيۡهَا ؕ وَ ذٰلِكَ

الۡفَوۡزُ الۡعَظِيۡمُ ۝ وَمَنۡ يَّعۡصِ اللّٰهَ وَرَسُوۡلَهٗ وَ يَتَعَدَّ حُدُوۡدَهٗ يُدۡخِلۡهُ

نَارًا خَالِدًا فِيۡهَا ۖ وَلَهٗ عَذَابٌ مُّهِيۡنٌ ۝ (النساء : 12,13,14)

"जबकि की गई वसियत पूरी कर दी जाए और क़र्ज़ जो मय्यत ने छोड़ा हो,अदा कर दिया जाए वह ज़रर रसां भी ना हों,यह हुक्म है अल्लाह की तरफ़ से और अल्लाह जानने वाला और नर्म ख़ू है, यह अल्लाह की मुक़र्रर की हुई हुदूद हैं,जो अल्लाह और उसके रसूल की अताअत करेगा,

उसको अल्लाह ऐसे बागों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी,इन बागों में वह हमेशा रहेगा और यह बड़ी कामयाबी है,और जो अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़रमानी करेगा और अल्लाह की मुक़र्रर करदा हुदूद को तोड़ेगा उसे अल्लाह आग में डालेगा जिसमें वह हमेशा रहेगा और उसके लिए रुस्वाकुन अज़ाब है"

## आख़री हक़

आख़िरत की कामयाबी ही दरअसल वह ताबनाक और रोशन मुस्तक़बिल है जिसके लिए मोमिन दुनिया में कोशिश और जद्दो-जहद करता रहता है,यह कोशिश फ़राइज़ व हुक़ूक़ की दुरुस्त अदायगी का नाम भी है जो अंजामकार इसी को फ़ायदा दे जाती है उन्हीं में से एक आख़री हक़ वसियत का है।

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

## याद रखने वाली गिरह

अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया: “जो मुस्लमान वसियत करना चाहता है वह दो रातें भी ना गुज़ारे इल्ला यह कि उसके पास वसियत लिखी हुई हो”(मुत्तफ़िक़ अलैह)

क़ाबिले वसियत माल का हिसाब लिखे बग़ैर दो रातें भी ना सोने की तल्क़ीन में हिकमत यह नज़र आती है कि इंसान को याद रहे भेजने वाले मालिक की तरफ़ से किसी भी वक़्त वापसी का बुलावा आ सकता है,लिहाज़ा अचानक फ़ौत होने की सूरत में किसी भी इंसान से लोगों के वह अमवाल और अमानतें ज़ाया ना हो जाऐं जिनका वह सरपरस्त या अमीन रहा था और क़यामत के दिन वह इस ज़िम्मेदारी की बाज़पुर्स से बच जाए।

इसके अलावा यह वसियत लिख कर रखना ऐसा ही है जैसे बाज़ सीधे-साधे लोग कोई बात याद रखने के लिए कपड़े में गिरह लगा लिया करते हैं,वसियत भी एक गिरह है, जो हर दम याद दिलाती रहती है कि मुलाक़ात की तैयारी रखो,जितना यह मुलाक़ात का दिन याद रहेगा तैयारी के लिए उतनी ही क़ुव्वत पैदा होगी।

नीज़ बरवक़्त,बा होश व हवास और सेहतमंदी की हालत में किया हुआ कोई फ़ैसला या काम आइंदा बहुत से मुतवक़्क़ो फ़ितनों और फ़साद से महफ़ूज़ रखता है,चाहे उसका ताल्लुक़ सदक़ा ख़ैरात से हो या वसियत लिखने से।

सय्यदना अबु हुरैरा رضی اللہ عنہ कहते हैं कि एक शख़्स रसूल अल्लाह ﷺ के पास आया और कहा,'या रसूल अल्लाह! कौन्सा सदक़ा अफ़ज़ल है ? आप ﷺ ने फ़रमाया:

“तुम्हारा वह सदक़ा (अफ़ज़ल है) जो तुम उस दुरुस्त सेहत की हालत में दो जब्कि तुम माल पर हिर्स भी रखते हो और डर भी रहे हो कि माल कम होने से कहीं मोहताजी या फ़क़र का शिकार ना हो जाऊँ,और इतनी देर मत लगाओ कि जब दम हलक़ तक आ जाए तो कहने लगो कि फुलां को इतना और फुलां को इतना दे दो,हालाँकि अब तो वह फ़ुलाने का हो ही चला,(और तुम तो दुनिया से चले)” (बुख़ारी)

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

## वसियत क्या है ?

अपने माल का एक तिहाई हिस्सा मरने के बाद किसी एक को या ज़्यादा को बाँटकर देने का हुकुम दे जाना या लिख कर जाना ये "वसियत" कहलाती है। (मय्यत के कुल माल के तीन हिस्से किये जाएं तो दो हिस्से माले विरासत शुमार होंगे जब्कि तीसरा हिस्सा यही है जो बतौरे वसियत के इस्तेमाल होगा)।

## वसियत के दुरुस्त होने की शरतें

(1) लिखा हुआ सुबूत हो या कम से कम दो मुसलमान गवाह हों।

(2) एक तिहाई से ज़्यादा ना हो (बाक़ी तरका वारिसों में आयाते मीरास के मुताबिक़ तक़्सीम होगा)।

(3) वारिस के हक़ में ना हो।

## (1) वसियत पर गवाह

क़ुरआने पाक में अल्लाह ताला का इर्शादे पाक है:

يَآَيُّهَا الَّذِ يْنَ اٰمَنُوْاشَهَادَةُبَيْنِكُمْ اِذَا حَضَرَاَحَدَكُمُ الْمَوْتُ
حِيْنَ الْوَصِيَّةِ اثْنٰنِ ذَوَا عَدْلٍ مِّنْكُمْ اَوْ اٰخَرٰنِ مِنْ غَيْرِكُمْ
اِنْ اَنْتُمْ ضَرَبْتُمْ فِى الْاَرْضِ فَاَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةُ الْمَوْتِ ط
تَحْبِسُوْنَهُمَامِنْ بَعْدِ الصَّلٰوةِ فَيُقْسِمٰنِ بِاللّٰهِ اِنِ ارْتَبْتُمْ لَا
نَشْتَرِىْ بِهٖ ثَمَنًا وَّلَوْكَانَ ذَا قُرْبٰى وَلَا نَكْتُمُ شَهَادَةَ اللّٰهِ
اِنَّآ اِذًا لَّمِنَ الْاٰثِمِيْنَ ○ فَاِنْ عُثِرَعَلٰٓى اَنَّهُمَا اسْتَحَقَّآ اِثْمًا
فَاٰخَرٰنِ يَقُوْمٰنِ مَقَامَهُمَا مِنَ الَّذِيْنَ اسْتَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْاَوْلَيٰنِ
فَيُقْسِمٰنِ بِاللّٰهِ لَشَهَادَتُنَآ اَحَقُّ مِنْ شَهَادَتِهِمَاوَمَااعْتَدَيْنَآ

© AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

اِنَّآ اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِیۡنَ o ذٰلِکَ اَدۡنٰۤی اَنۡ یَّاۡتُوۡا بِالشَّهَادَةِ
عَلٰی وَجۡهِهَاۤ اَوۡ یَخَافُوۡۤا اَنۡ تُرَدَّ اَیۡمَانٌۢ بَعۡدَ اَیۡمَانِهِمۡ وَاتَّقُوا اللّٰهَ
وَاسۡمَعُوۡا وَاللّٰهُ لَا یَهۡدِی الۡقَوۡمَ الۡفٰسِقِیۡنَ o

(المائدہ: 106-108)

©AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

“ऐ ईमान वालो, तुम्हारे आपस में दो लोगों का वसी (गवाह) होना मुनासिब है ।जब तुम में से किसी को मौत आने लगे और वसियत करने का वक़्त हो तो दो शख़्स ऐसे हों जो दीनदार हों और तुम में से हों और अगर तुम सफ़र की हालत में हो और वहाँ मौत की मुसीबत पेश आजाए और दो दीनदार ना मिलें तो दो कोई और सही (शर्त येके उनकी गवाही शक के मौक़े पर क़ाबिले एतमाद हो)।फिर भी अगर तुम को शुबा हो तो उन दोनों को बाद नमाज़ रोक लो। फिर दोनों अल्लाह की क़सम खाएं के हम इस क़सम के बदले कोई नफ़ा नहीं लेना चाहते अगरचे कोई रिशते दार भी हो और अल्लाह ताला की बात को हम छुपाएंगे नहीं, हम इस हालत में सख़्त गुनाहगार होंगे फिर अगर इसकी इत्तिला होके वो दोनों गवाह किसी गुनाह के मुर्तकिब हुए हैं तो उन लोगों में से जिनके मुक़ाबले में गुनाह का इर्तेकाब हुआ था, और दो शख़्स जो सबसे क़रीब तर हैं जहाँ वो दोनों खड़े हुए थे,ये दोनों खड़े हों फिर दोनों अल्लाह की क़स्म खाकर कहें कि यक़ीन के साथ हमारी ये क़स्म उन दोनों की उस क़स्म से ज़्यादा सच है, और हम ने ज़रा तजावुज़ नहीं किया, हम ऐसा करें तो सख़्त ज़ालिम होंगे। ये क़रीबतर ज़रिया है उस मामले का कि वो लोग वाक़ये को ठीक तौर पर ज़ाहिर करें या इससे डर जाएं कि उनसे क़समें लेने के बाद क़समें उल्टी पड़ जाएंगी और अल्लाह ताला से डरो और सुन रखो, और अल्लाह ताला फ़ासिक़ लोगों को हिदायत नहीं दिया करता” ।

## (2)वसियत की मुस्तहब मिक़्दार

जैसा कि पहले भी बयान हुआ,मुसलमान को अपने माल में से एक तिहाई की वसियत का हक़ है इस से ज़्यादा की इजाज़त नहीं,लेकिन इस से कम पसंदीदा और अफ़्ज़ल है।

सादؓ बिन अबी वक़ास सख़्त बीमार हुए तो उन्होंने रसूल अल्लाह ﷺ से वसियत की बाबत मशवराह तलब किया,आप ﷺ ने फ़रमायाः

“एक तिहाई की इजाज़त है और एक तिहाई भी बहुत है”। फिर फ़रमायाः

“ऐ साद! तुम अपने वारिसों को ख़ुश रहने दो,ये तुम्हारे लिए इस से बहतर है कि उन्हें तंगदस्त छोड़ो और वो लोगों के सामने हाथ फैलाते रहें, ऐ साद! अल्लाह की रज़ा के लिए जो भी ख़र्च करोगे तुम्हें उसका अज्र मिलेगा यहाँ तक कि जो लुक़्मा तुम अपनी एहलिया (बीवी) के मुँह में दो”। (मुत्तफ़िक़ अलैह)

सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बासؓ का क़ौल है कि मुझे ये पसंद है कि लोग तिहाई की बजाए चौथाई की वसियत किया करें क्योंकि नबी ﷺ ने तिहाई को ज़्यादा क़रार दिया है। (मुत्तफ़िक़ अलैह)

## (3) वसियत,मीरास के हक़दार के लिए नहीं

वीलिदैन और क़रीबी रिश्तेदार,जो पहले ही माले विरासत के शर्अन हक़दार हैं, उन्हें वसियत के माल (तिहाई) में से हिस्सा नहीं दिया जा सकता ।

वसियत का हुक्म भी उन एहकामात में से है जो इस्लाम के इब्तिदाई (शिरू) ज़माने में एक सादा और मुख़्तसिर अंदाज़ में नाज़िल किया गया। फिर मोमिनीन के दिलों में ईमान के रासिख़ होजाने और इस्लाम के अर्कान की मज़्बूती आजाने के बाद ज़्यादा तफ़्सील और वज़ाहत से नाज़िल हुआ। और पहला हुक्म मंसूख होगया अगरचे वो तिलावत किया जाता है। नए हुक्म में तमाम वारिसों और उनके हिस्से विरासत को बयान कर दिया गया और अब वसियत जो पहले मरने वाले पर अपने माशरती दस्तूर के मुताबिक़ कुल माल पर करना फ़र्ज़ थी,

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

सिर्फ़ तिहाई या चौथाई माल पर लागू रहगई। और वारिस रिश्तेदार इस से मुस्तस्ना (फ़ारिग़) क़रार देदिए गए ।

रसूल अल्लाहﷺ ने हज्जतुल्विदा के मौक़े पर फ़रमाया,"अल्लाह ताला ने हर साहिबे हक़ को उसका हक़ देदिया है किसी वारिस के हक़ में अब वसियत जाइज़ नहीं"। (अबू दाऊद)

ये माले वसियत उन रिश्तेदारों और अज़ीज़ों को फ़ायदा दे देता है जो शरई उसूल के लिहाज़ से मीरास के हिस्सेदार तो ठहरते मगर माली मोहताजी की बिना पर उस माल के मुस्तहिक़ होते हैं और उनकी कुछ ना कुछ मदद हो जाती है। और अगर रिश्तेदारों में कोई ऐसा महीं है तो दूसरे मुस्तहक़ीन के लिए या किसी रफ़ाहे आम्मा के काम में सर्फ़ करने के लिए ये माले वसियत सदक़ए जारिया बन जाता है।

अब्दुल्लाह बिन अब्बासؓ रिवायत करते हैं कि नबी करीमﷺ ने फ़रमाया,विरासत वालों को उनके हिस्से दे दो। फिर जो मास बच रहे वो उस नातेदार मर्द के लिए है जो (मय्यत से अगला) क़रीबी रिश्ता रखता हो। (बुख़ारी)

(क़ानूने विरासत की तफ़्सीलात के लिए सूरह निसाः 7,12,176 पर देखें)

बचने वाले माल से मुराद माले वसियत भी है और वो माल भी हो सकता है जो तक़्सीम के वक़्त वारिस किसी वज्ह से नहीं लेना चाहते और उसपर मय्यत की तरफ़ से कोई वसियत भी नहीं पाई जाती ।

## नाक़ाबिले क़ुबूल वसियत

☆ ऐसी वसियत जो शरीअत (शरिअत के हुक्म) से टकराती हो उसपर अमल ही नहीं किया जाएगा ।

☆ ऐसी वसियत जिस से किसी की हक़ में कमी होती हो। ख़ुसूसन जबकि वो किसी हक़वाले वारिस के जाइज़ हक़ में महरूमी या ज़्यादती की वज्ह बनती हो वो भी क़ुबूल नहीं होगी और बातिल क़रार दी जाएगी। ऐसी वसियत "ज़रर रसाँ वसियत" (नुक़्सान वाली) भी कहलाती है।

☆ हराम या गैर दीनी कामों या बिदअत के कामों पर ख़र्च करने के लिए वसियत की जाए तो वो नाफ़िज़ नहीं होगी ।

☆ मौत की मदहोशी या सख़्ती की हालत में की गई वसियत नसिहत और याददाश्त से मेहरूम या कोई मख़्बूतुल हवास (दिमाग़ सही ना हो) शख़्स वसियत करे,जिसपर वुर्सा (वारिसों) का इत्मिनान ना हो तो उसे किसी एतबार वाले आलमे दीन को बताकर उसके बारे में शरई हुक्म मालूम कर लेना चाहिए ।

## वसियत की अक़्साम

वसियत की दर्जे ज़ैल अक़्साम हैः

(1) वसियत बराए माल व अस्बाब

(2) वसियत बराए हुक़ूक़ व वाजिबात

(3) वसियत बराए नसिहत व तज़्किया

## 1. वसियत बराए माल व अस्बाब

मालो अस्बाब चाहे कुछ भी हो,ज़ेवर,करंसी, बेंक अकाऊंट, सर्टिफ़िकेट,मंकूला व गैर मंक़ूला (लिखी या बग़ैर लिखी) जाएदाद वग़ैरा सब तरके में शामिल हैं। इस तमाम मतरूका (तरका) माल का एक तिहाई तक ग़ैर वारिस क़राबत दारों,दोस्तों या मुस्लिम उम्मा के लिए ख़ैर के कामों के लिए वसियत में ख़ास किया जाता है और कोई चाहे तो अपना ये इख़्तियार अल्लाह के कामों में ख़र्च करने के लिए इस्तेमाल कर सकता है। ऐसी वसियत में (1/3 तक के माल के मामले में) हिक्मत से किया हुआ फ़ैसला उसके लिए क़यामत तक सदक़ा जारिया बन सकता है ।

## 2. वसियत बराए हुक़ूक़ व वाजिबात

मरने के क़रीब एक तिहाई (वसियत) तक के लिए ये भी फ़ैसला कर सकता है कि उसके तमाम नीचे दिए वाजिबात उस मद में से अदा कर दिए जाएं,मसलन:

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

☆ उधार क़र्ज़ वग़ैरा।

☆ जो रोज़े ना रख सका उनका फ़िदया।

☆ ज़कॉत अगर देने वाला था और नहीं दे सका।

☆ फ़र्ज़ हज की निय्यत की थी और मौत ने करने की मोहलत ना दी।

☆ कोई जाइज़ नज़र मानी थी मगर पूरी ना कर सका, वग़ैरह।

☆ इसी तरह कोई मर्द अगर किसी वज ह से निकाह के वक़्त बीवी का हक़ महर अदा नहीं कर सका तो वो उस तिहाई में से अदा करदिए जाने की वसियत कर सकता है।

## वसियत बराए नसिहत व तज़्किया

वसियत माल के अलावा उन हिदायतों इंतिज़ामात से मुताल्लिक़ भी हो सकती है जो मरने के क़रीब अपने रिश्तेदारों के ज़िम्मे लगा जाता है जैसे नाबालिग़ औलाद की देखभाल,उसके छोड़े हुए इल्मी किताबों की जगह,शिफ़ा खाना,या अपनी ज़िंदगी में वक़्फ़ किए गए किसी इदारे की देख भाल इंतेज़ाम और लोगों की अमानतों को लौटाना वग़ैरा।

इसके अलावा ये वसियत दीनी इल्म और तज़्किया के बारे में भी हो सकती है मस्लनः

हुक़ूक़ अल्लाह की पाबंदी,बुराई से रोकना और भलाई की करने की ताकीद,ख़ान्दानी रिवायात में हलाल और मुबाह कामों का ख़्याल करना,क़राबत दारों से सिला रहमी वग़ैरह।ऐसी वसियत ना सिर्फ़ ख़ानदान के लिए फ़ायदामंद हो सकती है बल्कि आने वाली नसलें और माशरे के दूसरे लोग भी इस से फ़ाएदा ले सकते हैं और यूँ ये वसियत भी उसके लिए सदक़ा जारिया बन सकती है,इन शा अल्लाह।

(इस क़िस्म की नसिहत वाली वसियत,तरके वाली वसियत के बरअक्स तमाम वारिसों और ग़ैर वारिसों के लिए है)

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ऐसी वसियत में इस बात का ख़्याल रखें के सिर्फ़ आपका ज़ाती फ़यदा या ग़र्ज़ सामने ना रहे बल्कि बात आपकी नसलों की फ़लाह की भी हो और इस अंदाज़ से की गई हो कि पढ़ने और अमल करने वालों के लिए जब्र,तंगी और बेज़ारी का पेहलू ना निकले, बल्कि असर वाली और पुर हिक्मत तरीक़े से पैग़ाम उनके दिलों में उतरता रहे।

मिसाल के तौर पर अगर कोई वसियत कर जाए कि "मेरे बच्चो! मेरे सवाब के लिए हर रमज़ान में सदक़ा,ख़ैरात या हर ईदुल अज़्हा पर मेरी तरफ़ से क़ुर्बानी ज़रूर करना या ज़िंदगी भर हफ़्ते में एक बार ज़रूर मेरी क़ब्र पर आकर दुआए मग़फ़िरत करना" तो ये दुरुस्त नहीं।
अगर उन्होंने आपको अपने वालिदैन के लिए ऐसा कुछ करते देखा है तो वो अपनी कोशिश से ऐसा करते रहेंगे। आप इस्लाम के साँचें में ढली हुई ज़िंदगी गुज़ारते रहे हैं तो बच्चे लाशऊरी और लाज़मी तौर पर आप के ही नक़्शे क़दम पर चलने की कोशिश करेंगे और यूँ उनमें हर अच्छे अमल को मुस्तक़िल मिज़ाजी से निभाने की ख़ूबी और आदत भी होगी।
(इसकी मिसाल मरहूम ख़ुर्रम मुराद की किताब "आख़री वसियत" है जो उन्होंने अपने एहले ख़ाना के लिए लिखी और मोहतरमा बुशरा की किताब "या बुनय्यी"है जो उन्होंने अपने बेटे के लिए लिखी)

## ग़ैर मुस्लिम मुमालिक में रहने वाले मुसलमानों का वसियत नसिहत लिख कर रखनाः

ये ख़ासकर इस लिए भी मुश्किल हो जाता है कि वहाँ के शहरी क़वानीन के मुताबिक़ अपनी ज़िंदगी में सरकारी वसियत नामे पर ज़रूरी इंदराज (लिखना) ना किए जाएं तो ना सिर्फ़ मय्यत को वहाँ ग़ैर इस्लामी तरीक़े से कफ़ना,दफ़ना दिया जाता है बल्कि उसके तमाम जुमला इमलाक भी विरासत में मुंतक़िल होने की बजाए सरकारी क़ब्ज़े में चली जाती हैं।उसामा बिन ज़ैद रज़ि. कहते हैं कि नबी करीम ﷺ ने फ़रमायाः

"मुसलमान काफ़िर का वारिस नहीं होगा और ना काफ़िर मुसलमान का वारिस हो सकता है"। (बुख़ारी)

(वारिस और मौरूस दोनों के लिए मुसलमान होना ज़रूरी है)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

## नबियों की वसियत

ऐसी वसियत जो वारिसों की दीनी इस्लाह के लिए हो बेहतरीन वसियत है । नबियों की विरासत वो पैग़ामे हक़ होता है जो क़यामत तक तमाम नसलों तक चलता चला जाता है।

क़ुरआन मजीद में इर्शादे बारी ताला है:

اِذْ قَالَ لَهٗ رَبُّهٗٓ اَسْلِمْ ۙ قَالَ اَسْلَمْتُ لِرَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ○

وَوَصّٰى بِهَآ اِبْرٰهٖمُ بَنِیْهِ وَ یَعْقُوْبُ ؕ یٰبَنِیَّ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰى

لَكُمُ الدِّیْنَ فَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ○

(البقره : 131,132)

जब (इब्राहीम को) उनके रब ने कहा, "फ़रमांबरदार होजाओ"। उन्होंने कहा,"मैंने रब्बुल आलमीन की फ़रमांबरदारी की। और उसी की वसियत इब्राहीम और याक़ूब ने अपनी औलाद को की, कि ऐ हमारे बेटो! अल्लाह ताला ने तुम्हारे लिए इसी दीन को पसंद फ़रमाया है,तुम्हें इस हाल में मौत आए कि तुम मुसलमान हो"।

उनके बारे में क़ुरआन मजीद में ज़िक्र मिलता है:

..یٰبُنَیَّ لَا تُشْرِكْ بِاللّٰهِ ؕ اِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِیْمٌ○ (لقمان :13)

"ऐ मेरे बेटे! अल्लाह के साथ किसी को शरीक ना करना,
बेशक शिर्क बड़ा भारी ज़ुल्म है"।

یٰبُنَیَّ اَقِمِ الصَّلٰوةَ وَاْمُرْ بِالْمَعْرُوْفِ وَانْهَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَاصْبِرْ عَلٰى

مَآ اَصَابَكَ ؕ ...(لقمان : 17)

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

بسم لله الرحمن الرحيم

# वसियत नामा

“किसी भी मुसलमान के लिए जिसके पास क़ाबिले वसियत कोई माल हो,दुरुस्त नहीं कि वो दो रातें भी वसियत को लिख कर अपने पास महफ़ूज़ किए बग़ैर गुज़ारे” (सही बुख़ारी: 2738)

मैं ------------------- वलद/बिन्त------------------- मुक़ीम------------------
अपने मुकम्मल होश वा हवास और शऊरी हालत में वारिसों को वसियत करता/करती हूँ कि:

☆ क़रीबुल मर्ग बेहोशी की हालत में मेरे क़रीब क़ुरआन मजीद की तिलावत की जाए, ग़ैर शरई इलाज वा बातों से परहेज़ किया जाए।

☆ मेरे मरने के बाद मेरे तमाम वारिस हर मामले में अल्ला सुबहानहु व तआला और उसके रसूल की इताअत करें। अल्लाह सुबहानहू व तआला की रज़ा को हर चीज़ पर मुक़द्दम रखें,ज़ाती ईबादात के अलावा दीन की ख़िदमत को अपना मिशन बनाऐं।

☆ मेरी वफ़ात पर मेरे लवाहिक़ीन अल्लाह तआला से अजर की ख़ातिर सब्र से काम लें और बहुत ज़्यादा रोने धोने,चीख़ व पुकार करने से इज्तिनाब करें। ग़म की हालत में मुँह से ख़िलाफ़े शरिअत बात ना निकालें जो अल्लाह सुबहानहू व तआला की नाराज़गी का सबब बने।

☆ सुन्नत के मुताबिक़ मेरे ग़ुस्ल और कफ़न का बन्दोबस्त करें ।

☆ मेर चेहरे को किसी भी नामहरम के सामने ना खोलें ।

☆ मैय्यत की तसावीर और विडियो ना बनाऐं।

☆ जनाज़ह जल्दी पढ़ाऐं और जल्द क़ब्रिस्तान पहुँचाएं ।

☆ हादसाती मौत की सूरत में मेरा पोस्ट मार्टम ना किया जाए इल्ला ये कि क़ानूनी ज़रूरत हो।

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

☆ ग़ैर शरई रुसूमात,चालीसवाँ,जुमेरातें और दीगर बिदआत से इज्तिनाब करें।

☆ मेरे लिए बख़्शिश और आसान हिसाब की दुआ करें ।

☆ अगर मेरी वफ़ात बेरून मुल्क में हो तो मुझे मेरी वफ़ात के मुक़ाम पर ही दफ़्न करें।

☆ मेरी क़ब्र लहद वाली बनाऐं,उसे कच्चा और सादा रखें और कोई इज़ाफ़ी चीज़ साथ ना रखें,क़ब्र को संग मरमर या किसी और चीज़ से पुख़्ता ना करें।

☆ मेरी औलाद और उनकी औलाद की तरबियत क़ुरआन और सुन्नत के मुताबिक़ करें और उन्हें क़ुरआन व सुन्नत की तालीम भी दें।

☆ हज मुझ पर फ़र्ज़ हो चुका था/मैं ने नफ़्ली हज की नज़र मानी थी लेकिन बावजूद नियत और इस्तिताअत के हज नहीं कर सका/सकी। लेहाज़ा तरके में से इख़राजात के लिए रक़म अलग कर लें और आइंदा साल हज के मौक़े पर किसी ऐसे दीनदार, मुत्तक़ी और हज के ख़्वाहिश मंद को उस रक़म से मेरा हज बदल करवाएं जो अपना फ़र्ज़ हज कर चुका हो।

☆ मेरे ज़िम्मे कुल ---------रोज़ों की क़ज़ा वाजिब है मेरे वारिस ये क़ज़ा पुरी कर दें। अगर रोज़े ना रख सकें तो मेरे माल में से मिस्कीनों को फ़िदये का खाना खिला दें।

☆ माले विरासत का ज़्यादा से ज़्यादा एक तिहाई हिस्सा मेरे वारिस अपनी मर्ज़ी से ग़ैर वारिसों में या मेरे तर्के में से एक तिहाई हिस्सा फ़ी सबीलिल्लाह दीनी ख़िदमात सरअंजाम देने वाले इदारे -------------में जमा करवा दें।

☆ तमाम वारिसीन की इज़ाज़त से मेरी किताबें ख़ास तौर पर इस्लामी कुतुब अगर घर में कोई ना पढ़े तो उन्हें जरूरतमंद तालिब इलमों या लाइब्रेरी में दे दें।

☆ मेरे मरने के बाद मेरी विरासत शरीअत के मुताबिक़ वारिसों में जल्द से जल्द तक़्सीम कर दें।

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

☆ विरासत की तक़्सीम से पहले इस बात की यक़ीन दहानी कर लें कि मेरे ज़िम्मे किसी की वाजिबुल अदा रक़म या ज़कात तो बाक़ी नहीं रहती,उसकी अदाएगी मेरे माल से कर दें।

☆ मेरी वफ़ात पर मौजूद लोगों से मेरे क़र्ज़ के बारे में मालूम कर लें,अगर क़र्ज़ मेरे माले विरासत से ज़्यादा हो तो मेरी दरख़्वास्त है कि मेरे विरसा या कोई ख़ैरख़्वाह उसको मेरी तरफ़ से अदा कर दे। अगर वो उसकी इस्तिताअत ना रखते हों क़र्ज मुझे माफ़ कर दें।

☆ अल्लाह सुबहानहु व तआला उनके लिए दुनिया वा आख़िरत के मामलात आसान करेगा।

## मेरे माल की तफ़सील

| | |
|---|---|
| सोना | |
| रूपये | |
| फ़ोरन करंसी | |
| जाएदाद,ज़मीन,मकान | |
| दीगर अशया | |
| | |
| | |
| | |
| | |

© AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

☆ मेरे पास मुसम्मी/मुसम्मात--------------------की-------------------बतौर अमानत है, वो उन्हें वापिस कर दें।

☆ मेरे पास मुसम्मी /मुसम्मात---------------------का -------------------क़र्ज़ वाजिबुल अदा है,वो उन्हें फ़ौरन अदा कर दें।

☆ अपने शौहर / बीवी,वालिदैन,शौहर के वालिदैन और दीगर तमाम रिश्तेदारों, दोस्तों और एहबाब से दरख़्वास्त करता/करती हूँ कि मुझे दिल से माफ़ कर दें। मेरे लिए मग़फ़िरत और आसान हिसाब की दुआ करें मैं उन सब लोगों से माफ़ी का/की दरख़्वासत है जिनको मेरी ज़ात से कोई दु:ख या तकलीफ़ पहुँची हो। ख़ुसूसन---------------

------------------------------ ---------------------------

दसतख़त तारीख़

1) गवाह ------------------------------ 2) गवाह ---------------------

© AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

“ऐ मेरे बेटे! नमाज़ क़ाइम करना और अच्छाई का हुक्म देना और बुराई से रोकना और तुम्हें जो भी तक्लीफ़ पहुँचे उसपर सब्र करना” ।

अल्लाह के रसूल ﷺ ने हमारे लिए अल्लाह ताला की सब से बड़ी नेमत विरासत में छोड़ी और फ़रमायाः

“ऐ लोगो! मैं तुम में दो चीज़ें छोड़ चला हूँ अगर इसे मज़्बूती से पकड़ लोगे तो कभी गुमराह ना होगे। एक अल्लाह की किताब क़ुरआन है और दूसरी मेरी सुन्नत”। (मौता इमाम मालिक)

अब्दुल्लाह बिन औफ़ाؓ से मालूम किया गया के क्या नबीﷺ ने कोई वसियत फ़रमाई थी,उन्होंने कहा नहीं,फिर उनसे पूछा गया के लोगों पर वसियत कैसे फ़र्ज़ हुई या उनको वसियत का हुक्म कैसे दिया गया ? उन्होंने कहा कि नबीﷺ ने क़ुरआन पर अमल करने की वसियत फ़रमाई थी (और क़ुरआन में वसियत का हुक्म वाज़ेह है) । (बुख़ारी)

दरअस्ल नबी ﷺ ने अपनी ज़िंदगी मुबारक में कभी ऐसा मालो अस्बाब जमा ही नहीं किया था जो क़ाबिले वसियत विरासत बनता। मंसबे रिसालत की अज़ीम ज़िम्मेदारियों और उसके तक़ाज़ों के पेशे नज़र उम्मत की ज़रूरियात को ही तर्जीह देते और जो भी अमवाल या तहाइफ़ आते वो भी फ़ौरन तक़्सीम फ़रमा देते, इसी तरह आप ﷺ के एहले ख़ाना भी क़नाअत और तवक्कुल अल्लाह पर पूरा ताव्वुन करते ।

उमरोؓ बिन हारिस, जो रसूल अल्लाहﷺ के साले (उम्मुल मोमिनीन सय्यदा जवेरियाؓ के भाई) हैं, रिवायत करते हैं कि रसूल अल्लाहﷺ ने अपनी वफ़ात के वक़्त ना कोई दिर्हम छोड़ा,ना दीनार और ना कोई लौंडी ग़ुलाम और ना कोई और चीज़। सिर्फ़ एक सफ़ेद खच्चर,चंद हथ्यार और कुछ ज़मीन थी जिसे आपﷺ वक़्फ़ कर चुके थे। (बुख़ारी)

सय्यदा आएशाؓ बयान करती हैं कि नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया:

“हम (पैग़म्बरों) का कोई वारिस नहीं होता,जो हम छोड़ जाएं वो सदक़ा है” (बुख़ारी)

©ALHUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

## अपने घर वालों को वसियत में मंदर्जाज़ैल कामों के बारे में सख़्ती से नसिहत करना चाहिएः

☆ मेरी वफ़ात पर वावेला ना करना,चेहरा व सीना ना पीटना,बाल ना नोचना और ना ही कपड़े वग़ैरा फाड़ कर हयाबाख़्ता होना। मेरी जुदाई के ग़म में मुँह से ख़िलाफ़े इस्लाम कोई बात ना निकालना वग़ैरह ।

☆ मेरा ग़ुस्ल,कफ़न,जनाज़ा,नमाज़े जनाज़ा,तदफ़ीन वग़ैरा सब सुन्नत के मुताबिक़ हों ।

☆ मेरी क़ब्र सादा और कच्ची रखना,उसपर संग मरमर का इस्तेमाल ना करना और ना ही मज़ार या ग़ैर इस्लामी इमारत तामीर करना (कोई ख़िलाफ़े सुन्नत काम हो तो मैं उस पर ज़िम्मादार नहीं हूँ)

☆ मेरी वफ़ात के बाद लम्बे सोग और ताज़ियती रसमों और बिदअतों से बचना।

☆ मेरे कुल तरके में से विरासत के अलावा जो हिस्सा बराए वसियत है उसे फ़ी सबीलिल्लाह ख़र्च करना,ऐसे म्यूज़ियम जहाँ बुत यादगार के तौर पर रखे हों, उन पर या आर्ट गेलरियों और ग़ैर इस्लामी वैलफ़ैर प्रोग्रामों वग़ैरा पर ख़र्च ना करना। सहाबी रसूल ﷺ सय्यदना हुज़ैफ़ा बिन यमान की वसियत कितनी हैरत अंगेज़ है, फ़रमाते हैः “जब मैं फ़ौत हो जाऊँ तो किसी को इत्तिला ना देना, मुमकिन है ये “नई” में शुमार हो और रसूल अल्लाह ﷺ ने नई से मना फ़रमाया है और ये बात मैंने ख़ुद सूनी है”। (सुनन तिर्मिज़ी)

नोटः'नई' किसी की वफ़ात का एलान करना,(इस में गर्ज़ शोहरत होती है इस लिए नाजाइज़ है)

### ग़ौर तलब आयात

مَنۡ عَمِلَ صَا لِحًا فَلِنَفۡسِهٖ ۚ وَ مَنۡ اَ سَآ ءَ فَعَلَيۡهَا ۫

ثُمَّ اِلٰی رَبِّکُمۡ تُرۡ جَعُوۡ نَ ۝ (الجا ثیه : 15)

“जो शख़्स नेक अमल करता है सो वो अपने लिए ही करता है और जो बुरे काम करता है उसका नुक़्सान उसी को पहुँचता है, फिर तुम सब को अपने रब की तरफ़ लौट कर जाना है”।

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

# रवाँगी की याद दहानी

يَآيُّهَاالْاِنْسَانُ اِنَّکَ کَادِحٌ اِلٰی رَبِّکَ کَدْ حاً فَمُلٰقِیْہِ.

(الانشقاق : 6)

"ऐ इंसान! बेशक तू चला जारहा है अपने रब की तरफ़ कुशाँ कुशाँ (आहिस्ता),आख़िर में तो तुझे उसी के सामने पेश होना है"।

ज़िंदगी पलक झपकते गुज़र जाती है कोई सौ साल भी जिए तो आख़िर में उसे जाना ही है,इस हक़ीक़त से किसी को भी इंकार नहीं।

قُلْ اِنَّ الْمَوْتَ الَّذِیْ تَفِرُّوْنَ مِنْہُ فَاِنَّہ‘مُلٰقِیْکُمْ ثُمَّ تُرَدُّ وْنَ
اِلٰی عٰلِمِ الْغَیْبِ وَالشَّھَادَ ۃِ فَیُنَبِّئُکُمْ بِمَا کُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَo

(الجمعہ : 8)

"कह दीजिए जिस मौत से तुम भागते फिरते हो वो तुम्हें पहुँच कर ही रहेगी फिर तुम छुपे खुले के जान्ने वाले की तरफ़ लौटाए जाओगे और वो तुम्हारे किए हुए तमाम काम बतला देगा"।

وَلَنْ یُّؤَخِّرَ اللّٰہُ نَفْساً اِ ذَ اجَآءَ اَجَلُھَا ط وَا للّٰہُ خَبِیْرٌم بِمَا
تَعْمَلُوْنَ o (المنافقون : 11)

"और जब किसी का मुक़र्रराह वक़्त आजाता है तो फिर उसे अल्लाह ताला हरगिज़ मोहलत नहीं देता और जो कुछ तुम करते हो उसे अल्लाह अच्छी तरह जानता है"।

फिर आख़िर वो दिन आ पहुँचता है जिस को आना ही था।

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَجَآءَ تْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ط ذٰلِکَ مَا كُنْتَ مِنْهُ

تَحِيْدُ o ( ق : 19 )

“आ पहुँची मौत की सख़्ती हक़ के साथ,यही है जिससे तू भागता फिरता था”।

قُلْ يَتَوَ فّٰكُمْ مَّلَکُ الْمَوْتِ الَّذِیْ وُكِّلَ بِكُمْ ثُمَّ اِلٰى

رَبِّكُمْ تُرْجَعُوْنَ o (السجدة : 11)

“कहदो कि मौत का फ़रिशता जो तुम पर मुक़र्रर किया गया है तुम्हारी जानें क़ब्ज़ कर लेता है,फिर तुम अपने पर्वरदिगार के तरफ़ लौटाए जाते हो”।

حَتّٰى اِ ذَا جَآءَ اَحَدَ كُمُ الْمَوْتُ تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا وَ هُمْ لَا

يُفَرِّطُوْنَ o (الانعام : 61 )

“जब तुम में से किसी को मौत आ पहुँचती है,उसकी रूह हमारे भेजे हुए (फ़रिशते) क़ब्ज़ कर लेते हैं और वो ज़रा कोताही नहीं करते”।

كَلَّآ اِذَا بَلَغَتِ التَّرَاقِیَ o وَقِيْلَ مَنْ سکتہ رَاقٍ o

وَّظَنَّ اَنَّهُ الْفِرَاقُ o وَالْتَفَّتِ السَّاقُ بِا لسَّاقِ o

اِلٰى رَبِّکَ يَوْمَئِذِ نِ ا لمَسَاقُo (القيٰمه : 30-26)

“हरगिज़ नहीं जब रूह हंसली तक पहुँचेगी और कहा जाएगा,“है कोई दम झाड़ करने वाला? ”और वो समझ गया के ये वक़्त जुदाई का है।और पिंडली से पिंडली जुड़ जाएगी तो अपने रब की तरफ़ उस दिन रवांगी होगी।

كُلُّ نَفْسٍ ذَآ ئِقَةُ الْمَوْتِ o (العنكبوت : 567)

“हर नफ़्स को मौत का ज़ायक़ा चखना है” ।

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

## मौत की याद और तक़्वा

मौत को याद रखना मुसलमान को तक़्वा के क़रीब करता है और इस तरह मौत के बाद आमाल की जवाबदही के ख़ौफ़ से वो गुनाहों से बचा रहता है।इसी लिए रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमायाः

“लज़्ज़तों को मिटाने वाली चीज़ यानी मौत को कसरत से याद किया करो”।

(सुनन तिर्मिज़ी)

## मौत का वक़्त

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के सिवा कोई नहीं जानता के किस को कब मौत आएगी,और जब आजाएगी फिर उसे कोई टाल नहीं सकेगा। क़ुरआन मजीद में अल्लाह ताला उसको यूँ बयान फ़रमाते हैंः

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ اَنْ تَمُوتَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ كِتٰباً مُّؤَجَّلاً ط

(آلِ عمران : 145)

“अल्लाह ताला के इज़्न के बग़ैर किसी को मौत नहीं आ सकती, उसका मुक़र्रर शुदा वक़्त लिखा हुआ है।

एक और जगह इर्शाद होता हैः

فَاِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ لَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَايَسْتَقْدِمُوْنَ ہ

(النحل : 61)

“फिर जब उसका वक़्त आजाएगा तो एक घड़ी ना पीछे रह सकते हैं और ना ही आगे बढ़ सकते हैं”।

अल्लाह के हाँ उमर की हद या मौत का वक़्त मुतय्यन किए जाने पर हदीसे रसूल ﷺ हैः

अल्लाह ताला ने रहम (शिकम माँ) पर एक फ़रिशता मुक़र्रर किया होता है वो (सबके हाल) अल्लाह ताला से अर्ज़ करता रहता है, “पर्वरदिगार! अभी नुत्फ़ा है,अब फुटकी हुआ है, अब गोश्त का लोथड़ा हो गया है”।

©AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

फिर जब अल्लाह ताला बच्चे की पैदाईश पूरी करना चाहते हैं तो फ़रिश्ता पूछता हैः

“पर्वरदिगार! ये मर्द होगा या औरत,बदबख़्त होगा या नेकबख़्त और इसकी रोज़ी क्या है,इसकी उमर क्या है ?”तब (जैसा अल्लाह ताला का हुक्म हो) सब कुछ माँ के पेट में होते हुए ही बच्चे के लिए लिख दिया जाता है”। (बुख़ारी)

## मूसा और मलक अल्मौत

रसूल अल्लाह ﷺ फ़रमाते हैंः

“मौत के फ़रिशते को मूसा के पास भेजा गया। फ़रिशता उनके पास पहुँचा तो उन्होंने उसकी आँख पर हाथ मारा। फ़रिशता अपने रब के पास लौट गया और अर्ज़ किया कि आप ने एक ऐसे बंदे के पास मुझे भेजा जो मौत नहीं चाहता। अल्लाह ताला ने फ़रमयाः“उनके पास वापस जाओ और कहो कि वो किसी बैल की पुश्त पर अपना हाथ रखलें,उनके हाथ के नीचे जितने बाल आएंगे उनमें हर बाल के बदले (उनकी उमर में) एक साल का इज़ाफ़ा कर दिया जाएगा”।
मूसा ने ये पैगाम सुनकर अर्ज़ कियाः
“ऐ मेरे रब! फिर उसके बाद क्या होगा”?
फ़रमायाः “फिर मौत होगी”।
मूसा ने अर्ज़ किया ,“(कि जब मौत ही आनी है) तब अभी इसी वक़्त”।

फिर उन्होंने अल्लाह ताला से दरख़्वास्त की के उन्हें अर्ज़े मुक़द्दस्सा (यरोशल्म) से इतना क़रीब करदें जितनी दूर से ढेला फेंका जा सकता हो।

नबी ﷺ ने फ़रमाया कि, “अगर मैं वहाँ होता तो कसीबे एहमर के निचले रास्ते के किनारे उनकी क़ब्र तुम्हें दिखाता”। (बुख़ारी)

क़िस्तलानी के मुताबिक़ फ़रिशता आदमी की सूरत में आया जबके मूसा की उमर 120 बरस हो चुकी थी।

© ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

मुसा ये समझे कि ये आदमी बिला इजाज़त कोई नुक़्सान पहुँचाने की नियत से आया होगा इसी लिए आँख पर मारा। मुस्लिम और नसाई में भी इसी मफ़्हूम की रिवायतें मन्क़ूल हैं।

## मौत की आरज़ू और तौबा

आज़माइश ख़्वा कितनी ही सख़्त क्यूँ ना हो मुसलमान को मौत की आरज़ू करने से रोका गया है ताकि वो अपनी ज़िंदगी को ग़नीमत समझते हुए अपना दामन ज़्यादा से ज़्यादा नेकियों से भरले और अगर बद अमल है तो शायद उसे तौबा की तौफ़ीक़ मिल जाए और इस तरह उमर का इज़ाफ़ा उसके लिए ख़ैर हो क्योंकि मौत अमल और तौबा दोनों का दरवाज़ा बंद कर देती है ।

सय्यदना अनसؓ से रिवायत है कि रसूल अल्लाहﷺ ने फ़रमायाः

“तुम में से कोई किसी तक्लीफ़ या मर्ज़ की वज्ह से जो उसको पहुँचे तंग आकर मौत की आरज़ू हरगिज़ ना करे अगर उसने ज़रूर ही करनी है तो ये अल्फ़ाज़ कहे”।

اَللّٰهُمَّ اَحْيِنِیْ مَا كَانَتِ الْحَيَاةُ خَيْرًا لِّیْ وَتَوَفَّنِیْ
اِذَا كَانَتِ الْوَفَاةُ خَيْرًا لِّیْ (متفق علیہ)

“ऐ अल्लाह! मुझे उस वक़्त तक ज़िंदा रखना जब तक ज़िंदगी मेरे लिए बहतर है और मुझे मौत उस वक़्त देना जब मौत मेरे लिए बहतर हो”।

## मौत की आगही और पेशन गोई

सय्यदा आयशाؓ से रिवायत है कि नबी ﷺ ने मौत मर्ज़ में अपनी बेटी सय्यदा फ़ातमाؓ को बुलाया,(बीमारी की कमज़ोरी की वज्ह से आहिस्ता से) पहले कुछ कहा तो वो रोने लगीं। फिर उनको (क़रीब) बुलाकर फिर कुछ कहा तो वह हंसदीं।

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

सय्यदा आएशाؓ बयान करती हैं कि रसूल अल्लाह ﷺ की वफ़ात के बाद एक मर्तबा मैं ने सय्यदा फ़ातमाؓ से मालूम किया के ये क्या बात थी जिस पर पहले आप रोदीं फिर ख़ुश हो गईं ?
उन्होंने बताया के नबी ﷺ ने फ़रमाया कि मैं इस बीमारी से बचने वाला नहीं तो मैं रो पड़ी फिर चुपके से मुझको फ़रमाया कि मेरे एहले बैत में से सब से पहले आप मेरे पास आओगी तो उस वक़्त मैं हँसने लगी। (बुख़ारी)

## मौत का मक़ाम

किस को किस मक़ाम पर मौत आएगी ? अल्लाह ताला इस बारे में इर्शाद फ़रमाते हैः

وَمَا تَدْرِىْ نَفْسٌۢ بِاَیِّ اَرْضٍ تَمُوْتُ ط اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ ٥

(لقمان : 34)

"कोई जान्दार नहीं जानता के किस सरज़मीन में उसे मौत आएगी । बेशक अल्लाह ताला ही जान्ने वाला बाख़बर है"।

जहाँ मौत आ जाएगी वहाँ से बचना मुशकिल है। क़ुरआन मजीद में एक और जगह इर्शाद फ़रमायाः

اَيْنَ مَا تَكُوْنُوْا يُدْرِكْكُّمُ الْمَوْتُ وَلَوْ كُنْتُمْ فِىْ بُرُوْجٍ مُّشَيَّدَةٍ ط

(النساء : 78)

"तुम जहाँ कहीं भी हो,मौत तुम्हें आपकड़ेगी अगरचे तुम मज़्बूत क़िलों में हो"।

रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमायाः

"जब अल्लाह ताला किसी बंदे को किसी ख़ास मक़ाम पर फ़ौत करने का फ़ैसला फ़रमाते हैं तो उसके लिए वहाँ कोई ज़रूरत पैदा करदेते हैं"। (एहमद ,तिर्मिज़ी)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

## परदेस में वफ़ात

सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर ؓ से रिवायत है कि एक शख़्स मदीना में फ़ौत हुआ जो मदीना ही की पैदाइश था। नबी करीम ﷺ ने उसपर नमाज़ पढ़ी फिर फ़रमाया, "आच्छा होता अगर वो दूसरे मुल्क में मरता"।
एक शख़्स ने अर्ज़ किया, 'क्यूँ ? या रसूल अल्लाह !

आप ﷺ ने फ़रमाया,"जब आदमी अपनी पैदाइश के मक़ाम के सिवा दूसरे मुल्क में मरे तो उस पैदाइश के मक़ाम से लेकर मौत के मक़ाम तक उसको जन्नत में (मज़ीद) जगह दी जाएगी"। (इब्ने माजा)

## बाबर्कत मक़ाम पर मौत और दफ़न की आरज़ू

ऐसी आरज़ू रखना कि किसी बाबर्कत सरज़मीन या मुक़द्दस मक़ामः मसलन बैतुल मक़्दस के क़रीब या हरमैन शरिफ़ैन या रियाज़ुल जन्ना में मौत आए या जन्नतुल बक़ी और जन्नतुल मोअल्ला में से कहीं दफ़्न हों,दुरुस्त है। (बहवाला बुख़ारी)

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

### क़यामत की तैयारी

सय्यदना अनस ؓ से रिवायत है कि एक एराबी (देहाती) ने रसूल अल्लाह ﷺ से पूछा, 'क़यामत कब होगी?'
रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, "तुम ने उसके लिए क्या तैयारी कर रखी है?"
एराबी ने कहा , 'अल्लाह और उसके रसूल ( ﷺ) से मोहब्बत (उनके दिए हुए एहकाम की इताअत और फ़र्मांबरदारी)'
आप ﷺ ने फ़रमाया, "फिर तुम उन्हीं के साथ होंगे जिनसे तुमने मोहब्बत रखी"। (मुत्तफ़िक़ अलैह)

# आख़री सफ़र की तैयारी

वफ़ात से पहले मौत के क़रीब शख़्स के पास मौजूद लोगों पर कुछ ज़िम्मेदारियाँ होती हैं। हमारे नबी ﷺ के मौत के मर्ज़ की हालत के हवाले से उन का यहाँ ज़िक्र किया जा रहा है ।

## क़रीब तरीन अज़ीज़ का क़ुर्ब

ज़्यादा बीमार इंसान के पास मौजूद लोगों का फ़र्ज़ है कि रोज़ बरोज़ बढ़ता मर्ज़ देखें तो ऐसे वक़्त में उसके नज़्दीक़ उस शख़्स को रहने का मौक़ा दें जिसकी रफ़ाक़त उसे ज़िन्दगी में ज़यादा मेहबूब रही हो और जिसे वो अपने हक़ में ज़्यादा पुरख़ुलूस समझता हो ताकि आख़री दिनों में वो वसियत के बारे में कुछ हिदायत देना चाहता हो या कोई भी और ज़रूरी बात कहना चाहता हो तो आसानी और एतमाद से अपने साथी से बयान कर सके।

अल्लाह के रसूल ﷺ ने वफ़ात से पहले आख़री हफ़ता अपनी मेहबूब बीवी सय्यदा आयशा ؓ के मकान में क़याम फ़रमाया और वही आख़री लम्हात तक आप ﷺ के क़रीब तरीन रहीं ।

## वसियत से मुताल्लिक़ याद दहानी

ऐसे मौक़े पर क़रीबुलमर्ग का साथी ख़ुद भी उसे याद दिला सकता है के उसके ज़िम्मे किसी का कुछ लेन देन या हुक़ूक़ुलइबाद में से कोई कमी बेशी हो तो वसियत के तौर पर बयान करदे और दूसरे मौजूद लोग उसे तहरीर (लिख) भी कर सकते हैं।

नबी करीम ﷺ ने वफ़ात से पाँच दिन पहले कुछ वसियतें फ़रमाईं । मसलनः

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

“तुम लोग मेरी क़ब्र को बुत ना बना लेना के उसकी पूजा की जाए”। (मौता इमाम मालिक)
एक और रिवायत के मुताबिक़ नबी ﷺ ने ये भी फ़रमाया,“यहूदो नसारा पर अल्लाह की लानत के उन्होंने अपने अँबिया और सालेहीन की क़ब्रों को सज्दा गाह बना लिया” (बुख़ारी)
सय्यदा आयशाؓ ने फ़रमाया कि रसूल अल्लाह ﷺ के छः या सात दीनार आप ﷺ की बीमारी में मेरे पास पड़े हुए थे,आप ﷺ ने मुझे हुक्म दिया कि उनको तक़्सीम करदो। तो मैं उनकी बीमारी में मशग़ूल होगई (भूल गई)। तब दूबारा आप ﷺ ने मुझ से पूछा के उन छः या सात दीनारों का क्या बना ? मैं ने कहा, “वल्लाह! मुझे तो आपकी बीमारी ने मशग़ूल कर दिया, (और मैं उन्हें भूल गई)”। फिर आप ﷺ ने वो दीनार मंगवाए और उनको अपनी हथेली पर रखा और फ़रमाया, “क्या ख़्याल है कि अल्लाह का नबी,अल्लाह अज़्वजल को इस हाल में मिले कि ये (दीनार) उसके पास हों”(एहमद)

## शोर और हंगामे से पर्हेज़

रसूल अल्लाह ﷺ की वफ़ात से चार रोज़ पहले किसी इख़्तिलाफ़ी मसले पर जब लोगों का शोर बुलंद होने लगा तो आप ﷺ ने फ़रमाया, “मेरे पास से उठ जाओ” (बुख़ारी)
फिर उसी रोज़ आप ﷺ ने तीन और बातों की वसियत फ़रमाईः
एक इस बात की वसियत के “यहूदो नसारा और मुशरिकीन को जज़ीरतुलअरब से निकाल देना ”दूसरे ये कि “वफ़ूद की इसी तरह नवाज़िश करते रहना जिस तरह आप ﷺ किया करते थे” तीसरे ये के “किताबो सुन्नत को मज़बूती से पकड़े रेहना”। (फ़त्हलबारी)

## पैग़म्बरों को इख़्तियार

सय्यदा आएशाؓ कहती हैं कि नबी करीम ﷺ हालते सेहत में फ़रमाया करते थे, “किसी नबी (की रूह) को उस वक़्त तक क़ब्ज़ नहीं किया जाता जब तक के वो जन्नत में अपना ठिकाना ना देख ले,फिर उसको इख़्तियार दे दिया जाता है”

©AL HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

(मौत या दुनिया में रहने की मज़ीद मोहलत का)।

जब आप ﷺ सख़्त बीमार हुए और उनका सर मेरी गोद में था तो उनको बेहोशी हुई फिर ज़रा होश में आए तो आँखें छत की तरफ़ लगादीं और फ़रमाने लगेः

"या अल्लाह! बुलंद रफ़ीक़ों में (रखना)"।

उस वक़्त मैं समझ गई के (आप को भी इख़्तियार दिया गया मगर) आप ﷺ ने हमारे पास रहने को इख़्तियार नहीं फ़रमाया। और फिर मैं पहचान गई कि ये उसी हदीस का मौज़ू है जो आप अपनी हालते सहत में फ़रमाया करते थे। तो आख़री बात जो आप ﷺ ने कही वो यह थीः

" اَللّٰهُمَّ الرَّفِيْقِ الْاَعْلٰى " ـ (بخاری)

## वही के ज़रिए वफ़ात की ख़बर

इब्ने अब्बासؓ से रिवायत है कि सय्यदना उमरؓ ने लोगों से पूछा, "ये जो अल्लाह ताला ने फ़रमायाः....اِذَا جَاءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْحُ तो फ़तह से क्या मुराद है ?",उन्होंने कहा के शेहरों और मेहलों का फ़ताह होना। फिर उमरؓ ने मुझ से कहा,"ऐ इब्ने अब्बास! आप(इस बारे में) क्या कहते हैं ?"
मैं ने कहा,"इस से तो मोहम्मद ﷺ की वफ़ात मुराद है या ये एक मिसाल है जिस में गोया के आप ﷺ को उनकी वफ़ात की ख़बर दी गई है"। (बुख़ारी)

## आख़री दुआएं

सय्यदा आयशाؓ फ़रमाती हैं,..रसूल अल्लाह ﷺ ये कलिमात कस्रत से पढ़ा करते थेः

" سُبْحَانَ اللّٰهِ وَ بِحَمْدِهٖ أَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ وَ أَتُوْبُ اِلَيْهِ " (مسلم)

"ऐ अल्लाह! मैं आपकी पाकीज़गी बयान करता हूँ,आपकी ख़ूबियों के साथ, मैं आप से बख़्शिश का तलबगार हूँ और आपकी बारगाह में तौबा करता हूँ"।

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

## आख़री इबादत

मौत के क़रीब ज़िंदगी की आख़री घड़ियों में आगर अल्लाह ताला की इबादत मसनल नमाज़ अदा करना चाहता है तो उसको वुज़ू कराने में या पहलू के बल करवट दिलाने में या अगर वो उठकर नमाज़ पढ़ने की हिम्मत पाता है तो हाज़िरीन को उठने में उसकी मदद करनी चाहिए।

(वफ़ात से पहले) रसूल अल्लाह ﷺ ने अपनी तबियत में (मर्ज़ की तेरा या चौदा दिन की मुद्दत के बाद) क़दरे बेहतरी मेहसूस की,चुनांचे दो आदमियों के सहारे चल कर नमाज़े ज़ोहर के लिए मस्जिद तशरीफ़ लाए। उनमें से एक अब्बास ؓ थे। उस वक़्त सय्यदना अबू बकर ؓ,सहाबा कराम ؓ को नमाज़ पढ़ा रहे थे वो आप ﷺ को देख कर पीछे हटने लगे। आप ﷺ ने इशारे से फ़रमाया कि पीछे ना हटे और लाने वालों को फ़रमाया, "मुझे इनके पेहलू में बिठादो"।
चुनांचे आप ﷺ को अबू बकर ؓ के पेहलू में बाएं तरफ़ बिठा दिया गया। फिर नबी ﷺ बैठे बैठे नमाज़ पढ़ने लगे और अबू बकर ؓ उसी तरह खड़े खड़े नबी ﷺ की नमाज़ की पैरवी करने लगे। और तमाम सहाबा कराम ؓ अबू बकर ؓ (की तक्बीर) के पीछे नमाज़ पढ़ रहे थे। (मुस्लिम)

## आख़री अमल

अल्लाह के रसूल ﷺ को तहारत और पाकीज़गी का हालते नज़ा में भी उतना ही ख़्याल था जितना कि अपनी हयाते मुबारका में हुआ करता था। आप ﷺ ने अपनी वफ़ात से क़ब्ल आख़री दिन अल्लाह ताला से मुख़ातिब होने के अलावा जो आख़री अमल फ़रमाया वो मिस्वाक करना था।

उम्मुल मोमिनीन सय्यदा आयशा ؓ बयान करती हैं:

मैं रसूल अल्लाह ﷺ को उनकी बीमारी की सख़्ती में अपने उपर टेक दिए हुए थी। इतने में अब्दुर्रहमान बिन अबी बकर ؓ (सय्यदा आयशा के भाई) एक ताज़ा मिस्वाक लिए हुए आए। मैं ने देखा कि आप ﷺ मिस्वाक को देख रहे हैं, मुझे मालूम था कि आप ﷺ मिस्वाक को पसंद फ़रमाते हैं।

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

मैं ने अर्ज़ किया, "क्या ये मिस्वाक आपके लिए लेलूँ"

आप ﷺ ने इर्शारा फ़रमाया, ("हाँ")

मैं ने अब्दुर्रहमानؓ से मिस्वाक लेकर तराशी और अपने दाँतों से नरम की। फिर पानी से साफ़ करके नबी करीम ﷺ को दी। आप ﷺ ने बहुत अच्छी तरह से उसको अपने दाँतों पर फेरा। (बुख़ारी)

## आख़री दम

हालत ज़्यादा नाज़ुक होने की वज्ह से मौत के क़रीब को ख़ुद ज़िक्र अज़्कार की हिम्मत ना हो तो उसके क़रीबी अज़ीज़ को उसपर हात फेरते हुए मोअव्वज़ात और मसनून दुआएं पढ़ कर दम करना चाहिए।

सय्यदा आयशाؓ ने रसूल अल्लाह ﷺ की वफ़ात से क़ब्ल उन्हें अपने सीने से टेक दे रखी थी और मोअव्वज़ात (सूरह इख़्लास,सूरह फ़लक़,सूरह नास) और रसूल अल्लाह ﷺ से हिफ़्ज़ की हुई दुआएं पढ़ कर आप ﷺ पर दम करती जाती थीं और बर्कत की उम्मीद में आप ﷺ ही का हाथ पकड़ कर आप ﷺ के ज़िस्म पाक पर फेरती जाती थीं। (बुख़ारी)

## आख़री कलाम

उम्मुल मोमिनीन सय्यदा आयशाؓफ़रमाती हैं, "वफ़ात के वक़्त रसूल अल्लाह ﷺ के सामने पानी का कटोरा रखा था। आप ﷺ अपने दोनों हाथ पानी में डालते और मुँह पर फेरते और फ़रमातेः

لَآاِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ اِنَّ لِلْمَوْتِ سَكَرَات

"अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं,बेशक मौत के लिए सख़्तियाँ हैं।" (बुख़ारी)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

आख़िर में आप ﷺ ने अपना हाथ उठाया और फ़रमायाः

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِی وَارْحَمْنِیْ وَاَلْحِقْنِیْ بِا لرَّفِیْقِ الْاَعْلٰی

“ऐ अल्लाह! मुझे बख़्शदे,मुझ पर रहम फ़रमा और मुझे रफ़ीक़े आला (अपनी ज़ाते बुलंद) से मिलादे”। (बुख़ारी)

यही आप ﷺ का आख़री कलाम था।
सय्यदा आयशाؓ फ़रमाती हैं, “अल्लाह के रसूल ﷺ मेरे सीने और ठोड़ी के दर्मियान फ़ौत हुए। वफ़ात के वक़्त आप ﷺ की तक्लीफ़ देखने के बाद मैंने कभी किसी के बारे में तक्लीफ़ कम होने का तसव्वूर नहीं किया”। (बुख़ारी)

सय्यदा आयशाؓ से रिवायत है,उन्होंने फ़रमाया, “जब नबी करीम ﷺ की वफ़ात हुई तो उस वक़्त उनकी उमर मुबारक 63 बरस थी”। (बुख़ारी)

اِنَّا لِلّٰهِ وِاِنَّآ اِلَیْهِ رٰجِعُوْنِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِ نَا وَمَوْ لَا نَا مُحَمَّدٍ وَّبَا رِکْ وَسَلِّمْ

© AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

# हुस्ने ख़ात्मा

बेशक मौत बरहक़ है लेकिन ख़ुशनसीब है वो जिसे ईमान पर मौत आए। मौत की सख़्तियों पर सब्र करना ईमान वालों की निशानी है ताकि उन्हें वो आख़री कामयाबी भी नसीब होजाए जो एक मुसलमान के लिए ज़िंदगी भर के मिशन की ज़ामिन बन जाए ।

क़ुरआन हमें बताता है कि फ़िरऔन के जादुगरों ने ईमान लाने के बाद फ़िरऔन की तरफ़ से मिलने वाली अज़ियत नाक सज़ाए मौत की धम्कियों के मौक़े पर एक दुआ मांगी थी :

رَبَّنَآ اَفۡرِغۡ عَلَيۡنَا صَبۡرًا وَّتَوَفَّنَا مُسۡلِمِيۡنَ ٥ (الاعراف:641)

ऐ हमारे रब! फ़ैज़ान कीजिए हम पर सब्र का और उठाइए आप हमें दुनिया से इस हाल में के हम आपके फ़र्मांबरदार हों" ।

एक फ़र्मांबरदार मुसलमान की एहम तरीन तमन्नाओं में से एक तमन्ना ये भी होनी चाहिए कि आख़िर में उसका ख़ात्मा ईमान पर हो और वो इस दुनिया से जब रुख़्सत हो तो उसका रब उस से राज़ी हो। ये बात सिर्फ़ तमन्ना ही की हद तक नहीं बल्कि उसके लिए दुआ भी करते रहना चाहिए और सिर्फ़ दुआ ही पर गुज़ारा नहीं बल्कि अच्छी,बाअमल ज़िंदगी गुज़ारने की कोशिश भी करनी चाहिए क्योंकि हुस्ने ख़ातमा की बुन्याद अच्छा अमल है और अच्छा अमल उस इल्म से वुजूद में आता है जो तमाम उलूम का सर्चशमा है यानी इलमे क़ुरआन ।

क़ुरआन का इल्म ही इंसान को मुसलमान और फिर बंदए मोमिन बनाता है,नीज़ इस इल्म से अल्लाह के हक़ और बंदों के हक़ की पहचान होती है, एहकामात का पता चलता है,फ़रज़ व ज़िम्मेदारियों की ख़बर होती है और यूँ जब वो अमल की दुनिया में क़दम रखता है तो हर मॉमले में अल्लाह की रज़ा और मुकम्मल फ़र्मांबरदारी ही पेशेनज़र होती है लेहाज़ा वो दुनिया व आख़िरत दोनो में सुर्ख़ुरू

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

हो जाता  है हक़ीक़त यही हुस्ने ख़ात्मा है।

## ख़ौफ़ और उम्मीद एक साथ

मौत की बेचैनियों में भी मोमिन को ख़ौफ़ और उम्मीद की दर्मियानी कैफ़ियत में रहना चाहिए,यानी अपने गुनाहों पर अल्लाह ताला की सज़ा का डर हो तो साथ अपने रब से रहमत की उम्मीद भी रखे।

रसूल अल्लाह ﷺ एक नौजवान के पास तशरीफ़ लाए जब्कि वो मौत और हयात की कशमकश में था। आप ﷺ ने दर्याफ़त फ़रमाया, "कैसे हो" ? उसने अर्ज़ किया, "या रसूल अल्लाह ﷺ !

अल्लाह ताला से रहमत की उम्मीद भी रखता हूँ और अपने गुनाहों से भी डरता हूँ'। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया,"ऐसे मौक़े पर किसी बंदे के दिल में जब ये दोनो चीज़ें पैदा होजाएं तो अल्लाह ताला उसे उसकी उम्मीद के मुताबिक़ दे देता है और जिस बात का उसे अंदेशा हो उस से महफ़ूज़ कर देता है"। (सुनन तिर्मिज़ी)

अल्लाह ताला से रहमत की उम्मीद रखना उसकी मोहब्बत की निशानी है। गुनाहों का एहसास,उनपर शर्मिंदगी और फिर सज़ा का डर उसकी ज़ाते आला से ख़शियत को बढ़ाता है यही दोनो कैफ़ियात यानी अल्लाह से मोहब्बत और ख़ौफ़ जिस बंदे के दिल में तमाम ज़िंदगी जमा रहें वो दुनिया छोड़ते वक़्त कामयाबी से हम्किनार होता और फ़ित्रते इस्लाम पर मरता है। इस नेमत के हुसूल के लिए भी दुआ की ज़रूरत है।

एक मर्तबा रसूल अल्लाह ﷺ ने बराअ बिन ऑज़िब से फ़रमाया था के सोते वक़्त बावज़ू और दाएं पेहलू पर लेटते हुए इस दुआ को पढ़ा करो और फ़रमाया के अगर तुम इस हालत में वफ़ात पागए तो तुमहारा ख़ातमा फ़ित्रते इसलाम पर होगा:

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَللّٰھُمَّ اَسْلَمْتُ نَفْسِیْ اِلَیْک، وَوَجَّھْتُ وَجْھِیْ اِلَیْکَ،
وَفَوَّضْتُ اَمْرِیْ اِلَیْکَ ، وَاَلْجَا تُ ظَھْرِیْ اِلَیْکَ،
رَغْبَۃً وَّ رَھْبَۃً اِلَیْکَ ، لَامَلْجَا وَلَا مَنْجَا مِنْکَ اِلَّآ اِلَیْکَ،
اٰمَنْتُ بِکِتَابِکَ الَّذِیْ اَنْزَلْتَ ،بِنَبِیِّکَ الَّذِیْ اَرْسَلْتَ . (بخاری)

"ऐ अल्लाह! मैंने अपने नफ़्स को अपकी सुपुर्दगी में दे दिया और अपने चेहरे (रुख़) को आप की तरफ़ कर लिया और अपने काम को आप के सुपुर्द कर दिया आप से ही अपना सहारा लिया इस हालत में के उम्मीद और ख़ौफ़ आप ही से है। सिवाए आपके ना कोई जाए पनाह है और ना कोई निजात ।
मैं आपकी किताब पर ईमान लाया हूँ जो आपने उतारी है और आपके नबी ﷺ पर ईमान लाया हूँ जिनको आपने भेजा है"। (बुख़ारी)

© ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

## कुछ नज़ा के बारे में

बाज़ औक़ात जान कुनी की तक्लीफ़ किसी इंसान पर बुहत तवील हो जाती है। इस मौक़े पर ना सिर्फ क़रीबुलमर्ग ख़ुद कर्ब और बेचैनी से दोचार नज़र आता है बल्कि उसके साथ ही साथ उसके अज़ीज़ो-अक़ारिब भी उसकी ये हालत देखकर अज़ियत और बेबसी मेहसूस करते हैं। ऐसी सूरत में क्या करना चाहिए?

### आसान मौत के लिए दुआ

दुआ की इंसान को ज़िंदगी भर ज़रूरत रहती है,मरने के क़रीब भी मुसलमान अपनी जान और अपना तमाम मॉमला अल्लाह के सुपुर्द करते हुए दुआओं और मुअव्वज़ात के ज़रिए से हिफ़ाज़त,मदद और अगली नई फ़ैसलाकुन दुनिया में दाख़िल होने से पहले अल्लाह से उसका फ़ज़ल तलब कर सकता है । मस्लन:

رَبِّ اغْفِرْوَارْحَمْ وَأَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ٥ (المؤمنون:811)

“ऐ मेरे रब! बख़्श दीजिए और रहम कर दीजिए और आप ही बख़्शने में बेहतरीन हैं"। (तिर्मिज़ी)

اَللّٰهُمَّ أَعِنِّىْ عَلٰى غَمَرَاتِ الْمَوْتِ وَسَكَرَاتِ الْمَوْتِ. (ترمذی)

“ऐ अल्लाह! मौत की सख़्तियों और बेहोशियों पर मेरी मदद फ़रमाइए"। (मुस्लिम)

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِىْ ذَنْبِىْ كُلَّهٗ ، دِقَّهٗ وَ جِلَّهٗ ، وَ اَوَّ لَهٗ وَا ٰ خِرَ هٗ ،

وَعَلَا نِيَتَهٗ وَ سِرَّ هٗ . (مسلم)

ऐ अल्लाह! मेरे तमाम गुनाह बख़्श दीजिए। छोटे और बड़े, अगले और पिछले,खुले और छुपे"

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْئَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ . (مسلم)

ऐ अल्लाह! मैं आपसे आपके फ़ज़्ल का सवाल करता हूँ" ।

ये वो मौक़ा है जब अल्लाह ताला से सब्से ज़यादा इस्तिग़फ़ार और फ़ज़्ल तलब करने की ज़रूरत होती है।

रसूल अल्लाह ﷺ फ़रमाते थे,“किसी शख़्स को उसका अमल जन्नत में नहीं ले जाएगा”। लोगों ने अर्ज़ किया,“या रसूल अल्लाह! ﷺ और आप (के आमाल) भी?,फ़रमाया“(हां) मेरे आमाल भी मुझको जन्नत में नहीं लेजाने के मगर ये के अल्लाह अपना फ़ज़्ल और अपनी रहमत करे लिहाज़ा जो आमाल करो,इख़्लास के साथ करो और एतदाल के साथ मेहनत करो और कोई तुम में से मौत की आरज़ू ना करे। क्योंकि अगर वो नेक है तो (ज़िंदा रहने में फ़ायदा है) मज़ीद नेकियां करेगा। और अगर बद है तो (भी ज़िंदा रहने में) ये उम्मीद है के शायद अल्लाह की बार गाह में तौबा करे” । (बूख़ारी)

इन मस्नून दुआओं को रोज़ के अज़्कार का हिस्सा बना लिया जाए तो ज़िंदगी के आख़री लम्हात में भी ज़ुबान पर जारी हो जाने की उम्मीद की जा सकती है।

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

और अगर मरीज़ सकरात (मौत की बेहोशी) में है,तो फिर ये ज़रूरी है कि दूसरे मौजूद लोग उसके लिए कसरत से और खुलूसे दिल से दूआ करें कि उसकी ये तक्लीफ़ उसके लिए दुनिया और आख़िरत की आज़माइश में कमी और आसानी का सबब बन जाए,क्योंकि ये तो अल्लाह ताला ही बेहतर जानता है के उसके लिए आसानी की उस वक़्त ज़रूरत है या बाद में ।

बेहर हाल अल्लाह ताला की रहमत और मग़फिरत बहुत वसी (फैली हुई) है। उससे दोनों आलम के लिए रहम और आसानी तलब की जाए ।

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لَهٗ وَارْحَمْهُ (मर्द के लिए)

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لَهَا وَارْحَمْهَا (औरत के लिए) (मुस्लिम)

ऐ अल्लाह! इस मर्द/औरत को बख़्श दीजिए और इस पर रहम कर दीजिए" ।

رَبِّ يَسِّرْ وَلَا تُعَسِّرْ

"ऐ पर्वरदिगार! आसानी कर दीजिए और मुशकिल से निकाल दीजिए"

अगर वालिदैन में से कोई इस हालत में है तो ये भी साथ कहा जाए।

رَبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيٰنِيْ صَغِيْرًا (بنی اسرائیل :24)

"ऐ पर्वरदिगार! इनपर ऐसे ही रहम व शफ़क़त फ़रमाइए, जैसा कि इनहोंने रहम व शफ़क़त से मुझे बचपन में पाला" ।

बुरी मौत से पनाह और ख़ात्मा ख़ैर के लिए मज़ीद दुआएं सफ़्हा नंबर ( 325,326,328 ) पर देखिए।

## अल्लाह के बारे में अच्छा गुमान

मौत के क़रीब का शिद्दत की तक्लीफ़ में भी बहैसियत मुसलमान अपने रब के बारे में गुमान अच्छा होना चाहिए। रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया:

© AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

"तुम में से हर एक को इस हाल में मौत आए के वो अल्लाह अज़्वजल के साथ अच्छा गुमान रखता हो"। (मुस्लिम)

इस बारे में भी क़रीबुलमर्ग के अज़ीज़ो अक़ारिब मदद कर सकते हैं,जैसा के सहाबा करामؓ का तरीक़ा भी था के "सय्यदना उमर व उसमान व इब्ने मसऊद व अनस और दुसरे सहाबा रज़ी अल्लाह ताला अनहुम इस बात को पसंद करते थे के वफ़ात के वक़्त बंदे को उसके नेक आमाल याद दिलाएं ताकि वो अपने रब के मुताल्लिक हुस्ने ज़न रखे" । (बहवाला इब्ने अबी अद्दुनिया किताब अलमोतज़रीन)

सय्यदा आयशा ؓ से मरवी है कि रसूल अल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया!

"जो शख़्स अल्लाह से मुलाक़ात को पसंद करता है, अल्लाह ताला भी उससे मिलना चाहते हैं और जो शख़्स अल्लाह से मुलाक़ात को नापसंद करता है, अल्लाह ताला भी उस से मुलाक़ात को नापसंद फ़रमाते हैं"।

सहाबा कराम ने अर्ज़ किया, 'या रसूल अल्लाह! अल्लाह ताला से मुलाक़ात के साथ तो मौत से मिलने की कराहत भी आजाती है और मौत को हमसब ही बुरा जानते हैं'। फ़रमाया,"नहीं ये सिर्फ़ मौत के वक़्त है,जब मरते वक़्त किसी शख़्स को अल्लाह ताला के रहम तो मग़फ़िरत की ख़ुशख़बरी दी जाती है तो वो अल्लाह से मिलना चाहता है और अल्लाह भी उस से मुलाक़ात को पसंद फ़रमाते हैं और जब उसे अज़ाब की ख़बर दी जाती है तो वो शख़्स अल्लाह से मुलाक़ात को नापसंद करता है और अल्लाह भी उस से मुलाक़ात को नापसंद फ़रमाते हैं"।

इसी लिए जब मौत की सख़्ती से बीनाई ख़त्म होने लगे और सीने में सांस अटकने लगे और बदन के रोंग्टे खड़े होने लगें तो उस वक़्त मुसलमान को मुलाक़ात का तसव्वूर करके ख़ूशी होती है जबके काफ़िर ग़मगीन और मलूल होता है।

नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया:
"दुनिया मोमिन के लिए क़ैद ख़ाना है और काफ़िर के लिए जन्नत है"।
(मुसलिम)

अब्दुल्लाह बिन उमरؓ कहते हैं,
रसूल अल्लाह ﷺ फ़रमाया:
"मौत मोमिन के लिए तोहफ़ा है"।(बैहक़ी)

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

## कलिमा तय्यबा की तल्क़ीन

अगर अंदाज़ा हो के क़रीबुलमर्ग उसे हालते नज़ा में सुन सकता है तो उसके पास हसरत और मायूसी की बात करने कि बजाए ऐसी बातें की जाऐं जो उसके हक़ में फ़ायदामंद साबित हों जैसा के हदिसे पाक है।

"जब तुम किसी मरीज़ या मरनेवाले के पास हो,तो सिर्फ़ अच्छी बात कहो। क्योंकि फ़रिशते तुम्हारी बात पर आमीन कहते हैं" । (मुस्लिम)

और ये बात हर मुसलमान के अक़ीदे का लाज़्मी हिस्सा होना चाहिए कि सब से अच्छी और अफ़्ज़ल बात कलिमा तौहीद (कलिमा तय्यबा) है।

रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया:

"जिसने भी कहा لَآاِلَهَ اِلَّااللهُ وَاللهُ اَكْبَرْ तो अल्लाह उसकी तस्दीक़ करते हुए फ़रमाते हैं: “मेरे सिवा कोई माबूद नहीं और मैं सबसे बड़ा हूँ” और जब वो बंदा ये कहता है لَآاِلَهَ اِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَاشَرِيْكَ لَهُ तो आप ﷺ ने फ़रमाया के अल्लाह ताला फिर ये फ़रमाते हैं:“ मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, मैं अकेला हूँ मेरा कोई शरीक नहीं” और फिर बंदा ये भी केह दे لَآاِلَهَ اِلَّااللهُ وَحْدَهُ لَاشَرِيْكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ اَلْحَمْدُ तो अल्लाह ताला फ़रमाते हैं:“मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, मेरे लिए ही तारीफ़ है और मेरी ही बादशाही है”और वो बंदा फिर कहता है لَآاِلَهَ اِلَّااللهُ وَلَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَاِلَّا بِاللّٰهِ तो अल्लाह ताला फ़रमाते हैं:“मेरे सिवा कोई माबूद नहीं गुनाह से फेरना और नेकी करने की हिम्मत देना भी सिर्फ़ मेरा काम है”।

और नबी करीम ﷺ फ़रमाया करते थे: “जो शख़्स ये कलिमात अपनी बीमारी में पढ़े फिर वो उसी में मर जाए तो उसे जहन्नम की आग नहीं खाएगी” (वो जहन्नम में नहीं जाएगा)। (तिर्मिज़ी)

©AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

इस “कलमए पाकीज़ा” की नज़ा के आलम में भी ज़रूरत होती है। इसलिए मरने वाले के पास दूसरा मुसलमान उसे कलिमा तय्यबा की तल्क़ीन इस तरीक़े से करे कि (ये कहने की बजाए कि “कलिमा पढ़ो”) ख़ुद لَآ اِلٰهَ اِلَّا الله का विर्द उसके सामने शुरू करदे ताकि उसे याद आजाए। जब वो ख़ुद अपनी ज़ुबान से अदा करदे तो फिर और तल्क़ीन से रुक जाए और अगर इसके बाद उसने कोई और बात केहदी तो फिर से कलिमा उसके सामने पढ़ना शुरू करदे ताकि उसकी ज़ुबान पर आख़री बात यानी कलिमए لَآ اِلٰهَ اِلَّا الله ही जारी हो और वो इंशा अल्लाह जन्नत का हक़दार बन जाए,हदीसे मुबारक है:

“अपने मरने वाले को لَآ اِلٰهَ اِلَّا الله की तल्क़ीन किया करो”। (मुस्लिम)

अबू दाऊद की एक रिवायत के मुताबिक़“अगर उसने कह दिया तो आख़िर में जन्नत में चला जाएगा”। एक और हदिसे रसूल ﷺ है फ़रमाया, “अपने मरने वालों को ये सिख्लाया करो”:

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ الْحَلِيْمُ الْكَرِيْمُ ، سُبْحَانَ اللّٰهِ

رَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ

अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, हौसले वाला सख़ी है अल्लाह पाक है, बड़े अर्श का रब है,सब तारीफ़ें अल्लाह रब्बुल आलमीन के लिए हैं,

लोगों ने पूछा,'ऐ अल्लाह के रसूल! ये कलिमा ज़िंदों के लिए कैसा है? आप ﷺ ने फ़रमाया, ”बहुत अच्छा, बहुत अच्छा”। (इब्ने माज़ा)

## दो नापसंदीदा मगर बेहतर चीज़ें

नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया”दो चीज़ों को आदमी नापसंद करता है' पहली चीज़ मौत है हालाँकि मौत मोमिन के लिए फ़ितनों के मुक़ाबले में बेहतर है' दूसरी चीज़ माल की कमी है हालांकि माल की कमी (रोज़े मेहशर) आसान हिसाब का सबब बनेगी”। (एहमद)

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

# अलामात

अल्लाह ताला अपने फ़र्मांबर्दार और अतॉअत गुज़ार मोमिन बंदों पर मौत के वक़्त भी कुछ ऐसी अलामात ज़ाहिर फ़रमा देते हैं, जिन्हें देख कर उनका ख़ात्मा ख़ैर पर होने का अंदाज़ा किया जा सकता है।

अल्लाह के रसूल ﷺ की तरफ़ से बताई गई इन निशानियों या अलामात के अलावा किसी क़िस्म की निशानी से कोई अंदाज़ा लगाना या कोई हतमी राए क़ायम कर लेना हमारे लिए जाइज़ नहीं ।

© AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

## • कलिमए तौहीद की तौफ़ीक़ मिल जाना

जैसा कि पहले भी ज़िकर हुआ,कलिमे की फ़ज़ीलत मरते दम तक है तो माज़ؓ बिन जबल कहते हैं के रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, "मरते वक़्त जिस की ज़ुबान पर आख़री अल्फ़ाज़ ये होंगे لَآاِلٰہَ اِلَّااللّٰہ "वो जन्नत में दाख़िल होगा"। (अबू दाऊद)

## • पेशानी पर पसीना आना

बरीदाؓ बिन अलख़सीब बयान करते हैं की वो ख़ुरासान से अपने बीमार भाई की अयादत को गए, देखा के मौत व ज़िंदगी की कशमकश में भाई की पेशानी पसीने से शराबोर थी। तो उन्होंने कहा,"अल्लाहु अक्बर" मैं ने रसूल अल्लाह ﷺ को ये फ़रमाते सुना है :

"मौत के वक़्त मोमिन की पेशानी पर पसीना होता है"। (एहमद)

## • जुमा की रात या जुमा के दिन मौत आना

अब्दुल्लाह बिन उमरोؓ कहते हैं, रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया:
"जो मुसलमान जुमा के दिन या जुमा की रात फ़ौत हो,अल्लाह ताला उसे क़ब्र के फ़ितने से बचा लेंगे"।
(वो मुसलमान को जो ज़िंदगी में बाअमल था,नाम का मुसलमान नहीं था) (एहमद)

## क़यास

अलामात से हटकर बज़ाहिर अच्छे आमाल करने वाले मुसलमान के लिए भी ये क़यास करने की इजाज़त नहीं कि अल्लाह ने उस के साथ अच्छा ही मॉमला किया होगा। उम्मे अला जो एक अंसारी ख़ातून थीं और उनहोंने नबी करीम ﷺ से बैत की थी,बयान करतीं हैं कि:

अल्लाह के रसूल ﷺ ने क़ुरा डालकर मोहाजिरीन को बाँट दिया था और हमारे हिस्से में उस्मान ؓ बिन मज़ऊन आए। हमने उनको हमारे घर में उतारा। वो उस बिमारी में मुब्तिला हुए जिसमें उन्होंने वफ़ात पाई। जब उनकी वफ़ात हुई और हम ग़ुस्लो कफ़न से फ़ारिग़ हुए तो रसूल अल्लाह ﷺ तशरीफ़ लाए। मेरी ज़ुबान से निकल गया,अबू अल साइब! (ये उस्मान ؓ बिन मज़ऊन की कुन्नियत थी) अल्लाह ताला तुम पर रहम करे मैं इस बात की गवाही देती हूँ कि अल्लाह ने तुमको (आख़िरत में) इज़्ज़त दी'।

ये सुनकर नबी ﷺ ने फ़रमाया, "तुम्हें कैसे मालूम हुआ कि अल्लाह ताला ने उनको इज़्ज़त दी? "मैंने अर्ज़ किया, 'या रसूल अल्लाह मेरे मां बाप आप पर क़ुर्बान,फिर और किन लोगों को अल्लाह ताला इज़्ज़त देंगे?'

रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया,"अल्लाह की क़सम! उस्मान की मौत आ पहुँची है और मैं उनके लिए बेहतरी की उम्मीद तो रखता हूँ (लेकिन यक़ीन से कुछ नहीं कह सकता) वल्लाह,मैं अल्लाह का रसूल हूँ लेकिन मुझे भी मालूम नहीं के मेरे साथ क्या होगा"। (बुख़ारी)

इसी तरह बॉज़ औक़ात मरते हुए शख़्स को हालते नज़ा में देखकर उसके जन्नती या जहन्नमी होने पर क़यास कर लिया जाता है,ये सरासर लग़्व तर्ज़े अमल है। जांकुनी बरहक़ है और ये सख़्ती किसी ना किसी हद तक हर एक पर तारी होती है।

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

## • गवाही

एक हदीसे क़ुदसी है:

“जो मुसलमान भी फ़ौत हो जाए और चार क़रीबी पड़ोसी उसके हक़ में भलाई की गवाही दें तो अल्लाह ताला फ़रमाते हैं:

“मैं ने तुम्हारी बात मानली और जो तुम नहीं जानते उसे भी मॉफ़ कर दिया”(एहमद)

मंदर्जाबाला अहादीस की रोशनी में ये साबित हुआ कि अच्छे अमल की गवाही देना बजा है लेकिन उन (बज़ाहिर) अच्छे आमाल पर अल्लाह ताला ने किसके साथ क्या मॉमला करना है,ये कोई नहीं जान सकत। उसपर इंसानों की तरफ़ से क़यास आराई करना,ये मना है।

बाज़ औक़ात बज़ाहिर तमाम ज़िंदगी अच्छे आमाल करने वाले इंसान का आख़री अमल उसके लिए बदबख़्ती का सबब बन सकता है या अच्छे आमाल के साथ नियत में इख़्लास की ग़ैर मौजूदगी से तमाम किया कराया ज़ाए होसकता है।
वल्लाह आलम

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

### रब से हमकलामी

अदी बिन हातिम ؓ बयान करते हैं कि रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया,
“तुम मेंसे कोई शख़्स ऐसा नहीं जिस से उसका रब बात ना करेगा,और वो भी यूँ कि उनके दर्मियान कोई तर्जुमान ना होगा और ना कोई पर्दा”(बुख़ारी)
अबू मूसा अशरी ؓ की रिवायत के मुताबिक़ रसूल अल्लाह ﷺ का इर्शाद है,“जन्नत अलअदन” में मेरी क़ौम और उसके रब के दर्मियान सिवाए किब्रियाई की चादर के और कुछ हाइल ना होगा”। (बुख़ारी)

# वफ़ात के बाद

## اِنَّا لِلّٰہِ وَ اِنَّآ اِلَیۡہِ رَا جِعُوۡ نَ

☆ जब रूह निकल जाए तो मय्यत की आँखें बंद कर दी जाएं।

सय्यदा उम्मे सलमाؓ से रिवायत है की रसूल अल्लाह ﷺ अबू सलमाؓ के पास तशरीफ़ लाए जब्कि (वफ़ात के बाद) उनकी आँखें खुली हुई थीं तो आप ﷺ ने उनकी आँखें बंद करदीं फिर फ़रमाया:

"बेशक जब रूह क़ब्ज़ की जाती है तो निगाहें उसका पीछा करती हैं"।

उसके बाद आप ﷺ ने यूँ दुआ फ़रमाई:

اَللّٰھُمَّ اغۡفِرۡلِاَبِیۡ سَلَمَۃَ وَارۡفَعۡ دَرَجَتَہٗ فِی الۡمَھۡدِیِّیۡنَ وَاخۡلُفۡہُ
فِیۡ عَقِبِہٖ فِی الۡغَابِرِیۡنَ وَاغۡفِرۡلَنَا وَلَہٗ یَارَبَّ الۡعَالَمِیۡنَ ‘
وَافۡسَحۡ لَہٗ فِیۡ قَبۡرِہٖ وَنَوِّرۡلَہٗ فِیۡہِ . (مسلم)

"ऐ अल्लाह! अबूसलमाؓ को बख़्श दीजिए और उसके दरजे हिदायत याफ़्ता लोगों में बुलंद फ़रमाइए और इसके पस्मांदगान की हिफ़ाज़त फ़रमाइए। या रब्बलआलमीन हमें भी बख़्श दीजिए और इसे भी बख़्श दीजिए और इसकी क़ब्र कुशादा कर दीजिए और उसे नूर से रोशन कर दीजिए"।

(मय्यत के हक़ में ये दुआ करते वक़्त अबू सलमाؓ के नाम की जगह मय्यत का नाम लिया जाए)

☆ मय्यत के हाथ पाँव सीधे करदिए जाएं।

☆ सर के निचे से सिर्हाना (तक्या) निकाल दिया जाए।

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

☆ मसनूई दांत या कॉन्टेक्ट लेन्ज़ (Contact Lense) लगे हैं और आसानी से निकाले जासकते हैं,तो निकाल दिए जाएं। ज़ेवरात वग़ैरा भी शुरू में ही उतार दिए जाएं, मुम्किन है बाद में जिस्म में तनाव आजाने की वज्ह से उतारने में मुश्किल हो।

☆ मय्यत का मुँह खुला हो तो कपड़े की एक चौड़ी सी पट्टी ठोड़ी के नीचे से निकाल कर सर के ऊपर बाँध दी जाए। एक और पट्टी से दोनो पाँव मिलाकर हलके से बाँध दिए जाएं और बाद में ग़ुस्ल के वक़्त ये पट्टियाँ खोल दी जाएं

☆ अब मय्यत को चादर से ढाँप दिया जाए। रसूल अल्लाह ﷺ की वफ़ात हुई तो उन्हें धारीदार चादर से ढाँप दिया गया था। (बहवाला बुख़ारी)

☆ बहुत गर्मी के मौसम में मय्यत को कफ़न दफ़न के इंतेज़ार तक किसी ठंडे कमरे में रखें।

## मय्यत की और अपनी भलाई के लिए

☆ क़रीबी रिश्तों का इस मौक़े पर ग़मज़दा होना या रोना फ़ित्री बात है मगर चीख़ना चिल्लाना और ज़ुबान से वावेला करना सख़्त मना है,इसकी बजाए दुआ की जाए।

अबू सलमा ؓ की मय्यत पर घरवालों में से कुछ लोग चीख़ने और नोहा करने लगे तो नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया:

“तुम अपनी जानों के लिए भलाई की दुआ किया करो। इसलिए के फ़रिशते जो तुम कहते हो,उसपर आमीन कहते हैं”। (मुसलीम)

## ख़ूबियों का तज़्किरा

☆ मरने वाले की ख़ूबियों और नेकियों का ज़िक्र करना चाहिए उसकी बुराइयों को याद करना मना है,क्योंकि उसका मामला अब अल्लाह ताला के पास पहुँच चुका। (सुनन निसाई)

सय्यदा आएशा ؓ कहती हैं कि रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया:

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

“मरने वालों को बुरा ना कहो जो कुछ उन्होंने आगे भेजा था वो उसका बदला पाचुके”   (निसाई)

☆ जिस मुसलमान मय्यत पर दो या दो से ज़्यादा मुसलमान गवाही दें,यानी तारीफ़ करें कि ये अच्छा आदमी था,अल्लाह और उसके रसूल ﷺ से मोहब्बत रखने वाला था,तो अल्लाह सुबहाना ताला उस मय्यत पर रहम फ़रमाते हैं। (बहवाला सही बुख़ारी)

## पड़ोसी की गवाही

☆ जैसा के पहले भी गवाही के नाम से एक हदीसे क़ुदसी बयान हुई के:
“जो मुसलमान भी वफ़ात पाए और चार क़रीबी पड़ोसी उसके हक़ में भलाई की गवाही दें तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त फ़रमाते हैं,मैंने तुम्हारी बात मान ली,और जो तुम नहीं जानते उसे भी मॉफ़ करदिया”।   (मुस्नद एहमद)

ख़ासकर ये गवाही उसी वक़्त मुम्किन और क़ाबिले क़ुबूल हो सकती है जबकि ज़िंदगी में पड़ोसी के साथ ताल्लुक़ात व मॉमलात भी अच्छे रखे गए हों।

एक मर्तबा रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया:
“जिबरईल पड़ोसी के बारे में इतनी वसियतें करते रहे हत्ताके मुझे ख़्याल हुआ कि वो उसको वारिस ही बना देंगे”।   (बुख़ारी)

## मय्यत को बोसा देना

☆ मय्यत को बोसा देना जाइज़ है ।

सय्यदा आयशा ؓ ने फ़रमाया, रसूल अल्लाह ﷺ ने उस्मान ؓ बिन मज़ऊन की मय्यत को रोते हुए बोसा दिया था और अश्क मुबारक उस्मान ؓ के चहरे पर गिर रहे थे।   (अबू दाऊद,तिर्मिज़ी)

सय्यदना अबू बकर ؓ, नबी करीम ﷺ की वफ़ात के बाद उनके पास पहुँचे,उनके चहरे मुबारक से कपड़ा उठाकर झुके और आँखों के दर्मियान बोसा देकर रो दिए । (बहवाला बुख़ारी)

© AL HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

## मौत की ख़बर देना

मरहूम के रिश्तेदारों,दोस्तों और नेक लोगों को मौत की ख़बर या इत्तिला करना मस्नून है,ताकि वो उसके जनाज़े में हाज़िर होजाएं। ताहम जैसा कि पहले भी ज़िक्र हुआ,इस इत्तिला को ऐलान की शक्ल देना और एहम मुक़ामात पर उसकी शोहरत करना मना है और ये "नई" में शुमार होता है ।

(ज़माना जाहिलियत में किसी की वफ़ात पर कुछ लोग ऐसे मुक़र्र कर लिए जाते थे जो आबादियों में जाकर ढोल पीटने के साथ साथ नोहा व बैन करके वफ़ात का ऐलान करते। जितने बड़े सरदार की मौत होती, उतने ज़्यादा एहतमाम के साथ दूरदराज़ तक ये ऐलान किया जाता था। इस अमल को "नई" कहा जाता था)

सहाबीए रसूल ﷺ हुज़ैफ़ा ؓ बिन यमान इस बारे में इतने मोहतात थे कि जब भी उनका कोई अज़ीज़ वफ़ात पा जाता तो कहते ,"किसी को इत्तिला ना करना मुझे डर है के ये "नई" में शुमार ना होजाए क्योंकि मैंने नबी करीम ﷺ को "नई" करने से मना फ़रमाते हुए सुना है" । (एहमद)

## बेहतरीन आदाबे इत्तिला

किसी जाहिलाना रसम के बग़ैर किसी मुसलमान को किसी दुसरे मुसलमान की वफ़ात की ख़बर या इत्तिला दीजाए तो ऐसा करने वाला साथ ये दर्ख़्वास्त करे कि मरने वाले के हक़ में मग़फ़िरत की दुआ किया करें जैसा के रसूल अल्लाह ﷺ ने नजाशी ؓ की वफ़ात की इत्तिला के बाद फ़रमाया:
"अपने भाई के हक़ में इस्तिग़फ़ार करो"। (मुसनद एहमद)

नबी करीम ﷺ ने नजाशी के इलावा ज़ैद ؓ, जाफ़र ؓ, और अब्दुल्लाह बिन रवाहा ؓ की शहादत की इत्तिला भी मुसलमानों को दी । (बहवाला सही बुख़ारी)

इसी तरह इत्तिला देने वाला ये भी कह सकता है कि मरने वाले की तरफ़ से आपके हक़ में कभी कोई कोताही या ज़्यादती होगई हो तो उसे मॉफ़ करदें।

© AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

## मौत की ख़बर सुन्ने वाला क्या कहे?

इर्शादे बारी ताला है:

... وَ بَشِّرِ الصّٰبِرِيْنَ o الَّذِيْنَ اِذَآ اَصَابَتْهُمْ مُّصِيْبَةٌ ۙ

قَالُوْٓا اِنَّا لِلّٰهِ وَ اِنَّآ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ o اُولٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوٰتٌ

مِّنْ رَّبِّهِمْ وَرَحْمَةٌ ۟ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُوْنَ o

(البقره : 155,156,157)

"और ख़ुशख़बरी दीजिए उन सब्र करने वालों को कि जब भी कोई मुसीबत आती है तो कह दिया करते हैं के हम ख़ुद अल्लाह ही की मिल्कियत हैं और हम उसी की तरफ़ लौटने वाले हैं उनपर उनके रब की नवाज़िशें और रेहमतें हैं और यही लोग हिदायत याफ़्ता हैं"

लिहाज़ा इत्तिला सुन्ने वाले के लिए ज़रूरी है कि ये अल्फ़ाज़ कहे:

اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ

एक हदिसे मुबारक में भी मरने की इत्तिला पर यही अल्फ़ाज़ बताए गए।

सय्यदा उम्मे सलमाؓ कहती हैं कि रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया,"जब भी कोई मुसलमान मुसीबत के वक़्त ये दुआ मांगे जिसका अल्लाह ने हुक्म दिया है तो अल्लाह ताला उस मुसलमान को पहले से बेहतर बदला अता फ़रमाएंगे":

اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ . اَللّٰهُمَّ اْجُرْنِىْ فِىْ مُصِيْبَتِىْ

وَاَخْلِفْ لِىْ خَيْرًا مِّنْهَا . (مسلم)

"हम सब अल्लाह के लिए है और हमें उसी की तरफ़ पलटना है। या अल्लाह मुझे मेरी मुसीबत के बदले बेहतर अजर दे और इस से बेहतर बदला अता फ़रमा"।

©AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

## ज़ालिम काफ़िर के मरने की ख़बर पर

सय्यदना इब्ने मसूदؓ से मरवी है कि मैं रसूल अल्लाह ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और बताया 'या रसूल अल्लाह !अल्लाह पाक के दुशमन अबू जहल को क़त्ल फ़रमादिया'। आप ﷺ ने फ़रमाया:

اَلْحَمْدُلِلّٰهِ الَّذِیْ نَصرَ عَبْدَهٗ وَاَعَزَّ دِیْنَهٗ

“तारीफ़ उस अल्लाह की जिसने अपने बंदे की मदद की और अपने दीन को ग़ालिब किया”

## किसी मुख़ालिफ़ और तक्लीफ़देह शख़्स की वफ़ात पर

सय्यदना अनसؓ बिन मालिक से मरवी है के एक शख़्स नबी करीम ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया कि फ़ुलाँ पड़ोसी हमें तक्लीफ़ देता है ।आपने ﷺ ने फ़रमाया:

“उसकी तक्लीफ़ पर सब्र करो और अपनी तक्लीफ़ से उसे मेहफ़ूज़ रखो”।

अभी कुछ ही देर गुज़री थी के वो आप ﷺ के पास आया और बताया कि वो पड़ोसी मर गया। आप ﷺ ने फ़रमाया:

كَفٰى بِا لدَّهْرِ وَاعِظًا وَّالْمَوْتِ تَفَرُّقًا . (ابن سنی 198)

“ज़माने (के वाक़ेआत) इब्रत के लिए काफ़ी हैं और मौत जुदा करने वाली है” ।

يٰحَسْرَ تٰى عَلٰى مَافَرَّ طْتُّ فِیْ جَنْبِ اللّٰهِ (الزمر: 56)

अफ़सोस मेरी कोताही पर जो मैं अल्लाह के साथ करता रहा ।

### अल्लाह और उसके बंदों का हक़

रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया जो आदमी ये पसंद करता हो कि उसको आग से दूर करके जन्नत में दाख़िल किया जाए तो वो अपनी मौत की एसे (हाल में) तैयारी रखे कि वो अल्लाह और रोज़े आख़िरत पर ईमान रखता हो नीज़ वो लोगों के साथ इस तरह बर्ताव किया करे जिस बर्ताव की ख़ुद अपने लिए उनसे तवक़्क़ो रखता हो। (मुस्लिम,नसाई)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

# सब्र

(जन्नत की बशारत)

## सब्र के माअनी

सब्र के लुग़वी मानी है “रोके रखना”ज़िंदगी में आने वाले हर क़िस्म के नापसंदीदा और नामुवाफ़िक़ हालात को तमाम परेशानियों,मुसीबतों और मेहरूमियों समेत मेहज़ अल्लाह ताला की ख़ातिर बर्दाश्त करना और उन पर अपने नफ़्स को कोशिश के साथ मुज़्तरिब,बेक़रार और बेक़ाबू होने से रोके रखना,ही सब्र है।

## सब्र की फ़ज़ीलत

क़ुरआन मजीद में बहुत सी आयात में सब्र पर मिलने वाले अज्रो फ़ज़ल का ज़िक्र किया गया है जिनमें से चंद एक ये हैं।

وَالْمَلٰٓئِکَةُ يَدْخُلُوْنَ عَلَيْهِمْ مِنْ كُلِّ بَابٍo سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ بِمَا
صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ o (الرعد : 25)

“उनके पास हर दर्वाज़े से फ़रिशते आएंगे और कहेंगे कि तुम पर सलामती हो, सब्र के बदले क्या ही अच्छा (बदला) है इस दारे आख़िरत का”

اِلَّا الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ط اُولٰٓئِکَ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ
وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ o (هود : 11)

“लेकिन जिन्होंने सब्र किया और अच्छे काम किए, ये वो लोग हैं जिन्के लिए बख़्शिश और बड़ा इनाम है”

اُولٰٓئِکَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوْا .... (ا لفرقان : 75)

© AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

“उनको बहिश्त का झरोका मिलेगा सब्र के बदले में”

اِنَّمَا يُوَفَّى الصّٰبِرُوْنَ اَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝ (الزمر: 10)

“सब्र करने वालों को उनकी मज़दूरी बेहिसाब मिलेगी”

अहादीसे मुबारका में सब्र करने की फ़ज़ीलत यूँ बयान की गई है:
“सब्र आधा ईमान है”। (तब्रानी)
“सब्र करना रोशनी है”। (मुस्लिम)

“जब भी मुसलमान को कोई ज़ेहनी अज़ियत, जिस्मानी तक्लीफ़, बीमारी,कोई रंजो ग़म और दुख पहुँचता है यहां तक के अगर उसे एक काँटा भी चुभ जाता है (और वो उसपर सब्र करता है) तो अल्लाह उसके गुनाहों को मॉफ़ फ़रमादेते हैं”। (बुख़ारी)

## बीनाई से मेहरूमी पर सब्र

सय्यदना अनस ने बयान किया कि मैंने रसूल अल्लाह ﷺ से ये हदीसे क़ुदसी सुनी:
अल्लाह अज़्वजल ने फ़रमाया, “जब मैं अपने बंदे को उसकी दो चीज़ों में मुब्तिला करदूँ (यानी आँखों की बीनाई जाती रहे) और उसपर वो सब्र करे तो मैं उसके बदले में उसको जन्नत अता करता हूँ”। (बुख़ारी)

## ताऊन की वबा में अपने ही शहर में रहने पर सब्र

सय्यदा आयशा से रिवायत है, उन्होंने नबी करीम ﷺ से ताऊन के बारे में दर्याफ़्त किया। आप ﷺ ने फ़रमाया :
“ताऊन अज़ाबे इलाही था। अल्लाह उसे जिन लोगों पर चाहते, मुसल्लत कर देते थे। अल्लाह ने इसको ईमान वालों के लिए रेहमत बना दिया है, पस जो मोमिन इंसान ताऊन की बीमारी में मुब्तिला होजाए वो सवाब की नियत से अपने शहर में ही रहे और इस बात पर यक़ीन करे कि अल्लाह ने जो जिसके लिए लिख दिया है वो उसको पहुँचकर ही रहेगा तो उसको के बराबर सवाब मिलेगा “। (बुख़ारी)

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

## मिर्गी के दौरे पर सब्र

एक स्याह फ़ाम औरत रसूल अल्लाह ﷺ की ख़िदमत में आकर कहने लगी,या रसूल अल्लाह! मुझे मिर्गि का दौरा पड़ता है और मैं खुल जाती हूँ (यानी कपड़ों का होश नहीं रहता और बेपर्दा होने लगती हूँ) तो आप मेरे लिए अल्लाह से दुआ कीजिए। आप ﷺ ने फ़रमाया :
"अगर तुम सब्र कर सको तो इसका सवाब जन्नत है और अगर तुम चाहो तो मैं अल्लाह से तुम्हारी सेहत के लिए दुआ करता हूँ"। उसने कहा कि,'मैं सब्र करती हूँ लेकिन आप मेरे लिए दुआ फ़रमाएं कि मैं बेपर्दा ना होजाया करूँ'। तो आप ﷺ ने उसके लिए दुआ फ़रमाई। (बुख़ारी)

## ग़ुस्से पर सब्र

सय्यदना अबू हुरैराؓ बयान करते हैं, रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया :

"ताक़तवर इंसान वो नहीं जो दुसरों को पछाड़ देता है। ताक़तवर तो वो इंसान है जो ग़ुस्से के वक़्त अपने आप पर क़ाबू रखे और (सब्र करे)"। (बुख़ारी)

मॉज़ बिन अनसؓ बयान करते हैं कि नबी ﷺ ने फ़रमाया :

"जो शख़्स ग़ुस्से को पी जाता है हालांकि वो उसको नाफ़िज़ करने पर क़ादिर था,तो रोज़े क़यामत अल्लाह ताला उसे तमाम मख़्लूक़ात के सामने बुलाकर इख़्तियार देंगे के हूरों में से जिसे चाहो पसंद करलो"। (निसाई)

## तर्जीही सुलूक पर सब्र करना

उसय्यदؓ बिन हुज़ैर बयान करते हैं कि अंसार में से एक आदमी ने कहा,या रसूल अल्लाह! मुझे गवर्नर बना दीजिए जैसा कि आपने फ़ुलां शख्स को गवर्नर बनाया है,

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

आप ﷺ ने फ़रमाया:

“तुम मेरे बाद तर्जीही सुलूक देखोगे,पस तुम्हें सब्र करना होगा यहाँ तक कि हौज़े कौसर पर तुम्हारी मेरे साथ मुलाक़ात होगी”। (बुख़ारी)

## दुशमन से मुक़ाब्ले पर सब्र

जंगे बदर के हवाले से मंदर्जा ज़ैल आयात में इर्शादे बारी ताला है:

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ حَرِّضِ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلَى الْقِتَالِ ؕ اِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ
عِشْرُوْنَ صٰبِرُوْنَ يَغْلِبُوْا مِائَتَيْنِ ۚ وَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ مِّائَةٌ
يَّغْلِبُوْٓا اَلْفًا مِّنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ ۝ اَلْـٰٔنَ
خَفَّفَ اللّٰهُ عَنْكُمْ وَعَلِمَ اَنَّ فِيْكُمْ ضَعْفًا ؕ فَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ مِّائَةٌ
صَابِرَةٌ يَّغْلِبُوْا مِائَتَيْنِ ۚ وَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ اَلْفٌ يَّغْلِبُوْٓا اَلْفَيْنِ
بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ۝ (الانفال : 65,66)

-“ऐ नबी! मोमिनों को जिहाद का शौक़ दिलाओ। अगर तुम में बीस सब्र करने वाले होंगे तो वो दोसौ पर ग़ालिब रहेंगे। और अगर तुम में एकसौ होंगे तो एकहज़ार काफ़िरों पर ग़ालिब रहेंगे इस वास्ते के वो बेसमझ लोग हैं। अच्छा अब अल्लाह तुम्हारा बोझ हलका करता है,वो ख़ूब जानता है कि तुम में नातवानी है पस अगर तुम में से एकसौ सब्र करने वाले होंगे तो वो दोसौ पर ग़लबा पाएंगे और अगर तुम में से एक हज़ार होंगे,तो अल्लाह के इज़्न से दो हज़ार पर ग़ालिब रहेंगे,और अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है”।

अब्दुल्लाह बिन अबी ऊफ़ीؓ बयान करते हैं कि एक दिन रसूल अल्लाह ﷺ दुशमन के मुक़ाब्ले में थे और सूरज के ढलने का इंतिज़ार फ़रमा रहे थे,तो आपﷺ ने खड़े होकर फ़रमाया:

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

"ऐ लोगो! दुशमन के साथ जंग करने की तमन्ना ना करो और अल्लाह से सलामती का सवाल करो,फिर जब तुम्हारा उनसे मुक़ाब्ला होही जाए तो सब्र करो के जन्नत तल्वारों के साए तले है" फिर आपﷺ ने इर्शाद फ़रमाया,"ऐ अल्लाह! किताब (क़ुरआन) नाज़िल फ़रमाने वाले! बादलों को चलाने वाले! लशकरों को शिकस्त दीजिए और उन पर हमें ग़ालिब फ़रमाइए"। (बुख़ारी)

## नागहानी मौत पर सब्र

मौत पर सब्र करना बहुत हिम्मत का काम है,बाज़ औक़ात मौत का ज़ाहिरी सबब नागहानी आफ़त मस्लन अचानक एक्सीडेन्ट वग़ैरा भी हो सकता है और कभी कोई तबई तक्लीफ़ इसका बहाना बन जाती है इसी हवाले से मुतासरिन पर इसके अस्रात भी मुख़्तलिफ़ होते हैं।

तबई मौत के लिए मरीज़ के घरवालों की कुछ ना कुछ ज़ेहनी तैयारी और मानवी तैयारी होती है,अचानक मौत का लवाहक़ीन के लिए क़ुबूल करना भी तक्लीफ़दे और उसकी जुदाई का सदमा बर्दाश्त करना भी मुशकिल तरीन टाइम होता है, इस क़िस्म के परेशान कुन और अचानक वाक़े होने वाले हादसे से अक्सर औक़ात इंसान इतना हवास बाख़्ता होजाता है कि अक़्ल व होश ही जाती रहती है,और यूँ ये अल्मिया एक आज़्माइश बन जाता है। लेकिन अगर मुसलमान की ज़िंदगी की इमारत दीन की बुन्यादों पर इस्तवार हो तो फिर ऐसा कोई भी हादसा इस इमारत को मुन्हदिम नहीं होने देता,और अगर ये बुन्यादें ही कम्ज़ोर हों तो ज़िंदगी की इमारत में दराड़ें जल्द ही उसकी शिकस्तगी का बाइस बन जाती हैं ।

अपने अज़ीज़ की जुदाई पर कर्ब अज़ियत में मुब्तिला लवाहेक़ीन को इस्लाम सब्र व बर्दाश्त की हिदायत करता है और उसपर अज्र की नवीद सुनाता है। "आँखों के आँसू और दिल के ग़म का कोई हर्ज नहीं" ।क्योंकि ये काम बेइख़्तियारी हैं, मगर मशियते इलाही पर नाराज़ होकर ज़ुबान को बेक़ाबू करना और उसको नोहा ओर बैन की शक्ल देना,ये मना हैं और उनपर कोशिश के साथ क़ाबू पाना,ये सब्र है।

अपने साहबज़ादे इब्राहीम ؓ की वफ़ात पर रसूल अल्लाह ﷺ ने ख़ुद अपने ग़म और

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

रोने की कैफ़ियत इन अल्फ़ाज़ में बयान फ़रमाई है ।
"आँख आँसू बहाती है, दिल ग़मग़ीन है और हम ज़ुबान से वही कलमा निकालते हैं जिस से हमारा रब ख़ुश होता है"। (बुख़ारी)

## साथी की वफ़ात पर सब्र

हदिसे क़ुदसी है,रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया के अल्लाह ताला इर्शाद फ़रमाते हैं:

"जब मैं मोमिन के एहले दुनिया में से किसी जिगरी दोस्त को ले लेता हूँ, फिर वो अज्र और सवाब की नियत से उसपर सब्र कर लेता है तो ऐसे मोमिन बंदे के लिए मेरे पास जन्नत से कम कोई जज़ा नहीं"। (बुख़ारी)

## औलाद की वफ़ात पर सब्र

हदिसे पाक है, रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया :

"जिस किसी मुसलमान के तीन नाबालिग़ बच्चे फ़ौत होजाएं अल्लाह ताला उन बच्चों पर अपनी रेहमत की वज्ह से उसे जन्नत में दाख़िल कर देते हैं बशर्त ये कि वो सब्र करे और अज्रो सवाब का तलब्गार हो"। (मुत्तफ़िक़ अलैह)

## शहीद पर सब्र

अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर ؓ की वाल्दा सय्यदा अस्मा ؓ सख़्त बीमार हुईं तो वो उनकी अयादत के लिए आए। वाल्दा ने उनसे कहा, "बेटा दिल में ये आर्ज़ू है कि दो बातों में से जब तक एक ना देख लूँ,तब तक अल्लाह मुझे ज़िंदा रखे। एक ये कि तू मैदाने जंग में शहीद होजाए और में तेरी शहादत की ख़बर सुनकर सब्र की सआदत हासिल करूँ, या तू फ़तह पाए और में तुझे फ़ातेह देखकर अपनी आँखे ठंडी करूँ"।

© AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

अल्लाह का करना कि अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैरؓ ने वाल्दा की ज़िंदगी ही में जामे शहादत नोश फ़रमाया।
शहादत के बाद हुजाज ने उनको सूली पर लटका दिया,सय्यदा अस्माؓ काफ़ी ज़ईफ़ हो चुकी थीं लेकिन इन्तिहाई कम्ज़ोरी के बावजूद भी ये रक़्क़त आमेज़ मंज़र देखने के लिए तश्रीफ़ लाईं और अपने जिगर गोशे की लाश को देखकर रोने पीटने की बजाए निहायत सब्रो इस्तक़्लाल से बोलीं :
"इस सवार के लिए अभी वक़्त नहीं आया कि घोड़े की पीठ से नीचे उतरे!"
(असदुल्ग़ाबा)

## अस्सबूर

सय्यदना अबू मूसाؓ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया:
"तक्लीफ़दे बात सुनकर अल्लाह ताला से ज़्यादा सब्र करने वाला कोई नहीं। लोग कहते हैं कि उसकी औलाद है (मॉज़ अल्लाह) मगर वो उनसे दर्गुज़र फ़रमाकर उन्हें रोज़ी दिए जाता है"। (बुख़ारी)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

## सब्र कैसे किया जाए ?

सब्र करने के लिए पहले ये तस्ववुर और नियत की जाए कि मैं उस ज़ाते आली की ख़ातिर सब्र कर कर रहा हूँ जो इस आज़्माइश में मुझसे इसी (सब्र) की उम्मीद कर रहा है,फिर उसके बड़े बड़े सवाब और अज्र के वादे याद किए जाएं और अपने नफ़्स को याद दिलाया जाए के जिन नाफ़र्मान लोगों ने सब्र नहीं किया था उनका क्या अंजाम हुआ?और ये कि मेरे सब्र ना करने से उसकी तरफ़ से मुक़द्दर किए हुए फ़ैसलेतो बदले नहीं जासकते फिर मैं क्यूँ बेसब्री,शिकवा और नाराज़्गी का इज़्हार करके इस अज्र से भी महरूम हो जाऊँ जो अल्लाह के हाँ से इस सब्र के बदले में मुझे मिलने वाला है।

### कोशिश से सब्र

रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया :
"जो शख़्स सब्र करने की कोशिश करेगा,अल्लाह ताला उसको सब्र बख़्शेंगे और सब्र से ज़्यादा बेहतर और बहुत सी भलाइयों को समेटने वाली बख़्शिश और कोई नहीं"। (मुत्तफ़िक़ अलैह)

## तौफ़ीक़ से सब्र

क़ुरआन पाक में रब्बुल इज़्ज़त ने फ़रमाया :

وَاصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ اِلَّا بِاللّٰهِ .... (النحل : 127)

"और सब्र करो और अल्लाह की तौफ़ीक़ से ही तुझे सब्र मिल सकता है"

कोशिश करने वाले को तौफ़ीक़ भी नसीब हो जाती है।
इसके लिए नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया:
"सब्र की तौफ़ीक़ जिसे दी जाए समझलो कि उस से बेहतर और उमदा नेमत किसी को नहीं मिली"। (बुख़ारी)

## दुआ से सब्र

सब्र जैसी नेमत की तौफ़ीक़ हासिल करने के लिए जो कोशिश की जाए उसके लिए सबसे पहला काम दुआ करना है। किसी भी ऐसे मौक़े पर अल्लाह ताला का अज्र व सवाब का वादा ज़ेहन में लाकर उसी का ही सिखाया हुआ ये कलिमा कसरत से दोहराया जाए:

اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ (البقرہ : 156)

"यक़ीनन हम सब अल्लाह के लिए हैं और उसी की तरफ़ लौटने वाले हैं " ।

ऐसे मौक़े के लिए एक और कुरआनी दुआ है:

رَبَّنَآ اَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّثَبِّتْ اَقْدَامَنَا ... (البقرہ : 250)

"ऐ हमारे रब! हमपर सब्र ऊंडेलदे और हमें साबित क़दमी अता फ़रमादे"

इसके इलावा ये मसनून दुआ भी बहुत फ़ायदा देती है:

اَللّٰهُمَّ اْجُرْنِیْ فِیْ مُصِیْبَتِیْ وَاَخْلِفْ لِیْ خَیْرًا مِّنْهَا . (مسلم)

"ऐ अल्लाह! मुझे मेरी इस मुसीबत पर अज्र अता फ़रमा और इसका बेहतर एवज़ दे"।

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

## नमाज़ के साथ सब्र

... وَاسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ ط اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ o

(البقره : 153)

"सब्र और नमाज़ के साथ मदद हासिल करो,
बेशक अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है"

किसी भी क़िस्म के रंज ग़म के मौक़े पर जो इलाज सब से ज़्यादा फ़ायदा देता है वो यही है कि अल्लाह ताला की ज़ात की तरफ़ रुजू किया जाए,उसके क़ुर्ब को ज़्यादा से ज़्यादा मेहसूस किया जाए। फ़र्ज़ नमाज़ों के साथ साथ नवाफ़िल का भी ज़्यादा से ज़्यादा एहतमाम किया जाए और फिर निहायत आजिज़ी के साथ दुआएं की जाएं।

## इब्तदाए सदमे पर सब्र

हदीसे क़ुदसी में अल्लाह ताला का इर्शादे पाक है:

"ऐ आदम के बेटे! अगर इब्तदाए (शिरू) सदमे के वक़्त तू सब्र करले और अज्र का तलब्गार बन जाए तो मैं जन्नत से कम किसी सवाब पर राज़ी ना हुँगा"।(इब्ने माजा)

सय्यदना अनस ؓ बयान करते हैं कि रसूल अल्लाह ﷺ का एक ऐसी औरत के पास से गुज़र हुआ जो एक क़ब्र के पास बैठी रो रही थी (एक दुसरी रिवायत में है कि अपने बच्चे की क़ब्र पर)। आप ﷺ ने फ़रमाया, "अल्लाह से डरो और सब्र इख़्तियार करो"।

औरत बोली,'जाओ अपना काम करो!आप को मुझ जैसी मुसिबत का सामना नहीं हुआ'
औरत ने आप ﷺ को पहचाना नहीं था। जब उसे बताया गया ये तो नबी ﷺ थे, तो वो आप ﷺ के दरवाज़े पर आई,वहां कोई दरबान ना था तो वो (मॉज़रत करते हुए) कहने लगी, 'मैंने आप को पहचाना नहीं था। इसपर आप ﷺ ने फ़रमाया:
"सब्र तो पहली चोट पर होता है"। (बुख़ारी)

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

## दूसरों को सब्र की तल्क़ीन करना

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने अपने मोमिन और सॉलेह बंदों की ये भी सिफ़त बताई है कि वो एक दूसरे को सब्र और हक़ बात पर क़ाइम रहने की नसीहत करते हैं, इसलिए क़ुरआन में इर्शाद हुआ:

وَتَوَاصَوْابِالْحَقِّ ۙ وَتَوَاصَوْابِالصَّبْرِ (العصر : 3)

"और आपस में हक़ की वसियत और सब्र की नसिहत करते हैं"

मुसलमानों को दुख परेशानी में एक दूसरे का ग़म ग़लत करने की ख़ास ताकीद व तल्क़ीन इस लिए भी की गई के नबी ﷺ के इर्शाद के मुताबिक़:
"सारे मुसलमान मिलकर एक आदमी के जिस्म की तरह हैं के अगर उसकी आँख भी दुखे तो सारा बदन मेहसूस करता है और अगर सर में दर्द हो तो सारा जिस्म तक्लीफ़ में होता है"। (मुस्लिम)
मगर अफ़्सोस ये है कि हमारे हां के मुसलमान क़ुरआन सुन्नत से दूरी की वज्ह से इस मौक़े के आदाब ख़ुद भी भुला बैठे हैं और अगर कोई दूसरा सब्रो बर्दाश्त का दामन थामे नज़र आए तो उसे ऐसे मौक़े पर रुलाने और वावेला मचाने पर उक्साया जाता है और ये समझा जाता है के उसने ऐसा ना किया तो ग़म अंदर ही रह जाएगा और उसके लिए तक्लीफ़ और अज़ियत का सबब बनेगा या फिर उसके लिए ये गुमान कर लिया जाता है के उसे दुख हुआ ही नहीं क्योंकि उसे मरने वाले से प्यार ही ना था।
असल में हम इस दुनिया की मोहब्बत को अल्लाह ताला की मोहब्बत पर फ़ौक़ियत दे रहे होते हैं, इस लिए हमें छोटे बड़े नुक़्सानात पर सब्र ज़रा मुश्किल से ही आता है।

### दुनिया ब मुक़ाब्ला आख़िरत

अल्लाह सुभानहू ताला का इर्शादे पाक है:"क्या तुमने आख़िरत के मुक़ाबले में दुनिया की ज़िंदगी को पसंद कर लिया ?दुन्यावी ज़िंदगी का ये सब सरो सामान आख़िरत में बहुत थोड़ा निकलेगा"।(अत्तौबा-38)
अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया,"दुनिया की मिसाल आख़िरत के मुक़ाबले में बस ऐसी है के तुम में से कोई अपनी उंगली दरया में डाल कर निकाले और देखे के पानी की कितनी मिक़दार उस में लग कर आई है"। (मुस्लिम)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

# नोहा व बैन

## नोहा क्या है?

मय्यत पर उसके अज़ीज़ो अक़ारिब का ज़ोर ज़ोर से रोना,चींख़ना चिल्लाना,मुरदे का नाम लेकर मुख़्तलिफ़ कलमात अदा करना नीज़ बाल नोचकर,गालों पर तमाँचे मारकर और गिरेबान फाड़कर बेसब्री और दीवानगी का मुज़ाहेरा करना ये सब“नोहा व बैन या मातम करना” कहलाता है ।

हमारे देहाती इलाक़ों में अभी भी नोहा बैन को बाक़ाएदा रस्म की तरह अदा किया जाता है,नोहा ख़्वानी के लिए दो-दो औरतें टोलियों की सूरत में आमने सामने बैठ जाती हैं और ऊँची ऊँची आवाज़ों में मरहूम की बातें याद करके उसकी जुदाई के ग़म में शिर्किया अल्फ़ाज़ बोलती हैं,और साथ साथ माथा,गाल और सीना पीटती हैं,या फिर खड़े होकर अजीब तरीक़े से एक दूसरे के गले लगकर झूम झूम कर नाशुक्री और शिकायत भरे कलमात दोहराती रहती हैं। बॉज़ औक़ात ये कलमात अजीब राग की सी सूरत इख़्तियार कर लेते हैं। यही सूरत इस्लाम से पहले अरब के जाहिल मॉशरे में मौजूद थी और बाक़ाएदा नोहा व बैन के लिए पेशावर ख़्वातीन से मदद ली जाती थी।

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

## नोहा व बैन की दीन में गुंजाइश

इस्लाम दीने फ़ित्रत है। ग़म के मौक़े पर रोना फ़ित्री अम्र है मगर इस ग़ैर इख़्तियारी फ़ेल को भी मुसलमानों के लिए बेलगाम नहीं छोड़ा गया,बल्कि ग़म के इज़्हार में हद से तजावुज़ करने और उसे नोहा की शक्ल देकर ज़ुबान को बेक़ाबू होने से सख़्ती से रोका गया है ।

इब्ने उमरؓ से रिवायत है,नाबी करीम ﷺ ने सादؓ बिन उबादा की बीमारी में उनकी अयादत की। आप ﷺ के साथ अब्दुर्रहमान बिन औफ़ؓ,साद बिन अबी वक़्क़ासؓ और अब्दुल्लाह बिन मसऊदؓ भी थे (साद ؓ से मिलकर) रसूल अल्लाह ﷺ रो पड़े।

पस जब लोगों ने रसूल अल्लाह ﷺ को रोते हुए देखा तो वो भी रो पड़े। इस पर आप ﷺ ने फ़रमाया :

“क्या तुम सुनते हो! यक़ीनन अल्लाह आँख के आँसू और दिल के ग़म पर अज़ाब नहीं देगा लेकिन इसकी वज्ह से अज़ाब देगा या रहम करेगा” और अपनी ज़ुबाने मुबारक की तरफ़ इशारा फ़रमाया। (मुत्तफ़िक़ अलैह)

## आँसू या रहमत

सय्यदना अनस से रिवायत है कि रसूल अल्लाह ﷺ अपने बेटे इब्राहीम के पास आए और वो जानकुनी के आलम में थे,पस रसूल अल्लाह ﷺ की आँखें छलक पड़ीं तो अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ने आप ﷺ से अर्ज़ किया,और आप भी (रोते हैं) या रसूल अल्लाह ?

आप ﷺ ने फ़रमाया :

ऐ इब्ने औफ़ ! “ये रहमतो शफ़क़त है” और आप ﷺ फिर दुबारा रो पड़े और फ़रमाया: “बेशक आँखें आँसू बहाती हैं और दिल ग़मगीन है लेकिन हम वही बात कहेंगे जिसपर हमारा रब राज़ी हो,और ऐ इब्राहीम! हम तेरी जुदाई पर यक़ीनन ग़मज़दा हैं”। (बुख़ारी)

## औरतों को ख़ुसूसी तंबीह

इस्लामी शरीअत में इस मौक़े पर किसी क़िस्म के जाहिलाना तर्ज़े अमल की हर्गिज़ गुंजाइश नहीं है।

रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, “लोगों में दो कुफ़्रिया बातें पाई जाती हैं :

(1) नसब का ताना देना (2) मय्यत पर नोहा करना (मुस्लिम)

एक और मौक़े पर नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया : “जिसने मुँह पीटा,गिरेबान चाक किया या जाहिलियत की बातें कीं उसका हमसे कोई ताल्लुक़ नहीं”। (बुख़ारी)

नोहा ख़्वानी जैसी ख़राबी और बुरी रस्म मरदों की निस्बत औरतों में ज़्यादा पाई जाती है।

© AL HULA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

वो ब्रादरी की दूसरी औरतों के दर्मियान एक दूसरे से बढ़ चढ़ कर ग़मज़दा नज़र आने के लिए अनगिनत जाहिलाना हरकतें करती नज़र आती हैं,इस लिए रसूल अल्लाह ﷺ ने ख़ास कर औरतों ही को मुख़ातिब करके ये वईद सुनाई कि:

"बैन करने वाली औरत अगर मरने से पहले तौबा नहीं करेगी तो उसे क़यामत के रोज़ खड़ा करके गंधक का पाएजामा और खुजली (ख़ारिश) का कुर्ता पेहनाया जाएगा"। (मुस्लिम)

सय्यदा आयशा ؓ से रिवायत है कि जब रसूल अल्लाह ﷺ के पास ज़ैद ؓ बिन हारिसा,जाफ़र ؓ और इब्ने रवाहा ؓ के शहीद होने की ख़बर आई तो आप ﷺ ग़मग़ीन होकर बैठ गए,मैं दरवाज़े की दराड़ से देख रही थी कि एक शख़्स आप ﷺ के पास आया, जिसने जाफ़र ؓ के घर की औरतों के रोने का ज़िक्र किया, आप ﷺ ने हुक्म दिया के उन्हें गिर्या ज़ारी से मना करो ।

चुनाँचे वो गया और उसने वापस आकर अर्ज़ किया के वो नहीं मानतीं तो आप ﷺ ने दुबारा फ़रमाया के "उन्हें मना करो"
चुनाँचे वो फिर आया और कहा के वो नहीं मानतीं,आप ﷺ ने फिर यही फ़रमाया, "उन्हें मना करो"

तब वो तीसरी मर्तबा वापस आकर कहने लगा,या रसूल अल्लाह! क़सम अल्लाह की वो तो हमपर ग़ालिब आगईं और नहीं मानतीं ।
सय्यदा आएशा ؓ कहती हैं कि आख़िरकार रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : "जाओ और उनके मुँह में ख़ाक झोंक दो"। (बुख़ारी)

सय्यदा उम्मे सलमा ؓ बयान करती हैं, "जब अबू सलमा ؓ (उनके पहले शौहर) फ़ौत होगए तो मैंने कहा कि एक मुसाफ़िर मुसाफ़िरी में फ़ौत होगया,मैं इसपर ऐसा रोऊँगी के लोग उसकी दास्तान बयान करेंगे। मैं रोने के लिए तैयार हो चुकी थी के नागहाँ एक औरत आगई। वो मेरे साथ मिलकर रोना चाहती थी कि नबी ﷺ सामने से तशरीफ़ लाए और फ़रमाया," क्या तुम चाहती होके इस घर में शैतान को दाख़िल करो,जिस घर से आल्लाह ताला ने उसको निकाला है,यूँ दो

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

मर्तबा मैं रोने से रोकी गई,तो फिर नहीं रोई"। (मुत्तफ़िक़ अलैह)

एक सहाबियाؓ, जिन्होंने नबी करीम ﷺ से बैत की थी,रिवायत करती हैं कि हम से आप ﷺ ने जिन कामों का एहद लिया था उनमें ये भी शामिल था कि हम आप ﷺ की नाफ़रमानी नही करेंगी,चेहरा नहीं नोचेंगी,वावेला नहीं मचाएंगी,गिरेबान चाक नहीं करेंगी और ना ही बालों को प्रागंदा करेंगी"। (सुनन अबी दाऊद)

नोमानؓ बिन बशर बताते हैं के अब्दुल्लाहؓ बिन रवाहा बेहोश होगए तो उनकी बहन उमराؓ रोने लगीं और कहती जाती थीं,हाए ऐ पहाड़ (जैसा मेरा भाई) और हाए ऐ सरदार (मेरा भाई) और अपने भाई की ख़ूबियाँ शुमार करती थीं। फिर जब अब्दुल्लाहؓबिन रवाहा को होश आया तो बहन से कहने लगे,"जो कुछ तुम कहती थीं तो मुझ से पूछा जाता था के क्या तुम वाक़ई ऐसे थे ?

एक दूसरी रिवायत में इतना इज़ाफ़ा है कि जब उनकी (ग़ज़वाए मौता में) वफ़ात हुई तो फिर उनकी बहन नहीं रोई"। (बुख़ारी)

## मय्यत को नोहा की वजह से अज़ाब

©AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

पिछले पेज पर नबी करीम ﷺ की अहादीस से मालूम हुआ के मय्यत पर बेइख़्तियार रोने और रोने को बेसब्री से या रिवाज के तौर पर नोहा की शक्ल देने में नुमाया फ़र्क़ है,अल्बत्ता नोहा और बैन की वजह से मय्यत को अज़ाब होने के हवाले से रसूल अल्लाह ﷺ की जो हदीस मिलती है, वो ये है:

सय्यदना मुग़ीराؓसे रिवायत है,उन्होंने कहा मैं ने नबी करीम ﷺ को ये फ़रमाते सुना कि:

"मुझ पर झूट बांधना किसी और पर झूट बांधने की तरह नहीं है। बल्कि जो शख़्स मुझ पर दानिस्ता झूट बांधता है उसे अपना ठिकाना दोज़ख़ में तलाश करना चाहिए"। और मैं ने नबी करीम ﷺ से ये भी सुना कि :

“जिस शख़्स पर नोहा किया जाता है उसे उस नोहा की वज्ह से अज़ाब दिया जाता है”। (बुख़ारी)

सय्यदना उमरؓ से रिवायत है,उन्होंने कहा कि रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया:

“मय्यत पर उसके घरवालों के रोने की वज्ह से अज़ाब दिया जाता है”। (बुख़ारी)

सय्यदना उमरؓ की वफ़ात के बाद ये ख़बर सय्यदा आयशाؓ को पहुँची तो उन्होंने फ़रमाया, “उमर पर अल्लाह रहम करे, वल्लाह! रसूल अल्लाह ﷺ ने ये नहीं फ़रमाया कि मोमिन को उसके अज़ीजों के रोने की वज्ह से अल्लाह अज़ाब में मुब्तिला करेगा बल्कि रसूल अल्लाह ﷺ ने ये फ़रमाया कि:
“अल्लाह ताला काफ़िर पे उसके एहल के रोने के बाइस अज़ाब ज़्यादा करता है। तुम सबके लिए क़ुरआन (सूरतुल अनाम-164) काफ़ी है” :

﴿ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ﴾

“कोई शख़्स किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा”। (बुख़ारी)

मय्यत को अज़ाब होने की वज्ह उसकी वो ग़फ़्लत और जिहालत होसकती है जिसकी वज्ह से उसने ना सिर्फ़ ख़ुद ज़िंदगी में ऐसा करके बुरी मिसाल छोड़ी, बल्कि अपने घर वालों को भी मय्यत पर नोहा बैन या ऐसे मौक़े पर जज़ा फ़ज़ा करने से नहीं रोका था, लेकिन अगर वो ख़ुद ऐसा नहीं करता रहा और दूसरों को भी ना सिर्फ़ इस से रोकता रहा बल्कि ऐसा ना करने की वसियत भी करगया तो फिर उसकी इन शा अल्लाह पकड़ नहीं और वो अज़ाब से बरी है। (अल्लाहु आलम)

बेहरहाल नोहा व बैन और रोने पर मय्यत को अज़ाब होने से मुताल्लिक़ा अहादीस (सय्यद उमरؓ और सय्यदा आयशाؓ का उस हदीस़ पर इख़्तिलाफ़) पढ़ कर हमें अमल करने के हवाले से समझ ये आती है के एहतियात और तक़्वा का तक़ाज़ा यही है कि नोहा व बैन और चीख़ चिल्ला कर रोने से बचा जाए। क्योंकि नबी करीम ﷺ ने इस पर कई बार नाराज़गी का इज़्हार फ़रमाया था।

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

सय्यदना जाफ़रؓ के घर ख़्वातीन के नोहा व बैन पर मना कर के भेजना,एक औरत को किसी क़ब्र के पास रोने पर अल्लाह का डर दिलाना और सब्र करने की तल्कीन करना,सय्यदना जाबिर बिन अब्दुल्लाहؓ के शहीद वालिद के जिस्म पर एक औरत को चिल्ला कर रोने से मना करना,फिर एक और हदिस मुबारक में गालों पर थप्पड़ मारने,गिरेबान फाड़ने और जाहिलों जैसी (कुफ्र) की बातें करने से मना करना,औरतों से बैत लेते वक़्त इक़रार लेना कि नोहा ना करेंगी। इसी तरह सादؓ बिन उबादा की अयादत के वक़्त ज़ुबाने मुबारक की तरफ़ इशारा करके ये फ़रमाना के इस (की बे एहतियाती) की वजह से अज़ाब या रेहम किया जाता है,ये सब तंबीहात नोहा व बैन की मुज़म्मत और उस से बचने के लिए काफ़ी होना चाहिए |
नबी करीम ﷺ के दुनिया से तशरीफ़ ले जाने के बाद भी तालीम और अमल की ग़र्ज़ से समझा गया के खुद भी एसा ना करें और एहले ख़ाना को भी इस से बचने की तल्क़ीन करें।

## अहादीसे रसूल ﷺ

"तुम में से हर शख़्स हाकिम है और अपनी रईयत के बारे में जवाब देह है। मर्द अपने घरवालों पर हाकिम है और औरत अपने ख़ाविंद के घर और उसकी औलाद पर हाकिम है पस हर शख़्स हाकिम है और अपनी अपनी रईयत के बारे में पूछा जाने वाला है"। (बुख़ारी)

"किसी बंदे का ईमान दुरूस्त नहीं हो सकता जब तक उसका दिल ना दुरूस्त हो,और उसका दिल दुरूस्त नहीं हो सकता जब तक उसकी ज़ुबान ठीक ना हो"। (एहमद)
"जो कोई अल्लाह ताला और क़यामत पर यक़ीन रखता हो उसे चाहिए कि वो मेहमान का इक्राम करे और जो कोई अल्लाह और क़यामत पर यक़ीन रखता हो वो ख़ैर की (अच्छी,नेक बात) कहे या ख़ामोश रहे"। (बुख़ारी)

## क़ौल सय्यदना उमर फ़ारूक़

बुराई को ना जानना उतनी ही बड़ी बुराई है"

© AL HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

# ग़ुसले मय्यत

इस्लामी तेहज़ीबो तमद्दुन में मुसलमान के जिस्म को ज़िंदगी के इख़्तिताम पर भी एहतराम के क़ाबिल समझा जाता है,इसी लिए उसे ग़ुस्ल दिला कर,उज्ला लिबास (कफ़न) पेहनाकर,ख़ुशबूओं में बसाकर,बाइज़्ज़त तरीक़े से कंधों पर उठाकर ले जाया जाता है और इज्तिमाई नज़्मो ज़ब्त का मुज़ाहेरा करते हुए नमाज़ की सूरत में अल्लाह ताला के हुज़ूर उसके लिए मग़फिरत तलब की जाती है और फिर निहायत बावक़ार तरीक़े से उसे सुपुर्दे ख़ाक कर दिया जाता है।

वफ़ात के बाद मय्यत के लिए करने वाले आख़री इन्तिज़ामात में सरे फ़ेहरिस्त उसे ग़ुस्ल कराना है।

## ग़ुस्ल कौन करवाए

ग़ुस्ल कराने की ज़िम्मेदारी उठाने वालों के लिए ज़रूरी है के वो:

1. क़रीबी अज़ीज़ या रिशतेदार हों।

“रसूल अल्लाह ﷺ को ग़ुस्ल देने वाले सहाबा कराम ؓ में सय्यदना अली ؓ गुस्ल दे रहे थे,गुस्ल में मदद कराने वाले सहाबा कराम ؓ में अब्बास ؓ, फ़ज़ल ؓ क़सम ؓ (रसूल अल्लाह ﷺ के आज़ाद करदा ग़ुलाम) आप ﷺ की करवट बदल रहे थे,शक़रान ؓ और उसामा ؓ पानी बहा रहे थे और औस ؓ ने आप ﷺ को अपने सीने से टेक दे रखी थी”।
(अर्रहीक़ुलमख़्तूम)

## ग़ुस्ल के सामान की लिस्ट

1.वाफ़र,पाक साफ़ और ज़रूरतन नीम गरम पानी।

2.बेरी के पत्ते, साबुन या शेम्पू, काफ़ूर

3.कँघी

4.रूई, डस्ट बिन

5.कपड़े या रबर के दस्ताने/कपड़े के टुक्ड़े

6.जिस्म ख़ुश्क करने के लिए तौलिया या कोई साफ़ कपड़ा

7.चादरें जो मय्यत पर पर्दे के लिए या उठाने के लिए इस्तेमाल होंगी।

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

शौहर अपनी बीवी की मय्यत को और इसी तरह बीवी अपने शौहर की मय्यत को गुस्ल दे सकती है। सय्यदना अलीؓ ने सय्यदना फ़ातमाؓ को और सय्यदना अबू बकरؓ को उन्की ज़ौजा सय्यदना असमाؓ ने गुस्ल दिया। (मौता इमाम मालिक)

सय्यदा आयशाؓ इर्शाद फ़रमाती हैं के रसूल अल्लाह ﷺ बक़ी से एक जनाज़ा पढ़कर मेरे हां तशरीफ़ लाए। मेरे सर में दर्द था और में कह रही थी,“हाए मेरा सर”। आपﷺ ने फ़रमाया: “नहीं बल्कि मेरा सर,अगर तुम मुझसे पहले फ़ौत होजाओ तो में ख़ुद तुम्हें ग़ुस्ल दूँ, तुम्हें कफ़न पहनाऊँ और तुम्हारी नमाज़े जनाज़ा पढ़कर ख़ुद दफ़न करूँ तो इसमें कोई हर्ज की बात नहीं”। (मुसनद एहमद)

(अगरचे ये एक दिल्लगी की बात थी, ताहम इस हदीस से मज़्कूरा हुकुम का भी पता चलता है)

नबी करीमﷺ की वफ़ात के बाद इस हदीस को याद करके आयशाؓ फ़रमाया करती थीं:

“जो बात मुझे अब मालूम हुई वो मैं पहले ही ग़ौर करलेती तो रसूल अल्लाहﷺ को ग़ुस्ल अज़्वाजे मुताहरातؓ ही देतीं”। (इब्ने माजा)

2- दीन का इल्म रखने की वज्ह से आदाबे ग़ुस्ल से वाक़िफ़ हों।

रसूल अल्लाहﷺ को जिन सहाबा करामؓ ने ग़ुस्ल दिया था वो ना सिर्फ़ क़राबत दार थे बल्कि फ़ेहमे दीन रखने की वज्ह से आदाबे ग़ुस्ल से वाक़िफ़ थे।

3- मय्यत में कोई ऐब या नागवार चीज़ नज़र आए तो पर्दापोशी करने और राज़ रखने वाले हों। अबू उमामाؓ कहते हैं कि रसूल अल्लाहﷺ ने फ़रमाया,“जिसने किसी मय्यत को ग़ुस्ल दिया और उस (की किसी नापसंदीदा चीज़) की पर्दापोशी की,अल्लाह उसके गुनाहों की पर्दा पोशी फ़रमाएगा और जिस किसी ने किसी मुसलमान को कफ़न दिया,अल्लाह ताला उसे (रोज़े क़यामत) सुंदुस का लिबास पेहनाएगा”। (तबरानी)

©AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

## ग़ुस्ल की जगह

ग़ुस्ल देने की जगह का इन्तिख़ाब करते हुए मंदर्जा ज़ैल बातों को मद्देनज़र रखना ज़रूरी है।

☆ ये जगह साफ़ सुथरी और हमवार हो।

☆ ग़ुस्ल की जगह का इन्तिख़ाब करते वक़्त पानी के निकास को चेक करना भी बहुत ज़रूरी है।

☆ ग़ुस्ल देने की जगह इतनी कुशादा हो कि मय्यत के तख़्ते के इलावा आस पास में ग़ुस्ल में मदद देने वालों के बैठने और ग़ुस्ल का सामान,बाल्टियाँ वग़ैरा रखने रखाने में मुश्किल ना हो।

☆ पर्दे का मुनासिब इन्तिज़ाम हो। घर में ग़ुस्ल ख़ाना अगर इतना बड़ा नहीं तो किसी और कमरे में या बराम्दे वग़ैरा में आर्ज़ी तौर पर चादरें तानकर या ख़ैमा लगाकर ग़ुस्ल के लिए बंदोबस्त किया जा सकता है। ऐसी ग़ुस्ल की जगह को ऊपर से भी ढांपना ज़रूरी है।

☆ मय्यत को नेहलाने वाला तख़्ता,सर वाली जानिब से क़दरे ऊँचा हो ताके इस्तिमाल शुदा पानी बेहता रहे। इसके लिए सर की तरफ़ तख़्ते के नीचे दो ईंटें रखी जासकती हैं।

☆ ग़ुस्ल कराने वालों के क़रीब इस्तिमाल शुदा अश्या डालने के लिए कोई रद्दी टोकरी, डब्बा या लिफ़ाफ़ा रखा होना चाहिए।

☆ मय्यत को ग़ुस्ल देने के बाद उस जगह के बहुत अच्छी तरह धोकर साफ़ कर देना चाहिए।

© ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

## ग़ुस्ल का पानी

☆ बाल्टियों या टब या बड़े बर्तनों में वाफ़र मिक़्दार में पानी तैयार रखा हो, ताकि दौराने ग़ुस्ल ख़त्म होने पर देर होने का इमकान ना हो।

☆ ग़ुस्ल का पानी पाक और साफ़ होना जरूरी है।

☆ ज़रूरत के वक़्त पानी नीम (कम) गरम भी किया जा सकता है।

☆ बेरी के पत्तों को किसी छल्नी में धोकर अलग से थोड़े पानी में एक जोश दिलाया जाए।

☆ फिर ये पानी छान कर ग़ुस्ल के पानी के पानी की तमाम बाल्टीयों में मिला दिया जाए। (बहवाला बुख़ारी)

☆ इसी पानी की एक बाल्टी में काफ़ूर भी मिलाकर अलग से एक तरफ़ रखें (ये आख़री बार बहाया जाने वाला पानी होगा जो के तीसरी,पाँचवी या सातवी मर्तबा बहाया जाएगा)।

## ग़ुस्ल शुरू कराने से पहले

वक़्त की बचत और आसानी के लिए जब बेरी के पत्ते वाला पानी गरम हो रहा हो, उस दौरान कफ़न के अजज़ा को खाट पर तर्तीब वार बिछा लिया जाए।
तर्तीब के लिए सफ़्हा नंबर(109) देखिए।

## मदद कराने वाले

☆ ग़ुस्ल देने वाले के पास सिर्फ़ वही लोग मौजूद हों जो उसकी मदद कराएं, उनके अलावा किसी भी दूसरे की मौजूदगी मक्रूह है।

☆ ग़ुस्ल कराने वाले के लिए बावज़ू होना मुस्तहब है। ग़ुस्ल की जगह दाख़िल होने से पहले तस्मिया और ग़ुस्ल ख़ाने में दाख़िल होने वाली मस्नून दुआ पढ़लें।

بِسْمِ اللهِ،اَللّٰهُمَّ اِنِّ اَعُوْذُبِكَ مِنَ اَلْخُبُثِ وَالْخَبَائِث.

☆ मय्यत के कपड़े आसानी से ना उतर सकें तो क़ैंची के साथ एहतियात से काट लिए जाएं। (कपड़े उतारते वक़्त मय्यत पर चादर होनी चाहिए)

☆ मय्यत को ग़ुस्ल देते वक़्त उसपर रंगदार और गहरे प्रिंट का कपड़ा डाल दिया जाए ताके गीला होने पर भी पर्दा रहे और मय्यत को कपड़े के नीचे से हाथ फेर कर ग़ुस्ल दिया जाए। ये बेहतर है कि हाथों पर कपड़े की थैली चढ़ाई हो या रबड़ (प्लास्टिक) के दस्ताने पहने हों।

☆ ग़ुस्ल कराने वालों को दौराने ग़ुस्ल आपस में गैर ज़रूरी बातें नहीं करनी चाहिए। इसी तरह इस मौक़े पर कोई दुआ वग़ैरा पढ़ना भी सुन्नत से साबित नहीं।

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

# तरीक़ए ग़ुस्ल

☆ मय्यत को बिस्तर से ग़ुस्ल के तख़्ते तक और ग़ुस्ल के बाद कफ़न बिछे खाट पर डालने के लिए चादर समेत उठाया जाएगा अगर ख़ातून मय्यत उठाने में मुश्किल दरपेश हो तो मोटी चादर से ढाँप कर मय्यत के मेहरम मर्द हज़रात से मदद लेकर ग़ुस्ल के तख़्ते पर लिटाया जा सकता है और इसी तरह ग़ुस्ल देने के बाद उठवाया जा सकता है ।

☆ नहलाने वाले सबसे पहले मय्यत का सर उठाकर आहिस्ता से उसे बैठा होने के क़रीब करदें ।

☆ फिर उसके पेट को अतराफ़ से नरमी से दबाया जाए ताकि जो कुछ निकलने के क़रीब हो वो निकल जाए। इस मौक़े पर कसरत से पानी डाला जाए ताकि जो कुछ निकला हो पानी उसे बहाकर लेजाए

☆ ग़ुस्ल देने वाला अब अपने हाथ पर कपड़ा बाँधकर,या कपड़े की थैली,या रबड़ के दस्ताने चढ़ाकर मय्यत की तहारत (इस्तन्जा) कराए और अगर कोई भी नजासत रह गई हो तो उसे अच्छी तरह मय्यत के जिस्म पर से साफ़ करदे। ये कपड़ा या दस्ताना अब उतार कर दूसरी साफ़ थैली या दस्ताना चढ़ा लिया जाए ।

☆ ख़ातून मय्यत के ग़ुस्ल से पहले बंधे होए बाल खोल दिए जाएं। ख़ातून मय्यत की पिन,किलिप,चूँड़ियां,बुँदे,नाक का लौंग और लिबास वग़ैरा उसके जिस्म से अलग करलें ।

☆ ग़ुस्ल कराने वाले ग़ुस्ल की नियत करके बिस्मिल्लाह पढ़लें।

अब दाएं तरफ़ से शुरू करते हुए वुज़ू कराया जाए ।

☆ उम्मे अतिया ؓ कहती हैं कि सय्यदा ज़ैनब ؓ की मय्यत को ग़ुस्ल दिलाने के मौक़े पर रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, “दाएं तरफ़ और वुज़ू वाली जगहों से शुरू करो”। (बुख़ारी)

दौराने वुज़ू ना कुल्ली कराई जाए और ना नाक में पानी डाला जाएगा। इसकी बजाए कपड़ा या रूई के फाहे तर करके उस से मय्यत के दाँतों और उसके नथ्नों

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

को साफ़ करदेना काफ़ी है। (बहवाला बुख़ारी)

☆ अब नाक और दोनों कानों में साफ़ रूई लगादी जाए ताकि सर के बाल धोने और ग़ुस्ल कराने के दौरान पानी अंदर दाख़िल ना हो,बाद में इस रूई को निकाल दिया जाएगा।

☆ साबुन के झाग या शेम्पू से सर और दाढ़ी के बाल आहिस्ता आहिस्ता उँगलियां फेर कर धोए जाएं।

☆ बक़ाया तमाम ग़ुस्ल कपड़े के नीचे से हाथ डालकर दिया जाए। ख़ास तौर पर हुदूदे सतर पर ना किसी की नज़र पड़नी चाहिए और ना ही ख़ाली हाथ से मस होना चाहिए।

अबू सईद ख़ुदरी ؓ से रिवायत है कि रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, "कोई मर्द किसी मर्द के सतर को ना देखे और कोई औरत किसी औरत के सतर को ना देखे"।(मुस्लिम)

☆ पहले मय्यत के जिस्म के सामने वाले हिस्सों को साबुन से धोया जाए,गर्दन के दाएं तरफ़ से लेकर दाएं पाँव तक और बाएं पेहलू के बल हलकी सी करवट मोड़ कर दाएं तरफ़ का पिछला तमाम हिस्सा धोया जाए, यही अमल बाएं तरफ़ से सामने और फिर कर्वट दिला कर पिछला बायां तमाम हिस्सा धोया जाए।

☆ ग़ुस्ल ताक़ मर्तबा दिया जाए। आख़री बार ग़ुस्ल देने के लिए पानी में काफ़ूर डालना मस्नून है। काफ़ूर ना मिले तो कोई भी ख़ुशबू पानी में मिला सकते हैं।
(बहवाला बुख़ारी व मुस्लिम)

☆ मय्यत को तौलिए से ख़ुश्क करके उपर ख़ुश्क चादर डाल कर गीली चादर निकाल दें और मय्यत के नीचे भी एक ख़ुश्क चादर बिछा दें।

☆ ख़ातून की मय्यत हो तो ग़ुस्ल के बाद बालों की तीन चोंटियाँ/ लटें बनाकर पीछे को डालदीं जाएं,कंघी भी की जा सकती है।

मंदर्जाज़ैल हदीसे मुबारक से मय्यत के ग़ुस्ल से मुताल्लिक़ चंद एहकामात साबित हैं।
उम्मे अतिया ؓ बयान करतीं हैं कि रसूल अल्लाह ﷺ हमारे पास तशरीफ़ लाए जिस

© ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

वक़्त हम आप ﷺकी बेटी सय्यदा ज़ैनबؓ को ग़ुस्ल दे रहे थे। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया:

“ तीन बार,पाँच बार,सात बार और मुनासिब समझो तो इस से भी ज़्यादा बार ग़ुस्ल दो ”।

उम्मे अतियाؓ बयान करती हैं कि मैंने अर्ज़ किया,'ताक़ अदद में'? आप ﷺ ने फ़रमाया:“हां और आख़री बार (तीन में तीसरा,पाँच में पाँचवां,और सात में सातवां) में कुछ काफ़ूर भी मिला देना। फिर जब फ़ारिग़ हो जाओ तो मुझे इत्तेला कर देना”। जब हम फ़ारिग़ हो गईं तो आप ﷺ को इत्तेला की। आप ﷺ ने हमारी तरफ़ अपना तेहबँद फेंक कर फ़रमाया: “ये अंदर (उनके बदन पर) लपेट दो”। उम्मे अतियाؓ बयान करतीं हैं कि हमने उनके बालों के तीन हिस्से करके कंघी की और पीछे डाल दिए । (बुख़ारी)

☆ ऐसे हालात में जब्कि मय्यत को ग़ुस्ल देना मुम्किन ना हो तो मय्यत को तयम्मुम कराया जाएगा । (अबू दाऊद)

(ये सूरते हाल उस वक़्त पेश आ सकती है जब्कि मय्यत का जिस्म ज़्यादा जल गया हो या पानी में या किसी केमिकल वग़ैरा में डूबने से गल सड़ गया हो या किसी हादसे में टुकड़े टुकड़े हो गया हो या किसी ऐसी जिल्दी बीमारी से वफ़ात हूई हो के ग़ुस्ल कराने से जिस्म मज़ीद फटने का ख़दशा हो) ।

☆ अल्लाह की राह में शहीद होने वालों को ग़ुस्ल नहीं दिया जाएगा ।

© AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

# कफ़न देना

## कपड़ा

नबी ﷺ ने फ़रमाया: जिसने किसी मुसलमान को कफ़न दिया,अल्लाह ताला उसे सुन्दस का लिबास पहनाएगा। (अलमोजम अल्कबीर लिलतबरानी)

कफ़न के लिए साफ़ सुथरा कपड़ा इस्तिमाल करना अफ़ज़्ल है।

रसूल अल्लाह ﷺ का फ़रमान है:

सफ़ेद लिबास पेहना करो,ये तुम्हारा बेहतरीन लिबास है और इसी में मुरदों को कफ़न दिया करो। (तिरमज़ी)

## मिक़दार

कफ़न के लिए कपड़े की मिक़दार या पैमाइश इतनी हो कि आसानी से मय्यत का तमाम जिस्म ढांपा जासके। नामुकम्मल और नाकाफ़ी कफ़न (इलावा किसी मज्बूरी या उज़्र के) नापसंदीदा है।

रसूल अल्लाह ﷺ ने ऐक दिन खुतबा इर्शाद फ़रमाते हुए एक सहाबी ؓ का तज़्किरा फ़रमया जिसे वफ़ात के बाद नाकाफ़ी कफ़न में लपेटा गया और रात को दफ़न किया गया।

रावी कहते हैं कि आप ﷺ ने हमें इस बात की तंबीह की के मय्यत को रात को दफ़न ना किया जाए,इल्ला ये कि इंसान मजबूर हो। मज़ीद फ़रमाया,

“जब कोई मुसलमान अपने भाई को कफ़न दे तो मुम्किन हो तो अच्छा कफ़न दे।” (मुसलिम)

“अच्छे कफ़न”से मुराद ये है कि साफ़ सुथरा हो,मोटा हो,सारे बदन को छुपाने वाला हो,और दर्मियानी क़िसम का हो (अच्छे से मुराद मेंहगा और नफ़ीस नहीं है)। ज़रूरी नहीं कि वो नया हो,पुराना मगर धुला हुआ साफ़ कपड़ा भी कफ़न के लिए इस्तिमाल

© AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

किया जा सकता है।

सय्यदना अबूबकरؓ से कफ़न के इन्तिखाब के बारे में दर्याफ़त (पूछा) किया गया तो उन्होंने फ़रमाया कि नए कपड़ों का ज़्यादा मूस्तहिक़ ज़िंदा है,मेरे लिए बस ये पुराने ही काफ़ी हैं। (बुखारी)

## अज्ज़ाए कफ़न

औरत और मर्द के कफ़न के लिए एक जैसी पैमाइश की तीन मोटी,साफ़,सफ़ेद चादरें इस्तेमाल होती हैं जिन में से एक चादर धारी दार हो तो बेहतर है।

सय्यदा आयशाؓ बयान करतीं हैं कि रसूल अल्लाह ﷺ को तीन धुली हूई सफ़ेद सूती सहूली (यमन की बनी हूई हल्की धारीदार) चादरों में कफ़न दिया गया। इसमें ना क़मीज़ थी और ना पगड़ी। (बुख़ारी)

अगर हो सके तो एक हल्की धारीदार चादर कफ़न में शामिल करली जाए और यूं आखिरी सफ़र के आखिरी लिबास में भी सुन्नत का सवाब हासिल कर लिया जाए।

हदीसे रसूल ﷺ है, “जब तूम में से कोई फ़ौत हो जाए और अगर मिल सके,तो कफ़न में एक धारीदार चादर शामिल करली जाए।” (सुनन अबी दाऊद)

कफ़न बांधने के लिए 3 या 5 अदद पट्टियां चाहिए होती हैं।

**नोटः** कफ़न के लिए तीन चादरें मयस्सर ना हों तो एक चादर में भी कफ़नाया जा सकता ह।

शहीद को कफ़न की ज़रूरत नहीं इसको उन्हीं कपड़ों समेत एक चादर में लपेट कर दफ़ना दिया जाएगा।

### मुहरम के लिए एहकामात

मुहरम (दौराने हज या उमराह वफ़ात पाने वाले) को ग़ुस्ल कराने के बाद कफ़न की बजाए एहराम ही में बग़ैर ख़ुश्बू लगाए बग़ैर सर ढांपे दफ़न किया जाएगा।

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

एक सहाबी ॓ मैदाने अरफ़ात में अचानक अपनी सवारी से गिर गए। ऊँटनी ने उनकी गर्दन तोड़ दी और वो वहीं वफ़ात पागए। चुनांचा नबी ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया, “इसे पानी और बेरी के पत्तों से गुसल दे कर दो कपड़ों में कफ़न दो (दूसरी रिवायत है इसी के दोनों कपड़ों यानी एहराम में) और ख़ुशबू ना लगाओ,ना ही इस का सर और चहरा छुपाओ, यह रोज़े क़यामत तल्बिया कहता हुआ उठेगा”। (बुख़ारी)

(दफ़न करते वक़्त मुहरिम मरद मय्यत के सर और चहरे को खोल दिया जाए और मुहरिम औरत मय्यत के सिर्फ़ चहरे को खुला रखा जाए अलबत्ता सर ढाँपा होगा)

## कपड़ा कम मय्यतें ज़्यादा:

किसी भी हंगामी हालत या सफ़र के दौरान मय्यतें ज़्यादा और कफ़न कम हों तो एक ही कपड़े में एक से ज़्यादा मय्यतों को कफ़न दिया जा सकता है ।

जैसा के शोहदाए ओहद के साथ किया गया। इसी तरह अगर किसी वज्ह से कपड़ा इतना नाकाफ़ी है की सर या पाँव में से किसी एक को ढाँपा जा सकता हो तो पाँव को घास वगैरा से छुपा दिया जाए जैसा के मुसब ॓ बिन उमेर को ढाँपा गया था। (बुख़ारी)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

# कफ़न लपेटने का तरीक़ा कार

☆ चारपाई के बीच एक बड़ी पट्टी और सर और पांव की तरफ़ छोटी पट्टीयां बिछादें, कफ़न को मज़बूती से बांधने के लिए पांच पट्टीयां भी बांधी जा सकती हैं।

☆ अब चारपाई पर पट्टीयों के ऊपर तीनों चादरें बिछादें,चादर की लम्बाई मय्यत के क़द की लम्बाई से कम से कम एक फ़िट बड़ी हो ताकि सर और पांव की तरफ़ से बांधी जा सके।

☆ तख़्ता ग़ुस्ल से मय्यत को उठाने के लिए दो लोग नीचे वाली चादर को सर और पाँव की तरफ़ से पकड़ें,और दो लोग चादर के नीचे से कमर की जगह तोलिया मज़बूत कपड़ा डालकर मय्यत को उठाकर उसी चारपाई पर रखें जिस पर पहले से कफ़न बिछा हुआ है।

☆ कर्वट दिला कर नीचे की चादर निकाल लें,ऊपर की चादर अभी ना हटाऐं क्योंकि उसके अंदर से ही कफ़न लपेटा जाएगा और पहली चादर लपेटते वक़्त एहतयात से उसे इस तरह निकाल लिया जाएगा के मय्यत की सतर ना खुले।

☆ सबसे पहले ऊपर वाली चादर से ख़ातून मय्यत के चहरे और सर के इलावा सारा जिस्म अच्छी तरह लपेटदें और चादर के ऊपर वाले हिस्से से सर और बालों को स्कार्फ़ की तरह लपेट दें इस के बाद दूसरी चादर को सर से पाँव तक लपेट दें।

☆ आख़री चादर लपेटने के बाद सर,पाँव और कमर की पट्टीयों को बाँध कर इस तरह गिरह लगाऐं कि क़ब्र में लिटाने के बाद ये गिरहें आसानी से खोली जा सकें।

© AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

# मर्द मय्यत को कफ़न लपेटने का तरीक़ा

① तीन बड़ी और चौड़ी पट्टीयां बीच में,कंधे और घुटनों की तरफ़ और दो छोटी पट्टीयां सर और पाँव की तरफ़ बिछाऐं,दोनों पट्टीयों के ऊपर तीन चादरें बराबर करके तरतीब वार बिछाऐं।

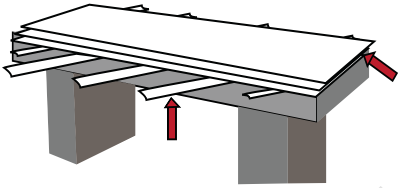

② सर और पाँव की तरफ़ से कपड़ा छोड़ कर मय्यत को चादरों के ऊपर लिटादें पहली चादर को एक तरफ़ से लेकर मय्यत की दूसरी तरफ़ कमर के नीचे अच्छी तरह दबादें।

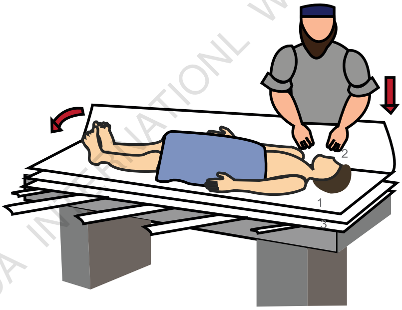


③सतर के लिए ढाँपी गई चादर को हटादें ,इसी तरह चादर का एक हिस्सा दूसरी तरफ़ से दबादें। सर और पाँव को भी साथ ही लपेटलें।

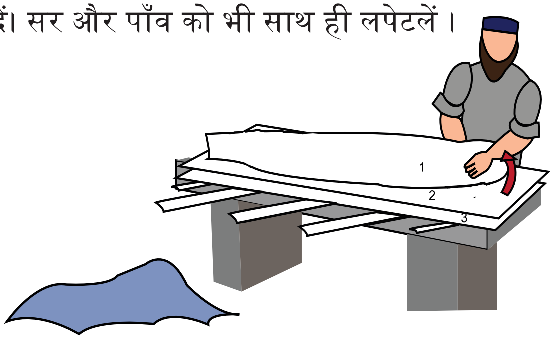


AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

④ इसी तरह दूसरी चादर को भी सर और पाँव समेत दुसरी तरफ़ से लाकर अच्छी तरह दबा दें।

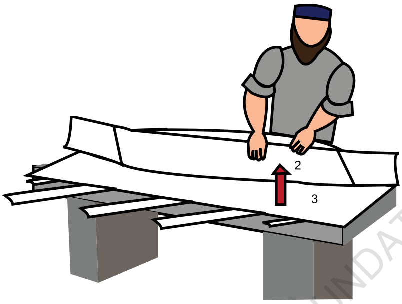


⑤ अब आख़री चादर को भी दुसरी तरफ़ से लाकर लपेट दें।

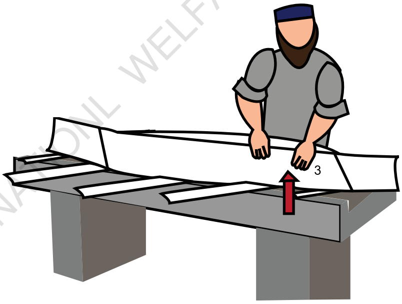


⑥ अब कफ़न को तस्वीर की तरह पट्टीयों से बाँध दें।

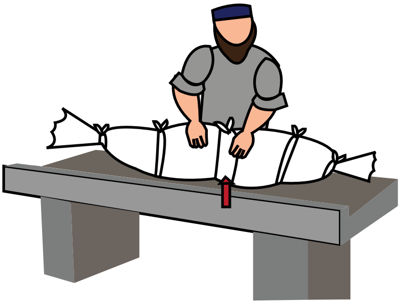

© AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

# औरत मय्यत को कफ़न लपेटने का तरीक़ा

① तीन बड़ी और चोड़ी पट्टीयां बीच में,कंधे और घुटनों की तरफ़ और दो छोटी पट्टीयां सर और पाँव की तरफ़ बिछाऐं,पट्टीयों के ऊपर तीन चादरें बराबर करके तरतीब से बिछाऐं।

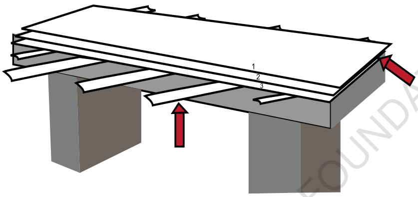

②सर और पाँव की तरफ़ से कपड़ा छोड़ कर मय्यत को चादरों के ऊपर लिटादें पहली चादर को एक तरफ़ से लेकर मय्यत की दूसरी तरफ़ कमर के नीचे अच्छी तरह दबा दें।

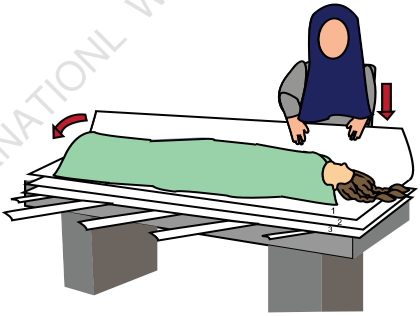

③ सतर के लिए ढाँपी गई चादर को हटादें,इसी तरह चादर का एक हिस्सा दूसरी तरफ़ से दबादें। सर और पाँव को भी साथ ही लपेट लें।

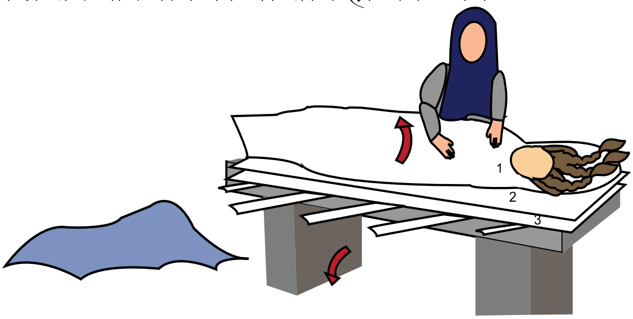

© AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

④ पहली चादर के सर की तरफ़ बिछे हुए हिस्से को उठाकर स्कार्फ़ की तरह लपेटते हुए सर और बालों को अच्छी तरह ढाँप दें।

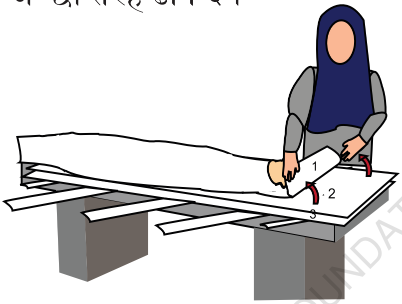


⑤ स्कार्फ़ के बाक़ी कपड़े को गर्दन के पीछे दबादें।

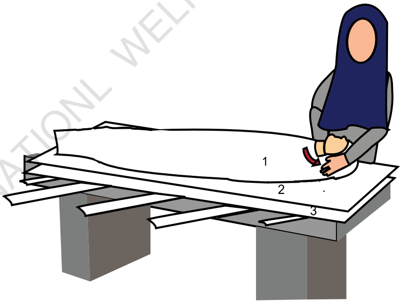


⑥ अब साइड के दोनों पल्लूओं से चहरे को ढाँप दें।

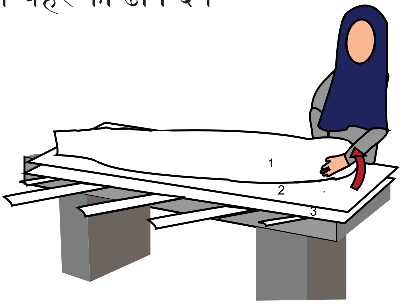


© AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

7 इसी तरह दूसरी चादर को भी सर और पाँव समेत दूसरी साइड से लाकर अच्छी तरह दबा दें।

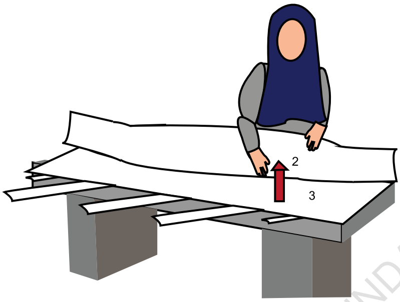


8 अब आख़री चादर को भी दूसरी साइड से लाकर लपेट दें।

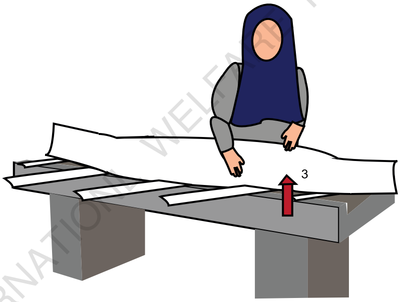


9 अब कफ़न को तस्वीर की तरह पट्टीयों से बाँध दें।

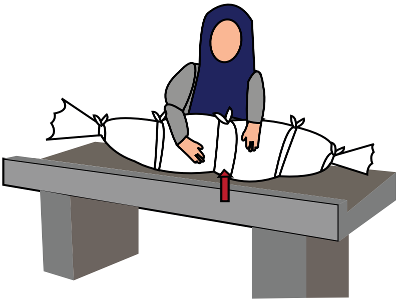

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

## ख़ुशबू

मय्यत को कफ़न में लपेटने के बाद तीन बार ख़ुशबू की धूनी दें। ये मुम्किन ना हो तो अतर वग़ैरह लगाया जा सकता है ।

मय्यत को कफ़न समेत ऊद (ख़ुशबूदार लकड़ी) की धूनी देना मुस्तहब है ।
रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमायाः
"जब तुम मय्यत को ख़ुशबू की धूनी दो तो तीन मर्तबा दो"।

धूनी देना मूम्किन ना हो तो मय्यत को अतर (ऐसी ख़ुशबू जिस में अलकोहल ना हो) लगाया जा सकता है । (बुख़ारी व मुस्लिम)

## ग़ुस्ल देने वाले के लिए ख़ुद ग़ुस्ल करना

मय्यत को ग़ुस्ल और कफ़न देने वाले के लिए बाद में ख़ुद ग़ुस्ल करना अगर ग़ुस्ल ना कर सकें तो वज़ू कर सकते हैं,और मय्यत को उठाकर खाट पर डालने में मदद करवाने वाले के लिए वज़ू कर लेना मुसतहब है ।

मय्यत को ग़ुस्ल व कफ़न देने वाले के लिए बाद में ख़ुद ग़ुसल करना मुसतहब और बेहतर है,वाजिब नहीं है क्योंकि रसूल अल्लाह ﷺ का इर्शाद है, "जो किसी मय्यत को ग़ुस्ल दे वो (बाद में) ख़ुद ग़ुस्ल कर ले और जो उसको उठाए वो वज़ू कर ले।" (सुनन अबी दाऊद)

अबदुल्लाह बिन उमर ؓ का क़ौल है कि हम मय्यत को ग़ुस्ल दिया करते थे,फिर हम में से कोई तो ग़ुस्ल करलेता था और कोई नहीं भी करता था। (सुनन दारक़ुतनी)

**हिकमतः** मय्यत को ग़ुस्ल कराने के दौरान नजासत वाले छींटे या जिस बीमारी से उस की वफ़ात हुई उस के जरासीम वग़ैरा ग़ुस्ल देने वाले पर लगे होंगे तो बाद में ख़ुद उसके ग़ुस्ल कर लेने से तहारत हासिल हो जाएगी,मुतादी या वबाई अमराज़ से वफ़ात पाने वाली मय्यत को उठाने में मदद कराने या नहलाने के तख़्ते तक या तख़्ता

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

से चारपाई पर डालने में मदद कराने वाले पर वज़ु करने की हिक्मत मंदरजाबाला अहादीस से साबित हो जाती है।

**वज़ाहतः** मोमिन मर कर नजिस या नापाक नहीं हो जाता बल्कि बाज़ औक़ात मौत की सख्तियों की वज्ह से पसीना या पेशाब का इख़राज हो जाता है,इसी लिए मय्यत के बदन को साफ़ सुथरा और पाक करने के लिए उसे ग़ुस्ल दिया जाता है।

## चंद एहतियातें

☆ हर लपेटा जाने वाला कपड़ा क़दरे मज़्बूती से लपेटा जाएगा और हर पलड़ा ख़ूब पीछे तक किया जाएगा ताकि तदफ़ीन के वक़्त खुल ना जाए।

☆ कफ़न लपेटते वक़्त हर कपड़े का बायां हिस्सा अंदर और दायां ऊपर आएगा।

☆ चादर समेत तख़्ते या खाट पर लिटाकर चादर निकाल देने का तरीक़ा यूँ है कि मय्यत को पहले एक पहलू के बल कर्वट दिलाई जाए और चादर तेह करके उसके जितना नीचे हो सके,कर दी जाए इसी तरह मय्यत को दूसरे रुख़ मोड़ कर पूरी चादर को आहिस्ता से निकाल लिया जाए।

☆ ग़ुस्ल दिलाने के बाद ऊपर वाली गीली चादर निकालने और जिस्म ख़ुश्क करने का सारा अमल उपर से ख़ुश्क चादर तान कर किया जाएगा ताकि पर्दा रहे।

☆ जिस्म ख़ुश्क करने के बाद मय्यत को ग़ुस्ल के तख़्ते से ऊठाने से पहले इसी तरीक़े से नीचे चादर बिछाई जाएगी जिस तरीक़े से पहले निकाली गई थी।

> नोटः आजकल तैयार शुदा कफ़न साथ दुसरी ज़रूरी अज्ज़ा के मार्किट और अलहुदा इन्टरनेशनल की तक़रिबन तमाम शाखों से दस्तियाब हैं।

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

# ग़ुस्ल व कफ़न के वक़्त ग़ैर मसनून काम

☆ नीचे लिखे हुए काम करना सुन्नत से साबित नहीं हैं।

☆ ग़ुस्ल देने की जगह पर पाकीज़ा कलाम लिखा हुआ लेकर जाना या ज़बानी पढ़ना।

☆ मय्यत को दो बार ग़ुस्ल देना।

☆ बालों की दो चोटियाँ बनाकर सीने पर डालना।

☆ ग़ुस्ल मुकम्मल होने पर क़रीबी रिश्तादारों का आकर मय्यत पर पानी बहाना।

☆ कफ़न से पहले साफ़ लिबास पहनाना।

☆ मय्यत की आँखों में सुरमा लगाना।

☆ कफ़न पर अरक़े गुलाब डालना या आबे ज़म ज़म में भिगोना।

☆ शादी के लिबास में दफ़नाना।

☆ कफ़न पर क़ुरआनी आयात या दुसरी दुआऐं लिखना।

☆ मय्यत के सरहाने क़ुरआन मजीद या अहद नामा रखना।

© AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

# मय्यत के क़र्ज़ की अदाएगी

वफ़ात के बाद मय्यत के पास हाज़िर अज़ीज़ो अक़ारब का ज़िम्मा है के मरने वाला अगर मक़रूज़ मरा तो उसके माल से फ़ौरन क़र्ज़ अदा करने का बंदोबस्त करें चाहे तमाम माल ख़त्म हो जाए और अगर उसने माल ना छोड़ा हो तो हुकूमत उसका क़र्ज़ अदा करेगी बशरत ये कि उसने ज़िंदगी में अदाएगी की पूरी कोशीश भी की हो।अगर हुकूमत अदा ना करे तो जो कोई मुसलमान या कुछ मुसलमान मिलकर भी एहसान करके अदा करदें तो दुरुस्त होगा।

## क़र्ज़ कया है ?

किसी ज़रूर्तमंद को उसकी दरख्वास्त पर खास व मुक़र्रा मुद्दत के लिए रुपया, माल, सामान, अजनास, ग़ल्ला या जानवर वग़ैरा देना के लेने वाला उसे वापस भी करदे "क़र्ज़" केहलाता है।
जिस क़र्ज़ को क़र्ज़ख्वा इस एहसान के साथ दे के वापसी के वक़्त उस पर कुछ फ़ायदा (सूद) न लेगा उसको " क़र्ज़े हसना "केहते हैं।

## ज़रूरतन्

मज्बूरी और ज़रूरत की वजह से क़र्ज़ लेने में कोई हर्ज नहीं,बग़ैर ज़रूरत क़र्ज़ लेने और उसके वक़्त पर अदा ना करने की बड़ी मज़म्मत आई है।

## आसान क़र्ज़

क़र्ज़ की मिक़दार और वापसी की मुद्दत इतनी मुनासिब हो कि देने वाला भी तंगी में पड़ कर मुतालबा ना शूरू करदे और लेने वाला भी अपनी ज़िंदगी ही में आसानी से अदा कर जाए।

© AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

## तेहरीरी हिसाब

मुसलमानों को ज़िंदगी में जब भी ज़रूरतन् क़र्ज़ लेना पड़े तो उसका हिसाब हमेशा लिखकर पास रखे क्योंकी इस क़िस्म के ऊमूर पर लिखत पढ़त का शरअन हुक्म है ।

وْلَاتَسْئَمُوْآاَنْ تَكْتُبُوْهُ صَغِيْرًااَوْكَبِيْرًااِلَي~اَجَلِهِ

“और क़र्ज़ जिसकी मुद्दत मुक़र्र है, ख्वा छोटा हो या बड़ा लिखने में काहिली ना करो”

इसके अलावा अमानत, उधार, वाजिबुल अदा हुक़ूक़ जैसे हक़्क़े मेहर या ज़कात अगर वक़्त पर अदा ना कर सका या क़ज़ा रोज़े या शरई नज़र वग़ैरा अगर मानी हो, उन तमाम का हिसाब लिख नहीं सका तो कम से कम घर वालों से या क़रीबी रिशतेदारों से इसका ज़िक्र करता रहे ।

इसी तरह हर शख्स को अपनी जिंदगी में वक़्तन फ़वक़्तन इस तरफ़ भी ध्यान देते रेहना चाहीए की उसके पास किसी से उधार ली हुई ऐसी कोई चीज़ तो नहीं है, जिसे वह इस्तेमाल के बाद वापिस लौटाना भूल चुका है या ख़ुद देने वाले को भी उसे वापस लेना याद नहीं, क्या मुम्किन नहीं जब उस चीज़ का मालिक ज़रूरत पड़ने पर उसे लेना चाहे तो उधारर लेने वाला ही इस दुनिया में ना रहा हो ।और उसकी इस ग़ैर ज़िम्मेदारी की वज्ह से दूसरों को बाद में अज़ियत हो ।फ़र्ज़ करें किसी ऐसी चीज़ का मालिक ही दुनिया से चला जाए तो यह उसके वारिसों को लौटा देनी चाहिए और अगर वारिस़ ना हों या बोहत टाइम कोई उधार ली हुई चीज़ पड़ी रहे और याद ना हो कि ये किसकी थी? और कोई उसका मुतालबा भी न करे तो उस सूरत में ख़ुद ये चीज़ या उसकी क़ीमत निकाल कर उसके मालिक की तरफ़ से सदक़ा कर देना चाहिए ।

क़र्ज़ से निजात के लिए कोशिश के साथ साथ सफ़हा नंबर३२४ पर मौजूद मसनून दुआओं का सहारा लेना भी फ़ाएदा मंद है ।

© AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

## मय्यत का क़र्ज़

कोई मुसलमान मक़रुज़ हालत में वफ़ात पाजाए तो इसके माल में सेः

1. कफ़न दफ़न का ख़र्च पूरा किया जाए, (वली या कोई दूसरा मुसलमान ख़ुशी और एहसान से ये करना चाहे तो भी पसंदीदा अमल है।)

2. क़र्ज की अदायगी की जाए ,

3. वसियत की सूरत में 1/3 हिस्सा अदा किया जाए गा,

4. बक़ाया माले विरासत की तक़सीम के लिए छोड़ा जायगा।

अल्लाह ताला का इर्शादे पाक हैः

مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُّوصِىْ بِهَآ اَوْدَيْنٍ

(النسآء : ١١)

"इस वसियत (की तकमील) के बाद जो मरने वाला कर गया हो या अदाए क़र्ज़ के बाद"

इस आयते पाक में वसियत या अदाय क़र्ज़ का हुक्म एक साथ मिलता है।

अल्लामा इब्ने कसीर (रह) इसके बारे में यूं लिखते हैं:

"उलमाए जदीद व क़दीम ने इस बात पर इजमा कर लिया है के क़रज़ा वसियत पर मुक़द्दम है."

### सीधा जन्नत में

रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमायाः

जो आदमी इस हाल में फ़ौत के वो तकब्बुर,माले ग़नीमत की ख़्यानत और क़र्ज से पाक हो,सीधा जन्नत में जायगा। (तिर्मिज़ी)

## जल्द अदायगी

मय्यत के क़र्ज़ की अदायगी जल्द अज़ जल्द करदी जाए।

रसूल अल्लाह ﷺ फ़रमाते हैं:

मोमिन की रूह क़र्ज़ की अदायगी तक क़र्ज़ के साथ मुअल्लिक़ रहती है। (तिर्मिज़ी))

© AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

## किसी को रियायत नहीं

शहादत जैसा रुतबा हासिल करने वाले को भी इस से बरी उज़िज़म्मा नहीं समझा गया। रसूल अल्लाहﷺ ने फ़रमायाः

शहादत की वजह से शहीद के सारे गुनाह माफ़ हो जाते हैं मगर क़र्ज़ जब तक अदा नहीं होगा तो माफ़ नहीं होंगे। (मुस्लिम)

## नमाज़े जनाज़ाह पढ़ाने से इन्कार

अल्ला के रसूल ﷺ किसी मक़रूज़ मय्यत पर क़र्ज़ की अदायगी तक नमाज़े जनाज़ह नहीं पढ़ते थे। इस दलील में हदीस पाक मिलती है:

रसूल अल्लाह ﷺ के पास नमाज़ पढ़ाने के लिए एसा जनाज़ाह लाया जाता जिसके ज़िम्मे क़र्ज़ होता।आप ﷺ दरयाफ़त फ़रमातेः क्या अदायगी क़र्ज़ जितना माल छोड़ा है अगर जवाब हां में होता नमाज़े जनाज़ाह अदा फ़रमाते वरना नहीं और फ़रमातेः अपने साथी की नमाज़े जनाज़ाह ख़ुद अदा करलो।

फिर जब अल्लाह ताला ने मुसलमानों को फ़ुतूहात नसीब फ़रमाईं तो आप ﷺ ने फ़रमायाः

में दुनिया व आख़िरत में मोमिनीन की अपनी ज़ात पर भी मुकदंदम हुँ।अगर पसंद करो तो अल्लाह ताला का ये फ़रमान पढ़लोः

اَلنَّبِیُّ اَوْلٰی بِالْمُؤمِنِیْنَ مِنَ اَنْفُسِهِمْ (الاحزاب : 6)

नबी(ﷺ) तो अहले ईमान के लिए इनकी अपनी ज़ात पर मुक़द्दम है

इस लिए जो क़रज़दार वफ़ात पा जाए तो बराए अदायगी क़र्ज़ माल भी ना छोड़े तो अदायगी की ज़िम्मेदारी मुझपर है और जो माल छोड़कर मरे तो वो उसके वुरसा का है। (बुख़ारी)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

मक़रूज़ मय्यत इतना माल छोड़े के उसमें से क़र्ज़ अदा ना हो सके और उसके ग़नी वुरसा, रिशतेदार या हाज़िरीन में से कोई और ये अदाएगी बख़ुशी करदे, तो क़र्ज़ अदा हो जाएगा।

## क़र्ज़ माफ़ी की दरख्वास्त

मक़रूज़ का क़र्ज़ अदा करवाने में उसकी मदद करने के अलावा क़र्ज़ देने वाले से मक़रूज़ के हक़ में मॉफ़ करवाने की दरख्वास्त या सफ़ारिश करना भी क़ाबिले अजर नेकी है।

हदिसे रसूल ﷺ है ,

“जो शख्स अपने भाई से दुनिया का ग़मो तकलीफ़ दूर करता है , अल्लाह क़यामत के रोज़ उसके ग़म और तक्लीफ़ को दूर करेगा ”। (मुस्लिम)

एक और हदीसे पाक है ,

“नेकी की रेहनुमाई करने वाले के लिए नेकी करने वाले के बराबर अजर है ”।

## क़र्ज़ माफ़ी या मोहलत

ईसी तरह खूद कोई क़र्ज़ ख्वा मक़रूज़ की माली कमज़ोरी की वजह से उसका क़र्ज़ मॉफ़ करदे,या मोहलत दे तो उसके लिए अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया,

“जो कोई भी किसी तंगदस्त को मोहलत दे या क़र्ज़ मॉफ़ ही कर दे तो अल्लाह ताला उसको अपने सायए रहमत में जगा देगा और क़यामत के दिन अल्लाह उसकी बेचैनियों को दूर फ़रमा देगा ”। (मुस्लिम)

## अहसन अदाएगी

क़र्ज़ लेकर उसकी बेहतर तरीक़े से अदाएगी (वापसी) करना बोहत पसंदीदा अमल है और अल्लाह ताला की सुन्नत भी है।

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

इरशादे बारी ताला है :

اِنَّ الْمُصَّدِّقِيْنَ وَالْمُصَّدِّقٰتِ وَاَقْرَضُوا اللّٰهَ قَرْضاً حَسَنًا

يُّضٰعَفُ لَهُمْ وَلَهُمْ اَجْرٌ كَرِيْمٌ ۝ (الحديد : 18)

“बेशक सदक़ा देने वाले मर्द और सदक़ा दने वाली औरतें और जो अल्लाह को ख़ुलूस के साथ क़र्ज़ दे रहे हैं उनके लिए उसका कई गुना (ज़यादा) है । और उनके लिए अज्रो स़वाब भी है ”

इस सुन्नत की पैरवी हमें अल्लाह के मेहबूब रसूल ﷺ की ज़िंदगी में भी नज़र आती है । आप ﷺ ने एक मर्तबा क़र्ज़ के तौर पर एक ऊंट लिया और उस से अच्छा और उमर में उस से बड़ा ऊँट वपिस किया और फ़रमाया:

“अच्छा इंसान वो है जो अदाएगी अच्छी करे ”।

**वज़ाहत:** अपनी ख़ुशी से और बग़ैर शर्त तए किए अदाएगी में बेहतरी और ज़ियादती इख़्तियार करना सूद नहीं होता। मय्यत की तरफ़ से क़र्ज़ की वापसी करनी पड़े तो इसमें अपने फ़ौत शुदा भाई\बहन की इज़्ज़त का ख़्याल रखा जाए और एहसन तरिक़े से अदाएगी की जाए ।

© AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

### तवील मोहलत के बावजूद कैसा उज़्र

सय्यदना अबू हुरैरा ؓ से रिवायत है कि रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रनाया :

“ना क़ाबिले समाअत कर दिया अल्लाह ताला ने उस इंसान के उज़्र को जिसकी मौत में ताख़ीर हुई यहां तक कि वह साठ (60) बरस का हो गया ”

(बुख़ारी)

# हुसने विदा

## आह ! ---- रवांगी का वक़्त आगया

अब सफ़रे वापसी है उसी मतलूबे हक़ीक़ी की तरफ़, जिसने अपने बंदे को कुछ अरसे के लिए यहां इमतेहान गाह में भेजा था,ताकि वो एक बेहतर और रौशन मुस्तक़बिल (आखेरत)हासिल करने के लिए अपने हाल (दुनिया) की इस्लाह कर ले। अब उसको अपने रब के हुज़ूर हाज़िर होकर अपनी ज़िंदगी भर की कारगूज़ारी पेश करनी है,अपने मालिक से मुलाक़ात करनी है।

रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया :

“जो शख़्स अल्लाह ताला से मुलाक़ात को मेहबूब रखता है, अल्लाह ताला उसकी मुलाक़ात को मेहबूब रखता है, जो अल्लाह ताला से मुलाक़ात करना पसंद नही करता ,अल्लाह ताला भी उस से मुलाक़ात करना पसंद नही करता”।

(मुत्तफ़िक़ अलैह)

जिस बंदे ने भी उस के साथ मुलाक़ात को याद रखा और इस मुलाक़ात को मक़सदे ज़िंदगी बनाया ,वह अब कामयाबी के साथ विदा हो रहा है, कितना थोड़ा क़याम था और क्या खूब निभाया।

इसके बरअक्स वह जो मंसब, ओहदे, शान और जाह-ओ-जलाल के साथ दुनिया में रेहने के इन्तेज़ाम की फ़िक्र में लगा रहा , दुनिया के मशागिल ने सोचने ही ना दिया के .......इतना थोड़ा क़याम......और इतनी ज़बरदस्त तैयारी !

बगैर एर कंडीशंड गाड़ी के घर से ना निकलने वाला भी आज उसी खाट पर सवार होकर निकल रहा है और उन गाड़ियों को हसरत से देखने वाले की भी आज वही सवारी है।

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

# जनाज़ा ले जाना

## रुख़्सती और इम्तिहान

इन्तिहाई ना ख़ुशगवार, कठिन और ग़म से बोझल तरीन घड़ी वो होती है जब जनाज़ा घर से उठाया जाता है। आपके लिए ये वक़्त खुसूसन् सब्र-ओ-बर्दाश्त और इमान की पुख़्तगी के इम्तिहान का है इस में कामयाब होने की कोशिश करें और बेक़ाबू जज़्बात की समत बदल कर अपने ख़ानदान के फ़र्द को दुआओं के तोहफ़े देकर रुख़सत करें तो दोनों के लिए अज्र ही अज्र है।

## देर ना करें

जनाज़ा ले जाने में ग़ैर ज़रूरी ताखीर नहीं करनी चाहिए।

सय्यदना अबू हुरैरा ؓ से रिवायत है के नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया :

“जनाज़ा ले जाने में जलदी किया करो। इस लिए के अगर वो नेक है तो वो एक भलाई है, जिसकी तरफ़ तुम उसे (जल्द) आगे बढ़ाओ और अगर वो इसके बर्अक्स है तो वो एक बूराई है जिसे तुम अपने कंधों से जल्दी उतार डालो ”। (मुत्तफ़िक़ुन अलैह)

अबू सईद ख़ुदरी ؓ कहते हैं कि नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया ,“जब जनाज़ा तैयार हो जाता है और लोग उसे अपने कांधो पर उठाते है तो नेक मय्यत कहती है , “मुझे जल्दी ले चलो ”। और अगर मय्यत गुनाह गार है तो घरवालों से कहती है , “हाय अफ़सोस मुझे कहां लिए जा रहे हो
”उसकी ये आवाज़ इंसानों के अलावा तमाम मख़्लूक़ सुनती है। अगर इंसान सुन ले तो बेहोश हो जाएं”। (बुख़ारी)

## रफ़तार

सय्यदना इब्ने मसूद ؓ ने नबी करीम ﷺ से पूछा, या रसूल अल्लाह ! जनाज़े को किस रफ़तार से ले जाया करें।

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

आप ﷺ ने फ़रमाया “जल्दी जल्दी दौड़ने की रफ़्तार से कुछ कम ”। (अबी दाऊद)

## कंधा देना

जनाज़े के साथ जाना और कंधा देना मुसलमान का मुसलमान पर हक़ है।

रसूल अल्लाह ﷺ का इर्शाद है “ जिसने तीन बार जनाज़े को उठाया उसने मय्यत का हक़ अदा कर दिया फिर जिस क़द्र उसे ज़्यादा उठाएगा ज़्यादा स़वाब कमाएगा”। (सुनन तिरमिज़ी)

## साथ चलना

जनाज़े के साथ चलने की फ़ज़ीलत में रसूल अल्लाह ﷺ का इर्शाद है:

“जो शख़्स इमान के साथ और स़वाब की नियत से किसी मुसलमान के जनाज़े के साथ चला, फ़िर नमाज़े जनाज़ा और दफ़न तक उसके साथ रहा तो वो दो क़ीरात स़वाब के साथ वापस आया (जबकि) एक क़ीरात उहद पहाड़ के मस़ल है और जो शख़्स उसकी नमाज़े जनाज़ा पढ़कर दफ़न से क़ब्ल ही लौट आया तो वो एक क़ीरात स़वाब के साथ वापस आया”। (बुख़ारी)

बरा बिन आज़िब ؓ कहते हैं कि नबी ﷺ ” ने हमको सात बातों का हुक्म दिया:

“जनाज़ों के साथ जाने का ,बीमार की अयादत का, दावत क़ुबूल करने का, मज़लूम की मदद करने का, क़सम पूरा करने का, सलाम का जवाब देने का, छींकनें वाले के लिए दुआ करने का”....। (बुख़ारी)

एक और मौक़े पर नबी ﷺ ने फ़रमाया,“ बीमार की अयादत करो और जनाज़े के साथ चलो। यह अमल तुम्हें आख़िरत याद दिलाएगा” । (अहमद)

## पैदल और सवार का हुक्म

पैदल जनाज़े के क़रीब रेहते हुए आगे पिछे , दाएं बाएं चल सकता है अलबत्ता पीछे चलना अफ़्ज़ल है। और सवार को जनाज़े के पीछे चलना चाहिए, ताहम बिला उज़्र सवारी पर जाना मकरुह है। (अबू दाऊद,अहमद,बेहक़ी)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

## औरतें ना जाऐं

जनाज़े के साथ रेहने और दफ़नानें तक का ये अज्र सिर्फ़ मर्दों के लिए है ,औरतों के लिए नहीं। औरतों का जनाज़े के साथ ना जाना अफ़ज़ल है।

सय्यदा उम्मे अतियाؓ फ़रमातीं हैं, " हम (औरतों) को जनाज़े के साथ जाने से मना किया गया है,लेकिन ताकीद से मना नहीं हुआ (इस मामले में हम पर सख्ती नहीं की गई)"।(बुख़ारी)

सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर ؓफ़रमाते हैं , रसूल अल्लाह ﷺ ने उस जनाज़े के साथ जाने से मना फ़रमाया है जिस के साथ नोहा और मातम करने वाली औरतें हों। (अहमद,इब्ने माजा)

## ख़ामोशी

जनाज़े के साथ जाने वाले ख़ामोश रहें। बातचीत करना, दुआ या कलमे शहादत की सदा लगाना और तिलावते क़ुरान बुलंद आवाज़ से करते हुए जानाकिसी हदीस़ से स़ाबित नहीं। इसी तरह जनाज़े के साथ बुलंद आवाज़ से रोते हुए चलना भी जनाज़े के एहतराम के ख़िलाफ़ है।

नबी करीम ﷺ के सहाबा कराम ؓजनाज़ों के पास बुलंद आवाज़ नापसंद करते थे, (बेहक़ी)

क्योंकि उनहोंने आप ﷺ का यह इर्शाद सुन रखा था ,

"जनाज़े के साथ राग (आवाज़ ) और आग ना जाए"। (अबुदाऊद)

## आग और चिराग़

आग ख़्वा चिरागों की शक्ल में हो या मशालों की सूरत में, हर तरह मना है। अलबत्ता किसी मजबूरी से रात को दफ़न करना पड़े तो तदफ़ीन के वक़्त असानी के लिए रोशनी का आर्ज़ी इंतेज़ाम कर सकते हैं।

अबदुल्लाह बिन अब्बास ؓ बयान करते हैं , "रसूल अल्लाह ﷺ ने एक आदमी को रात के वक़्त दफ़न किया और क़ब्र के अंदर चराग़ जलाकर रोशनी की"। (तिरमिज़ी)

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

## एहतराम

जब किसी का जनाज़ा आते देखें तो खड़े हो जाए , फिर अगर उसके साथ चलनेका इरादा ना हो तो उसके कुछ आगे निकल जाने तक खड़े रहें।      (बुख़ारी)

## तारीफ़ करना

अगर जनाज़ा किसी ऐसे मुसलमान का है जो ज़िंदगी में अपने रब्ब का ताबे फ़रमान बन कर रहा तो उसकी तारीफ़ करना उसके लिए फ़ायदामंद है। हालांके यही तारीफ़ ज़िंदा इंसान को तकब्बुर में मुबतेला करदेने के इमकान के पेशे नज़र मना की गई है।

एक मर्तबा नबी करीम ﷺ के सामने कुछ सहाबा कराम ؓ ने एक जनाज़े की तारीफ़ बयान की तो आप ﷺ ने फ़रमाया: "वाजिब होगई"।

फिर एक और जनाज़े पर गुज़रे तो सहाबा कराम ने उसकी बुराई बयान की। आप ﷺ ने फर फ़रमाया "वाजिब हो गई"

सय्यदना उमर ؓ ने पूछा ,या रसूल अल्लाह! क्या चीज़ वाजिब होगई?

आप ﷺ ने फ़रमाया:

"पहले शख़्स की तुमनें तारीफ़ बयान की तो उसके लिए बहिश्त वाजिब हो गई ,फिर दूसरे की तुमनें बूराई की तो उसके लिए दोज़ख़ वाजिब हो गई। तुम लोग दुनिया में अल्लाह के गवाह हो"।      (बुख़ारी)

दूसरे जनाज़े के बारे में सहाबा कराम ने जो बूराई बयान की तो वो उसके फ़ासिक़ , फ़ाजिर और खुल्लम खुल्ला बिदअती होनेकी वजह से की थी, जो के जाइज़ है।

(याद रहे के सहाबा कराम ؓ ऐसी हसतियां थे के उनकी बातमें झूट या मुबाल्ग़ा की अमेज़िश नहीं होती थी।आज अगर एक मुसलमान किसी ज़ाती दुशमनी या मय्यत की ज़िंदगी में उस से कोई मफ़ाद हासिल ना होसकने की बिना पर उसकी बुराई बयान करता है तो ये जाइज़ नहीं)

© AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

## राहतओ नीजात

अबू क़तादाह अंसारी ؓ बयान करते हैं कि रसूसल अल्लाह ﷺ के सामने से एक जनाज़ा गुज़रा तो आप ﷺ ने पूछा:

"आराम पाने वाला है या आराम देने वाला है"(मुतवफ्फी नेक बख़्त था या बदबख़्त) सहाबा कराम ؓ ने पूछा , या रसूल अल्लाह!"आराम पाने वाला या आराम देने वाला से क्या मुराद है?"

आप ﷺ ने फ़रमाया:"ईमान वाला बंदा तो मरकर दुनिया की तकालीफ़ और मुसीबतों से नीजात पा जाता है और अल्लाह की रहमत में आराम पाता है और बेईमान और बदकार मरने से तमाम दूसरे बंदे, शहर, दरख़्त, जानवर, चौपाए आराम पाते हैं" (बुख़ारी)

## जनाज़ा रखने से पहले ना बैठना

क़ब्रिस्तान पोहंच कर जब तक जनाज़ा ज़मीन पर ना रखा जाए, तब तक बैठना मना है।

अबू सईद ؓ से रिवायत है के नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया , "जब जनाज़ा आते देखो तो खड़े हो जाओ और जो शख़्स जनाज़े के साथ जाए वो उस वक़्त तक ना बैठे जब तक के जनाज़ा नीचे ना रख दिया जाए"

### जन्नत वालों की ख़ूबियां

एक मर्तबा रसूल अल्लाह ﷺ ने सहाबा कराम से दर्याफ़त फरमाया:
"आज तुम में कौन रोज़े से है"?
"आज तुम में से जनाज़े के साथ कौन गया"?
"आज तुम में से कौन मरीज़ की तीमारदारी के लिए गया"?
हर बार सय्यदना अबू बकर ؓ ने जवाब में कहा, "जी मैं "।
इसके बाद आप ﷺ ने ईरशाद फ़रमाया:
"जिस आदमी में ये ख़ूबियां जमा हों वो जन्नत में दाख़िल होगा"।

© AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

# नमाज़े जनाज़ा
## (मुसलमान का हक़)

### फ़र्ज़े किफ़ाया

गुस्ल, कफ़न और दफ़न की तरह मुसलमान की नमाज़े जनाज़ा पढ़ना भी फ़र्ज़े किफ़ाया है। ईलाक़े के कुच्छ लोग ये अदा करदें तो फ़र्ज़ पूरा होजाता है। लेकिन अगर कोई भी अदा ना करे तो सब गुनाहगार होंगे।

### दुआए मग़फीरत

नमाज़े जनाज़ा दरअस्ल मरने वाले के लिए दुआए मग़फिरत के साथ साथ एक सिफ़ारिश और एक गवाही भी है और इस तरह ज़िंदों पर मय्यत का यह एक एहम और आख़री हक़ है।जिसे ये सोच कर ही अदा कर लेना चाहिए के आज इसको हमारी दुआओं की ज़रूरत है,कल हम भी इसी जगह बेबस पड़े दूसरों की दुआओं के मोहताज होंगे।

### फ़ज़ीलत

सय्यदना अबू हुरैरा ؓ बयान करते हैं कि रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया:

“जो शख्स जनाज़े में नमाज़ होने तक शामिल रहे उसको एक क़ीरात (एक पहाड़ ) के बराबर स़वाब मिलेगा और जो दफ़न तक रहे उसको दो क़ीरात मिलेंगे”।

### कहां पढ़ें

नमाज़े जनाज़ा मस्जिद से मुलहिक़ ईदगाह में या बारिश होने या ना होने की सूरत में मसजिद के अंदर भी पढ़ी जासकति है। ये मस्जिद उसी रिहाएशी ईलाक़े की भी हो सकती है, या आजकल के क़ब्रिस्तानों से मुल्हिक़ा भी।

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

नबी करीम ﷺ ने सुहैलؓ बिन बऐदा और उनके भाईؓ की नमाज़े जनाज़ा मस्जिद में पढ़ाई।

## क़ब्रिसतान में नमाज़े जनाज़ा की मुमानेअत

सय्यदना अनसؓ बिन मालिक से रिवायत है की रसूल अल्लाह ﷺ ने हमें क़ब्रों के दर्मियान नमाज़े जनाज़ा पढ़ने से मना फ़रमाया है। (तबरानी)

क़ब्रिसतान में किसी भी क़िस्म की नमाज़ पढ़ना मना है:

लेकिन बाज़ खुसूसी हालात में आप ﷺ से ऐसा करना स़ाबित है:

☆ किसी मय्यत को अगर किसी वजह से नमाज़े जनाज़ा पढ़े बगैर दफ़न कर दिया गया था या

☆ कोई अज़ीज़ उसकी नमाज़े जनाज़ा में शरीक नही होसका था और वह अब ऐसा करना चाहता है या

☆ सिर्फ शक है के नमाज़ नहीं पढ़ी गई और बाद में उसकी क़ब्र मालूम होजाए।

इन तमाम मज़कूरा हालात में क़ब्र के क़रीब नमाज़े जनाज़ा अदा करनेकी दलील के तौर पर कुछ अहादीस़ मिलती हैं।

सय्यदना अबू हुरैराؓ से रिवायत है कि एक हबशी औरत मसजिदे नबवी में झाड़ू दिया करती थी।वो वफ़ात पागई और नबी करीम ﷺ को उसके मरने की खबर ना हो सकी।

एक रोज़ आप ﷺ ने उसको याद फ़रमाया और पूछा:

“वो कहां है (या उसका क्या हाल है )”?

लोगों ने उसके मरने का क़िस्सा बयान किया। आप ﷺ ने फ़रमाया:

“मुझे उसकी क़ब्र की निशानदही करो”

फिर आप ﷺ उसकी क़ब्र पर तशरीफ़ ले गए और नमाज़े जनाज़ा पढ़ी। (बुख़ारी)

इस सिलसिले में एक और हदिस़े नबवी ﷺ है, अबदुल्लाह बिन अब्बासؓफ़रमाते हैं कि:

©AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

“एक आदमी वफ़ात पागया जिसकी रसूल अल्लाह ﷺ अयादत फ़रमाया करते थे। सहाबा कराम ؓ ने उसे रात ही में दफ़न कर दिया और सुबाह को आप ﷺ को इत्तला की। आप ﷺ ने फ़रमाया “तुमने मुझे रात को इत्तला क्यों ना की”? सहाबा ؓ ने अर्ज़ किया, रात होगई थी, अंधेरा था। हमने आपको तकलीफ़ देना पसंद ना किया”।

नबी ﷺ उसकी क़ब्र पर तशरीफ़ लाए और अपनी इमामत में नमाज़े जनाज़ा अदा फ़रमाई। हमने उनके पीछे सफ़ें बांधी, मैं भी मौजूद था। नबी ﷺ ने चार तकबीरें कहीं” ।

## ग़ाएबाना नमाज़े जनाज़ा

एसा ग़ैर मुसलिम इलाक़ा जहां कोइ मुसलमान वफ़ात पाजाए और उसकी नमाज़े जनाज़ा अदा करने वाला कोई ना हो उस सूरत में किसी और इस्लामी रियासत में चंद मुसलमान उसकी ग़ाएबाना नमाज़े जनाज़ा अदा कर सकते हैं, जिस तरह के रसूल अल्लाह ﷺ ने सहाबा कराम ؓ के साथ हबश के बादशाह नजाशीؓ की ग़ाएबाना नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई।

सय्यदना अबू हुरैराؓ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने लोगों को नजाशीؓ की मौत की खबर उसी रौज़ पौंहचा दी जिस रोज़ उनकी वफ़ात हुई। नबी करीम ﷺ सहाबा करामؓ के साथ जनाज़ा गाह तशरीफ लेगए, उनकी सफ़ बनाई और चार तकबिरें केहकर नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई।

## नमाज़े जनाज़ा से इज्तनाब

अहादीस़ के मुताबिक़ जिनकी नमाज़े जनाज़ा नबी करीम ﷺ ने पढ़ने से एराज़ फ़रमाया, उनमें मंद्रजाज़ैल लोग शामिल है

- ☆ मक़रूज़ हत्ताके उसका क़र्ज़ कोई अदा करदे। सफ़्हा नंबर (११३) देखये।
- ☆ खूदकुशी करने वाला। सफ़्हा नंबर (२९०) देखये।
- ☆ ज़ानी हत्ता के सच्ची तौबा करके अपनी जान अल्लाह के क़ानून के मुताबिक़ (हद नाफ़िज़ करने के लिए पेश करदे)।

© AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

क़बीला जुहैना की एक औरत रसूल अल्लाह ﷺ की ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हुई, जोके ज़िना की वजह से हामेला थी। उसने दरख्वास्त की, "या रसूल अल्लाह! मुझ से ऐसा क़ुसूर हो गया है जिसकी वजह से मुझ पर हद लगती है, लिहाज़ा आप नाफ़िज़ फ़रमादें,"।

आपﷺ ने उसके सर्परस्त रिशतेदार को बुलाकर फ़रमाया:

"इसके साथ सुलूक (देख भाल) करते रहो, जब बच्चा जन् ले तो मेरे पास ले आना"। चुनंचा उसने ऐसा ही किया।

रसूल अल्लाहﷺ के हुक्म से उसके कपड़े अच्छी तरह बांध दिये गए और उसे रजम कर दिया गया। आपﷺ ने उसकी नमाज़े जनाज़ा अदा फ़रमाई।

सय्यदना उमर ؓ ने दरयाफ़्त किया, "आप ऐसी औरत की भी नमाज़े जनाज़ा अदा करते है जिसने ज़िना किया हो'? आप ﷺ ने फ़रमाया, "इसने ऐसी तौबा की है कि सत्तर एहले मदीना पर तक़सीम करदी जाए तो सबको किफ़ायत कर जाए। सिर्फ अल्लाह के खौफ़ से अपनी जान पेश कर देने वाली इस (औरत)से बेहतर किसी कीतौबा तुमने देखी है"? (मुस्लिम)

जाबिर बिन अब्दुल्लाह ؓ से मरवी है कि क़बीला असलम से एक शख्स माइज़ असलमी नबी मोहतरमﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और आपﷺ के सामने ज़िना का एतराफ़ किया आप ﷺ ने उसकी तरफ़ से अपना रुख फेर लिया। उसने फिर ज़िना का एतराफ़ किया, आपﷺ ने फिर अपना चेहरा मुबारक उस से फेर लिया, हत्ताके उसने अपने नफ़्स के खिलाफ़ चार मर्तबा गवाही दी।

इसके बाद नबी करीमﷺ ने यह दरयाफ़्त फ़रमाया, "क्या तुम पागल हो"?उसने अर्ज़ किया नहीं,। आपﷺ ने दरयाफ़्त फ़रमाया:"क्या तुमहारी शादी हो चुकी है"?

उसने अर्ज़ किया, "जीहां"। नबी ﷺ ने उसे रजम किये जाने का हुक्म फ़रमाया। जब उसे पथरों से तकलीफ़ पौँहची तो वो भागने लगा, लेकिन लोगों ने उसे पकड़ लिया और उसे पथरों से मारा, वो फ़ौत हो गया।

© AL HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

नबी करीमﷺ ने उसके मुताल्लिक़ अच्छे ख्यालात का इज़्हार फ़रमाया लेकिन उसकी नमाज़े जनाज़ा ना पढ़ी। (सुनन निसाई)

☆ जो शख्स माली इस्तेताअत रखते हुए भी वारिसों के लिए कुछ ना छोड़े।

इमरान बिन हुसैनؓ से मरवी है कि एक शख्स ने फ़ौत होते वक़्त अपने छे ग़ुलामों को आज़ाद कर दिया और इनके इलावा (वारिसों के लिए) मज़ीद क़ाबिले तक़सीम और कोई माल ना था।

नबी करीम ﷺ को जब इस बात का पता चला तो वो इसपर बोहत नाराज़ हुए और फ़रमाया:

"मेरा इरादा है मैं इसपर नमाज़े जनाज़ा ना पढ़ूँ"। फिर आपﷺ ने उसके ग़ुलामों को बुलाया और उनके तीन हिस्से किये, फिर उनके दर्मियान क़ुरआ डाला तो दो ग़ुलामों को (मरने वाले की तरफ़ से बतौरे हिस्सा वसियत) आज़ाद कर दिया और चार को (वारिसों के लिए ) ग़ुलाम ही रहने दिया। (सुनन निसाई)

☆ माले ग़नीमत (सरकारी माल) में ख़यानत करने वाला ख़्वा शहीद हो।

ज़ैदؓ बिन ख़ालिद से मरवी है कि एक शख़्स (सहाबी रसूलﷺ) ख़ैबर के दिन वफ़ात पागय। साथियों ने रसूल अल्लाहﷺ से तज़केरा किया।

आपﷺ ने फ़रमाया:"अपने साथी की नमाज़े जनाज़ा तुम ख़ूद ही अदा करलो"

इस फ़रमान से सहाबा करामؓ के चेहरे उतर गए। आपﷺ ने फ़रमाया

"तुम्हारे साथी ने माले ग़नीमत में बददियांती की है"

जब हमने उसके सामान की तलाशी ली तो वहाँ से यहूदियों का एक मोती निकला जिस की क़ीमत दो दिर्हम भी ना थी। (मौता इमाम मालिक,सुनन अबी दाऊद)

अल्लाह की राह में जानकी बाज़ी लगादेना अगर्चे बड़ी सआदत की बात है ,मगर माले ग़निमत की चोरी या क़र्ज़ वग़ैरा के मामले में शहादत का रुत्बा पाने वाले को भी कोई

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

रिआयत नहीं दी गई। सफ़हा नंबर (२७१) पर देखिए।

☆ इसके अलावा अल्लाह ताला ने नबि करीम ﷺ को फ़ासिक़, फ़ाजिर और मुनाफ़िक़ीन की नमाज़े जनाज़ा के लिए फ़रमा दिया था।

ا تُصَلِّ عَلٰی~اَحَدٍمِنْھُمْ مَّاتَ اَبَدًاوَّلَاتَقُمْ عَلٰی قَبْرِہٖ اِنَّھُمْ كَفَرُوْابَاللّٰہِ
وَرَسُوْلِہٖ وَمَاتُوْاوَھُمْ فَاسِقُوْنَ

"और आइंदा उनकी (मुनाफिक़ीन) में से जो मरे उसकी नमाज़े जनाज़ा भी तुम हरगिज़ ना पढ़ना और ना कभी उसकी क़ब्र पर खड़े होना। क्योंकि उनहोंने अल्लाह और उसक रसूल ﷺ के साथ कुफ्र किया है और वह मरे हैं इस हाल में के वह फ़ासिक़ थे"।

अबू क़तादा ؓ बयान करते हैं कि जब रसूल अल्लाह ﷺ से किसी की नमाज़े जनाज़ा अदा करने की दरख़्वास्त की जाती तो आप ﷺ उसके बारे में लोगों की राय़ दरयाफ़्त फ़रमा लेते, और अगर उसके मुतालिक़ अच्छी राय़ ना होती तो उसके एहले ख़ाना से फ़रमाते:

"तुम ख़ूद ही इसकी नमाज़े जनाज़ा पढ़लो" और आप ﷺ नमाज़े जनाज़ा अदा ना फ़रमाते। (मुसनद अहमद)

**ख़ुलासा:** ऐसे मुसलमान जो बज़ाहिर (खुल्लम खुल्ला) हराम कामों और कबीरा गुनाहों में मुलव्विस नज़र आते हों और नमाज़, रोज़ा और दीगर फ़राइज़ भी छोड़ बैठे हों, उनकी नमाज़े जनाज़ा में उलमा, मशाइख और मुत्तक़ी पर्हेज़गार लोगों को शरीक़ नहीं होना चाहिए। ताके बतौर तंबीह-ओ- सरज़निश दूसरों को नसीहत रहे।

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

# तरीक़ा नमाज़े जनाज़ा

## सफ़ बन्दी

☆ दूसरी नमाज़ों की तरह नमाज़े जनाज़ा के लिए भी बा वज़ू और क़िबला रुख़ होना शर्त है। अल्बत्ता अगर नमाज़ पर उस वक़्त पौंहचे के लोग पढ़ रहें हों और वज़ू के लिए वक़्त ना हो तो तयम्मुम करे और अल्लाहु अकबर कहकर शामिल होजाएं। (बुख़ारी)

☆ इस नमाज़ में सफों की तादाद ताक़ रखी जाएगी। तीन सफ़ें बनाना अफ़्ज़ल है अगर लोगों की तादाद ज़्यादा हो तो तीन से ज़्यादा सफ़ें बनाई जा सकती हैं, लेकिन कम तादाद की सूरत में एक या दो सफ़ें भी काफ़ी हैं। (बुख़ारी)

☆ यह नमाज़ भी दीगर फ़र्ज़ नमाज़ों की तरह बाजमात अदा करना ज़रूरी है। (बुख़ारी)

☆ जमात कम-अज़-कम तीन आदमियों से भी हो सकती है। इस सूरत में वो आम नमाज़े जनाज़ा की तरह इमाम के पहलू में नहीं खड़े होंगे बलकि इमाम के पीछे खड़े होंगे।

☆ अबदुल्लाह बिन अबी तलहा ؓ बयान करते हैं कि अबू तलहा ने नबी करीम ﷺ को बुला भेजा। आप ﷺ तशरीफ़ लाए।चुनंचा उनके घर में ही उमैर की नमाज़े जनाज़ा अदा की गई। नबी करीम  सबसे आगे खड़े हुए ,अबू तलहा ؓ आप ﷺ के पीछे और उम्मे सुलैम ؓ (ज़ौजा अबू तलहा) अबू तलहा के भी पीछे, इन तीनों के इलावा उनके साथ कोई और ना था। (मुस्तदरक-हाकिम)

☆ नमाज़े जनाज़ा से क़ब्ल ना अज़ान है ना ही इक़ामत। (बुख़ारी)

☆ बोहत सी मय्यतों पर एक ही नमाज़े जनाज़ा पढ़ना भी दुरुस्त है और हर जनाज़ा पर अलग नमाज़ अदा करना भी जाएज़ है। (सुनन नसाई)

☆ नमाज़े जनाज़ा के लिए हाज़री जितनी ज़्यादा हो मय्यत के हक़ में उतना ही अच्छा है

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

अहादीसे रसूल ﷺ है:

“जिस मय्यत के लिए मुसलमान जमात में से सौ (100) सिफ़ारिश करेंगे तो उसके लिए सिफ़रिश क़ुबूल होगी” । (मुस्लिम)

“जो मुसलमान वफ़ात पाजाए उसके जनाज़े में चालीस(४०) ऐसे आदमी शरीक हों जो शिर्क ना करते हों ते अल्लाह ताला उनकी सिफ़ारिश क़ुबूल फ़रमाएंगे” । (मुस्लिम)

## इमामत

☆ सहाबा कराम ؓ और ताबईन ؒ जनाज़े की नमाज़ में इमामत का हक़दार उसी को जानते जिस को फ़र्ज़ नमाज़ में इमामत का हक़दार समझते । (बुख़ारी)

☆ इमाम को मर्द मय्यत के सर के मुक़ाबिल और औरत मय्यत के वस्त के मुक़ाबिल खड़ा होना चाहिए। नमाज़े जनाज़ा अगर मर्द और औरत दोनों का एक ही वक़्त में हो तो मर्द की मय्यत इमाम के क़रीब और औरत की मय्यत क़िबले की तरफ़ रखी जाएगी । (अबुदाऊद,नसाई)

नाफ़े से रिवायत है , अब्दुल्लाह बिन ऊमर ؓ नौ जनाज़ों की नमाज़ एक ही दफ़ा पढ़ाई जिस में मर्द मय्यतों को इमाम के क़रीब किया और औरतों को क़िबले की तरफ़ और उन सबकी एक सफ़ बनाई । (नसाई)

☆ बोहत सी मय्यतों के साथ बच्चे की मय्यत भी हो तो नमाज़ के वक़्त उसे इमाम के क़रीब तर रखा जाएगा ।

सय्यदना अलीؓकी दुखतर, सय्यदना उमर फ़ारूक़ؓ की ज़ौजा और आपؓ के एक फ़र्ज़ंद जिन्हें ज़ैदؓ कहा जाता था, का जनाज़ा एक साथ रखा गया और उनकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ाने वाले सईदؓ बिन अलआस थे ।लोगों में इबन अब्बासؓ, अबू हुरैराؓ, अबू सईदؓ, और अबू क़तादाؓ मौजूद थे । बच्चे का जनाज़ा इमाम के नज़दीक़ तर (सामने) रखा गया । एक शख्स ने कहा मैं ने इसे पसंद ना किया तो मैं ने इब्ने अब्बास ؓ, अबु सईद ؓ और अबू क़तादाؓ की तरफ़ सवालिया नज़रों से देखा

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

और पूछा, “यह क्या है”? उनहोंने फ़रमाया, “ऐसा ही करना सुन्नत है” ।
(सुनन नसाई)

☆ हैज़ या निफ़ास वाली औरत की मय्यत पर भी नमाज़े जनाज़ा इसी तरह पढ़ी ज़ाएगी ।

समरा बीन जुंदब ؓ बयान करते हैं कि मैं ने नबी करीम ﷺ के पीछे काब ؓ की वालेदा पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ी, जो निफ़ास में वफ़ात पा गई थीं और आप ﷺ उनके जनाज़े के वस्त में खड़े थे । (मुस्लिम)

☆ इस नमाज़ में ना रुकू है ना सज्दा बलके सिर्फ़ क़याम है । (बुख़ारी)

☆ इस नमाज़ में भी आपस में बात न करना चाहिए । (बुख़ारी)

☆ नमाज़े जनाज़ा सिर्री तौर पर (आहिस्ता से) पढ़ना और जहरी (आवाज़ से) पढ़ना, दोनों तरह सुन्नत से साबित है। (नसाई, मुस्लिम)

## तक्बीरात

☆ इस नमाज़ में चार, पाँच और नो तकबीरों तक पढ़ना नबी करीम ﷺ से स़ाबित है । अल्बत्ता चार तकबीरों से मुतालिक अहादीस़ क़वी और कस़ीर हैं। (बुख़ारी,नसाई, मानी आसार तहावी)

☆ तक्बीरात क़दरे बुलंद आवाज़ में कही जाएगी ताके पिछली सफ़ों वाले भी सुन लें ।

☆ हर तकबीर में हात उठाना (रफ़ा यदैन करना) या सिर्फ़ पहली तकबीर के वक़्त हात उठाना दोनों तरह दुरुस्त है । (तिरमिज़ी, बैहीक़ी, दार क़ुतनी)

☆ पहली तक्बीर के बाद सूरह फ़ातिहा और साथ कोई दूसरी सूरत मिलाना भी ठीक है। (बुख़ारी)

☆ दूसरी तक्बीर के बाद दरूदे इब्राहीमी है (नमाज़ में तशह्हुद के बाद वाला)। (बेहीक़ी)

☆ तीसरी तक्बीर के बाद मय्यत की बख़्शिश के लिए मसनून दुआऐं है । (मुस्लिम, अबु दाऊद, तिरमिज़ी, इब्ने माजा,बेहीक़ी) सफ़हा नमबर (329) पर देखिए-

© AL HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

☆ चौथी तक्बीर के बाद आहिसता सलाम फेरना सुन्नत है। (बेहक़ी)

☆ नमाज़े जनाज़ा दो सलाम कह कर ख़त्म करना या एक ही सलाम पर ख़त्म करना दोनों तरीक़े सुन्नत से स़ाबित है। इस लिए सिर्फ़ एक सलाम पर इक्तफ़ा करना भी जाएज़ है।
सय्यदना अबू हुरैरा ؓ बयान फ़रमाते हैं कि रसूल अल्लाह ﷺ ने चार तक्बीरों की नमाज़े जनाज़ा अदा फ़रमाई और एक सलाम फेरा।
(सुनन दारक़ुतनी, मुसतदरिक हाकिम)

## ख़वातीन क्या करें?

जिस मस्जिद या जनाज़ा गाह में ख़वातीन के लिए अलैहदा और मुनासिब इन्तिज़ाम मौजूद हो वहां वो नमाज़े जनाज़ा में शरीक हो सक्ती हैं जैसे हरमैन शरीफ़ैन में। ताहम मय्यत के घर में फ़ारिग़ बैठे दुनियावी गुफ़्तुगू करने से बेहतर है कि वो भी मय्यत की मग़फ़ेरत के लिए सफ़हा (329) पर दीगई मसनून दुआऐं पढ़ती रहें। इसके अलावा मय्यत के घरवाले इस मौक़े पर ये दुआ मांगें :

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ وَلَهُ وَاَعْقِبْنِيْ مِنْهُ عُقْبیً حَسَنَةً

ऐ अल्लाह मेरी और इस( मरने वाले) की बख़्शिश फ़रमाना और मुझे इसका बेहतरीन बदला अता करना (अजर और नेमुल बदल दोनों मुराद है)
(मुस्लिम,अबु दाऊद,तिरमिज़ी,नसाई)

## नमाज़े जनाज़ा और दफ़नाने के औक़ात

☆ मंद्रजा ज़ैल औक़ात में नमाज़ पढ़ने और मय्यत दफ़न करने से मना किया गया है।

(1) जब सूरज तुलू हो रहा हो।

(2) जब ऐन दोपेहर हो ,हत्ता के सूरज ढलने लगे।

(3) जब सूरज ग़ुरूब हो रहा हो, यहां तक के पूरी तरह ग़ुरूब हो जाए। (मुस्लिम)

☆ दिन के औक़ात में दफ़नाना मुसतहब और मजबूरी में रात को दफ़नाना जाएज़ है।
(मुस्लिम, बुख़री)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

नबी करीम ﷺ ने रात के औक़ात में मय्यत के दफ़न करने से सख़्ती से मना फ़रमाया चाहे उसकी नमाज़े जनाज़ा ही क्यों ना अदा हो चुकी हो, सिवाए इसके के आदमी मजबूर हो। (मुस्लिम)

मजबूरी से मुराद ये है कि मसलन मय्यत का जिस्म सुबह तक ख़राब होजाने का अंदेशा है या तदफ़ीन के साथ जाने वाले दूर की मुसाफ़त तए करके आए हैं और रास्ता भी दुशवार गुज़ार है या खतरा है कि बहिफ़ाज़त वापसी को यक़ीनी बनाने के लिए तदफ़ीन से जलदी फ़ारिग़ होना ज़रूरी है या कोई और उज़्रे हक़ीक़ी है तो एसी सूरत में रात को दफ़नाना जाएज़ है। (सय्यदना अबू बक्र ؓ को रातको दफ़न किया गया था।

## फ़ैसलों का दिन

हर शख़्स जान लेगा वो क्या लेकर आया है। "عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّآ اَحْضَرَتْ o (التکویر: 14)"

जिस दिन ना माल कोई फ़ायदा देगा और ना ही औलाद "يَوْمَ لَا يَنْفَعُ مَالٌ وَّلَا بَنُوْنَ o (الشعراء: 88)"

जिस दिन कोई दोस्त अपने दोस्त के कुछ काम ना आयगा "يَوْمَ لَا يُغْنِى مَوْلًى عَنْ مَوْلًى شَيْئًا (الدخان: 41)"

يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ اَخِيْهِ o وَاُمِّهٖ وَاَبِيْهِ o وَصَاحِبَتِهٖ وَبَنِيْهِ o (عبس: 34,35,36)

आदमी उस दिन अपने भाई और अपनी माँ और अपने बाप और अपनी बीवी और अपने बेटों से भागेगा.

और उस दिन जब गवाह खड़े होंगे "وَيَوْمَ يَقُوْمُ الْاَشْهَادُ o (المؤمن: 51)"

जिस दिन उनकी अपनी ज़बानें और उनके अपने हाथ और पाँव उनके ख़िलाफ़ गवाही देंगे- يَوْمَ تَشْهَدُ عَلَيْهِمْ اَلْسِنَتُهُمْ وَاَيْدِيْهِمْ وَاَرْجُلُهُمْ (النور: 24)

लेहाज़ा किसी की कुछ भी हक़ तलफ़ी ना होगी- "فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا (الانبیاء: 47)"

## ज़ुल्म की तलाफ़ी

रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया:
अगर किसी शख़्स ने दूसरे शख़्स पर ज़ुल्म कर रखा है,चाहे वह जानी ज़ुल्म हो या माली हो,आज वह इस से माफ़ी मांगले या सोना चाँदी देकर इस दिन के आने से पहले हिसाब साफ़ करले जिस दिन ना दरहम होगा,और ना दीनार होगा,ना ही सोना चाँदी (और ये सब होता भी तो) कुछ काम ना आयगा- (बुख़ारी)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

# मुसाफ़िर की मंज़िल

दुनिया के ऐ मूसाफ़िर मंज़िल तेरी क़ब्र है
तए कर रहा है जो तू, दो दिन का ये सफ़र है

दुनिया के ऐ मूसाफ़िर मंज़िल तेरी क़ब्र है

जबसे बनी है दुनिया, लाखों करोड़ों आए
बाक़ी रहा ना कोई, मिट्टी में सब समाए
इस बात को ना भूलो, सबका यही हशर है

दुनिया के ऐ मूसाफ़िर मंज़िल तेरी क़ब्र है

ये आलीशान बंगले, किसी काम के नही है
मेहलों में सोनेवाले, मिट्टी में सो रहे हैं
दो गज़ ज़मीन का टुक्ड़ा, छोटासा तेरा घर है

दुनिया के ऐ मूसाफ़िर मंज़िल तेरी क़ब्र है

आँखों से तूने अपनी, देखे कई जनाज़े
हाथों से तूने अपने दफ़नाए कितने मुरदे
अंजाम से तू अपने, क्यों इतना बेखब्र है

दुनिया के ऐ मूसाफ़िर मंज़िल तेरी क़ब्र है

(माख़ूज़)

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

# क़बर

क़ब्र दुनिया का आख़री घर और आख़ेरत के घर का पेहला दरवाज़ा है।
सय्यदना बराؓ से रिवायत है कि हम रसूल अल्लाह ﷺ के साथ एक जनाज़े में थे। आप ﷺ क़ब्र के किनारे बैठ कर रोने लगे, हत्ता के मिट्टी आप ﷺ के आँसूओं से तर हो गई फिर आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमायाः "ऐ मेरे भाईयो ! इस दिन के लिए कुछ तयारी करलो"।

(इब्ने माजा)

सय्यदना उस़मानؓ बिन अफ़्फ़ान के आज़ाद करदा ग़ुलाम हानीؓ का बयान है कि सय्यदना उस़मानؓ जब किसी क़ब्र के पास खड़े होते तो रोते यहाँ तक कि अपनी दाढ़ी तर करलेते। उनसे पूछा गया के जन्नत और जहान्नुम के ज़िक्र पर आप इतना नहीं रोते, अलबत्ता क़ब्र को याद करके क्यों रोने लगते हैं ?

तो उन्होंने फ़रमाया कि मैं ने रसूल अल्लाह ﷺ को इर्शाद फ़रमाते हुए सूना है कि:

"क़ब्र आख़ेरत की मंज़िलों में से पहली मंज़िल है, अगर यहाँ आदमी निजात पागया तो बाद का मसला आसान है और अगर यहाँ छुट्कारा नहीं मिला तो बाद के मराहिल सख़्त तर आएंगे"।

नीज़ मैंने रसूल अल्लाह ﷺ को ये फ़रमाते सूना है:
"क़ब्र से ज़यादा हौलनाक मंज़र मैं ने कभी नहीं देखा"।

हानीؓ केहते हैं कि एक क़ब्रके पास खड़े होकर सय्यदना उस़मानؓ ये शेर पढ़ रहे थे:

فَاِنْ تَنْجُ مِنْهَا تَنْجُ مِنْ ذِیْ عَظِیْمَۃٍ    وَالاّ فَاِنّیْ لاَاخَا لُكَ نَا جِیَا

अगर तू क़ब्र की मुसीबत से निजात पाजाए तो फिर बोहत बड़ी मुसीबत से निजात पा जायगग........... वरना मेरा ख़याल ये है कि फिर तुझे हरगिज़ निजात नहीं मिले गी-
हक़ीक़त ये है कि यहां क़ब्र में भी इंसान को उसका छोड़ा हुआ अमल ही फ़ाएदा या नुक़सान देगा।

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

हदीसे रसूल ﷺ है:

“मरने वाले का अच्छा अमल अच्छी इंसानी सूरत में क़ब्र में उसके साथ रहेगा और बुरा अमल बुरी इंसानी शक्ल में उसके पास रहकर मज़ीद अज़ियत का सबब बनेगा”। (कन्ज़ुल आमाल)

ये साथी दफ़न के वक़्त से क़यामत बर्पा हाने के दिन तक साथ निभाएगा,एक और हदीस़ में है:

“तीन चीज़ें इंसान की साथी हैं, पेहला साथी यानी माल-ओ -अस्बाब जो मरते वक़्त ही उसका साथ छोड़ देता है, दूसरा साथी उसका कुंबा और हलक़ए एहबाब जो तदफ़ीन तक साथ निभाने आता है और फिर वापस चल देता है, तीसरा साथी यानी अमल जो बाक़ी रेह जाता है, क़ब्र में दाखिल होने और वहाँ से उठने तक साथ निभाता है, तीनों साथियों में से यही मय्यत का सच्चा दोस्त है” । (कन्ज़ुल आमाल)

## दफ़न करने का इस्लामी तरीक़ा

क़ुरान पाक में अल्लाह ताला का इर्शादहै :

ثُمَّ اَمَاتَهٗ فَاَقْبَرَهٗ ( عبس : 21)

“फ़िर उसको मौत दी और क़ब्र में दफ़न कराया”

एक और जगह इर्शाद होता है:

اَلَمْ نَجْعَلِ الْاَرْضَ كِفَاتًا ۙ اَحْيَآءً وَّاَمْوَاتًا ۙ ( المرسلت:26,27)

“कया हमने ज़मीन को समेट कर रखने वाली नहीं बनाया है, ज़िंदों को भी और मुर्दों को भी”?

इमाम बूख़ारी बयान करते हैं कि सूरह अबस(**عَبَسَ**) में जो **فَاَقْبَرَهٗ** है, तो अरब लोग केहते हैं **اَقْبَرْتُ الرَّجُلَ اُقْبِرُهٗ** यानी “मैं ने उसके लिए क़ब्र बनाई” और **قَبَرْتُهٗ** का मानी “मैं ने उसको दफ़न किया” और सूरह **اَلْمُرْسَلٰتْ** में जो **كِفَاتًا** का लफ़्ज़ है उसका मतलब

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ये है कि ज़िंदगी भी ज़मीन में ही बसर करोगे और मर कर भी उसी में गाड़े जाओगे" (बुख़ारी)

इसी तरह क़ुरआन पाक में जहां रसूल अल्लाह ﷺ को आदम के उन दो बेटों का क़िस्सा सुनाने का हुक्म दिया गया है , जो रूए ज़मीन पर सब से पहले क़ातिल और मक़्तूल की हैसीयत से मुतारिफ़ हुए, वहीं दफ़न करने के तरीक़े का ज़िक्र भी मिलता है ।

इर्शादे बारी ताला है:

فَطَوَّعَتْ لَهٗ نَفْسُهٗ قَتْلَ اَخِيْهِ فَقَتَلَهٗ فَاَصْبَحَ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ○

فَبَعَثَ اللّٰهُ غُرَابًا يَّبْحَثُ فِى الْاَرْضِ لِيُرِيَهٗ كَيْفَ يُوَارِىْ سَوْءَةَ

اَخِيْهِ ؕ قَالَ يٰوَيْلَتٰۤى اَعَجَزْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِثْلَ هٰذَا الْغُرَابِ

فَاُوَارِىَ سَوْءَةَ اَخِىْ ۚ فَاَصْبَحَ مِنَ النّٰدِمِيْنَ ○ (المائده :30,31)

"उसके नफ़्स ने (उसे) अपने भाई के क़त्ल पर उभारा, फिर उसने उसे क़त्ल कर डाला तो वो ख़ुद ख़सारा उठाने वालों में से हुआ ।बिलआख़िर अल्लाह ताला ने एक कव्वा भेजा जो ज़मीन कुरेदने (खोदने) लगा ताके वो उसे (क़ातिल को) दिखा दे (वो तरीक़ा) जिस से वो अपने भाई की लाश छुपा सके । केहने लगा, अफ़्सोस मैं इस कव्वे की तरह होने से भी गया गुज़रा हो गया के अपने भाई की लाश तो छुपा देता, फिर वो पच्छताने लगा" ।

मिट्टी में दफ़नाने का ये तरीक़ा रब्बुल इज़्ज़त ने इंसानों के लिए ख़ूद तज्वीज़ फ़रमाया था । उस वक़्त से मुसलमान अपनी मय्यतों को इसी तरह दफ़न करते चले आरहे हैं, लेकिन दुनिया में मुख़्तलिफ़ क़ौमें इसके अलावा भी दूसरे मुख़्तलिफ़ तरीक़ों से अपनी मय्यतें दफ़न करती हैं ।

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

## क़ब्र खोदने वाला

इंसानियत की ख़िदमत का ये शोबा भी इस्लाम में अज्र-ओ-सवाब से मेहरूम नहीं रखा गया ।नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया :

“जिसने मय्यत के लिए क़ब्र खोदी और उसे उसमें उतारा ,अल्लाह ने उसके लिए एक घर का अज्र लिख दिया जिसमें वो क़यामत तक क़याम करेगा” । (हाकिम)

## क़ब्र की अक़साम

क़ब्र दो क़िस्म की होती है ,एक “ लेहद”, यानी बग़ली और दूसरी “शक़”,यानी संदूक़ी, इसे “ज़रीह” भी केहते हैं ।शक़ के अंदाज़ की क़ब्र भी (ज़रूरतन) जाएज़ है लेकीन लहद अफ़्ज़ल है।

अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया:

“लहद” हमारे लिए और “शक़” हमारे ग़ैरों के लिए”। (अहमद,अबूदाऊद,तिरमिज़ी)

### लहदः

लहद यानी बग़ली क़ब्र वो है के लंबाई में शुमालन जुनूबन और गहराई में सीधा खोदने के बाद इसकी गहराई में नीचे दाएं जानिब मग़रिब की तरफ़ एक गढ़ा खोदकर उस में मय्यत को रखा जाएगा और कच्ची ईंटों की दीवार से लहद को बंद कर दिया जाएगा । मिट्टी जो उसमें से निकाली गई थी वही उस जगाह को भरने के लिए इस्तेमाल की जाएगी, ये तरीक़ा सुन्नते रसूल ﷺ के मुताबिक़ है ।

### शक़ः

जहाँ ज़मीन क़दरे नर्म हो वहाँ शक़ तर्ज़ की यानी संदूक़ी क़ब्र खोदना बेहतर है । इसमें क़ब्र की लंबाई में एक गढ़ा नेहर की सूरत में दर्मियाने क़ब्र खोदा जाएगा और उसमें मय्यत को रखकर उपर तख़्ता लगाया जाएगा और फिर मिट्टी डाली जाएगी । इसमें भी मिट्टी वही इस्तेमाल होगी जोके खुदाई के वक़्त उसमें से निकाली गई थी ।

© AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

आप ﷺ ने फरमाया:“इज़ख़िर की इजाज़त है” ।और अबू हुरैरा ؓने इसे यूँ रिवायत कियाहै , (कि अर्ज़ किया गया) हमारी क़बरों और घरों के काम आती है । (बुख़ारी)

इब्ने अब्बास ؓ से मरवी है कि रसूल अल्लाह ﷺ के दफ़न के वक़्त (जिस्मे अत्हर के नीचे) एक सुर्ख़ चादर बिछाई गई (आपﷺ के ग़ुलाम शक़्रान ने उसे बिछाया) । (नसाई)

अग्रचे इसे मुसलिम और तिर्मज़ि ने भी रिवायत किया है । मगर ये इजाज़ते आम नहीं,मुम्किन है कि एहतरामे नबीﷺ हो ।अल्बत्ता एक और रिवायत के मुताबिक़ अस्हाबे रसूलﷺ ने उस चादर को देखा तो उसे निकाल दिया क्योंके ये शक़्रानؓ का अपना अमल था। ना ही ये सुन्नत थी ना ही उन्होंने सहाबा करामؓ से पूछा था ।

## क़ब्र में उतारना

☆ मय्यत को क़ब्र में उतारने वाले हज़रात मज़्बूत और प्रहेज़गार हों ।

☆ मय्यत हलकी होतो दो आदमी काफ़ी हैं व्रना हसबे ज़रूरत तीन या चार आदमी भी उतार सकते हैं ।

☆ औरत की तदफ़ीन के वक़्त परदे का इंतेज़ाम करना ज़रूरी है, जनाज़े के साथ जाने वाले एहले ख़ाना घर से एक बड़ी चादर लेकर रवाना हों जो तदफ़ीन के वक़्त तानी जाएगी ।

☆ ख़ाविंद अपनी बीवी की मय्यत को क़ब्र में उतार सक्ता है ।(बहवाला एहमद , इब्ने माजा)

☆ मय्यत को पाएती की तरफ़ से क़ब्र में उतारा जाएगा । (बहवाला सुन्न अबी दाऊद)

☆ मय्यत को दाएं पेहलू पर क़िब्ला रुख़ करके लिटाया ज़ाएगा । (बहवाला सुन्न अबी दाऊद)

☆ अब कफ़न के बंधन की ग्रहें खोल दी जाएंगी और ये मस्नून अल्फ़ाज़ कहे जाएंगें

بِسْمِ اللهِ،وَعَلَى مِلَّةِ / سُنَّةِ رَسُوْلِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم

“अल्लाह ताला के नाम से और रसूल अल्लाहﷺ के तरीक़े पर (हम इसे रख रहे हैं )” ।

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

## अंदरूनी पैमाइश

**गहराई:** क़ब्र गहरी और साफ़ सुथरी होनी चाहिए। कम से कम गहराई आम क़द के आदमी के सीने तक होगी ।इस से ज़्यादा यानी पूरे क़द की जितनी गहराई हो तो अफ़्ज़ल है (नसाई)

हिशामؓ बिन आमिर से मरवी है कि ग़ज़्वए ओहद में लोगों को सख़्त तक्लीफ़ पोँहची(अल्लाह की राह में बोहत से मारे गए) तो रसूल अल्लाह ﷺ ने (दफ़्न से मुतालिक़) इर्शाद फ़रमाया :

“खोदो और उसे अच्छी तरह साफ़ करो और एक क़ब्र में दो,दो,तीन,तीन लोगों को दफ़न करो । और क़ुरआन करीम ज़्यादा जान्ने वाले को आगे करो” । (सुनन नसाई)

रसूल अल्लाह ﷺ एक अंसारी की तदफ़ीन के वक़्त हिदायत फ़रमा रहे थे :

“सर की तरफ़ से खुला करो,पाँव की तरफ़ से खुला करो,इसके लिए जन्नत में कितने ही खजूरों के खोशे लटक रहे हैं” । (मुसनद अहमद)

**चौड़ाई** :कम अज़ कम चौड़ाई बक़द्रे आधा क़द होनी चाहिए ।

**लंबाई** :क़ब्र मय्यत के क़द-ओ-क़ामत से कुच्छ लंबी खोदनी चाहिए ।

## सूखी घास क़ब्र में बिछाना

इबने अब्बासؓ केहते हैं कि नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया :“अल्लाह ताला ने मक्काह को हराम किया है ।ना मुझ से पेहले वो किसी के लिए हलाल हुआ और ना मेरे बाद किसी के लिए हलाल होगा । घड़ी भर के लिए (फ़तेह मक्काह के दिन) वो मुझ को हलाल हुआ था । उसकी घास ना काटी जाए, उसका दरख्त भी ना काटा जाए,और वहाँ का जानवर( शिकार) ना भगाया जाए और गिरी पड़ी चीज़ ना उठाई जाए मगर जो उसकी शनाख़्त कराए (इंतेज़ामिया वग़ैरा)” ।

सय्यदना अब्बास ने अर्ज़ किया, या रसूल अल्लाह! इज़्ख़िर (एक ख़ुश्बूदार घास) की इजाज़त दे दीजिए कयोंके वो हमारे सुनार काम में लाते हैं और हमारी क़बरों में डाली जाती है ।

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

## मिट्टी डालना

क़ब्र बंद होजाने के बाद तदफीन के वक़्त जितने भी हाज़रीन हों, दोनों हाथों में इकट्ठे मिट्टी भर भर कर क़ब्र पर सर की जानिब से डालेंगे, तीन मर्तबा एसा करना मस्नून है। (बहवाला इब्ने माजा)

## बैरूनी साख्त

क़ब्र की शक्ल कोहान नुमा होनी चाहिए और ऊंचाई ना ज़ियादा बुलंद ना ज़मीन के बराबर होनी चाहिए (ज़मीन से तक़्रिबन एक बालिश्त के बराबर बुलंद हो )। (बहवाला बुख़ारी)

## पानी छिड़कना

मिट्टी डालने के बाद थोड़ा पानी भी छिड़क देना चाहिए। (बहवाला बैहक़ी)

## कच्ची क़ब्र

क़ब्र पक्की बनाना, उसपर चबूत्रा बनाना, या मज़ार, मस्जिद और किसी भी क़िस्म की तामीर करना मुसलमानों को मना है। (बहवाला बूख़ारी)

## अलामत के तोर पर पत्थर रखना

क़ब्र के स्रिहाने की तरफ़ अलामत के तौर पर पत्थर रखा जासक्ता है। ये पत्थर फ़क़त इत्ना हि बड़ा होना चाहिए जिसे एक आदमी कोशिश करके उठा सके।

मतलबؓ बिन वदाता बयान करते है कि

जब उसमानؓ बिन मज़ून की वफ़ात के बाद उनकी मय्यत दफ़्ना की गई तो रसूल अल्लाहﷺ ने एक आदमी को पत्थर की तरफ़ इशारा करते हुए फ़रमाया कि:
“ वो पत्थर ले आओ।”

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

वो आदमी पत्थर ना उठा सका ।आपﷺ वहाँ तक गए और अपनी आस्तीनें चढ़ाई । मतलबؓ बयान करते हैं कि जिन सहाबी ने मुझे रसूल अल्लाहﷺ का ये वाक़ेआ बयान किया वो फ़रमाते थेः

“गोया के आज भी नबीﷺ की बाज़ूओं की सफ़ेदी देख रहा हूँ जब आपﷺ ने आस्तीनें ऊँचीं की थीं” ।

फिर आपﷺ पत्थर उठा लाए और उसके सर की तरफ़ रख दिया।

मय्यत के भाई का बयान है कि उस पत्थर के निशान से मैं अपने भाई की क़ब्र को पहचान सकता हूँ और अब जो भी मेरे ख़ान्दान से मरेगा, उसके क़रीब दफ़न करूगां । (अबू दाऊद)

क़ब्र पर कुत्बा लगाना और उसपर नाम, तारीख. पैदाइश और वफ़ात ,शज्रा, शायरी या किसी क़िस्म की कोई भी तहरीर लिखना जाएज़ नहीं ।

## दौराने तदफ़ीन हाज़ेरीन की ज़िम्मेदारी

तदफ़ीन के दौरान किसी आलिमेदीन को लोगों के दर्मियान बैठ कर नसीहत के तौर पर आखिरत का तज़किरा करना चाहिए नीज़ मौत की तारीफ़(पहचान) और उसकी हक़ीक़त को दीन के हवाले से बयान किया जाना चाहिए ।इस सिलसिले में एक मश्हूर और क़ाबिले ज़िक्र हदीस़ है ।

सहाबीए रसूलﷺ बराؓबिन आज़िब फ़रमाते हैं:

एक अंसारी के जनाज़े में हम रसूल अल्लाहﷺ के साथ निकले। जब हम क़ब्र के पास पहुँचे तो अभी लेहद तैयार नहीं हुई थी । चुनांचे आपﷺ(क़िब्ला रू होकर) बैठ गए और हम भी आपﷺ के इर्द गिर्द यूँ बैठ गए गोया कि हमारे सरों पर परिंदे हों। आपﷺ के दस्ते मुबारक में एक छड़ी थी जिस से आपﷺ ज़मीन कूरैद रहे थे ।

(दूसरी रिवायत में है कि रसूल अल्लाहﷺ कभी आसमान और कभी ज़मीन की तरफ़ देख्ते ।
इसी हालत में आपﷺ ने निगाह को तीन मर्तबा ऊपर नीचे किया) फिर दो या तीन मर्तबा इर्शाद फरमाया:

“अज़ाबे क़ब्र से अल्लाह की पनाह चाहो” । फिर अपﷺ तीन मर्तबा दुआ फरमाई:

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ٱللّٰهُمَّ اِنِّىْ~اَعُوْذُبِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ

“ ए अल्लाह मैं अज़ाबे क़ब्र से आपकी पनाह चाहता हूँ ”

फिर फ़रमाया ,जब मोमिन बंदा इस दुनिया से रुख्सत होकर आखेरत को सिधारने वाला होता है तो आसमान से उसके पास फ़रिशते आते हैं, एसे रोशन चेहरे वाले गोया के सूरज । उनके पास जन्नत से लाया हुआ कफ़न होता है और जन्नत ही की खूश्बू । हदे निगाह तक वो आकर बैठ जाते हैं । आखिर में मलकुल मौत अलैही अस्सलाम तश्रीफ़ लाते हैं और उस मय्यत के सर के पास बैठकर फ़रमाते हैं:

ए पाकीज़ाह रूह (दूसरी रिवायत में है ए मुत्मैन रूह) पौंहचो, अपने रब्ब की मग़फिरत-व-इनायत के पास ।

रसूल अल्लाहﷺ ने फ़रमाया, फ़िर वो इस तरह निकलती है जैसे पानी का क़तरा मश्कीज़े के मूंह से (आहिस्तगी से) टपकता है ।

चुनांचा वो फ़रिश्ता (मलकुल मौत अलैह अस्सलाम) उसे ले लेते हैं तो दूसरे फ़रिश्ते आँख झपकने से पेहले उनसे वसूल कर लेते हैं, फिर वो उसे जन्नती कफ़न और खूश्बू में रख लेते हैं।

इस बारे में अल्लाह ताला का इर्शाद है

تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا وَهُمْ لاَ يُفَرِّطُوْنَ

“ हमारे भेजे हुए फ़रिश्ते उसकी जान निकाल लेते है
और अपना फ़र्ज़ अदा करने में ज़रा कोताही नही करते ”

(एक दूसरी रिवायत में ये है:.....जब वो रूह निकल जाती है तो ज़मीन और आसमान के दर्मियान हर फ़रिश्ता उसके हक़ में दुआए रेहमत करता है और आसमान के तमाम फ़रिश्ते भी उसके लिए दुआएं करते हैं । उसके इस्तिक़बाल के लिए आसमान के तमाम दरवाज़े खोल दिये जाते हैं । तमाम दरवाज़ों के निगरान अल्लाह ताला से इल्तिजा करते हैं कि उसे हमारे पास से गुज़ारा जाए) ।

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

उस पाकीज़ा रूह से दुनीया की बेहतरीन खूश्बू के लप्के उठते हैं, फिर जब फ़रिश्ते उसे लेकर और ऊपर को जाते हैं तो रास्ते में फ़रिश्तों की जिस जमात के पास से भी गुज़रते हैं वो यही दर्याफ़त करते हैं:

“ये किसकी इतनी पाकीज़ा रूह है”

फ़रिश्ते जवाब में कहते हैं:

“ये साहब फ़ुलां बिन फ़ुलां हैं”

उसके ख़ूब्सूरत तरीन नाम से याद करते हुए जिस से वो दुनिया में पुकारा जाता था, वो फ़रिश्ते उसे लेकर आसमाने दुनिया तक पहुँच जाते हैं। जब उसकी ख़ातिर दर्वाज़ा खुलवाना चाहते हैं तो वो खोल दिया जाता है, फिर अगले आसमान तक उस पहले आसमान के मुक़र्रब तरीन फ़रिश्ते उसे अलविदा कहकर आते हैं, यही मुआमला सातवें आसमान तक चलता है।

इस मौक़े पर अल्लाह ताला इर्शाद फ़रमाते हैं:

“मेरे बंदे का नामए आमाल बुलंद पाया लोगों के दफ़्तर में रखदो”।

जैसा के क़ुरआने पाक में अल्लाह ताला का इर्शाद है :

**وَمَا~اَدْرٰكَ مَا عِلِّيُّوْنَ ۝ كِتَابٌ مَّرْقُوْمٌ ۝ يَّشْهَدُهُ الْمُقَرَّبُوْنَ ۝**

(المطففين:١٩,٢٠,٢١)

“ और आप के क्या ख़बर के के क्या है वो बुलंद पाया लोगों का दफ़्तर ? एक लिखी हुई किताब है जिसकी निगेहदाश्त मुक़र्रब फ़रिश्ते करते हैं ”

उसका आमाल नामा बुलंद पाया लोगों के दफ़्तर में रख दिया जाता है, फिर अल्लाह ताला फ़रमाते हैं:

© AL HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

"इसे ज़मीन तक वापस पौँहचा दो। मैं ने इन से वादा किया हुआ है कि मैं ने इनको इसी ज़मीन से पैदा किया, इसी में वापस करूँगा और इसी से मैं इनको दोबारा उठाऊँगा"।

फिर उसे ज़मीन में वापस कर दिया जाता है, उसकी रूह दोबारा जिस्म में डालदी जाती है (जब उसके साथी वापस हो रहे होते हैं तो ये उनके जूतों की आवाज़ भी सुनता है), उसके पास दो (सख़्त लबो लेहजे वाले) फ़रिश्ते आते हैं वो उसे सख़्त अंदाज़ में हुक्म देकर बिठा देते हैं, फिर (मदफ़ून के साथ) दोनों के इसतरह के सवाल-ओ-जवाब होते हैं:

वो सवाल करते हैं: **مَنْ رَبُّكَ** (तेरा रब्ब कौन है ? )

वो जवाब देता है: **رَبِّيَ اللهُ** (मेरा रब्ब अल्लाह है)

वो सवाल करते हैं: **مَادِيْنُكَ** (तेरा दीन क्या है?)

वो जवाब देता है : **دِيْنِى الْاِسْلَامُ** (मेरा दीन इस्लाम है)

वो सवाल करते है: **مَاهَذَاالرَّجُلِ الَّذِىْ بُعِثَ فِيْكُمْ** (जो आदमी तुम्हारी तरफ़ मबऊस करके भेजा गया, उसके बारे में क्या ख़याल है ?)

वो जवाब देता है: **هُوَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** (वो अल्लाह का रसूल है)

वो सवाल करते हैं: **وَمَا عِلْمُكَ** (और तेरी मालूमात क्या है?)

वो जवाब देता है: **قَرَأتُ كِتَابَ اللهِ فَامَنْتُ بِهِ وَصَدَّقْتُ** (मैं ने अल्लाह की किताब पढ़ी, फिर उस पर इमान लाया, और तस्दीक़ की)।

(एक दूसरी रिवायत के मुताबिक़, फ़रिश्ता उसे झिंझोड़ कर केहता है:"तेरा रब्ब कौन है"?"तेरा दीन क्या है"?"तेरा नबी कौन है"?

ये आखरी आज़माइश है जो मोमिन को पेश आती है , इसी मौक़े के लिए अल्लाह ताला का इर्शाद है:

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يُثَبِّتُ اللهُ الَّذِيْنَ آمَنُوْابِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِى الْحَيٰوةِالدُّنْيا
وَفِى الْآخِرَةِ (ابراهيم:۲۷)

“ईमान लाने वालों को अल्लाह् ताला पक्की बात के साथ मज़्बूत रख्ता है, दुनिया की ज़िंदगी में भी और आख़िरत में भी”

अब आदमी कहता है मेरा रब अल्लाह् है,मेरा दीन इस्लाम है,मेरे नबी मोहम्मदﷺ हैं।
फिर आस्मान में अल्लाह् की तरफ़ से मुनादी होती है:

“मेरे बंदे ने सच कहा,इसका ठिकाना जन्नत में बना दो। इसे जन्नत का लिबास पहना दो,और जन्नत की तरफ़ एक दरवाज़ा खोल दो”।

चुनांचा जन्नत की हवाएं और ख़ुश्बूएं उसके पास आने लगती हैं,उसकी क़ब्र हदे निगाह तक कुशादा करदी जाती है।)

आपﷺ ने मज़ीद फ़रमाया:

और फिर उसके पास एक ख़ुश शकल आदमी आता है,जिसके कपड़े भी ख़ुबसूरत और ख़ुशबू भी उम्दा। वो आकर कहता है:“तुझे ख़ुश्कुन ख़बर की बशारत देता हूँ (आल्लाह् ताला की रज़ा मंदी और ऐसे बाग़ात की ख़ुशख़बरी जिन की नेमतें हमेशा रहेंगी) इसी दिन का तुझ से वादा किया गया था”।

चुनांचे वो भी जवाबन कहता है: “अल्लाह् ताला तुझे भी ख़ुश व ख़ुर्रम रखे! तुम हो कौन? तुम्हारा चहरा तो कोई अच्छी ख़बर ही लासकता है”। वो जवाब देता है: “मैं तेरा नेक अमल हूँ,बख़ुदा मैं तो इतना ही तुझे जानता हूँ कि तुम अल्लाह् ताला की अताअत में जल्दी करने वाले और उसकी नाफ़र्मानी में बहुत सुस्त वाक़े हुए थे। अल्लाह् तुमको बेहतर बदला देगा”।

फिर उसके सामने जन्नत और दोज़ख़ के दरवाज़े खुल जाते हैं और बताया जाता है:

“अगर तुम नाफ़र्मानी करते तो तुम्हारा ये मक़ाम होता (दोज़ख़ वाला)। इसकी बजाए अब अल्लाह् ताला ने ये (जन्नत वाला मक़ाम) तुम्हें दे दिया है”।

© AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

वो जब जन्नत की नेमतों को देखता है तो दरख़्वास्त करता है,“ऐ मेरे रब!क़यामत जल्द आजाए ताकि मैं अपने एहल व माल तक पहुँच सकूँ”।उसे जवाब मिलता है, “अभी आराम करो”।

और जब काफ़िर (दूसरी रिवायत में बदकार) दुनिया से रुख़्सत होकर आख़िरत को सिधार रहा होता है तो आसमान से उसके पास (सख़्त और ताक़तवर) फ़रिश्ते आते हैं।उनके चहरे काले होते हैं,उनके पास जहन्नमी टाट होते हैं,हदे निगाह तक उसके पास आकर बैठ जाते हैं ।

आख़िर मलकुल मौत तशरीफ़ लाते हैं और उसके सर के पास बैठ कर कहते है:

“ऐ ख़बीस रूह अल्लाह ताला की नाराज़गी और ग़ुस्से के पास पहुँच” ।

फिर उसके जिस्म में दाख़िल होकर उसकी रूह निकालते हैं जैसे नोकदार सीख़ भीगी ऊन से निकाली जाए (इसकी वज्ह से उसकी रगें और पट्ठे टूट जाते हैं) मलकुल मौत जब उसे निकाल लेते हैं तो फिर आँख झपकने से भी पहले दूसरे फ़रिश्ते उनके हाथ से लेकर एक टाट में रख लेते हैं। उस टाट से ऐसी बदबू आती है जैसे ज़मीनी सड़े गले मुरदार की हो। फरिश्ते उस रूह को लेकर ऊपर जाते हैं ।

ज़मीन व आसमान के दर्मियान और आसमान का हर फ़रिश्ता उसपर लानत भेजता है। आसमान के तमाम दरवाज़े बंद कर दिए जाते हैं,हर दरवाज़े का निगरान अल्लाह ताला से ये इस्तिदा करता है कि ये रूह यहाँ से ना गुज़ारी जाए ।

वो उसे लेकर फ़रिश्तों की जिस जमात के पास से भी गुज़रते हैं, वो पूछते हैं:

“ये किसकी ख़बीस रूह है?”

फ़रिश्ते उसका बदतरीन क़िस्म का दुनयवी नाम लेकर बताते हैं कि:“ये फ़ुलां बिन फ़ुलां है” ।

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

इस तरह उसे लिए वो आसमाने दुनिया तक पहुँच जाते हैं। यहाँ जब उसकी ख़ातिर दरवाज़ा खोलने की दरख़्वास्त की जाती है तो खोला नहीं जाता। इस मौक़े पर रसूल अल्लाह ﷺ ने ये आयत तिलावत फ़रमाई:

لَاتُفَتَّحُ لَهُمْ اَبْوَابُ السَّمَآءِوَلا يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ
حَتّٰى يَلِجُ الْجَمَلُ فِیْ سَمِّ الْخِيَاطِ (الاعراف:٤٠)

उनके लिए आसमान के दरवाज़े हरगिज़ ना खोले जाएंगे और उनका जन्नत में जाना उतना ही नामुम्किन है जितना सूई के नाके से ऊंट का गुज़रना"

फिर वहाँ अल्लाह ताला इर्शाद फ़रमाते हैं:

इसका नामए आमाल क़ैदख़ाने के दफ़्तर (सिज्जीन) में रख दो जोके सबसे निच्ली ज़मीन में है और इस (बंदे) को ज़मीन में वापस करदो,क्योंकि मैं ने उनसे वादा किया था कि उसी से उन्हें पैदा करूँगा और उसी में वापस करूँगा और यहीं से फिरदोबारा उठाऊँगा" ।

चुनांचे बुरे तरीक़े से उसकी रूह को आस्मान से नीचे फेंक दिया जाता है यहाँ तक कि वो उसके जिस्म पर आकर गिरती है। फिर रसूल अल्लाह ﷺ ने तिलावत फ़रमाई:

وَمَنْ يُشْرِكْ بَاللهِ فَكَاَنَّمَاخَرَّمِنَ السَّمَآءِفَتَخْطَفُهُ الطَّيْرُ
اَوْتَهْوِی بِهِ الرِّيْحُ فِیْ مَكَانٍ سَحِيْقٍ
(الحج:٣١)

और जो कोई अल्लाह के साथ शिर्क करे तो गोया वो आस्मान से गिर गया, अब या तो उसे परिंदे उचक ले जाएंगे या हवा उसको ऐसी जगह लेजाकर फेंक देगी जहाँ उसके चीथड़े उड़ जाएंगे "

अब उसकी रूह वापस करदी जाती है, फिर फ़रमाया:

“जब उसके साथी वापस हो रहे होते हैं तो वो उनके जूतों की आवाज़ सुनता है” ।

फिर उसके पास दो (सख़्त मिज़ाज) फ़रिश्ते आते हैं और उसे (झिंजोड़ कर) बिठा देते हैं और उस से सवाल करते हैं: "तेरा रब कौन है?"

वो जवाब में इंतिहाई परेशानी से कहता है: "कुच्छ नहीं मालूम"

फिर वो पूछते हैं:"तेरा दीन क्या है?"

वो फिर परेशानी के साथ कहता है: "मुझे ख़बर नहीं"

वो पूछते हैं: "जो आदमी तुम्हारी तरफ़ रसूल बनाकर भेजा गया था उसके बारे में क्या राए है? "तो जवाब में उसे नाम का भी नहीं पता होता,

जब बताया जाता है कि: "मोहम्मद ﷺ हैं"

तो वो परेशानी के आलम में कहता है: "मुझे तो ख़बर नहीं लेकिन लोगों को ऐसा कहते सुना था"

उस से कहा जाता है: "ना तू ख़ुद पहचान सका और ना तूने किसी की पैरवी की"

फिर आस्मान से ऐलान करने वाला ऐलान करता है:

"ये झूटा है लिहाज़ा इसके लिए आग का बिस्तर लगादो और आग की तरफ़ इसका दरवाज़ा खोल दो"।

चुनांचा उसके पास जहन्नुम की गर्मी और लू आती है,उसकी क़ब्र इस हद तक तंग हो जाती है कि उसकी पस्लियां आपस में फंस जाती हैं, उसके पास बदनुमा चहरे का आदमी आता है,जिसके कपड़े भी बहुत गंदे होते हैं,और सड़ांद भी उठ रही होती है। वो आकर कहता है:

"एक तक्लीफ़ देह ख़बर है,ये वही दिन है जिस का तुझ से वादा किया गया था"।

और ये उसे कहता है: "अल्लाह तुझे भी तक्लीफ़ देह ख़बर से दोचार करे,तुम हो कौन? ऐसा चहरा तो कोई बुरी ख़बर ही लासकता है" वो जवाब में कहता है: "मैं तेरा ख़बीस अमल हूँ। बख़ुदा मेरी मालूमात में तो तू नेकी में बड़ा सुस्त और बुराई के मामले में बड़ा चुस्त था इस लिए अल्लाह ताला तुझे बुरा ही बदला देगा"।

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

फिर उसके ऊपर एक अंधा,गूंगा,बेहरा,दारोग़ा मुक़र्रर कर दिया जाता है जिसके हाथ में लोहे की ऐसी सलाख़ होती है के पहाड़ पर भी मारी जाए तो उसको रेज़ा रेज़ा करदे। फिर वो एक ऐसी कारी ज़र्ब लगाता है जिस से वो रेज़ा रेज़ा हो जाता है। अल्लाह ताला उसे दोबारा पुरानी हालत में कर देते हैं। वो दोबारा एक और ज़र्ब लगाता है,जिसकी तक्लीफ़ से वो ऐसी चीख़ मारता है जिसे जिन और इंसान के इलावा हर जान्दार सुनता है। उसके लिए आग का दरवाज़ा खोल दिया जाता है और आग ही उसके लिए बिछोना होती है, (ऐसे तक्लिफ़ देह अज़ाब में होने के बावजूद) वो इस्तिदा करता है: “ऐ पर्वरदिगार क़यामत बपा ना हो”।
(मुसनद अहमद,हाकिम)

## तदफ़ीन के बाद की दुआ

तदफ़ीन के बाद कुछ देर वहीं ठहरे रहना,और मय्यत के लिए इस्तिग़फ़ार और क़ब्र में मुंकर नकीर के सवालात पर साबित क़दम रहने की दुआ करना मसनून है ।
(सुनन अबी दाऊद)

दुआ यूँ करनी चाहिए:

اَللّٰهُمَّ ثَبِّتْهُ بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ كَمَا ثَبَّتَّهُ فِى الدُّنْيَا

ऐ अल्लाह इसे साबित क़दम रखना क़ौले साबित (यानी सवालात के दुरुस्त जवाबात पर) पर जैसा के इसे दुनिया में साबित क़दम रखा"

## मुतफ़र्रिक़ एहकामात

☆ मरने से पहले क़ब्र तैयार करवाना: किसी मुस्लमान के लिए ये जाएज़ नहीं कि मरने से पहले अपनी क़ब्र तैयार करवाले,अल्बत्ता अपने इलाक़े के अंदर किसी जगह पर दफ़्नाए जाने से मुताल्लिक़ वसियत करना चाहे तो कर सकता है ।

सय़्यदा आएशाؓ ने “बक़ी” के क़ब्रिस्तान में और सय्यदना उमरؓ ने आख़िर वक़्त में हुजरे आएशाؓ में रसूल अल्लाहﷺ के क़दमों में दफ़्न किए जाने की तमन्ना

AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

की थी।

**पोस्ट मारटम**ः मोमिन मय्यत के जिस्म के हिस्सों वग़ैरह का तोड़ना या काटना मना है।

☆ रसूल अल्लाहﷺ ने फ़रमायाः "मोमिन मय्यत की हड्डी तोड़ने (का गुनाह) ज़िंदा मोमिन की हड्डी तोड़ने के बराबर है"। (सुनन अबी दाऊद)

☆ **मुर्दार को हनूत करना**:मय्यत को हनूत करने या जलाने की इस्लाम में इजाज़त नहीं है।

(हनूत कर्दा परिन्दे और जानवर वग़ैरा भी सब इसी हुक्म में शामिल हैं)।

☆ **समुंदर में वफ़ात**: समुंदर के सफ़र में अगर कोई शख़्स वफ़ात पा जाए और ख़ुश्की का मुक़ाम इतनी मुद्दत की दूरी पर हो कि मय्यत के गलने सड़ने का इम्कान हो,तो ग़ुस्ल,कफ़न और नमाज़े जनाज़ा पढ़ने के बाद उसको वज़नी चीज़ से बांध कर समुंदर में डाल दिया जाएगा।

☆ **मय्यत का सफ़र**: दूरदराज़ के मुल्क से मय्यत को अपने मुल्क लाकर दफ़न करना या आबाई गाँव लेकर जाने के लिए दुशवार गुज़ार पहाड़ी या मैदानी इलाक़ों के लम्बे सफ़र करना दुरुस्त नहीं है।

सय्यदा आएशाؓ के भाई की हब्शा में वफ़ात हो गई,वहाँ से उनकी मय्यत लाई गई तो बड़े अफ़सोस से फ़रमाने लगीं कि,"मुझे सिर्फ़ इस बात का ग़म है कि मेरे भाई को उसके मरने वाली जगह पर ही क्यों ना दफ़न किया गया" (बहेक़ी)

रसूल अल्लाहﷺ ने फ़रमाया,"जब आदमी अपनी पैदाइश के मक़ाम के सिवा दूसरे मुल्क में मरे तो उसकी पैदाइश के मक़ाम से लेकर मौत के मक़ाम तक उसे जन्नत में जगह दी जाएगी"। (इब्ने माजा)

फ़र्ज़ करें मरने वाला अपने बारे में ये वसियत कर भी जाए कि,मेरी मय्यत को मेरे मुल्क,मेरे शहर,या मेरे गाँव में लेजाकर दफ़्नाया किया जाए,तो उसपर अमल नहीं किया जाना चाहिए,क्योंकि नक़्ले जसद, (जनाज़ा लेजाने में जल्दी करो) वाले हुक्म के भी ख़िलाफ़ है। (अल अज़कार नूवी 150)

©AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

☆ **मुसलमानों के अलग क़ब्रिस्तान** : मुसलमानों को काफ़िरों के साथ और काफ़िरों को मुसलमानो के साथ दफ़न नहीं किया जाना चाहिए बल्कि मुसलमानों और ग़ैर मुसलमानों के क़ब्रिस्तान अलग-अलग होने चाहिएं।

रसूल ﷺ के ज़माने से ऐसा ही होता चला आया है।

एक मर्तबा रसूल ﷺ एक सहाबी इब्ने ख़सासियाؓ के साथ तशरीफ़ ले जा रहे थे, जब मुशरिकों के क़ब्रिस्तान के क़रीब से गुज़रे तो फ़रमाया,:"ये लोग बहुत सारी ख़ैर से महरूम रहे हैं। "तीन मर्तबा ये जुमला इरशाद फ़रमायाः इसके बाद आपﷺ मुसलमानों के क़ब्रिस्तान तशरीफ़ लाए तो फ़रमायाः

"इन लोगों को बहुत सारी ख़ैर व भलाई मिल गई" ये जुमला भी तीन बार दोहराया। (बहवाला सुनन नसाई)

©AL HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

## इल्मल यक़ीन,ऐनल यक़ीन

### रसूल ﷺ ने سورة الهاكم التكاثر तिलावत फ़रमाई

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

اَلۡهٰكُمُ التَّكَاثُرُ o حَتّٰى زُرۡتُمُ الۡمَقَابِرَ o كَلَّا سَوۡفَ تَعۡلَمُوۡنَ o ثُمَّ كَلَّا سَوۡفَ تَعۡلَمُوۡنَ o كَلَّا لَوۡ

تَعۡلَمُوۡنَ عِلۡمَ الۡيَقِيۡنِ o لَتَرَوُنَّ الۡجَحِيۡمَ o ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا عَيۡنَ الۡيَقِيۡنِ o ثُمَّ لَتُسۡـَٔلُنَّ يَوۡمَئِذٍ عَنِ النَّعِيۡمِ o

"ग़फ़्लत में डाले रखा तुमको एक दूसरे से बढ़ कर हासिल करने की हवस ने, यहाँ तक कि तुमने क़ब्रें जा देखीं,ख़बरदार! तुम्हें जल्द ही मालूम हो जाएगा, फिर सुन लो! तुम्हें अंक़रीब मालूम हो ही जाएगा,हर्गिज़ नहीं,काश तुम इल्म-लयक़ीन (मौत की हक़ीक़त) को समझते,तुम दोज़ख़ देख कर रहोगे,फिर सुन लो तुम यक़ीनन उसे देख लोगे,फिर उस रोज़ ज़रूर तुम से उन नेअमतों के बारे में जवाब तलबी होगी।"

फ़ाया, "इब्ने आदम कहता है: मेरा माल, मेरा माल,हालाँकि ऐ इब्ने आदम! तेरा माल (एक तो वो है) जो तूने खा कर ख़त्म कर दिया,या (दूसरा वो जो) पहन कर बोसीदा कर दिया,या (तीसरा वो जो) सदक़ा करके आगे आख़िरत के लिए रवाना कर दिया"।(मुस्लिम )

# क़ब्र का क़याम

क़ब्र में दफ़न मय्यत से फ़रिश्तों के सवालात और क़ब्र का अज़ाब व आराम बरहक़ और सच है।

इंसान जो रूह और जिस्म से मिल कर वुजूद में आया, दरासल उसकी ज़िंदगी का आख़िरी और लाफ़ानी दौर तो वही है जो यौमे हिसाब के फ़ैसलों के बाद शुरू होगा, इस दौर के अलावा उसकी ज़िंदगी जिन मुख़्तलिफ़ इब्तिदाई दोरों से गुज़रती है वो सब न सिर्फ़ फ़ानी हैं बल्कि आगे को रवाँ-दवाँ होने की सिफ़त की वज्ह से उनके वापिस पलटने की गुंजाइश नहीं।

ख़ालिक़े अज़ीम ने जिस्म बनाया,रूह डाली। वही रूह जो आलमे अम्र में ख़ालिक़ ने पहले से तख़्लीक़ कर रखी थी। क़ुरआन पाक में उसका ज़िक्र अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त यूँ फ़रमाते हैं:

و اذ اخذ ربك من بنى آدم من ظهورهم ذريتهم و اشهدهم
على انفسهم ، الست بربكم، قالوا بلى شهدنا (الاعراف :١٧٢)

“और जब आपके रब ने औलादे आदम की पुश्त से उनकी औलाद निकाली और उनसे उन्हीं की जानों के बारे में इक़रार लिया कि: “क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ ?” सब ने कहा,“क्यों नहीं,हम सब इस पर गवाह हैं”।

जिस्म बनाया गया,रूह डाली गई,पहला दौर ----- बे बस बच्चा----- फिर भागता दौड़ता बच्चा---- बच्पन भी गुज़र गया,जवान हुआ ----फिर जवानी गुज़र गई बूढ़ा हुआ ----फिर बुढ़ापा फ़ना की दहलीज़ पर ले आया जहाँ से एक और अगली मंज़िल (आलमे बरज़ख़ ) में दाख़िल होना है,ये भी आरज़ी दौर है लेकिन यहाँ रूह ने बदन का ग़िलाफ़ उतार फेंका,रूह के महसूसात ख़त्म नहीं हुए लेकिन उसका इज़्हार करने वाला जिस्म ख़ालिक़ के अगले हुक्म तक के लिए ख़त्म हो गया।

वो इंसान जो जिस्म पर इतना इख़्तियार रखता था,अपनी मर्ज़ी से उसे जहाँ चाहे लिए फिरता था,अब

©AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

अब उस इख़्तियार से महरूम कर दिया गया है,उसे अपनी मर्ज़ी से उस नए आलम से निकलने की इजाज़त नहीं जहाँ वो अब पहुँचा दिया गया है,वहाँ उसका गुज़िश्ता अमल उसकी क़ैद या रहाई का सबब बनेगा,अगर अमल बुरा तो क़ैदे-सिज्जीन और अमल एहसन था तो इल्लीयीन की मराआत हासिल करने का हक़दार बन गया।

## क़ब्र में राहत या तक्लीफ़

जो लोग मरने के बाद एक और क़िस्म की ज़िंदगी या उसके महसूसात को समझने से क़ासिर हैं उनके लिए दावत ग़ौर व फ़िक्र है कि अच्छे बुरे ख़्वाब,जादू के असरात, नज़रबद का लग जाना वग़ैरह ये सब क्या कोई मादी हैसियत रखते हैं ? या सिर्फ़ रूह उनसे मुतास्सिर होती है? अगर हम उनको बिला ताम्मुल मान लेते हैं तो फिर मौत के बाद क़ब्र की जज़ा व सज़ा और रूह का उन सबको महसूस करना (क्योंकि मौत जिस्म की है रूह की नहीं) उन सबको भी मान लेना चाहिए और हर मुसल-मान को इसे अपने अक़ीदे व ईमान का हिस्सा बनाना चाहिए।

क़ुरआनी आयात के अलावा बहुत सी अहादीस भी इस पर इस्तदलाल और यक़ीन दहानी के लिए मौजूद हैं जिन्हें पढ़ने के बाद इंसान का ईमान और पक्का हो जाता है:

**فلا اقسم بالشفق . واليل وما وسق. والقمر إذااتسق. لتركبن طبقا عن طبق**

**فما لهم لا يؤمنون.** (الانشقاق:١٦,١٧,١٨,١٩,٢٠)

“मुझे शफ़क़ की क़सम,और रात की और उसकी जमा शुदा चीज़ों की क़सम और चाँद की जबकि वो भर जाता है,यक़ीनन तुम एक हालत से दूसरी हालत पर पहुँचोगे,उन्हें क्या हो गया है कि ईमान नहीं लाते”।

**ومن ورآئهم برزخ إلى يوم يبثون.** (المؤمنون:١٠٠)

“और उन सब (फ़ौत शुदा) के पीछे एक बरज़ख़ है दोबारा उठने के दिन तक।”

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

## बरज़ख़ी ज़िंदगी की इब्तिदा

इस दुनिया की ज़िंदगी ख़त्म होने के बाद से लेकर क़यामत बरपा होने (यानी रोज़े हिसाब) से पहले तक का लम्बा अरसा "आलमे बरज़ख़" कहलाता है। इस दौर की इब्तिदा या इन्तेहा,या उसके वसत का हाल एहवाल बताने आज तक ख़ुद कोई वापस नहीं आया। अलबत्ता इस मौज़ू पर क़ुरआन और अहादीस से हमें जो मालूमात मिलती हैं वही हमें नसिहत व इब्रत के लिए काफ़ी हैं। उन मालूमात के मुताबिक़ अल्लाह ताला के फ़रमांबरदारों और नाफ़रमानों को बरज़ख़ की दुनिया में दाख़िल करने के अंदाज़ और तरीक़े जुदा-जुदा हैं।

## एहले ईमान के लिए

एहले ईमान व तक़्वा को मरने से पहले मज़ीद नेक आमाल की तौफ़ीक़ मिल जाती है तो मौत उनके लिए तोहफा बन जाती है।

सय्यदना अन्स बिन मालिक ؓ से रिवायत है कि रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमायाः, "अल्लाह तआला जब किसी बंदे के लिए ख़ैर चाहता है तो उससे काम लेता है"। पूछा गया 'वो किस तरह काम लेता है?' फ़रमायाः

"मौत से पहले उसे नेक काम की तौफ़ीक़ अता फ़रमा देता है।" (इब्ने हिबान)

## जान निकालने का मरहला

सच्चे मोमिन के लिए नज़अ की तक्लीफ़ गुनाहों की बख़्शिश और दर्जात में बुलंदी का सबब बन जाती है और मौत कलिमे पर नसीब होने कि वज्ह से जन्नत की बशारत दिया जाता है।

إن الذين قالوا ربنا الله ثم استقاموا تتنزل عليهم الملائكة
الا تخافوا ولا تحزنوا و أبشروا بالجنة التى كنتم توعدون
(حم السجده : ٣٠)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

"जिन लोगों ने कहा कि हमारा परवरदिगार अल्लाह है,फिर उसी पर क़ायम रहे, उनके पास फ़रिश्ते (ये कहते हुए) आते हैं कि तुम कुछ भी अंदेशा ना करो और ना ही ग़म (बल्कि) उस जन्नत की बशारत सुन लो जिसका तुम वादा दिए गए हो"।

मरने के वक़्त उन्हें अल्लाह तआला की रज़ामंदी और,जन्नत की ख़ुशख़बरी और अल्लाह तआला का सलाम पहुँचाया जाता है।

इरशादे बारी तआला है:

الذين تتوفهم الملائكة طيبين ،يقولون سلم عليكم ،ادخلوا الجنة بما كنتم تعملون.

(النحل :٣٢)

"वो जिनकी जानें फ़रिश्ते इस हाल में क़ब्ज़ करते हैं कि वो पाक साफ़ हों वो उन्हें कहते हैं कि तुम्हारे लिए सलामती ही सलामती है,दाख़िल हो जाओ जन्नत में उन आमाल के बदले जो तुम किया करते थे।"

हदीस: सय्यदना अबू हुरैरह ؓ से रिवायत है, नबी ﷺ ने फ़रमाया "फ़रिश्ते रूह क़ब्ज़ करने के लिए जब मरने वाले के पास आते हैं तो उनके नेक और सालेह होने की सूरत में कहते हैं "ऐ पाक रूह! तू पाक जिस्म में थी,अब तू जिस्म से निकल आ,तू ख़ूबी वाली है अल्लाह की रहमत से ख़ुश हो जा,तेरे लिए जन्नत की नेअमतें हैं, तेरा रब तुझसे राज़ी है।" फ़रिशते मरने वाले को मुसलसल यही कहते रहते हैं यहाँ तक रूह जिस्म से निकल आती हैं....।"(इब्ने माजह)

अहमद की रिवायत के मुताबिक़ रसूल अल्लाह ﷺ ने यहाँ ये भी फ़रमाया, "चुनानचे रूह जिस्म से इस तरह आसानी से निकल आती है जैसे मशकिज़े के मुँह से पानी का क़तरह बह निकलता है"।

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

# ईमान वालों की रूह का आसमानों पर इस्तक़बाल

تحيتهم يوم يلقونه سلم . و اعد لهم أجرا كريما.(الاحزاب:٤٤)

"जिस रोज़ (एहले ईमान) अल्लाह से मिलेंगे,उनका इस्तक़बाल सलाम से होगा,उनके लिए अल्लाह ताला ने इज़्ज़त वा अजर तैयार कर रखा है"।

हदीस: सय्यदना अबू हुरैरा ؓ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया: "जब मोमिन की वफ़ात का वक़्त क़रीब आता है तो रहमत के फ़रिशते सफ़ेद रेशम (का कफ़्न) लेकर आते हैं और कहते हैं:(ऐ रूह !) अल्लाह की रहमत,जन्नत की ख़ुशबू, और अपने ख़ुश होने वाले रब की तरफ़ जाने के लिए इस हालत में जिस्म से निकल आ कि तू अपने रब से राज़ी और तेरा रब तुझसे राज़ी है। मोमिन आदमी की रूह जब जिस्म से निकलती है तो उससे बहतरीन मुश्क जैसी ख़ुशबू आ रही होती है,यहाँ तक कि फ़रिश्ते एक दूसरे से लेकर उसकी ख़ुशबू सूंघते हैं और जब आसमान के दर- वाज़े पर पहुँचते हैं तो आसमान के फ़रिश्ते आपस में कहते हैं,, "ये कैसी उमदा ख़ुशबू (वाली रूह) है जो ज़मीन से तुम्हारे पास आ रही है"। फ़रिश्ते उसे लिए हुए जैसे ही अगले आसमान पर पहुँचते हैं तो उस आसमान के फ़रिश्ते भी इसी तरह कहते हैं यहाँ तक कि वो उस रूह को एहले ईमान की रूहों की जगह (इल्लीयीन) में ले आते हैं। जब वो रूह वहाँ पहुँचती है तो (पहले से मौजूद) रूहों को इतनी ख़ुशी होती है जितनी तुम में से किसी को अपने भाई के मिलने पर हो सकती है चुनांचे बाज़ रूहें (इस नई आने वाली रूह से) पूछती हैं,

"फ़ुलाँ आदमी (दुनिया में) किस हाल में था" फिर वो आपस में कहती हैं,"इसे ज़रा छोड़ दो,आराम करने दो,ये दुनिया के मसाइब व मुश्किलात में मुब्तिला था"।फिर वो रूह पूछती है,
"क्या वो फ़ुलाँ रूह लुम्हारे पास नहीं आई? वो आदमी तो फ़ौत हो चुका।" इस पर वो (अफ़सोस से) कहते हैं वो अपनी माँ हाविया (जहन्नम) में ले जाया गया है...."। (हाकिम,नसाई)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

# मुनकर नकीर

रसूल अल्लाहﷺ ने क़ब्र में मैय्यत से सवालात करने वाले फ़रिश्तों की बाबत फ़रमाया कि उनका रंग सियाह आँखें नीले रंग की होंगी। (बहवाला तिरमिज़ी)

## सवालात के वक़्त मैय्यत की अक़्ल का लोटना

हदीस: सैयदना उमरؓ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने सहाबा कराम को क़ब्र में आज़माए जाने और मुनकर नकीर के सवाल व जवाब के बारे में फ़रमाया तो मैं ने पूछा, ' या रसूल अल्लाह! क्या उस वक़्त मुझे मेरी अक़्ल लौटादी जाएगी?'

आप ﷺ ने फ़रमाया, “हाँ”

मैं ने अरज़ किया, 'फिर मैं दोनों फ़रिश्तों (मुन्कर,नकीर) के लिए काफ़ी हूँगा' वल्लाह! अगर उन फ़रिश्तों ने मुझसे पूछा (तुम्हारा रब कौन है?) तो मैं जवाब दूँगा, 'मेरा रब तो अल्लाह है,तुम बताओ तुम दोनों का रब कौन है?' (बहैक़ी)

हदीस: सैय्यदह आएशा ؓने रसूल अल्लाहﷺ से पूछा,'या रसूल अल्लाह ! मैं तो एक कमज़ोर औरत हूँ क़ब्र में मेरा क्या हाल होगा?'

आप ﷺ ने फ़रमाया,“अल्लाह तआला एहले ईमान को कलिमा तौहीद की बर्कत से क़ब्र में सवालों के जवाबात पर भी साबित क़दम रखेगा”। (बज़ाज़)

कलिमा तौहीद,उस पर जबानी व अमली गवाही और उस पर सबात का हुसूल हर मोमिन की अव्वलीन तरजीह होनी चाहिए ताकि दुनिया की कामयाबी से कूच कर जाने के बाद क़ब्र में फ़रिश्तों के सवालात के मौक़े पर भी कामयाबी नसीब हो।

## ईमान वालों से क़ब्र में फ़रिश्तों के सवालात

आयत: क़ुरआन पाक में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يُثَبِّتُ اللّٰهُ الَّذِ يْنَ اٰمَنُوْا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِى الْحَيٰوةِ الدُّ نْيَا

وَفِى الْاٰخِرَةِ ○ (ابراهيم :27)

“ईमान वालों को अल्लाह तआला पक्की बात के साथ मज़बूत रखता है,
दुनिया की ज़िंदगी में भी और आख़िरत में भी”।

**हदीस:** नबी करीम ﷺ मय्यत दफ़्न करने से फ़ारिग़ होकर फ़रमाते, “अपने भाई के लिए बख़्शिश और (सवाल जवाब में) साबित क़दमी की दुआ माँगो क्योंकि अब उससे सवाल किया जा रहा है।”(अबू दाऊद)

आइए! हम उस क़ौले साबित (पक्की बात) को याद कर लें

رَبِّىَ اللّٰهُ وَدِيْنِىَ الْاِسْلَامُ وَنَبِيِّ مُحَمَّدٌ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ،

قَرَأْتُ كِتَابَ اللّٰهِ فَاٰمَنْتُ بِهٖ وَصَدَّ قْتُ

“मेरा रब अल्लाह है,मेरा दीन इस्लाम है,और मेरे नबी मुहम्मदﷺ हैं,मैं अल्लाह की किताब पढ़कर ईमान लाया और मैंने तस्दीक़ की।”(बुख़ारी)

## दुरुस्त जवाबात की कामयाबी पर

दुनिया आख़िरत में अल्लाह और अल्लाह के रसूलﷺ की सच्ची गवाही देने वाले कामयाब इंसान की पुर मसर्रत कैफ़ियत की मिसाल क़ुरआन में यूँ बयान की गई है:

قِيْلَ ادْخُلِ الْجَنَّةَ ط قَالَ يٰلَيْتَ قَوْمِىْ يَعْلَمُوْنَ ○ بِمَا

غَفَرَ لِىْ رَبِّىْ وَجَعَلَنِىْ مِنَ الْمُكْرَمِيْنَ ○ (يٰس :26,27)

“जब उससे कहा गया कि जन्नत में चला जा,कहने लगा,
“काश! मेरी क़ौम को भी इल्म हो जाता कि मुझे मेरे रब
ने बख़्श दिया और मुझे इज़्ज़त वाले लोगों में कर दिया”।

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

इसी तरह किसी भी मोमिन बन्दे के साथ क़ब्र में जब अच्छा मामला पेश आता है और उसे अपनी कामयाबी के आसार नज़र आते हैं तो वो उस ख़ुशख़बरी की इत्तिला जल्द अज़ जल्द अपने एहले ख़ाना को देना चाहता है।

**हदीस:** सय्यदना अबू हुरैरा ؓ कहते हैं रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, "जब मय्यत दफ़्न की जाती है उसके पास दो स्याह आँखों वाले फ़रिश्ते आते हैं जिमनें से एक का मुनकर और दूसरे का नाम नकीर है। दोनों उससे पूछते हैं, "तुम उस आदमी मुहम्मद ﷺ के बारे में क्या कहते हो ? "वो जवाब में कहता है, "मुहम्मद ﷺ अल्लाह के बंदे और रसूल हैं " दोनों फ़रिश्ते कहते हैं हमारा भी यही ख़्याल था कि तुम यही जवाब दोगे"।फिर उसकी कब्र सत्तर दर सत्तर हाथ फ़राख़ कर दी जाती है और उसे रोशन कर दिया जाता है,फिर उस बंदे से कहा जाता है:

"सो जाओ", वो कहता है, "मैं अपने एहलो अयाल के पास जाकर उन्हें (अपनी मग़्फ़िरत की) ख़बर देना चाहता हूँ ,फ़रिश्ते जवाब में कहते हैं (ये मुम्किन नहीं) "अब तुम दुल्हन की नींद जैसी (पुर सुकून) नींद सो जाओ,जिसे उसके महबूब के अलावा कोई नहीं जगाता (चुनांचे वो सो जाता है)"।

यहाँ तक की अल्लाह ताला ही उसे क़ब्र से उठाऐंगे।"(सुनन तिरमज़ी)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

## इस्तक़बाले क़ब्र

**हदीस:** रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, "जब मोमिन दफ़्न किया जाता है तो क़ब्र कहती है, ख़ुश आमदीद! मुझ पर चलने वाले लोगों में से मुझे सबसे ज़्यादा तू ही अज़ीज़ था आज जब्कि बेबस करके तुझे मेरे हवाले कर दिया गया है,तो तू मेरा हुस्ने सुलूक देख लेगा,फिर उस आदमी की क़ब्र हद्दे निगाह तक फ़राख़ हो जाती है और उसके लिए जन्नत की तरफ़ एक दर्वाज़ा खोल दिया जाता है" (तिर्मिज़ी)

# अहले ईमान की रूहों का क़ियाम

हदीस : अब्दुर रहमान बिन कअब अलअनसारी ؓसे रिवायत है कि उनके वालिद रसूल अल्लाह ﷺ की ये हदीस बयान करते थे कि आप ﷺ ने इरशाद फ़रमाया, "मोमिन की रूह (मौत के बाद) जन्नत के दरख़्तों पर उड़ती फिरती है यहाँ तक की जिस रोज़ मुर्दे उठाए जाऐंगे उस रोज़ रूह अपने जिस्म में लौटा दी जाएगी" (इब्ने माजा)

हदीस: सय्यदना अबू हुरैरा ؓसे रिवायत है कि नबी ﷺ ने फ़रमायाः "मैय्यत जब क़ब्र में दफ़्न की जाती है तो वह पसमांदगान के (वापस लोटते वक़्त) जूतों की आवाज़ सुनती है। अगर मय्यत मोमिन हो तो उसे कहा जाता है,"बैठ जाओ" वो बैठ जाता है और उसे सूरज ग़ुरूब होता दिखाया जाता है और पूछा जाता है कि वो शख़्स जो बहुत पहले लुम्हारे यहाँ मबऊस हुए उनके बारे में तुम क्या कहते थे और उनके बारे में तुम क्या गवाही देतेहो?" मोमिन आदमी कहता है, "ज़रा बैठो मुझे नमाज़ असर अदा कर लेने दो (सूरज ग़ुरूब होने वाला है) फ़रिश्ते कहते हैं, "बेशक तुम (दुनिया में) नमाज़ पढ़ते रहे हो,अब हम जो बात पूछ रहे हैं उसका हमें जवाब दो और बताओ वो शख़्स जो बहुत पहले तुम्हारे दर्मियान मबूस किए गए उनके बारे में तुम क्या कहते थे और क्या गवाही देते हो?" मोमिन आदमी कहता है, "वो (हमारे नबी) मुहम्मद ﷺ हैं, मैं गवाही देता हूँ कि वो अल्लाह के रसूल हैं औरअल्लाह की तरफ़ से हक़ ले कर आए हैं," तब उसे कहा जाता है,"इसी अक़ीदे पर तुम ज़िंदा रहे थे,इसी पर मरे और इनशा अल्लाह इसी अक़ीदे पर उठोगे" फिर जन्नत के दरवाज़ों में से एक दरवाज़ा उसके लिए खोल दिया जाता है और उसे बताया जाता है, "जन्नत में ये तुम्हारा महल है और जो कुछ अल्लाह ने जन्नत में तुम्हारे लिए तैयार कर रखा है वो भी देख लो " (ये सब कुछ देख कर) उसके शौक़ और लज़्ज़त में इज़ाफ़ा हो जाता है।

फिर उसकी क़ब्र सत्तर हाथ( 501 फ़िट या 53 मीटर) खुली कर दी जाती है और उसे मुनव्वर कर दिया जाता है।

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

उसके जिस्म को पहले वाली हालत में लौटा (सुला) दिया जाता है और उसकी रूह को पाकीज़ा और ख़ुशबूदार बना दिया जाता है और ये परिंदे की शक्ल में जन्नत के दरख़्तों पर उड़ती फिरती है। तो इसी तरह(क़ब्र में मोमिन का नेक अंजाम)अल्लाह ताला के इस इर्शाद पाक की तफ़सीर है:

“अल्लाह ताला एहले ईमान को कलिमा तय्यबा की बर्कत से दुनिया व आख़िरत की ज़िंदगी में साबित क़दमी अता फ़रमाते हैं। (तब्रानी,इब्ने हिबान,हाकिम)

## मोमिन के लिए जहन्नम से दूरी

اِنَّ الَّذِيْنَ سَبَقَتْ لَهُمْ مِّنَّا الْحُسْنٰٓى ۙ اُولٰٓئِكَ عَنْهَا مُبْعَدُوْنَ ٥

لَا يَسْمَعُوْنَ حَسِيْسَهَا ۚ وَهُمْ فِيْ مَا اشْتَهَتْ اَنْفُسُهُمْ خٰلِدُوْنَ ٥

لَا يَحْزُنُهُمُ الْفَزَعُ الْاَكْبَرُ وَتَتَلَقّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ۗ هٰذَا يَوْمُكُمُ الَّذِيْ

كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ٥ (الانبياء 101,102,103)

“बेशक जिनके लिए हमारी तरफ़ से अच्छाई पहले ही ठहर चुकी है,वो सब जहन्नम से दूर रखे जाऐंगे,वो जहन्नम की आहट ना सुन सकेंगे और अपनी मन भाती चीज़ों में हमेशा रहने वाले होंगे,वो बड़ी घबराहट (का दिन) उन्हें ग़मगीन ना कर सकेगा और फ़रिश्ते उन्हें हाथों हाथ लेंगे कि यही तुम्हारा वो दिन है जिसका तुम वादा दिए जाते रहे थे”।

## रूह के लिए सबसे बड़ी नेअमत यानी अल्लाह की रज़ा का इनाम

يٰٓاَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ٥ ارْجِعِىٓ اِلٰى رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً ٥

فَادْخُلِىْ فِىْ عِبٰدِىْ ٥ وَادْخُلِىْ جَنَّتِىْ ٥ (الفجر 27,28,29,30)

“ऐ इत्मिनान वाली रूह! तू अपने रब की तरफ़ लौट चल इस तरह कि कि तू उससे राज़ी वह तुझसे ख़ुश,पस मेरे ख़ास बंदों में दाख़िल हो जा,

© AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

और मेरी जन्नत में चली जा”

ये बात नफ़्स मुत्मइन्ना से तीन मौक़े पर कही जाएगी।

☆ मौत के वक़्त,

☆ क़यामत के रोज़ जब वो दोबारा उठकर मैदाने हशर की तरफ़ चलेगा,

☆ जब अल्लाह की अदालत में पेश होने का मौक़ा आएगा,

ग़रज़ हर मरहले पर उसे इत्मिनान दिलाया जाएगा कि वो अल्लाह की रहमत व इनायत की तरफ़ जा रहा है,ये वो कामयाब व कामरान हस्तियाँ होंगी जो उस मिशन में कामयाब रहीं जिसके लिए उन्हें दुनिया में भेजा गया था।

इन बानसीब हस्तियों में अन्बिया,सिद्दीक़ीन,शोहदा और सालेहीन शामिल हैं, उनके आमाल बहतरीन आमाल वाले रजिस्टर या दफ्तर “इल्लीयीन” में जमा हैं। उनके साथ क़ब्र में भी बहतरीन मेज़बानी की जाने की बशारत है। और यूँ रसूल करीमﷺके क़ौले मुक़द्दस की सदाक़त पर भी ईमान पक्का होता है।

إن الله حرم على الارض أن تأكل أجساد الانبياء (ابو داؤد)

“बेशक अल्लाह ने ज़मीन के लिए हराम कर दिया है कि
वो अन्बिया के जिस्मों को (क़ब्रों में) खाए।”

यही मामला अल्लाह के मुक़र्रब बंदों के साथ भी हो सकता है।

हिशाम बिन उर्वा؄ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि वलीद बिन अब्दुल मलिक के ज़माने में जब सय्यदा आयशा ؄ के हुजरे मुबारक की दीवार गिरी तो उसे बनाते वक़्त एक पाँव नज़र आया। लोग घबरा गए और समझे ये नबी करीमﷺ का क़दम मुबारक है। लेकिन कोई ऐसा आदमी नहीं था जिसे आपका पाँव मुबारक पहचानने का यक़ीनी इल्म होता यहाँ तक कि वो उर्वा बिन ज़ुबैर؄ (सय्यदा आएशा؄ के भांजे तशरीफ़ लाए और उन्होंने लोगों से कहा,

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

"वल्लाह! ये कदम उमरؓ का है।"(बुख़ारी)

बहर हाल क़ब्र की आसाइश और आराम कोई अन्होंनी बात नहीं। अगरचे हम ज़िंदा होते हुए इसका तसव्वुर नहीं कर सकते मगर तारीख़ इस पर गवाह है कि अल्लाह के महबूब और बरगुज़ीदा बंदों की क़ब्रें इत्तिफ़ाक़ या बवज्ह किसी ख़ास मज्बूरी के खोली गईं तो उनके जिस्म तरो ताज़ा और महकते हुए पाए गए गोया कि आज ही दफ़्न किए गए हों। इसी तरह और बहुत से वाक़ेआत हालात में चश्मदीद गवाहों के बयानात के मुताबिक़ शोहदाए कराम के जिस्म कई सालों तक बल्कि सदियों के गुज़रने के बावजूद इतने महफ़ूज़ और ताज़ा देखे गए कि उन पर जिंदों का गुमान होता था।

## सच्चा वाक़ेआ

कहा जाता है,1935 इ. में इराक़ के हुक्मरान शाह फ़ैसल अव्वल और ईराक़ ही के मुफ़्ती आज़म दोनों को यके बाद दीगरे ख़्वाब आए जिसमें रसूल ﷺ के दो सहाबा कराम ؓउन दोनों को अपनी क़ब्रों में दर्या के पानी की आमद की इत्तिला और उनके अजसाम को वहाँ से किसी दूसरी जगह मुंतक़िल करने की तल्क़ीन कर रहे थे। यह दोनों सहाबा सय्यदना जाबिरؓबिन अब्दुल्लाह और हुज़ैफ़ाؓ बिन यमान थे।

कई दफ़ा मुतावातिर यही ख़्वाब आने के बाद उल्मा और दीगर हुक्कामे वक़्त के बाहम मशवरों से सहाबा कराम के जिस्मों को वहाँ से मुंतकिल करने का फैसला किया गया,हज का ज़माना क़रीब होने की वज्ह से ये काम उस मौक़े पर आने वाले ज़ाएरीन की मौजूदगी में अमल में लाया गया। प्रोगराम के मुताबिक़ जब ये क़ब्रें खोली गईं तो लाखों मुसलमानों को ये तारीख़ी और रूहानी मंज़र अपनी आँखों के सामने देखने का मौक़ा मिला। दोनों सहाबा कराम के जिस्म महफ़ूज़ थे,यहाँ तक की कफ़्न और रेश (दाढ़ी) का बाल-बाल तक महफ़ूज़ था और आँखों की चमक भी मोजूद थी।

(बहवाला जरीदा "तक्बीर" 7 नवम्बर 1991 और "मुशाहिदात बिलाद इस्लामिया" अज़ महमूदह उस्मान हैदर सफ़्ह 25-46)

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

मज़कूरह वाक़्या भी कलाम अल्लाह में शोहदा से मुताल्लिक़ वादा और उसकी सदाक़त का हक़ीक़ी सबूत है,एक आम बंदऐ मोमिन जो तक़्वा और परहेज़गारी के साथ ज़िंदगी गुज़ारता है उसके लिए भी मरने के बाद अच्छे हाल की ख़ुशख़बरी है।

## चंद ख़ूबसूरत अहादीसे मुबारकह

रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, "जो अल्लाह और उसके पैग़मबर पर ईमान लाए और नमाज़ को दुरुस्ती के साथ अदा करे और रमज़ान के रोज़े रखे तो अल्लाह पर उसका हक़ है कि उसको जन्नत में ले जाए ख़्वाह वो जिहाद करे या उसका मौक़ा ना पा सके और उसी मुल्क में बैठा रहे जहाँ पैदा हुआ हो....."।(बुख़ारी)

रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया,"जन्नत में एक कमान (हाथ) बराबर जगह उन सब (दुनिया की) चीज़ों से बहतर है जिन पर सूरज निकलता है और डूबता है। और आप ﷺ ने ये भी फ़रमाया कि अल्लाह की राह में सुब्ह या शाम को चलना उन सब चीज़ों से बहतर जिन पर सूरज निकलता और डूबता है"। (बुख़ारी)

समराؓ रिवायत करते हैं कि रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमायाः
"मैं ने आज रात ख़्वाब में देखा,दो शख़्स आए और मुझको एक दरख़्त पर चढ़ा ले गए,फिर एक उमदा घर में ले गए जिससे बढ़कर उमदा और ख़ूबसूरत घर मैं ने नहीं देखा,उन्होंने बताया,ये शहीदों का घर है।" (बुख़ारी)

AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

# अल्लाह के नाफ़रमानों की मौत

**إقترب للناس حسابهم و هم فى غفلة معرضون** .(الانبياء:١)

"लोगों के हिसाब का वक़्त क़रीब आ गया है,
फिर भी वो ग़फ़्लत में मुँह फेरे हुए हैं"।

**و كم قصمنا من قرية كانت ظالة و انشأ نا بعدها قوما اخرين . فلمآ احسو بأ سنا إذا هم منها يركضون . لا تركضو و ارجعوآ إلى مآ أترفتم فيه و مسكنكم لعلكم تسئلون . قالو يويلنآ إنا كناظالمين.** (الانبياء 11,12,13,14:)

"और बहुत सी बस्तियाँ हमनें तबाह करदीं जो ज़ालिम थीं और उनके बाद हमने दूसरी क़ौम को पैदा कर दिया,जब उन्होंने हमारे आज़ाब का एहसास कर लिया तो लगे उससे भागने लगे। (कहा गया) भाग-दौड़ ना करो और जहाँ तुम्हें आसूदगी दी गई थी ज़रा इन्हीं अपने मस्कनों की तरफ़ वापस जाओ ताकि तुमसे सवाल तो कर लिया जाए,कहने लगे: हाय हमारी बदबख़्ती! बेशक हम ज़ालिम थे"।

**إن الذين توفهم الملائكة ظالمى أنفسهم قالوا فيم كنتم قالوا كنا مستضعفين فى الارض قلوآ ألم تكنارض الله واسعة فتهاجروا فيها فاولئك مأوهم جهنم و سآءت مصيرا**.(النساء:٩٧)

"जो लोग अपनी जानों पर ज़ुल्म करने वाले हैं जब फ़रिश्ते इन्हें फ़ौत करते हैं तो पूछते हैं: तुम किस हाल में थे ?" वो जवाब देते हैं: हम अपनी जगह कमज़ोर और मग़लूब थे,

©ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

फ़रिश्ते कहते हैं: क्या अल्लाह की ज़मीन कुशादा ना थी कि तुम कहीं हिजरत कर जाते? यही लोग हैं जिनका ठिकाना दोज़ख़ है और वो पहुँचने की बुरी जगह है"।

## अज़ाब और आग की ख़बर

अल्लाह के नाफ़रमानों को मौत से पहले ना नेक अमल की मोहलत मिलती है और ना ही तौबा की तौफ़ीक़ बल्कि उन्हें आग और अज़ाब की ख़बर दी जाती है। इरशादे बारी ताला है:

**حتى إذا جآء أحدهم الموت قال رب ارجعون. لعلى أعمل صالحا فيما تركت كلا، إنها كلمة هو قائلوها،و من ورآئهم برزخ الى يوم يبعثون .** (المؤمنون ٩٩,١٠٠)

"यहाँ तक कि जब उन में से किसी को मौत आने लगती है तो कहता है ऐ मेरे रब! मुझे वापस लौटा दे,अपनी छोड़ी हुई दुनिया में जाकर नेक आमाल कर लूँ,हरगिज़ ऐसा नहीं होता,ये सिर्फ़ एक क़ौल है जिसका ये क़ाइल है, उनके पसे-पुश्त तो एक हिजाब है उनके दोबारा उठने के दिन तक"।

**ومن لم يؤمن بالله و رسوله فإنآ أعتدنا للكفر ين سعيرا** .(الفتح:١٣)

"और जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान ना लाए तो हमने भी ऐसे कफ़िरों के लिए दहकती आग तैयार कर रखी है"।

**إن الذين فتنو المؤ منين و المؤمنات ثم لم يتوبوا فلهم عذاب جهنم و لهم عذاب الحريق.** (البروج:١٠)

"बेशक जिन लोगों ने मुसलमान मर्दों और औरतों को सताया,फिर तौबा भी ना की उनके लिए जहन्नम का अज़ाब है,और जलाए जाने की सज़ा है"।

© AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

हदीस:उबादह बिन सामित ؓ से रिवायत है कि नबीﷺ ने फ़रमाया:

“जब काफ़िर को मौत आने वाली होती है तो उसे अल्लाह के अज़ाब और उसकी सज़ा की ख़बर दी जाती है तब उसे आइंदा पेश आने वाले हालात से ज़्यादा नफ़रत किसी चीज़ से नहीं होती लेहाज़ा वो अल्लाह तआला से मुलाक़ात को नापसंद करता है,और अल्लाह तआला भी उससे मिलना पसंद नहीं फ़रमाते”। (बुख़ारी)

## अल्लाह तआला के नाफ़रमानों की ज़िल्लत और मार से जान निकालना

**ولو ترآ إذ الظالمون فی غمرات الموت و الملائکة باسطو آ أيديهم. أخرجوآ أنفسكم، اليوم تجزون عذاب الهون....**

“और काश (अगर) तुम मौत की सख़्तियों में मुब्तिला उन ज़ालिमों को देख सकते,(तो देखते) कि फ़रिश्ते अपने हाथ बढ़ा रहे हैं कि हाँ अपनी जानें निकालो,आज तुम को ज़िल्लत की सज़ा दी जाएगी”।

**ولو ترآی إذ يتوفى الذين كفروا الملائكة يضربون وجوههم و أدبارهم، و ذوقوا عذاب الحريق. ذلك بما قدمتأيديكم و أن الله ليس بظلام للعبيد.**(الانفال:٥٠,٥١)

“और काश तुम उस वक़्त (की कैफ़ियत) देखो जब फ़रिश्ते काफ़िरों की जान क़ब्ज़ कर रहे होते हैं वो उनके चहरे और पहलुओं पर मारते और (कहते हैं) कि अब अज़ाबे आतिश (आग का मज़ा) चक्खो,ये उस (गुनाह) की सज़ा है जिसे तुम्हारे ही हाथों ने आगे भेजा था और बेशक अल्लाह बंदों पर ज़ुल्म करने वाला नहीं है।”

**فكيف إذا توفهم الملائكة يضربون وجوههم و أدبارهم.** (محمد:٢٧)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

“फिर उस वक़्त क्या हाल होगा (काफ़िरों का) जिस वक़्त फ़रिश्ते उनकी रूहें क़ब्ज़ करेंगे और उनके चहरों और पीठों पर मारेंगे”।

**الذين تتوفهم الملائكة ظالمى أنفسهم، فالقو االسلم ما كنا نعمل من سو ء، بلى إن الله عليم بما كنتم تعملون. فادخلو آ أبواب جهنم خلدين فيها، فلبس مثو المتكبرين.** (النحل:٢٨,٢٩)

“वो जो अपनी जानों पर ज़ुल्म करते हैं जब फ़रिश्ते उनकी जानें क़ब्ज़ करने लगते हैं तो उस वक़्त वो झुक जाते हैं कि हम बुराई नहीं करते थे,क्यों नहीं? अल्लाह ख़ूब जानता है जो तुम करते थे,तो अब हमेशगी के लिए जहन्नम के दरवाजों में दाख़िल हो जाओ,पस तकब्बुर करने वालों के लिए ये बहुत ही बुरा ठिकाना है।”

हदीस:..मरने वाला अगर बुरा आदमी हो तो (रूह क़ब्ज़ करने वाले) फ़रिश्ते उससे ये कहते हैं, “ऐ ख़बीस रूह! निकल (इस जिस्म से) तू ख़बीस जिस्म में थी, निकल इस जिस्म से ज़लील होकर और बशारत हो तुझे खौलते पानी की,पीप की और ऐसे दूसरे अज़ाबों की।” फ़रिश्ते रूह निकलने तक मुसलसल यही कहते रहते हैं...” (इब्ने माजा)

## काफ़िर की रूह का आसमानों पर इस्तक़बाल

हदीस: सैयदना अबू हुरैरह ؓ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया. “काफ़िर आदमी के पास अज़ाब के फ़रिश्ते आते हैं और कहते हैं, “ऐ ग़मज़दा और मग़दूब रूह ! निकल अल्लाह के अज़ाब और उसकी नाराज़गी की तरफ़”। काफ़िर की रूह जब जिस्म से निकलती है तो उससे इस क़द्र बदबू आती है जितनी किसी मुरदार से आती है। फ़रिश्ते उसे लेकर ज़मीन के दरवाज़े (सिज्जीन) की तरफ़ आते हैं तो (ज़मीन के दरवाज़े के मुहाफ़िज़) फ़रिश्ते कहते हैं,

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

किस क़द्र गंदी बू है ये! जैसे ही फ़रिश्ते अगली ज़मीन के दरवाज़े पर पहुँचते हैं तो उस ज़मीन के मुहाफ़िज़ फ़रिश्ते भी ऐसा ही कहते हैं यहाँ तक कि अज़ाब के फ़रिश्ते उसे कुफ़्फ़ार की रूहों के मस्कन (सिज्जीन) में ले जाते हैं।"
(हाकिम,इब्ने हिब्बान)

**हदीस:** एक और रिवायत में फ़रमायाः "फ़रिश्ते उसे लेकर आसमान की तरफ़ जाते हैं तो आसमान के फ़रिश्ते पूछते हैं, 'ये कौन है?' जवाब दिया जाता है, 'ये फुलाँ शख़्स है' वो फ़रिश्ते कहते हैं, 'इस ख़बीस रूह के लिए जो ख़बीस जिस्म में थी,कोई ख़ुश आमदीद नहीं इसे ज़लील कर के वापस भेज दो। 'आसमान के दर-वाज़े ऐसी रुह के लिए नहीं खोले जाते चुनांचे फ़रिश्ते उसे वहीं से आसमान से नीचे पटख़ देते हैं और वह क़ब्र में (मुनकर नकीर वे सवालात के लिए) लौट आती है"। (इब्ने माजा)

**हदीस:** सय्यदना अबू हुरैराؓ से मरवी है कि काफ़िर की रूह को जब आसमान की तरफ़ ले जाया जाता है तो आसमान के फ़रिश्ते कहते हैं, 'कोई नापाक रूह ज़मीन की तरफ़ से आ रही है,फिर (अल्लाह तआला की तरफ़ से) हुक्म होता है कि उसे क़यामत क़ाइम होने तक (सिज्जीन में) ले जाओ। रावी करते हैं,'जब रसूल अल्लाहﷺ ने काफ़िर की रूह की बदबू का ज़िक्र किया तो (नफ़्रत से) अपनी चादर का दामन इस तरह अपनी नाक पर रख लिया (और अबू हुरैरा ؓ ने अपनी चादर नाक पर रख कर दिखाई) (मुस्लिम)

## एहले जहन्नम से सवालात का मरहला

**हदीस:** सय्यदना अनस बिन मालिकؓ से रिवायत है कि रसूल अल्लाहﷺ ने फ़रमाया, "आग के अज़ाब और फ़ितना दज्जाल से अल्लाह की पनाह माँगो" सहाबा करामؓ ने अरज़ किया, 'या रसूल अल्लाह ! वो किस लिए?' आपﷺ ने इरशाद फ़रमायाः "दफ़्न होने वाली मय्यत अगर काफ़िर (मुनाफिक़) हो तो उसके पास एक फ़रिश्ता आता है और उसे ख़ूब डाँट कर पूछता है, 'तू किस की इबादत करता था?' वो कहता है,

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

'मैं नहीं जानता'। फ़रिश्ता उसे जवाब में कहता है, तूने ना तो ख़ुद अक़्ल से काम लिया ना (क़ुरआन) पढ़ा” फिर फ़रिश्ता पूछता है,“इस आदमी (मुहम्मदﷺ)के बारे में तू क्या कहता था?” (काफ़िर या मुनाफ़िक़) कहता है, 'मैं वही कहता था जो दूसरे लोग कहते थे'। (ये जवाब सुन कर) फ़रिश्ता उसके दोनों कानों के दर्मियान (यानी दिमाग़ पर) लोहे के गुर्ज़ों से मारना शिरू कर देता है और वो बुरी तरह चीख़ने-चिल्लाने लगता है। उसकी आवाज़ जिन्न व इंसान के अलावा हर जानदार मख़्लूक़ सुनती है”। (अबू दाऊद)

हदीस: एक दूसरी रिवायत के मुताबिक़ “मरने वाला मुनाफ़िक़ हो तो वो फ़रिश्तों के सवाल का ये जवाब देता है,'मुहम्महﷺ के बारे में मैं भी वही कुछ कहता हूँ जो लोगों को कहते सुनता था और मैं (इसके सिवा) कुछ नहीं जानता'। दोनों फ़रिश्ते कहते हैं, “हमें मालूम था तुम यही जवाब दोगे ” और फिर ज़मीन को हुक्म होता है: “तंग होजा ” तो वो तंग हो जाती है और उसकी पसलियाँ एक दूसरे में घुस जाती हैं। मुनाफ़िक़ क़ब्र में क़्यामत तक इसी अज़ाब में मुब्तिला रहता है”। (सुनन तिरमिज़ी)

पिछले पेजों पर बरा बिन आज़िब ؓ की रिवायत की हदीस पाक में भी तफ़्सील से इस हवाले से ज़िक्र हो चुका है। मालूम हुआ कि यौमे हिसाब (यानी आमालनामे खुलने के दिन) से पहले ही क़ब्र में मुनकर नकीर के सवालात एक तरह का ज़बानी इम्तेहान है और क्यूँकि क़ब्र आख़िरत की मंज़िलों में से पहली मंज़िल है, इसलिए जो पहली मंज़िल पर इस हल्के से इन्टरवियू नुमा टेस्ट में कामयाब हो गया तो वो अगले दर्जे में बेहतर सुलूक का मुस्तहिक़ होगा बसूरत दीगर मुश्किलात और अज़ाब का आग़ाज़ इसी मरहले से जारी है।

हर इंसान इसी इंटरवियू की बुन्याद पर क़यामत से पहले तक के क़याम के लिए इल्लियीन या सिज्जीन की जमाअत के साथ शामिल किए जाने का एहल होगा।

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

# क़यामत से पहले बरज़ख़ का अज़ाब (अज़ाबे क़ब्र)

क़ुरआन पाक में अल्लाह तआला का इरशादे पाक है,

**واتاهم العذاب من حيث لا يشعرون.** (النحل:٢٦)

"और उनके पास वहाँ से अज़ाब आया जिधर से आने
का उन्हें वहम व गुमान भी ना था"।

**سنعبهم مرتين ثم يردون الى عذاب عظيم.**(التوبه:١٠١)

"हम उनको दोबारा सज़ा देंगे फिर वो बड़े अज़ाब
की तरफ़ लौटा दिए जाऐंगे"।

**مما خطيئتهم أغرقوا فأدخلوا نارا ،فلم يجدوا
لهم من دون الله انصارا.**(نوح:٢٥)

"(क़ौमे नूह के लोग) अपने गुनाहों के जुर्म में ग़र्क़ कर दिए गए
और फिर आग में दाख़िल कर दिए गए,तो फिर उन्होंने अल्लाह
से ख़ुद को बचाने के लिए किसी को अपना मददगार ना पाया"।

**و حاق بال فرعون سوء العذاب.
النار يعرضون عليها غدوا و عشيا.
و يوم تقوم الساعة ، ادخلوآ
الفرعون اشد العذاب.**(المؤمن:٤٥,٤٦)

"और आ घेरा आले फ़िरऔन को बदतरीन अज़ाब ने जो जहन्नम की
आग है जिस पर वो सुब्ह व शाम पेश किए जाते हैं और जिस दिन
क़यामत की घड़ी बरपा होगी (हुक्म होगा) दाख़िल करदो आले
फ़िरऔन को सख़्त तरीन अज़ाब में"।

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

क़ौमे नूह और फ़िरऔन को साथ उसकी आल के सुब्ह और शाम आग पर पेश किए जाने के मुताल्लिक़ आयात मुबारका से मुमासलत रखती हुई बहुत सी अहादीस भी हैं,जो अज़ाबे क़ब्र की वाज़ेह दलील हैं मसलन:

हदीस: सय्यदना अबू हुरैर ؓ से रिवायत है, रसूल अल्लाह ﷺ ने सहाबा कराम ؓ से दरयाफ़्त फ़रमाया: "क्या तुम्हें मालूम है कि इस आयत में अल्लाह तआला ने क्या बात इरशाद फ़रमाई ?

....فان له معيشة ضنكا و نحشره يوم القيمة أعمى..(طه : ١٢٤)

यक़ीनन उसके लिए तक्लीफ़ देह ज़िन्दगी होगी और हम क़यामत के रोज़ उसे अँधा करके उठाऐंगे",

फिर आप ﷺ ने फ़रमाया, "जानते हो तक्लीफ़ देह ज़िंदगी क्या है ?" सहाबा कराम ؓ ने अर्ज़ किया, 'अल्लाह और उस का रसूल बहतर जानते हैं'। आप ﷺ ने फ़रमाया, "उससे मुराद क़ब्र में काफ़िर को दिया गया अज़ाब है। उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है,बेशक काफ़िर पर (क़ब्र में ) निनावे अज़्दहे मुसल्लत किए जाते हैं,हर अज़्दहे के सत्तर मुँह होते हैं और हर मुँह के सात सर होते हैं जो उसे क़यामत तक डसते और जख़्मी करते रहेंगे"।(अबू यअला व इब्ने हिब्बान)

हदीस: अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया, "मरने वाले को सुब्ह व शाम उसका ठिकाना जहन्नम या जन्नत दिखाया जाता है यहाँ तक कि क़यामत क़ायम हो जाएगी"। (बहवाला बुख़ारी व मुस्लिम)

हदीस : सय्यदना जाबिर बिन अब्दुल्लाह ؓ से रिवायत है कि रसूल अल्लाह ﷺ बनी नज्जार के क़ब्रिस्तान से गुज़रे तो वहाँ उन मुर्दों की आवाजें (चीख़ पुकार) सुनीं जो ज़माने जाहिलियत में फ़ौत हो गए थे,उन्हें उनकी क़ब्रों में अज़ाब दिया जा रहा था। नबी घबराकर वहाँ से निकल आए और सहाबा कराम ؓ को हुक्म दिया कि सब क़ब्र के अज़ाब से अल्लाह तआला की पनाह माँगें"।(मुस्नद अहमद)

हदीस: सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर ؓ से मरवी है कि रसूल अल्लाह ﷺ

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ने सय्यदना सअद ؓ बिन मअज़ के मुताल्लिक़ फ़रमाया,(जबकि वो दफ़्नाने के बाद अभी उनकी क़ब्र पर थे) "ये वो हस्ती हैं जिनकी वफ़ात से अर्श हिल गया,आसमान के दरवाज़े खोल दिए गए और सत्तर हज़ार फ़रिश्ते उनके जनाज़े में शामिल हुए हैं, अलबत्ता एक दफ़ा अन्हें क़ब्र में दबा दिया गया,फिर उनसे अज़ाब हटा लिया गया" (नसाई)

हदीसः सय्यदा आएशा ؓ बयान करती हैं के रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, बेशक एहले क़ुबूर को क़बरों में अज़ाब होता है ऐसा के उसको तमाम जानवर सुनते हैं। (नसाई)

हदीस: सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद ؓ से रिवायत है कि रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, "मुर्दे (काफ़िर या मुश्रिक) अपनी क़ब्रों में अज़ाब दिए जाते हैं और उनके (चीख़ने-चिल्लाने) की आवाज़ें सारे चौपाए सुनते हैं"। (तबरानी)

हदीस: एक और मौक़े पर आप ﷺ ने फ़रमाया,"मुझे ये ख़तरा ना होता कि तुम (मुर्दों को) दफ़्न करना ही छोड़ दोगे,तो मैं अल्लाह से दुआ करता कि वो तुम्हें अज़ाबे क़ब्र सुनवा देता"। (मुस्लिम)

हदीस: सय्यदना अनस ؓ कहते हैं एक दफ़ा रसूल अल्लाह ﷺ सय्यदना तलहा ؓ के बाग़ में तशरीफ़ ले गए,सय्यदना बिलाल ؓ नबी ﷺ के पीछे चल रहे थे, आप ﷺ का गुज़र एक क़ब्र के पास से हुआ आप ﷺ ने फ़रमाया, "ऐ बिलाल! जो मैं सुन रहा हूँ, क्या तुम भी सुन रहे हो? इस क़ब्र वाले को अज़ाब हो रहा है" (मालूम करने पर मालूम हुआ उस क़ब्र में यहूदी दफ़न था।) (मुस्नद अहमद)

हदीस: रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, "मेरी तरफ़ वही की गई है कि तुम लोग क़ब्रों में फ़ित्ना दज्जाल की तरह या उसके क़रीब-क़रीब आज़माए जाओगे"। (बुख़ारी)

हदीस: सय्यदा असमा बिन्त अबू बक्र ؓ से रिवायत है, "रसूल अल्लाह ﷺ (ख़ुत्बे के लिए) खड़े हुए और फ़ित्ना दज्जाल का ज़िक्र किया जिसमें आदमी क़ब्र में मुब्तिला होगा। जब आप ﷺ उसका ज़िक्र फ़रमा रहे थे तो मुसलमानों ने बुरी तरह चीख़ना-चिल्लाना शुरू कर दिया"। (बुख़ारी)

© AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

## नाफ़रमानों के लिए क़यामत उसके बाद अज़ाब और रुसवाई

**ثم يوم القيامة يخزيهم و يقول أين شركآ ءى الذين كنتم**
**تشا قون فيهم، قال الذين أوتو العلم إن الخزى اليوم**
**ةالسوء على الكافرين.**(النحل :٢٧)

“फिर रोज़े क़यामत भी अल्लाह तआला उन्हें रुसवा करेंगे और फ़रमाऐंगे कि: “कहाँ हैं मेरे वो शरीक जिनके बारे तुम लड़ते-झगड़ते रहते थे?” जिन्हें इल्म दिया गया था वो पुकार उठेंगे कि आज तो काफ़िरों के लिए रुसवाकुन और बुरा दिन है”।

© ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

इन आयात व आहादीस से साबित होता है कि रोज़े क़यामत अल्लाह तआला की अदालत क़ाइम होने से पहले के अज़ाब से मुराद दरअसल अज़ाबे क़ब्र ही है नीज़ ये कि क़ब्र की आग और बाग़ो बहार का मुशाहिदा अहले दुनिया कर नहीं सकते क्योंकि ये दुनिया की चीज़ों से बहुत मुशाबहत नहीं रखतीं।

अल्लाह तआला चाहें तो किसी क़ब्र की मिट्टी और पत्थरों को मय्यत के लिए भड़का सकते हैं। इसी तरह दूसरी कोई क़ब्र किसी मय्यत के लिए राहत अफ़्ज़ा मुक़ाम बन सकती है बल्कि एक ही क़ब्र में दो मय्यतें दफ़्न हों तो ये भी मुमकिन है कि एक लिए क़ब्र जहन्नम का घड़ा है मगर उसकी गर्मी का एहसास उसके ख़ुशनसीब साथी को नहीं होता जिसके लिए यही क़ब्र जन्नत का बाग़ है और उसकी नेअमतों का एहसास उसके बदनसीब पड़ोसी को नहीं होता।

## ईमान बिलग़ैब

अल्लाह तआला की क़ुद्रतें तो उससे भी ज़्यादा वसीअ और हैरत अंगेज़ हैं। हमारा महदूद इल्म उसका एहाता कर ही नहीं सकता मगर जिनको अल्लाह तआला यक़ीन व तसलीम की तोफ़ीक़ दे वो झुठलाया नहीं करते,यही ईमान बिल ग़ैब है।

# अन्बिया और ग़ैब

अल्लाह तआला ने अन्बिया कराम अलैहिम सलाम से ख़ास और ग़ैर मामूली काम लेना होता था,इसलिए उन्हें ख़ास सलाहियतें अता करके उन पर कुछ ऐसे ग़ैबी हक़ाइक़ वाज़ेह कर दिए जाते थे जो आम आदमी के मुशाहदे में नहीं आ सकते, मसलन:

सय्यदना अबु हुरैरा ؓ कहते हैं, रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, “बेशक मैं वो चीज़ें देखता हूँ जो तुम नहीं देखते और मैं वो कुछ सुनता हूँ जो तुम नहीं सुनते। आसमान (अल्लाह के खौफ़ से) चरचरा रहा है और उसे चरचराना ही चाहिए। उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है,आसमान में चार उँगली जितनी भी जगह ऐसी खाली नहीं जहाँ कोई फ़रिश्ता अपनी पेशानी अल्लाह के हुज़ूर रखे हुए सजदा ना कर रहा हो, (फिर फ़रमाया) अगर तुम वो बातें जान लेते जो मैं जानता हूँ तो तुम हँसते कम और रोते ज़्यादा,और तुम बिस्तरों पर बीवियों से लुत्फ़ अंदोज़ ना हो सकते और अल्लाह की पनाह तलब करते मैदानों की तरफ़ निकल जाते”।

(हदीस के रावी) सय्यदना अबू ؓज़र कहते हैं, 'वल्लाह! मेरी ख़्वाहिश है कि मैं एक दरख़्त ही होता जो काट दिया जाता'। (इब्ने माज़ा)

सय्यदा आएशा ؓसे रिवायत है कि रसूल अल्लाह ﷺ एक रोज़ निस्फ़ दिन गुज़रे (अपने हुजरे मुबारक से) बाहर निकले इस हाल में कि आप ﷺ चादर में लिपटे हुए थे,आँखें सुर्ख़ हो रही थीं और आप ﷺ बुलंद आवाज़ से फ़रमा रहे थे:

“ऐ लोगो! अगर तुम वो जान जाते जो मैं जानता हूँ तो तुम थोड़ा हँसते और ज़्यादा रोते,ऐ लोगो! अज़ाबे क़ब्र से अल्लाह की पनाह तलब करो। बेशक अज़ाबे क़ब्र बरहक़ है”। (मुस्नद अहमद)

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

# अज़ाबे क़ब्र से बचने वाले ख़ुशनसीब

कुछ नेक और सालेह आमाल ऐसे भी हैं जिन पर साबित क़दम रहने वालों के लिए मुनकर नकीर के सवालात और क़ब्र के अज़ाब से महफ़ूज़ रहने कि ख़ुशखबरी है।

## पेहरा:

रलूल अल्लाहﷺ ने फ़रमाया

“हर फ़ौत शुदा का अमल ख़त्म हो जाता है अलबत्ता (जंग या अमन में इस्लामी लश्कर,इस्लामी इमलाक,इस्लामी तनसीबात और इस्लामी सरहदों की) हिफ़ाज़त व निगरानी करना वाले का अमल बढ़ता रहेगा और वो क़ब्र मे मुनकर नकीर की आज़माइश से महफ़ूज़ रहेगा”। (सुनन अबी दाऊद)

## शहादत :

शहादत फ़ी सबील लिल्लाह पाने वाला जिन छ: इनामात का मुस्तहिक़ हो जाता है उनमें एक क़ब्र के अज़ाब से निजात पाना भी है। (बहवाला तिरमिज़ी)

“राशिद बिन सअद ؓने रसूल अल्लाह ﷺ के एक सहाबी ؓसे सुना कि एक शख़्स ने नबी ﷺ से पूछा, 'या रसूल अल्लाह! क्या वज्ह है कि सारे मुसलमानों को क़ब्र में आज़माया जाता है,लेकिन शहीद को नहीं आज़माया जाता?” रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया:

“उनके लिए दुनिया में सिरों पर चमकती तलवारों की आज़माइश ही काफ़ी है”। (नसाई)

## शहादत के मज़ीद अक़्साम जो इसी ख़ुशख़बरी (अज़ाबे क़ब्र से निजात) के अहल हैं:

## पेट की तक्लीफ़:

अब्दुल्लाह ؓबिन यसार से रवायत है कि मैं बैठा हुआ था कि सुलैमान ؓबिन सर्दा और ख़ालिद ؓबिन अरफ़ता तशरीफ़ लाए। लोगों ने उन्हें बताया कि फ़ुलाँ शख़्स पेट की तक्लीफ़ से वफ़ात पा गया है तो उन दोनों ने ख़्वाहिश की कि वो उसके

© ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

फिर एक आदमी ने दूसरे से पूछा,'क्या रसूल अल्लाह ﷺ ने ये बात इरशाद नहीं फ़रमाई थी कि जिस शख़्स को पेट मार डाले उसे क़ब्र में अज़ाब नहीं दिया जाएगा? जवाब दिया, 'बिलकुल क्यों नहीं'। (निसाई)

सय्यदना अबु हुरैरा ؓ से रवायत है,रसूल अल्लाहﷺ ने फ़रमाया, “शहीद पाँच क़िस्म के हैं: ताऊन ज़दा, पेट की बीमारी से मरने वाला,ग़र्क़ होने वाला,(मकान या दिवार के नीचे) दब कर मरने वाला,और अल्लाह तआला के रास्ते में शहीद होने वाला और उनके अलावा ज़चगी की हालत में मरने वाली ख़ातून, आग में जल कर मरने वाला, पसली की बिमारी (नमूनीया) से मरने वाला”। (इब्ने माजा)

एक और रिवायत में के मुताबिक़: “अपने माल की हिफ़ाज़त में मरने वाला,अपने बाल बच्चों की हिफ़ाज़त में मरने वाला,अपनी जान बचाते हुए मरने वाला,अपने दीन की हिफ़ाज़त में जान देने वाला, ज़ुल्म के ख़िलाफ़ जद व जहद में मरेन वाला भी शहीद है”। (नसाई)

## जुमा के दिन या रात की वफ़ात:

रसूल अल्लाहﷺ का इरशाद है:

“जो मुसलमान जुमा के दिन या जुमा की रात वफ़ात पाए, अल्लाह तआला उसे फ़ित्ना क़ब्र से महफ़ूज़ कर देता है (बशर्ते कि हुक़ूक़ अल्लाह और हुक़ूक़ुलइबाद पूरा करने वाला हो)”। (तिर्मिज़ी)

## मस्जिद की नमाज़,तिलावते क़ुरआन पाक और सद्क़ा:

मस्जिद की तरफ़ चल कर नमाज़ के लिए जाना फ़ितना क़ब्र से निजात का सबब बनेगा। इसी तरह क़ुरआन पाक की तिलावत को मामूल बना लेना और सदक़ा व ख़ैरात करना भी अज़ाबे क़ब्र से महफ़ूज़ रखने वाले आमाल हैं। सय्यदना अबू हुरैरा ؓ से रिवायत है कि नबी करीमﷺ ने फ़रमाया:

“आदमी जब क़ब्र में दफ़्न किया जाता है और फ़रिश्ता (मय्यत के) सिर की तरफ़ से अज़ाब देनेके लिए आता है तो तिलावत क़ुरआन उसे दूर करदेती है,फिर जब सामने से आता है तो सदक़ा ख़ैरात उसे दूर कर देते है ।

© AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

और जब पाँव की तरफ़ से फ़रिश्ता आता है तो मस्जिद की तरफ़ चल कर जाना उसे दूर कर देता है”। (तबरानी)

## सूरह मुल्क की तिलावत:

इस सूरह की फ़ज़ीलत के बारे में रसूल अल्लाहﷺ ने फ़रमाया:

“जो इस सूरह को हर रात पढ़े,अल्लाह तआला उसे अज़ाबे क़ब्र से बचा लेता है”। (हाकिम,नसाई)

### शहादत की दुआ:

ख़ुलूसे दिल से शहादत की दुआ माँगने वाला अपने बिस्तर पर भी मरे तो शहीद है। (बहवाला मुस्लिम)

## अर्कानि इस्लाम और आमाल सालेह

एक और हदीस पाक में अर्कान इस्लाम की पाबंदी और आमाल सालेह पर कार-बंद रहने वाले मुसलमान के लिए भी यही ख़ुशख़बरी है।

नबी करीमﷺ का इरशाद है कि “क़ब्र में जब अज़ाब का फ़रिश्ता सर की तरफ़ से आता है तो नमाज़ कहती है कि इस तरफ़ से रास्ता नहीं किसी दूसरी तरफ़ से आओ,फ़िरश्ता मय्यत के दाईं तरफ़ से आता है तो रोज़ा कहता है इस तरफ़ से रास्ता नहीं किसी दूसरी तरफ़ से आओ,फिर फ़रिश्ता बाईं तरफ़ से आता है तो ज़कात कहती है इस तरफ़ से रास्ता नहीं किसी दूसरी तरफ़ से आओ फिर फ़रिश्ता पाँव की की तरफ़ से आने लगता है तो दूसरी नेकियाँ मसलन: सदक़ा,ख़ैरात,सिला रहमी और लोगों के साथ एहसान वग़ैरह कहने लगते हैं इधर से रास्ता नहीं किसी दूसरी तरफ़ से आओ”। (इब्ने हिबान)

### ग़ीबत से बचना,तहारत का ख़याल करना:

ग़ीबत ना करना और पेशाब की छींटों से बचना भी अज़ाबे क़ब्र से महफ़ूज़ रखता है।

सय्यदना इब्ने अब्बासؓ से रवायत है कि नबीﷺ मदीने या मक्का के किसी बाग़ से

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

वहाँ दो इंसानों की आवाज़ सुनी जिनको क़ब्र मे अज़ाब हो रहा था। नबी करीमﷺ ने फ़रमाया,"इन दोनों को अज़ाब हो रहा है और ये किसी बड़ी बात पर नहीं दिया जा रहा"। फिर फ़रमाने लगे, "इन में से एक तो अपने पेशाब से एहतियात नहीं करता था और दूसरा चुग़ल ख़ोरी करता था"। (बुख़ारी)

रसूल अल्लाहﷺ ख़ुद भी अज़ाबे क़ब्र से पनाह माँगते थे और अपनी उम्मत को भी ऐसी दुआऐं सिखाईं और कसरत से पढ़ते रहने की तल्क़ीन फरमाई।

ये दुआऐं पेज (325) पर मुलाहेज़ा फ़रमाऐं।

सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास ؓ से रिवायत है कि रसूल अल्लाहﷺ सहाबा कराम ؓ को ये दुआऐं इस तरह सिखाते थे जिस तरह उन्हें क़ुरआन मजीद की सूरतें सिखाते थे। (नसाई)

## मौत का ख़ात्मा

सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर ؓ से रिवायत हैकि रसूल अल्लाहﷺ ने फ़रमाया:

"जब जन्नती लोग जन्नत में पहुँच जाऐंगे और जहन्नमी लोग जहन्नम में,तो उस वक़्त मौत को लाया जाएगा,और जन्नत और जहन्नम के दर्मियान उसको ज़िब्ह कर दिया जाएगा। फिर एक मुनादी करने वाला यूँ मुनादी करेगा,"ऐ अहले जन्नत! अब तुम को मौत नहीं है और ऐ एहले जहन्नम! अब तुम को भी मौत नहीं है। उस वक़्त जन्नतियों को ख़ुशी पर ख़ुशी होगी और जहन्नमियों को रंज पर रंज होगा"।(बुख़ारी)

| | |
|---|---|
| जिंदगी | ग़ैर मोमिन के लिए जीने का पुर लुत्फ़ मौक़ा...मोमिन के लिए आज़माइश व इब्तिला। |
| मौत | ग़ैर मोमिन के लिए ख़सारहे अज़ीम ...मोमिन के लिए रब से शर्फ़े मुलाक़ात |
| दुनिया | ग़ैर मोमिन के लिए अय्याशी का घर ...मोमिन के लिए कठिन इम्तेहान गाह |
| आख़िरत | ग़ैर मोमिन के लिए ख़्याले ख़ाम का अंजाम...मोमिन के लिए लाफ़ानी मंज़िले मुराद |

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

# ताज़ियत

## तारीफ़

मय्यत के मुताल्लिक़ीन को तसल्ली व सब्र करना ताकि वो शिद्दत ग़म में कमी महसूस करें,उस नुक़्सान पर आख़िरत में अजर न सवाब की उम्मीद दिलाना, मरहूम की ख़ूबियों का तज़्किरा,पसमंदगान से हमदर्दी और तआवुन का इज़्हार नीज़ मय्यत और पसमंदिगान के हक़ में दुआ करना ये सब "ता'ज़ियत" कहलाता है।

## फ़ज़ीलत

ता'ज़ियत करना मसनून और बाइसे अजर व सवाब है।

नबी करीमﷺ ने फ़रमाया, "जो शख़्स किसी मुसलमान भाई की मुसीबत पर उसकी ता'ज़ियत करता है और तसल्ली देता है तो अल्लाह तआला उसके बदले में उसे क़यामत के दिन इज़्ज़त व करामत का लिबास पहनाऐंगे"। (बुख़ारी)

किसी भी मुसीबत के वक़्त में मुसीबत ज़दा को तसल्ली देना इस्लामी शअर है।

रसूल अल्लाहﷺ ने फ़रमाया,जो मुसलमान किसी मुसलमान के दुनिया के कर्ब को दूर करता है,अल्लाह क़यामत के कर्ब में उसका कर्ब दूर करेंगे और जो मुसलमान किसी तंगदस्त पर दुनिया में आसानी करेगा तो अल्लाह तआला दुनिया आख़िरत में उसपर आसानी फ़रमाऐंगे,और जो किसी मुसलमान की पर्दा पोशी करेगा,अल्लाह तआला उसकी दोनों जहानों में पर्दा पोशी फ़रमाऐंगे। और अल्लाह तआला अपने बंदे की इनायत में लगे रहते हैं जब तक बंदा अपने भाई की मदद व ख़िदमत में लगा रहता है"। (मुस्लिम,अबू दाऊद)

ता'ज़ियत के वक़्त क्या करना चाहिए? हमारे दीन ने इस मौक़े के लिए भी हमें बहतरीन आदाब सिखाए हैं।

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

## क्या कहा जाए?

ता'ज़ियत के लिए मुतासिरीन के पास जाने से पहले ज़ेहनी तौर अपने आपको तैयार करलें कि आप ने वहाँ जाकर क्या कहना है और कैसे कहना है। इस मौक़े पर हमारे यहाँ "अफ़सोस" करने का रिवाज है,जो अल्लाह की लिखी मशियत और उसकी लिखी तक़्दीर पर नाराज़गी है। नीज़ मरहूम के अहले ख़ाना के पास जाकर "बड़ा अफ़सोस हुआ" कह कर ता'ज़ियत के फ़राइज़ की आदाएगी को मुकम्मल समझ लिया जाता है। ऐसे मौक़े पर जाने से पहले,तैयारी के तौर पर कुछ क़ुरआनी आयत और चंद हदीस का भी इंतेख़ाब कर लिया जाए जिनके हवाले से 'मुतासिर ख़ानदान' से ता'ज़ियत करने में बहतरीन मदद मिल सकती है।

## क़ुरआनी आयात

**كل من عليها فان** (الرحمن :٢٦)

"इस ज़मीन पर सब फ़ानी हैं"

**كل نفس ذآئقة الموت** (ال عمران:١٨٥)

हर नफ़्स को मौत का ज़ाएक़ा चखना है"।

एहले मय्यत का दिल ग़म की शिददत में इस याद दहानी से क़रार पकड़ेगा कि ये ग़म सिर्फ़ उन पर नहीं गुज़रा बल्कि ये दस्तूरे-क़ुद्रत है और कभी न कभी ये वक़्त सब पर ही आना है।

इसी तरह मंदरजा ज़ेल आयात समझने से तक़्दीर के लिखे पर ईमान मज़्बूत होता है और इंसान उस कठिन और सब्र-आज़मा वक़्त में ग़म को सुकून के साथ बर्दाश्त करने के क़ाबिल होने लगता है।

**مآ أصاب من مصيبة فى الا ض ولا فى النفسكم الا**
**فى كتاب من قبل أن نبراها، إن ذلك على الله يسير**
**. لكيلا تأ سوا على ما فاتكم.......**(الحديد:٢٢,٢٣)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

"जो मुसिबतें भी रूए ज़मीन पर आते हैं और जो आफ़तें भी तुम पर आती हैं वो सब इससे पहले कि हम उनको वुजूद में लाऐं एक किताब में (महफ़ूज़ और तैय शुदा) हैं इस में कोई शक नहीं कि ये बात अल्लाह के लिए आसान है ताकि तुम अपनी फ़ौतशुदा किसी चीज़ पर रंजीदा ना हो जाया करो"।

ता'ज़ियत के अल्फ़ाज़ में सब्र की तलक़ीन को ज़रूर सामने रखिए और सब्र से मुताल्लिक़ चंद इरशादात को भी इज़हारे ता'ज़ियत के वक़्त गुफ़्तगू का हिस्सा बनाइए। पेज नम्बर (77) मुलाहेज़ा करें।

## मसनून अल्फ़ाज़

हमें बहुत सी अहादीस मुबारका से भी मुसीबत और ग़म में होसला बढ़ाने के बारे में रहनुमाई मिलती है। सय्यदना अनस ؓ फ़रमाते हैं कि नबी ﷺ का इरशाद है:

"जितनी सख़्त आज़माइश और मुसीबत होती है उतना ही बड़ा उसका सिला होता है। और अल्लाह जब किसी गिरोह से मुहब्बत करता है तो उनको (मज़ीद निखारने और कुंदन बनाने के लिए) आज़मइश में मुब्तिला कर देता है। पस जो लोग अल्लाह की रज़ा पर राज़ी हैं,अल्लाह भी उनसे राज़ी होता है और जो उस आज़माइश में अल्लाह से नाराज़ हों,अल्लाह भी उनसे नाराज़ हो जाता है"। (तिरमिज़ी)

सय्यदना उसामा बिन ज़ैद ؓ से रिवायत है कि रसूल अल्लाह ﷺ कि एक साहब ज़ादी ؓ ने पैग़ाम भेजा कि उनकी बच्ची या बच्चा हालते नज़अ में है,आप ﷺ तशरीफ़ ले आऐं। आप ﷺ ने वापसी के पैग़ाम में सलाम भेज कर फ़रमाया:

إن لله ما أخذ و له ما أعطى و كل شئ عنده
باَ جَلٍ مسمًى فلتصبر و التحتسب

"अल्लाह तआला जो भी लेता है या देता है वो उसी का है,और हर चीज़ का एक वक़्त मुक़र्रर है,लेहाज़ा सब्र करो और अज्र की तलबगार रहो"। (बुख़ारी)

©AL HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

या फिर (एक और रिवायत वे मुताबिक़) यूँ भी कह सकते हैं:

**أعظم الله أجرك و أحسن عزآءك و غفر لميتك**

“अल्लाह तआला तुम्हें अजरे अज़ीम दे और बहुत तसल्ली अता फ़रमाए और तुम्हारी मय्यत को बख़्शे”। (अज़कार लिलनव्वी)

### ता'ज़ियत पैकेज

ता'ज़ियत को जाते हुए अपने साथ एक पैकेज सा बना कर ले जाऐं जिसके लिए दर्ज ज़ील अश्या का चुनाव मुनासिब हो सकता है:

☆ दुआओं के कार्डज़,

☆ दीनी मालूमात पर मुश्तमिल छोटे-छोटे किताबचे,

☆ हस्ब इस्तिाअत कोई कैसेट या अच्छी किताब,

(जिसका मौज़ू व मज़्मून उस मौक़े से मुनासिब रखता हो)

इस पैकेज का इन्तेख़ाब ना सिर्फ़ मय्यत के घरवालों के लिए तालीफ़े क़ल्ब एक बहतरीन तोहफ़ा साबित हो सकता है बल्कि अक्सर हालात में तबलीग़े दीन के लिए भी निहायत मुअस्सिर ज़रिया और ख़ुद ताज़ियत करने वाले के लिए सदक़ा जारिया बन सकता है।

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

## ख़ूबियों का तज़किरह

मरहूम की ख़ूबियों,अच्छी आदात,नेकी के कामों में शमिल और हक़ूक़ फ़राइज़ जो वो अदा कर गया,का तज़किरह ऐसे अंदाज़ से करें कि लवाहिक़ीन उसकी जुदाई से कमी महसूस करने के बजाए ये तसल्ली और क़रार पकड़ें कि मरने वाला उनके साथ अच्छी ज़िंदगी निभा गया,अब हमने भी ऐसेही काम करके उसके लिए सद्क़ा जारिया बनना है।

## हमदर्दी व तआवुन

मरहूम के अहले ख़ाना से इज़्हारे हमदर्दी के साथ-साथ जो ख़िदमत और तआवुन

ज़रूर करें। बाद में भी कुछ अरसे तक गाहे-बिगाहे उनके मसले दरयाफ़्त करते रहें, अगर मुस्तहिक़ हों तो माली इमदाद भी करें।

## बच्चों की दिल जोई

क़रीबी लवाहिक़ीन में अगर बच्चे भी हैं तो उनकी दिल जोई की हर तरह कोशिश करें और उन्हें उस ग़मज़दा माहौल से निकाल कर कुछ देर घुमा-फिरा लाऐं ताकि उनकी परेशनी और बेचैनी में कमी वाक़े हो। फिर जब उनमें हालात को समझने की क़ुव्वत बहाल तो उन्हें आख़िरत की ज़िंदगी,सब्र करने की जज़ा और बहतरीन इंसान बन कर ज़िंदगी गुज़ारने से मुताल्लिक़ मालूमात दें। उन्हें अल्लाह तआला की अपने बंदों पर रहमत और एहसानात व इनआमात याद करा कर नए अज़्म के साथ ज़िंदगी गुज़ारने का सबक़ सिखाऐं।

## खाना भिजवाना

जिस घर में वफ़ात हो वहाँ खाना भिजवाना मसनून है,रिश्तेदार या पड़ोसी उसका इन्तेज़ाम कर सकते हैं। लेकिन अहले मय्यत ख़ुद ता'ज़ियत के लिए आने वालों या मुसाफ़िरों के लिए किसी ज़ियाफ़त वग़ैरह का एहतिमाम ना करें। जअफ़र तैयार ؓ शहीद हुए तो आपﷺ ने फ़रमाया, “जअफ़र ؓ के घर वालों को खाना भिजवा दो क्योंकि वफ़ूरे ग़म में उनके घर वाले खाना ना पका सकेंगे। (अबू दाऊद)

## तलबीना से ग़म में कमी

उम्मुल मोमिनीन सय्यदा आएशा ؓ की आदत थी उनके अज़ीज़ों में किसी की वफ़ात होती और औरतें जमा होतीं, फिर चली जातीं और आख़िर में घर वाले ख़ास क़रीबी लोग ही रह जाते तो वो तलबीना पकाने का हुक्म देतीं (तलबीना/हरीरा आटे और दूध या भूसी और दूध से बनाया जाता है उसमें शहद भी डाला जाता है) फिर सरीद (शोरबे में रोटी के टुकड़े डाल कर पकाना) बना कर तलबीना उस पर डाल दिया जाता।

© AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

फिर सय्यदा आएशा ؓ फ़रमातीं कि मैं ने रसूल अल्लाह ﷺ से सुना है, “तलबीना से बीमार के दिल को तस्कीन होती है जिससे उसका ग़म किसी क़द्र हल्का हो जाताहै”(बुख़ारी)

## ता'ज़ियत की मुद्दत

सोग के बरअक्स ता'ज़ियत की मुद्दत तीन दिन तक महदूद नहीं। बवज्ह किसी मजबूरी शुरू दिनों में ता'ज़ियत को नहीं जा सके या किसी और जगह मरहूम के मुताल्लिक़ीन से मुलाक़ात नहीं हो सकी,जैसा कि घर के अलावा कहीं और मुलाक़ात हो जाने पर भी ता'ज़ियत हो सकती है तो फिर बाद में जब मौक़ा मिले ता'ज़ियत कर सकते हैं।

## पैग़ामे ता'ज़ियत

फ़ासले या वक़्त की मजबूरी की वज्ह से मुतअल्लिक़ीन से बामुशाफ़ह मुलाक़ात ना हो सकती हो तो ख़त फ़ोन,टेलीगराम,टेलेक्स,ई-मेल,या किसी भी और ज़राए से पैग़ामे ता'ज़ियत भिजवाया जा सकता है।

## मक़ामे ता'ज़ियत

किसी मख़सूस जगह जैसे घर,मैदान या क़ब्रिस्तान में शामियाने डलवा कर या मस्जिद वग़ैरह में ता'ज़ियत की ख़ातिर जमा होना ग़ैर मसनून है। काम-काज छोड़ कर ख़ास शक्ल में बैठे रहना ग़म को और ताज़ा करता है, मुताल्लिक़ीन को अपने कसब वा मअश में मसरूफ़ होना चाहिए,जो भी ता'ज़ियत करना चाहता हो वो वहीं उनसे मिल सकता है।

## तआमे ता'ज़ियत

दुआ के लिए दिनों को मख़्सूस करना,उसके लिए बाक़ाएदा दावत नामे छपवाना, अख़्बारात वग़ैरह में उसके इश्तिहारात लगवाना और उन दिनों में ता'ज़ियत के लिए आते रहने वालों के लिए घर वालों की तरफ़ से खाना,फल या चाय वग़ैरह का इन्तेज़ाम करना भी ग़ैर इस्लामी है,

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

और इससे इख़राजात में भी ख़्वाम-ख़्वाह का इज़ाफ़ा होता है। खाने के औक़ात में अगर ता'ज़ियत के लिए कोई मुसाफ़िर या दूर दराज़ से रहने वाला आ जाए तो उसे वही पेश किया जाए जो मौजूद हो। बहुत से लोगों को इकट्ठा कर के उन्हें सवाब का ख़ुसूसी तौर पर तैयार करवाया हुआ खाना खिलवाना या इसरार करना मना है । और "बिदअत" है।

## अल्फ़ाज़ में एहतियात

**مِا يلفظ من قول الا لديه رقيب عتيد (ق:١٨)**

"मुँह से निकली बात का हर लफ़्ज़ महफ़ूज़ करने के लिए पास एक निग्रान तैयार रहता है"।

अबू हुरैरा ؓने रिवायत किया कि नबी करीमﷺ ने फ़रमाया:

"बंदा अल्लाह तआला की रज़ामंदी के लिए एक बात ज़बान से निकालता है और उसे वो कोई एहमियत भी नहीं देता मगर उसीकी वज्ह से अल्लाह तआला उसके दर्जे बुलंद कर देता है। कोई दूसरा बंदा एक ऐसा कलिमा ज़बान से निकालता है जो अल्लाह ताला की नराज़गी का बाइस होता है, वो (बंदा) उसे कोई एहमियत भी नहीं देता लेकिन उसकी वज्ह से वो जहन्नम में जा गिरता है"। (बुख़ारी)

अबू हुरैरा ؓ ने रिवायत किया कि नबी करीमﷺ ने फ़रमाया:

"अल्लाह ने मेरी उम्मत को ऐसे ख़्यालत की बाज़ पुर्स से छुटकारा फ़रमा दिया है जो उनके दिलों में पैदा होते हैं,जब तक कि वो उसको ज़बान से ना निकालें या उस पर अमल ना करें"। (मुत्तफ़िक़ अलैह)

अब्दुल्लाह बिन अब्बास ؓका बयान है, किसी ने नबी करीमﷺ से पूछा, 'हम नशीन कैसे हों? (किन लोगों की सोहबत में बैठें?)

आपﷺ ने फ़रमाया, "जिन को देख कर अल्लाह याद आए और जिनकी गुफ़्तगू से तुम्हारी मालूमात में इज़ाफ़ा हो और जिनका अमल तुम्हें आख़िरत याद दिलाए"। (बहवाला सहीह इब्ने हिबान)

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

# बज़रिया डाक ता'ज़ियत के लिए अलामती ख़त

सय्यदना मज़ बिन जब्ल ؓका एक बेटा वफ़ात पा गया तो सहाबा कराम ؓकी तरफ़ से उन्हें ये ता'ज़ियती ख़त लिखा गया जो नमूने के तौर पर ऐसे किसी मौक़े के लिए मुफ़ीद है:

بسم الله الرحمن الرحيم

ये ख़त मआज़ बिन जब्लؓ के नाम है,

आप पर सलामती हो! अल्लाह का शुक्र और उसकी हम्द व तारीफ़ हम सब पर वाजिब है जिसके सिवा कोई माबूद नहीं है। आप भी अल्लाह का शुक्र और उसकी तारीफ़ करें।

अम्मा बादु, अल्लाह तआला आपको अज्र दे और सब्र दे और हमें और आपको शुक्र की तौफ़ीक़ बख़्शे,हमारी अपनी जानें और माल और बाल-बच्चे ये सब अल्लाह अज़्व जल्ल की ख़ुशगवार नेअमतें हैं,ये हमारे पास अल्लाह तआला की रखी हुई अमानतें हैं। और एक मुक़र्ररह वक़्त तक हम उनसे मसर्रत और ख़ुशी दिए जाते हैं और एक ऐसे वक़्त में (जिसे अल्लाह ही जानता है) उनके फ़ायदे से रोक लिए जाते हैं। उसने इन नेमतों के मिलने पर हमारे लिए शुक्र और आज़माइशों पर सब्र पक्का कर दिया है।

पस आप का बेटा भी अल्लाह तआला की ख़ुशगवार अतियात और रखी हुई नेमतों में से था।अल्लाह तआला ने आपको उससे रश्क और ख़ुशी की सूरत में फ़ायदा मंद किया और बहुत बड़े अज्र के बदले में आप से उठा लिया। अब ये अज्र व सवाब दुआ, रहमत और हिदायत की सूरत में है। ये सब अल्लाह से चाहते हुए सब्र कीजिए और आपका जज़ा व फ़ज़ा करना कहीं इस सवाब को ज़ाए ना कर दे। जान रखिए! बेसब्री और बेचैनी ना किसी को वापिस लौटा सकता है ना उससे ग़म दूर हो सकता है और जो हादसा वाक़ेअ हो गया वो तो (मुक़द्दर में) होना ही था।

वस्सलाम
(तबरानी)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

# ज़यारत क़ुबूर

मदफ़ून मुसलमानों के लिए अल्लाह तआला से दुआ इस्तिग़फ़ार करने की नियत से नीज़ आख़िरत और अपनी मौत की याद ताज़ा रखने के लिए ज़यारते क़ुबूर को जाते रहना जाइज़ है। दुनिया के शबे रोज़ की मसरूफ़ियत में इंसाान उमूमन भूला रहता है कि ये भी एक ठिकाना है जहाँ आख़िर सब कुछ छोड़ कर आ रहना है,यही वो मक़ामे इब्रत है जिसका नज़ारा करने के बाद इंसान अपने आमाल की इस्लाह की तरफ़ संजीदगी से तवज्जा करने लगता है। रसूल अल्लाहﷺ एक मर्तबा क़ब्रिस्तान तशरीफ़ ले गए तो वहाँ क़ब्र के किनारे बैठ कर बहुत रोए फिर सहाबा कराम ؓको मुख़ातिब करते हुए फ़रमाया:

“भाइयो! इस दिन के लिए तैयारी कर लो”। (सुनन इब्ने माजा)

एक और मौक़े पर फ़रमाया:

क़ब्रिस्तान की ज़यारत दिल को नर्म करती है, आँखों से आँसू बहाती और आख़िरत की याद दिलाती है”। (मुस्तदरक हाकिम)

## औरतों का क़ब्रिस्तान जाना

दुनिया की रग़बत कम और आख़िरत का फ़िक्र ज़्यादा करने की ग़रज़ से औरतें भी कभी-कभार क़ब्रिस्तान जा सकतीं हैं,बशर्ते कि वहाँ सब्र व इस्तेक़ामत का मुज़ाहरा करें और आह व बका (चीख़ पुकार) से बचें। सय्यदना अनस ؓ कहते हैं कि नबी करीमﷺ ने एक औरत को क़ब्र के पास रोते देखा तो फ़रमाया: “अल्लाह से डरो और सब्र करो”। (बुख़ारी)

औरतों के लिए ज़यारते क़ुबूर की दलील अब्दुल्लाहؓ इब्ने अबी मुलेका की बयान की हुई इस हदीस से मिलती है,कहते है, सय्यदा आएशा ؓ एक दिन क़ब्रिस्तान से तशरीफ़ लाईं। मेंने मालूम किया, उम्मुल मोमिनीन! आप कहाँ से तशरीफ़ ला रही

© AL HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

हैं?' फ़रमाया,“अब्दुर रहमान बिन अबू बक्र (अपने भाई) की क़ब्र से” मैं ने अर्ज़ किया, 'रसूल अल्लाहﷺ ने ज़यारते क़ुबूर से मना नहीं फ़रमाया था'? आप ؓ ने फ़रमाया, “लेकिन बाद में जाने का हुक्म भी दे दिया था”। (सुनन इब्ने माजा)

एक और रवायत में भी सय्यदा आएशाؓ बयान करती हैं कि:

रसूल अल्लाहﷺ ने क़ब्रिस्तान की ज़यारत की इज़ाज़त दे दी थी”। (सुनन बहैक़ी)

## सामाने इब्रत

इस्लाम के इब्तिदाई ज़माने में जहालत के असरात ज़्यादा शदीद थे।औरतें क़ब्रिस्तान जाकर चीखने-चिल्लाने और बैन करने के अलावा बेशुमार किस्म के मक्रूहात बिद-आत का शिकार थीं। इललिए शुरू में बग़ैर कोई गुंजाइश छोड़े ज़ियारते क़ुबूर पर मुकम्मल पाबंदी लगा दी गई थी,बाद में जब लोग इस्लाम के एहकामात के पाबंद हो गए तो फिर किसी हद तक ये पाबंदी उठाली गई ताकि कुछ ना कुछ इब्रत का सामान रहे,इसलिए कि क़ब्र वालों के लिए दुआ व इस्तिग़्फ़ार तो कहीं से भी हो सकती है, मगर आख़िरत की याद क़ब्रिस्तान जाए बग़ैर मुश्किल से आती है। हदीसे रसूलﷺ है:

“मैं तुम्हें ज़ियारते क़ुबूर से मना करता था, सो अब तुम ज़ियारते क़ुबूर किया करो, इसलिए कि वो तुम्हें मौत याद दिलाएगी”। (मुस्लिम)

## ममनूआत

कसरत से क़ब्रिस्तान जाना और उसे तफ़रीह और वक़्त ज़ाए करने कि जगह बना लेना और जैसे हमारे यहाँ राइज है पीरी-फ़क़ीरी का अड्डा बना लेना ये अमल इस्लाम में ममनूअ क़रार दिया गया है।

“अल्लाह के रसूलﷺ ने कसरत से क़ब्रिस्तान की ज़यारत करने वालियों पर लानत फ़रमाई”। (तिरमिज़ी)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

## ज़यारत की नियत से सफ़र करना

क़ब्रिसतान,मज़ार या मक़ब्रह दूर की मसाफ़त पर हो तो उसकी ज़यारत के लिए ख़ुसूसी सफ़र इख़्तियार करके जाने की इजाज़त नहीं है। इसके लिए नबीﷺ का फ़रमान है:

“तीन मस्जिदों के सिवा किसी मस्जिद के लिए (बग़रज़ सवाब) सफ़र का एहतमाम ना किया जाए। मस्जिद हराम,मेरी मस्जिद (मस्जिदे नब्वी) और मस्जिदे अक़्सा” (मुत्तफ़िक़ अलैह)

इन तीन मसाजिद के अलावा अगर किसी और इबादतगाह तक के लिए सफ़र की इजाज़त नहीं तो मज़ारों या उन पर होने वाले मेलों ठेलों में शिरतक के लिए दूर दराज़ के इलाक़ों से“ज़ारीईन”का आना इस हुक्म के बिल्कुल मुख़ालिफ़ व मनाफ़ी है। लेकिन निहायत अफ़सोस का मक़ाम है कि यहाँ बाक़ायदा शग़ल मेले की तौर पर इन “सालाना उर्सों” को ना सिर्फ़ पुख़्ता रिवाज दिया जा रहा है बल्कि इस मौक़े पर मक़ामी तातील का एलान किया जाता है।

अलावा अज़ीन क़ब्रों के इर्द-गिर्द ढोल और धमाल की तैयारी करना,चढ़ावे चढ़ाना, क़ब्र पर चादरों और फ़ूलों से सजावट करना,ख़रीद फ़रोख़्त के लिए दुकानें और कारोबार चमकाना,क़व्वाली का बंदोबस्त,कई क़िस्मों के खानों की तैयारी,और फिर उन सब ख़िलाफ़े शरअ तक़रीबात को “उर्स” का नाम देना,सब का सब बिल्कुल ग़ैर इस्लामी है।

## दीन या रसम

दीन को पढ़े और समझे बग़ैर इन तमाम रुसूमात को दीन का हिस्सा क़रार देने पर बज़िद रहना बड़ी जहालत है,उस पर मज़ीद गुनाह ये किया जाता है कि समझाने वाले अहले इल्म को बुज़ुर्गों और ज़यारतों का “इनकारी” (ना मानने वाला) कहकर उसे “गुनाहगार” और बेदीन होने का फ़त्वा दे दिया जाता है हालाँकि अल्लाह तआला के महबूब और प्यारे रसूल मुहम्मदﷺ जिन पर ख़ुद अल्लाह तआला और फ़रिश्ते दरूद व सलात भेजते हैं और हमें भी उसका हुक्म दिया गया है,

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

इन तमाम बुज़ुर्ग हस्तियों से आला व अफ़्ज़ल मुक़ाम पर होने के बावजूद अपनी क़ब्रे मुक़द्दस के मुताल्लिक़ इरशाद फ़रमाते हैं:

"मेरी क़ब्र को मेला ना बना लेना और अपने घरों को क़ब्र ना बना लेना,तुम जहाँ से भी मुझपर दरूद भेजो,तुम्हारे दरूद मुझे पहुँचा दिए जाते है"। (मुस्नद अहमद)

(घरों को क़ब्र ना बना लेने से मुराद है,अगर क़बरिस्तान में इबादत करना और तिलावते क़ुरआन पाक करना मना किया गया है तो इसके बजाए घरों में इबादत और क़ुरआन की तिलावत किया करो)

## क़ब्रों को इबदतगाहें बनाने की मज़म्मत:

रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया

"अल्लाह तआला यहूद व नसारा पर लानत करे,उन्होंने अपने अन्बिया और सालेह यानी नेक बुज़ुर्गों की क़ब्रों को मस्जिदें (इबादतगाहें) बना लिया है"। (बुख़ारी)

अल्लाह के रसूल ﷺ का ये इरशादे पाक जिस मौक़े (हालते नज़अ) में सुना गया उससे इस मसले की नज़ाकत और दरपेश अंदेशे का अंदाज़ा होता है,जो आप ﷺ को यहूद व नसारा के इस क़िस्म के किरदार के पेशे नज़र अपनी उम्मत के बारे में होने लगा था,कि कहीं वो भी ऐसी गुमराही में ना पड़ जाएें जो उन्हें शिर्क की तरफ़ ले जाए। यही वज्ह थी कि बावजूद बीमारी की सख़्त तक्लीफ़ के आप ﷺ का ख़्याल बार-बार इधर ही जा रहा था।

एक और रिवायत की रू से दुआए नब्वी है:

"ऐ परवरदिगार! मेरी क़ब्र को बुत ना बना देना,अल्लाह तआला ऐसे लोगों पर लानत करे जो अन्बिया की क़ब्रों को सज्दा गाह बना लेते हैं"। (मुस्नद अहमद)

एक और हदीसे पाक से मज़ीद वज़ाहत मिलती है:

"सारी ज़मीन मस्जिद(जाए इबादत)है,सिवाए क़ब्रिसतान और हमाम के"(अबू दाऊद)

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

## क़ब्रिस्तानों में नमाज़ और क़ुरान

मज़कूरा बाला अहादीस से क़ब्रिस्तान और मज़ारों को इबादतगाहों का दर्जा ना देने का हुक्म समझ में आ जाए तो फिर वहाँ नमाज़ और क़ुरआन पढ़ने की कराहत भी समझ में आजानी चाहिए। मज़ीद वज़ाहत के लिए कुछ और अहादीसे रसूल ﷺ हैं।

सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर ؓ कहते हैं कि नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया:

"अपनी कुछ नमाज़ें घर में अदा किया करो घरों को क़ब्रिस्तान ना बनाओ"(मुस्लिम)

**वज़ाहत**: जिस तरह क़ब्रिस्तान नमाज़ से खाली होते हैं,वैसे ही घरों को नमाज़ से ख़ाली मत करो। फ़र्ज़ नमाज़ मस्जिद में और कुछ सुन्नतें और नवाफ़िल घर में भी अदा होनी चाहिऐं।

(सुन्नत नमाज़ से मुराद रसूल अल्लाह ﷺ की नफ़्ल जो हमारे लिए सुन्नत है।)

सय्यदना अनस ؓ बयान करते हैं,कि नबी ﷺ ने क़ब्रों के दरमियान नमाज़ अदा करने से रोका है"। (तबरानी)

अबू मरज़द ग़न्वी ؓ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया,"क़ब्रों की तरफ़ नामज़ ना पढ़ो और ना ही क़ब्रों पर बैठो"। (नसाई)

अबू मूसा ؓ से मरवी है कि रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया,"जिस घर में अल्लाह की याद होती है और जिस घर में नहीं होती वो मसल ज़िंदा और मुर्दा की है"। (मुस्लिम)

इसी तरह क़ब्रिस्तानों में जाकर क़ुरआन पाक पढ़ने से भी कोई मिसाल सुन्नते नब्वी ﷺ से नहीं मिलती,ना ही अल्लाह के रसूल ﷺ ने सहाबा कराम ؓ या एहले बैत ؓ को इसकी तलक़ीन की है,बल्कि फ़रमाया:

"अपने घरों को क़ब्रिस्तान ना बना लो,जिस घर में सूरह बक़रह की तिलावत हो वहाँ से शैतान भागता है"। (मुस्लिम)

© AL HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

## क़ब्रों की ताज़ीम का दाएरह कार

मज़कूरह बाला अहादीस की रोशनी में हमें क़ब्रों की ताज़ीम के सिलसिले में अपने तरज़े अमल की इस्लाह करने की ज़रूरत है। इस ताज़ीम को शिरकिया रंग देने के बजाए इस्लाम की जाइज़ हुदूद का पाबंद रखना चाहिए,मसलन:

## क़ब्र वालों से नहीं सिर्फ़ अल्लाह से माँगें

दुआ करते वक़्त हाथ उठाए जाऐंगे मगर रुख़ क़िबले की तरफ़ हो,ना कि क़ब्र की तरफ़। क्योंकि दुआ अल्लाह तआला से माँगी जा रही है,ना कि क़ब्र वालों से। अहले क़ुबूर तो ख़ुद बेबस हैं और ज़िन्दों की दुआओं के मुहताज,और अल्लाह की रहमत के उम्मीदवार हैं। किसी की हाजत पूरी करने या उसके लिए अल्लाह तआला से सिफ़ारिश करना उनके इख़्तियार की बात नहीं ।

अल्लाह तआला का इरशादे पाक है:

**إن تدعوهم لا يسمعوا دعائكم، ولو سمعو ا ما استجابوا
لكم ، و يوم القيامة يكفرون بشر ككم ، ولا ينبئك
مثل خبير** (فاطر:١٤)

"अगर तुम उन्हें पुकारो तो वो तुम्हारी पुकार सुनते ही नहीं और अगर (बिलफ़र्ज) सुन भी लें तो फ़रयाद रसी नहीं करेंगे,बल्कि क़यामत के दिन तुम्हारे इस शिर्क का साफ़ इंकार कर जाऐंगे और तुम्हें कोई भी अल्लाह तआला जैसा ख़बरदार ख़बरें ना देगा"।

**قل ادعواالذين زعمتم من دون الله، لا يملكون مثقال ذرة
فى السموت ولا فى الارض وما لهم فيهما من شرك وما له
منهم من ظهير.** (سبا:٢٢)

© AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

"कह दीजिए! अल्लाह के सिवा जिन-जिन का तुम्हें गुमान है (सबको) पुकार लो, ना उनमें से किसी एक को आसमानों और ज़मीनों में से एक ज़र्रह का इख़्तियार है, ना उसमें कोई हिस्सा है ना उनमें कोई अल्लाह का मददगार है"।

क़ुरआन करीम में बहुत से और भी मक़ामात पर ऐसी आयात मिलती हैं जिनसे साबित होता है कि क़ब्र वालों से माँगना सरासर शिर्क है।

इसी हवाले से सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास ؓ की रवायत मिलती है:

एक शख़्स नबी करीम ﷺ की ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, 'जो अल्लाह चाहे और आप चाहें। आप ﷺ ने फ़रमाया:

"तुमने मुझे अल्लाह का शरीक बना रखा है? ये कहा करो: जो सिर्फ़ अल्लाह वहदहू चाहे"। (तबरानी

## बुज़ुर्गों के नाम की क़समें

किसी नबी या बुज़ुर्ग की क़ब्र पर दुआ करते हुए उनके नाम या उस जगह की क़सम ना खाई जाए।

सय्यदना उमर ؓ बिन ख़त्ताब से रिवायत है कि रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: जिसने अल्लाह के सिवा किसी दूसरे की क़सम खाई उसने कुफ़्र किया या शिर्क किया"। (सुनन तिरमिज़ी

## क़ब्रों पर क़ुर्बानी

क़ब्रों पर जानवर ज़िब्ह करना और वहाँ तक़्सीम करना दुरुस्त नहीं है।

सय्यदना अनस ؓ कहते हैं कि रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया:

"इस्लाम में क़ब्र पर जानवर ज़िब्ह करना मना है"। (मुस्नद अहमद)

## एहतराम की हद

मुसलमानों की क़ब्रों के दरमियान जूतों समीत ना चला जाए।

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

बशर رضي الله عنه बिन अलहसासियह से मरवी हदीस है, “मैं रसूल अल्लाह ﷺ के साथ चल रहा था, कि आप मुसलमानों की क़ब्रों के पास आए, अचानक आप ﷺ की निगाह एक ऐसे आदमी पर पड़ी जो क़ब्रों के दर्मियान जूतों समेत चल रहा था, आप ﷺ ने फ़रमाया, “ऐ जूतों वाले! उन्हें उतार दे”। उसने देखा, और जब मालूम हुआ कि ये आप ﷺ हैं, तो जूते उतार कर फ़ेंक दिए”। (सुनन अबी दाऊद)

नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया,”अगर मैं अंगारे या तलवार पर चलूँ, या अपना जूता पाँव से टांकूँ (यानी बहुत तक्लीफ़ व मुश्किलात में पड़ूँ) ये काम मुझ को ज़्यादा पसंदीदा हैं निस्बतन इसके कि एक मुसलमान की क़ब्र पर चलूँ और क़ब्रों के बीच में या बाज़ार में हाजत (पेशाब और पाख़ाना) करूँ”। (इब्ने माज़ा)

## क़ब्रों पर ना बैठा जाए

सय्यदना अबू हुरैरह رضي الله عنه बयान करते हैं कि रसूल अल्ला ﷺ ने फ़रमाया,

“तुम में से कोई आदमी अंगारे पर बैठे और वो अंगारा उसके कपड़े जला दे और उसका असर उसकी जिल्द तक पहँच जाए उसके लिए ये बेहतर है इस से कि वो किसी क़ब्र पर बैठे”। (मुस्लिम)

## मक़ामे तआम नहीं

ज़यारते क़ुबूर के वक़्त खाना पीना भी क़ब्रों के एहतराम के ख़िलाफ़ है।

## संजीदह रहें

सख़्त दिल लोगों की तरह ज़यारते क़ुबूर के वक़्त हँसी-मज़ाक़ या दुनयवी बातें करना भी क़ब्रिस्तान की तअज़ीम के ख़िलाफ़ है। ऐसे मौक़े पर ख़ामोशी के साथ मसनून तरीक़े से सिर्फ़ सलाम और दुआए मग़्फ़िरत की जाए और उस जगह अपने आकर रहने को भी याद रखा जाए।

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

## ज़ियारत क़ुबूर के वक़्त सलाम दुआ

**السلام عليكم اهل الد يار من المؤ منين والمسلمين،**
**و إنآ إن شآء الله بكم للاحقون ، أنتم لنا فرط و نحن لكم تبع،**
**نسأل الله لنا و لكم العافيه** (مسند احمد)

“इस घर के मोमिनों और मुसलमानों! तुम पर सलाम हो,बेशक हम भी तुमसे मिलने वाले हैं,तुम पहले चले गए,हम तुम्हारे बाद आऐंगे,हम अल्लाह से अपने और तुम्हारे लिए आफ़ियत तलब करते हैं”।

**السلام على أهل الديار من المؤمنين و المسلمين و يرحم الله**
**المستقد مين منا والمستأ خرين و إنآ إن شآء الله بكم للاحقون** (مسلم)

“मोमिन और मुसलमान घरवालों पर सलामती हो,अल्लाह तआला हमसे पहले पहुँचने वालों और बाद में आने वालों पर रहमत फ़रमाए और हम भी इनशा अल्लाह तुम से मिलने वाले हैं”।

## दुआए बख़्शिश की मुमानियत

काफिरों,मुशरिकों,मुनाफ़िक़ों और फ़ासिक़ों की नमाज़ जनाज़ह या उनकी क़ब्र पर सलाम और दुआए इस्तिग़फ़ार करने की मुसलमानों को इजाज़त नहीं। अल्लाह ताला का इर्शाद है:

**ولا تصل على احد منهم مات ابدا و لا تقم على قبره،**
**إنهم كفروا بالله و رسوله و ماتوا و هم فاسقون.** (التوبه : ٨٤)

“और आइंदा उनमें से जो मरे उस पर नमाज़ जनाज़ह भी तुम हर्गिज़ ना पढ़ना और ना कभी उसकी क़ब्र पर खड़े होना,क्योंकि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूलﷺ के साथ कुफ़्र किया है और वो मरे भी इस हाल में कि वो फ़ासिक़ थे”।

सुनन नसाई में रिवायत है,सय्यदना अलीرضي الله عنه फ़रमाते हैं, “मैं ने एक आदमी को

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

अपने मुशरिक वालिदैन के हक़ में इस्तिग़फार करते सुना तो मैं ने कहा तुम अपने मुशरिक वालिदैन के हक़ में इस्तिग़फ़ार कर रहे हो? "उसने जवाब में कहा,'सय्यदना इब्राहीम ने अपने मुशरिक वालिदैन के हक़ मे दुआ नहीं की थी?' मैंने उसका ज़िक्र रसूल अल्लाहﷺ से किया तो ये आयत नाज़िल हुई।

**ما كان للنبى و الذين آمنوآ ان يستغفروا للمشركين ولو كانوآ أولى قربى منٌّ بعد ما تبين لهم أنهم أصحابالجحيم. وما كان استغفارو إبراهيم لابيه الا عن موعدة وعد هآ إياه فلما تبين له أنه عد و لله تبرا منه، إن إبراهيم لاواه حليم** (التوبه:١١٣)

"नबी ﷺ को और ना उन लगों को जो ईमान लाए,ज़ेब नहीं देता कि मुशरिकों के लिए मग़्फ़िरत की दुआ करें,चाहे वो उनके रिश्तेदार ही क्यों न हों,जब्कि उन पर ये बात खुल चुकी है कि वो जहन्नम के मुस्तहिक़ हैं। इब्राहीम ने अपने वालिद के लिए जो दुआए मग़्फ़िरत की थी तो उस वादे की वज्ह से की थी जो उन्होंने अपने वालिद से किया था मगर उन पर जब ये बात खुल गई कि उनका बाप अल्लाह का दुश्मन है तो वो उससे बेज़ार हो गए, हक़ीक़त में इब्राहीम बड़े रक़ीक़ुलक़ल्ब,ख़ुदा तरस और बुर्दबार आदमी थे"।

## क़ब्ल इस्लाम फ़ौत शुदा

इस्लाम से पहले वफ़ात पा जाने वाले अज़िज़ों की ज़यारते क़ुबूर की क्या सूरत होगी? नीज़ इस्लाम के ज़ुहूर के बाद तमाम अदवार में नौ-मुस्लिम लोगों की तरफ़ से ये सवाल ख़ुसूसी एहमियत का हामिल रहा है। इस सिलसिले में सय्यदना अबू हुरैरह رضي الله عنهसे बयान करदा एक हदीसे पाक है:

"नबी करीमصلى الله عليه وسلم अपनी वालिदा की क़ब्र पर तशरीफ़ ले गए,ख़ुद भी रोए और गिर्दो-पेश को भी रुला दिया,फिर फ़रमाया "मैं ने अपने रब से अपनी वालिदा के हक़ में इस्तिग़फार की इजाज़त चाही लेकिन ना मिली,फिर ज़यारते क़ब्र की इजाज़त चाही तो इजाज़त मिल गई चुनांचे क़ब्रों की ज़यारत करते रहा करो ये मौत याद दिलाती हैं"। (मुस्लिम)

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

## मक़ामाते इब्रत

ज़ालिमों की क़ब्रों और अज़ाब वाले मक़ामात से गुज़र हो तो तेज़ी से गुज़र जाना मसनून है,इसके साथ ही अल्लाह तआला के उन नाफ़रमानों की तबाह व बर्बादी पर इब्रत की निगाह डालते हुए रंजीदा होने और ख़ुद पर रिक़्क़त तारी करने की कोशिश करनी चाहिए।

सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर رضي الله عنه बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने सहाबा कराम رضي الله عنه से फ़रमाया:

(जबकि वो क़ौमे समूद के तबाह शुदा मक़ामाते हिज्र वग़ैरह के पास से गुज़र रहे थे) कि "उन अज़ाब में गिरफ़्तार लोगों के पास से रोते हुए गुज़रो। कहीं तुम पर भी अज़ाब ना आ जाए जिस तरह उन पर अज़ाब आया"। (बुख़ारी)

दूसरी रिवायत है कि नबी ﷺ जब हिज्र के मक़ाम से गुज़रे तो फ़रमाया:

"ज़ालिमों के मस्कनों में (जहाँ ज़ालिम क़ौमें अज़ाब का शिकार हुईं) दाख़िल ना होना मगर रोते हुए कहीं तुम पर भी वही अज़ाब ना पहुँचे जिस में वो मुब्तिला हुए"।

फिर रसूल अल्लाह ﷺ ने अपना सर मुबारक ढाँप लिया और सवारी को तेज़ चलाया, यहाँ तक कि आप ﷺ अज़ाब वाली वादी से गुज़र गए। (मुस्लिम)

इर्शादे बारी तआला है:

**إن الله لا يغير ما بقوم حتى يغيروا ما بانفسهم،**
**و إذا أراد الله بقوم سوآ ء فلا مرد له،**
**وما لهم من دونه من وال.(الراعد:١١)**

"हक़ीक़त ये है कि अल्लाह किसी क़ौम की हालत नहीं बदलता जब तक कि वो उन(ख़राबियों)को ख़ुद ना सुधारे जो उसमें हैं,और जब अल्लाह किसी क़ौम की शामत लाने का इरादा कर ले तो फिर कोई उसका टालने वाला नहीं और ना ही तब उनका अल्लाह ताला के मुक़ाबले में कोई मददगार हो सकता है"।

नबी ﷺ ने फ़रमाया..अल्लाह ज़ालिम को मोहलत देता है फिर जब उसे पकड़ता है तो छोड़ता नहीं"। (मुस्लिम)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

## रसूल अल्लाहﷺ की क़ब्र शरीफ़ की ज़यारत

मदीना मुनव्वरह जाने वालों को दो बड़ी सादतें नसीब होती हैं:

### 1)मस्जिदे नब्वी में नमाज़

मस्जिद नब्वी में निहायत अदब व एहतराम की कैफ़ियत लिए दाख़िल हों जमाअत तैयार है,तो शामिल हो जाऐं वरना पहले दो रक्अत नमाज़ तहिय्यतुल मस्जिद (मस्जिद मे दाख़िल होने की दो रक़्अत नमाज़ नफ़िल) पढ़लें,ये नमाज़ मस्जिदे नब्वी में किसी भी जगह अदा हो सकती है अलबत्ता बेहतर है कि रौज़ा शरीफ़ (रियाज़ुल जन्नह) में अदा की जाए,लेकिन हुजूम की वज्ह से जगह ना मिल सके तो मस्जिद के किसी भी हिस्से में पढ़ना बाइसे सादत है। (बहवाला मुस्लिम)

सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमरرضي الله عنه से रिवायत है कि रसूल अल्लाहﷺ ने फ़रमायाः "मेरी इस मस्जिद में नमाज़ का सवाब बाक़ी मसाजिद के मुक़ाबले में हज़ार गुना ज़्यादा है,सिवाए मस्जिदे हराम के"। (मुस्लिम)

रसूल अल्लाह ﷺ के मिमबर मुबारक और क़ब्र शरीफ़ (सय्यदा आएशाرضي الله عنه के हुजरा) के दर्मियान की जगह "रोज़तुल जन्नह" कहलाती है।

### 2)रसूल अल्लाह की क़ब्र शरीफ़ की हाज़री

मस्जिद नब्वी की ज़यारत के बाद नबी करीमﷺ की क़ब्र शरीफ़ की ज़यारत करना मुस्तहब है,लेकिन वाजिब या सुन्नत के दर्जे पर नहीं है। सलाम के लिए ख़ामोशी से चलते हुए क़ब्र शरीफ़ के सामने जा खड़े हों अहिसता आवाज़ में यूँ कहें:

**السلام عليك يا رسول ا لله (بحوله بيهقى )**

नबी करीम ﷺ को सलाम के बाद उनके साहिबान (साथियों) को भी सलाम कहना चाहिए।

नाफ़ेअرضي الله عنهसे रिवायत है कि अब्दुल्लाह बिन उमरرضي الله عنه जब भी किसी सफ़र से वापिस आ कर मस्जिद तशरीफ़ लाते तो नमाज़ तहिय्यतुल मस्जिद अदा करके क़ब्रे रसूल करीमﷺ पर हाज़िर होते और उन्हें सलाम कहने के बाद सय्यदना

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

अबु बक्र सिद्दीक़رضي الله عنه और सय्यदना उमर फ़ारूक़رضي الله عنه को भी उन्हीं अल्फ़ाज़ में सलाम कहते (ये दोनों असहाबرضي الله عنهभी यहीं क़रीब मद्फ़ून हैं) (बहवाला बहैक़ी)

रसूल अल्लाहﷺ की क़ब्र मुबारक पर सलाम कहने के बाद दरूद भेजना भी मुस्तहब है।
(याद रहे दरूद शरीफ़ भी एक दुआ है और दुआ के लिए क़ब्र की तरफ़ रुख़ की बजाए क़िब्ला रुख़ हों)

## नबियों का मक़ामे वफ़ात ही उनका मक़ामे मद्फ़न होता है

सय्यदा आएशाرضي الله عنه फ़रमाती हैं, "अल्लाह के रसूलﷺ की वफ़ात हुई तो लोगों में आप के दफ़्न से मुताल्लिक़ मुख़्तलिफ़ राए ज़ेरे-ग़ौर थीं।
फिर सय्यदना अबू बक्रرضي الله عنهने कहा, "मैं रसूल अल्लाहﷺ से ये बात सुन कर भूला नहीं कि अल्लाह तआला किसी नबी का उसी जगह दफ़्न किया जाना पसंद फ़रमाते हैं,जहाँ उनकी रूह क़ब्ज़ कर लेते हैं"।
फिर रसूल अल्लाहﷺ को उसी जगह दफ़्न किया गया जहाँ उनके बिस्तर की जगह थी। (तिर्मिज़ी)

कअब बिन उजराرضي الله عنه कहते हैं कि नबी करीमﷺ से अरज़ किया गया,"या रसूल अल्लाह! आप पर सलाम भेजने का तरीक़ा हमें मालूम है,आपﷺ पर दरूद कैसे भेजा जाए?" आप ने इर्शाद फ़रमायाः

**اللهم صل على محمد و على آل محمد كما صليت على إبراهيم**
**و على آل إبراهيم إنك حميد مجيد، اللهم بارك على محمد و على آل محمد**
**كما باركت على إبراهيم و على آل إبراهيم إنك حميد مجيد** (بخاري)

"ऐ अल्लाह! रहमत नाज़िल फ़रमाइए मुहम्मदﷺ पर और उनकी आल पर जैसे कि रहमत नाज़िल फ़रमाई आपने इब्राहीम (अलैहिस सलाम) पर और उनकी आल पर, बेशक आप ही तारीफ़ के मुस्तिहक़,बड़ी बुज़ुर्गी वाले हैं। ऐ अल्लाह! बर्कत नाज़िल फ़रमाइए,मुहम्मद ﷺ पर और उनकी आल पर जैसे कि बर्कत नाज़िल फ़रमाई आप ने इब्राहीम (अलैहिस सलाम) पर और उनकी आल पर, बेशक आप ही तारीफ़ के मुस्तिहक़,बड़ी बुज़ुर्गी वाले हैं"।

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

# रसूमात व बिदआत

## बिदअत क्या है ?

बिदअत लफ़्ज़ بدع से है। जिसके मानी है इज़ाफ़ा,या अनोखापन। दीन में कोई ऐसा तरीक़ा या रसम या काम सवाब की गर्ज़ से या नेकी का काम समझ कर शामिल कर लिया जाए और उसे ज़रूरियाते दीन का लाज़िम हिस्सा समझ लिया जाए जिसकी दलील क़ुरआनो सुन्नत से ना मिलती हो,उसको “बिदअत” कहते हैं ।

हमारे हां बिदआत की अक्सरियत का ताल्लुक़ ऐसी ख़ुद बनाई रसूमात से है जो आबा ओ अज्दाद और ग़ैर मुस्लिम क़ौमों की तक़्लीद में अपनाई गई हैं और अगरचे वो बतौर सवाब तो नहीं रिवाज पारहीं मगर वो क़ुरआनो सुन्नत की तालीमात, इस्लामी रिवायात और दीनी तक़ाज़ों के बर ख़िलाफ़ हैं ।

दीने इस्लाम एक मुकम्मल दीन है। नई शरिअत ईजाद करने का मत्लब ये हुआ कि इस्लाम को नाक़िस समझा गया,या फिर ये मतलब हुआ कि वही के नुज़ूल के वक़्त, मॉज़ अल्लाह,अल्लाह ताला को मालूम नहीं था कि इस काम में सवाब है और अब लोगों को मालूम होगया कि इस में सवाब है या फिर अल्लाह ताला को तो मालूम था कि इस में सवाब है मगर वो बताना नहीं चाहता था या मॉज़ अल्लाह भूल गया या फिर ये समझा जाए के अल्लाह ने तो ये मामला बताया था मगर मॉज़ अल्लाह, रसूल अल्लाहﷺ समझे नहीं या फिर समझने के बाद उम्मत को बताना भूल गए या ये कहा जाए के मॉज़ अल्लाह,सहाबा करामؓ ने इस दीन को पूरी तरह आगे नहीं पहुँचाया,या ख़ुद इस पर अमल नहीं किया और हमारे उल्मा व मशाइख़ को अब समझ में आया है या उन्हें कोई नया इल्हाम हुआ है ।

अगर ऐसी कोई बात नहीं तो फिर अल्लाह और अल्लाह के रसूलﷺ से ये मुक़ाब्ला और ये बग़ावत कैसी!

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ऐसे लोग दर्अस्ल (1) अक़ीदे की कम्ज़ोरी (2) इल्म की कमी ख़ुसूसन दीनी कम फ़हमी और (3) ग़लत रहनुमाओं की वज्ह से ख़ुदसाख़्ता रसूमातो बिदआत को बड़ी ढिटाई से दीन का हिस्सा समझ्ते रहते हैं और इसी असास पर आम मुसलमानों के दर्मियान इख़्तिलाफ़ात और फ़िर्क़ा वारियत को परवान चढ़ाने का सबब बनते हैं। क़ुरआनो सुन्नत से दूरी और दीनी जहालत इस अच्छे भले बाशऊर और तालीम याफ़्ता तबक़े को भी हक़ाइक़ से क़रीब नहीं होने देती और वो नसल दर नसल हक़ा-इक़ जाने बग़ैर गुम्राहियों में भटकते चले जाते हैं। मंदर्जाज़ैल हदीसे मुबारक में यही बात निहायत ख़ूबसूरत और साफ़ तरीक़े से वाज़ेह करदी गई है:

सब हदीसों से बहतर हदीस (कलाम/बात) अल्लाह ताला की किताब है और सब तरीक़ों से बहतर तरीक़ा (सुन्नत) मोहम्मदﷺ का तरीक़ा है और सब कामों से बुरा काम दीन में कोई नया काम (बिदअत) निकालना है और हर बिदअत गुम्राही है"। (मुस्लिम)

## वईद व मुज़म्मत

इर्शादे बारी ताला है:

يا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُقَدِّمُوا بَيْنَ يَدَيِ اللَّهِ وَرَسُولِهِ
وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝

(الحجرات: 1)

ऐ लोगों जो ईमान लाए हो! मत आगे बढ़ो अल्लाह से और उसके रसूलﷺ से और डरो (इस मामले में ) अल्लाह से बेशक अल्लाह सुन्ने वाला और जान्ने वाला है"।

أَفَغَيْرَ دِينِ اللَّهِ يَبْغُونَ...(آلِ عمران:٨٣).

क्या भला वो अल्लाह के दीन के सिवा किसी और दीन की तलाश में हैं"

وَمَن يَبْتَغِ غَيْرَ الْإِسْلَامِ دِينًا فَلَن يُقْبَلَ مِنْهُ
وَهُوَ فِي الْآخِرَةِ مِنَ الْخَاسِرِينَ ۝ (آلِ عمران:٥)

©AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

जो शख़्स इस्लाम के सिवा और दीन तलाश करे उसका दीन क़ुबूल ना किया जाएगा और वो आख़िरत में नुक़्सान उठाने वालों में होगा"

ग़ैर दीनी अफ़आल को जानते बूझते दीन का हिस्सा समझ लेना या जो काम अल्लाह और उसके रसूल ﷺ ने ना बताया हो उसको उनकी तरफ़ मनसूब कर लेना,इसपर क़ुरआन के साथ साथ हदीस में भी सख़्त वईद आई है।

## जहन्नम में ठिकाना

अल्लाह ताला फ़रमाते हैं:

وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَاسْتَكْبَرُوْا عَنْهَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ج

هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ o فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ

كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ط (الاعراف :36,37)

और जो लोग हमारे इन एहकामात को झुटलाएं और उनसे तकब्बुर करें वही लोग आग वाले होंगे,वो उस में हमेशा रहेंगे। सो उस शख़्स से ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह ताला पर झूट बांधे या उसकी आयात को झुटलाए"।

रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया:

जिसने मुझपर जानते बूझते झूट बोला वो अपना ठिकाना जहन्नम में बनाले"।
(मुत्तफ़िक़ अलैह)

## बाएं रास्ते के लोग

इर्शादे बारी ताला है:

وَمَآ اٰتٰكُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ ق وَمَا نَهٰكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوْا ج (الحشر: 7)

रसूल जो हुकुम तुम को दे उसको मान लो और जिस से मना करें उस से बाज़ रहो"।

बिदअत पर एक ख़ुतबा देते हुए रसूल अल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया:

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

"यौमे हिसाब मेरी उम्मत के कुछ लोगों को लाया जाएगा और उन्हें बाएँ रास्ते की तरफ़ डाल दिया जाएगा, मैं कहूँगा, "मेरे रब! ये मेरे साथी हैं"। अल्लाह ताला फ़रमाएँगे,
"तुम नहीं जानते इन्होंने तुम्हारे बाद दीन में क्या क्या बिदअतें ईजाद कीं"। (बुख़ारी)

## तौबा और बिदअत

रसूल अल्लाहﷺ ने एक और मौक़े पर फ़रमाया:

"अल्लाह ताला बिदअती की तौबा क़ुबूल नहीं करता, जब तक के वो अपनी बिदअत को छोड़ ना दे"। (तब्रानी)

## फ़राइज़ नवाफ़िल नाक़ुबूल

सय्यदना अलीؓ से रिवायत है कि नबी करीमﷺ ने फ़रमाया, "मदीना आइर से (पहाड़) लेकर फ़ुलां मक़ाम (सौर) तक हरम है,और जो कोई (दीन में) नई बात निकाले या नई बात निकालने वाले को जगह देगा उसपर अल्लाह और फ़रिशतों और सब लोगों की फटकार। ना उसका फ़र्ज़ क़ुबूल होगा ना नफ़िल"। (बुख़ारी)

## बिदअत कैसे शुरू होती है?

दीन के इल्म को लोगों तक ना पहुँचाना और सीधे सादे दीन में सख़्ती और टेढ़ पैदा करके उसे बिगाड़ना, बिदअत का सबब बनता है। रसूल अल्लाहﷺ ने फ़रमाया:

"अल्लाह दीन का इल्म बंदों से छीनकर नहीं उठाएंगे बल्कि आलिमों को उठाकर इल्म को उठा लेंगे। जब कोई आलिम बाक़ी ना रहेगा तो लोग जाहिलों को सरदार (पेशवा) बनालेंगे और इन्हीं से मामलात पूछेंगे।वो बग़ैर इल्म के फ़त्वा देंगे। ख़ुद भी गुम्राह होंगे और दूसरों को भी गुम्राह करेंगे"। (बुख़ारी)

एक और मौक़े पर फ़रमाया, "अल्लाह ताला को वो दीन पसंद है जो सच्चा, सीधा और आसान हो"। (बुख़ारी)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

रसूल अल्लाहﷺ ने फ़रमाया,"वो ज़माना क़रीब है जब मुसलमान का बेहतर माल बकरियाँ होंगी और वो उनको पहाड़ की चोटियों और बारिश के मक़ाम पर चराते हुए (दुन्यवी) फ़ित्नों से अपना दीन बचाता फिरेगा"। (बुख़ारी)

## इफ़्तिराक़े उम्मत

बिदअत इस्लामी मॉशरे में फैलने वाली बहुत सी बुराइयों की जड़ है इनमें सरे फ़ेह-रिस्त बुराई फ़िर्क़ा वारियत है। अल्लाह के रसूलﷺ ने फ़रमाया:

"मुतफ़र्रिक़ होगए यहूद इक्हत्तर (71) या बहत्तर (72) फ़िर्क़ों पर और नसारा भी इसी तरह और होजाएगी मेरी उम्मत तिहत्तर (73) फ़िर्क़े"। (तिर्मिज़ी)

दूसरी रिवायत में यूँ इज़ाफ़ा है: "जिस तरीक़े पर मैं और मेरे अस्हाब हैं उसीपर चलने वाले जन्नत में जाएंगे और जो नया रास्ता निकाल कर चलेंगे वो जहन्नम में जाएंगे"। (तिर्मिज़ी)

©ALHUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

## अमले जारिया

रसूल अल्लाहﷺ ने फ़रमाया, "जिसने इस्लाम में कोई अच्छा तरीक़ा अपनाया, (ऐसा अमल किया जिसे लोग छोड़ चुके थे) उसके लिए उसका अपना भी अज्र होगा और उस आदमी का भी अज्र जो बाद में उसपर अमल करेगा। बाद में करने वालों के अज्र में कमी भी नहीं होगी। और जिस ने इस्लाम में बुरा तरीक़ा ईजाद किया उसे अपना गुनाह भी मिलेगा और बाद में उसपर अमल करने वालों का भी और बाद में करने वालों के गुनाह में कमी भी नहीं होगी" फिर नबीﷺ ने ये आयत तिलावत फ़रमाई:

وَنَكْتُبُ مَا قَدَّمُوا وَآثَارَهُمْ (يٰس~:١٢)

"जो कुछ (आमाल) लोग आगे भेजते हैं वो सब हम
लिख रहे हैं और जो कुछ आसार उन्होंने पीछे छोड़े
(वो भी सब्त कर रहे हैं)" (मुस्लिम)

# बिदआत ही बिदआत

कुफ़्र और शिर्क के बाद सब से बड़ा गुनाह "बिदअत" है, दीन के नाम पर शामिल किए गए (ग़ैर इस्लामी) रसम रिवाज में से नव्वे फ़ीसद का ताल्लुक़ सिर्फ़ जनाज़े के मसाइल से है जिनका सिलसिला बीमारी से शुरू होकर मरने तक और इसके बाद ज़यारते क़ुबूर और फिर "बर्सियों" तक जा पहुँचा है इन रसूमात बिदआत की हर इलाक़े,क़बीले और बिरादरी के मिज़ाज और माहौल के हवाले से एक लम्बी फ़ेहरिस्त है। यहाँ मरहला वार इन रसूमात में से कुछ का मुख़्तसरन ज़िक्र किया जा रहा है:

## बीमारी में बिदआत और ग़ैर इस्लामी रसूमात

☆ बीमारी की हालत में ख़ाके शिफ़ा,मन्के,तावीज़,धागे वग़ैरा हासिल करने के लिए ज़िंदा पीरों के पास जाना।

ये लोग जिनकी अक्सरियत इल्मे दीन से नावाक़िफ़ होती है इन सादा लोह अवाम को फ़ौत शुदा बुज़ुर्गों के नाम की नज़र नियाज़ और चढ़ावे वग़ैरा देने पर मजबूर करते हैं। बेशतर ख़ान क़ाहों,मक़्बरों,मज़ारों वग़ैरा पर ये लोग मुजावर बने बैठे नज़रआते हैं ।
यहां मरीज़ों को लाकर "हाज़री" दिलाई जाती है जिसे "ज़ियारतें कराने" का नाम भी दिया जाता है ।

☆ बॉज़ दफ़ा मिर्गी और पागल पन के मरीज़ों को यहां ज़ंजीरों से बाँध कर उनपर तशद्दुद किया जाता है और इसे जिन्नात निकालने का इलाज समझा जाता है,जो सरासर ज़ुल्म और ग़ैर इस्लामी तर्ज़े अमल है। इसी तरह मरीज़ों को बग़र्ज़े इलाज नाक़ाबिले बर्दाश्त धूनी देना,और कोठ्रियों में बंद रखना,चिल्ले काटना,पीरों के नाम पर छोड़े हुए मख़्बूतल्हवास बच्चों से मरीज़ों को पिटवाना और जिसको बच्चा ज़च होकर ज़्यादा मारे,उसके लिए गुमान करना के उसे "अल्लाह वाले" की ज़्यादा मार से ये मरीज़ ज़्यादा जलदी सेहतयाब होगा ।

© AL HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

☆ इसक अलावा इन ज़यारतों पर हर क़िस्म के मरीज़ों को ख़्वा उनमें बिस्तर से उठने की भी ताक़त ना हो,सलाम करवाने लाना ताकि वो फ़ौतशुदा "बुज़ुर्गों की दुआ" से सेहतयाब होजाएं।

☆ छोटे नातवाँ बच्चों को मज़ारों के दरख़्तों के नीचे तवाफ़ करवाकर उन्हें कई दिन तक जूतियों के पलड़े के बराबर तोलना,फिर उस बच्चे की क़मीज़ मज़ार पर फेंक आना,सूखे के मरीज़ का एक और इलाज ये कि,अनाज से भरा हुआ थैला दर्या के किनारे गीली सतेह के नीचे दबा आना और अक़ीदा रखना के जैसे जैसे उसमें दाने फूलेंगे,बच्चे का कमज़ोर जिस्म सेहत मंद होता जाएगा।

☆ जिस औरत के बच्चे पैदाइश के बाद फ़ौत हो जाते हों,उसका मन्नत मानना कि अगर अब बच्चा होगा तो मैं इतने साल तक उसे मांग कर कपड़े पहनाऊँगी ताकि वो ज़िंदा बच जाए।

☆ इसी तरह बांझ मर्दों की बीवियों का या खुद बांझ औरतों का ऐसे मज़ारों पर जाना जिन के बारे में मशहूर कर दिया गया होके वहाँ हाज़िर होने/सलाम करने से औलाद जैसी नेमत मिलती है। ऐसे मज़ारों के पास दरख़्तों के नीचे झोलियाँ फैलाकर खड़े हो जाना के झोली में पत्ता गिरे तो औलाद होगी और इस मक़्सद के लिए घंटों खड़े रहना।

☆ मज़ारों और क़बरों की मिट्टी लाकर उसे मुतबर्रिक समझ कर और बाइसे शिफ़ा समझ कर पास रखना।

☆ मज़ारों पर पड़े मख़्सूस पत्थरों को उठाकर जिस्म पर दर्द के मक़ामात पर रगड़ना।

☆ मज़ारों पर जलने वाले चिराग़ों से तेल जिस्म के तक्लीफ़ ज़दा हिस्सों पर लगाना।

ये और इसी क़िस्म की दूसरी बेशुमार ग़ैर इस्लामी हर्कात हमारे मुल्क के तक़्रीबन हर इलाक़े में अक़ीदत एहतराम से शिफ़ा की ख़ातिर अपनाई जाती हैं।

## मय्यत की बिदआत

☆ बीमार की मौत वाक़े होजाने पर लवाहेक़ीन का मय्यत के गिर्द बैठकर बुलंद आवाज़ में नोहा करना।

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

☆ जब तक मय्यत घर में हो,14 बार सूरह बक़रा पढ़ना। (बहुत फ़ज़ाइल वाली इस सूरत को इस मौक़े पर इस गिन्ती के साथ मख़्सूस कर लेना जबकि किसी हदीस से तो दर्किनार किसी ज़ईफ़ हदीस से भी इसकी कोई दलील नहीं मिलती,लिहाज़ा ये बिदअत बन जाती है )

☆ मय्यत की चारपाई के नीचे सरहाने की तरफ़ कच्चे चावल या गंदुम रखना और दफ़नाने के बाद उसे ख़ैरात करना।

☆ बीवी के फ़ौत होने पर ख़ाविंद के लिए बीवी को ग़ैर महरम क़रार देना और इसी तरह ख़ाविंद के फ़ौत होजाने पर बीवी को मय्यत के पास ना आने देना और ना ही देखने देना।

## ग़ुस्ल की बिदआत और ग़ैर इस्लामी रसूमात

☆ मय्यत के ग़ुस्ल के वक़्त दुआएं, नातें या कोई अशार वग़ैरा पढ़ना।

☆ मय्यत को दोबार ग़ुस्ल देना।

☆ किसी ख़ास इलाक़े या जगह की मिट्टी को मुतबर्रिक समझ कर उसे ग़ुस्ल के वक़्त इस्तेमाल करना।

## कफ़न की बिदआत और ग़ैर इस्लामी रसूमात

☆ कफ़न पर या तो पाकीज़ा कलिमात लिखना या उनको काग़ज़ या कपड़े पर लिख कर मय्यत के सीने पर रखना।

☆ कफ़न आबे ज़म ज़म में भिगोना।

☆ मय्यत दुल्हा या दुल्हन है या उनकी अन्क़रीब शादी होने वाली थी तो कफ़न की बजाए शादी के लिबास में या सेहरा बाँध कर दफ़्नाना।

## जनाज़े की बिदआत और ग़ैर इस्लामी रसूमात

☆ जनाज़े को फूलों से या क़ुरआनी आयात लिखी हुई चादरों से सजा कर लेजाना।

☆ किसी मख़्सूस रंग की मस्लन काली या सब्ज़ चादर ही जनाज़े पर डालना।

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

☆ फ़ोटो ग्राफ़ी करना ।

☆ इस मौक़े पर सदक़ा-व-ख़ैरात का एहतमाम करना ।

☆ घर के दरवाज़े से जनाज़ा निकालते हुए क़ुरआन पाक का साया करना।

☆ जनाज़े को फौतशुदा ख़ान्दानी पीरों के मज़ारों के गिर्द तवाफ़ करवाने ले जाना ।

☆ जनाज़े को लेजाते हुए रास्ते में कलिमा शहादत बुलंद आवाज़ से पढ़ना या उसके पढ़ने की सदा लगाना

☆ जनाज़े के साथ सात फल,मिठाई,ख़ुश्क मेवे वग़ैरा लेजाकर क़ब्र पर तक़्सीम करने की रस्म करना ।

## नमाज़े वेहशत अदा करना

☆ बेशतर घरानों में मय्यत को तदफ़ीन के लिए लेजाने के बाद घर के बाक़ी मांदा अफ़्राद जिन में अक्सरियत ख़्वातीन की होती है “नमाज़े वहशत” अदा करते हैं जिस की कोई दलील कुरआन या सुन्नत से नहीं मिलती। ये दो रकात नमाज़ मरने वाले के लिए दूरी वहशते क़बर के तौर पर अदा की जाती है। घर की बड़ी बूढियाँ इसका एहतमाम करती हैं और दुसरे अफ़्राद ये बिदअती रसम उनकी ताबेदारी में अदा करते हैं। (नवाफ़िल को नमाज़े वहशत के तौर पर मख़्सूस करने की बजाए ग़म में واستعنو بالصبرو الصلوة की नियत से पढ़ना चाहिए) ।

© AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

## दफ़्न की बिदअतें और इस्लामी रसूमात

☆ तदफ़ीन के वक़्त मय्यत के सीने पर “एहद नामा” रखना। ये एक काग़ज़ पर लिखे हुए कुछ पाकीज़ा कलिमात होते हैं,जिन्हें क़ब्र में मय्यत के साथ रखकर ये समझा जाता है कि उसकी वज्ह से मय्यत हर तरह के दुख और अज़ाब से महफ़ूज़ रहेगी ।

☆ दफ़्न करते वक़्त मय्यत के सर के नीचे कोई नर्म चीज़ रखना।

☆ तदफ़ीन के बाद क़ब्र पर अज़ान देना। मय्यत दफ़्न करने के बाद चंद अफ़राद क़ब्र के नज़्दीक खड़े होकर बारी बारी अज़ान देते हैं, इसकी ख़ुदसानख़्ता हिक्मत ये बयान की जाती है कि जब मुर्दा क़ब्र में अज़ान सुनेगा तो नमाज़ की तैयारी करेगा, और यूँ उस तैयारी के सबब मुंकर नकीर के सवालात वग़ैरा के मरहले से बआसानी गुज़र जाएगा।

## क़ब्र की बिदआत और ग़ैर इस्लामी रसूमात

☆ पुख़्ता क़ब्रें बनवाना और उन्हें क़ीमती संग मर मर से मुज़य्यन करवा कर उनपर कत्बे शजर के साथ और शेरो शायरी के नसब करवाना।

☆ क़ब्र के पास रोशनी का बंदोबस्त करना। नीज़ चिराग़ और मोमबत्तियाँ जलाना।

☆ क़ब्र के क़रीब किसी आदमी को उज्रत पर बहुत दिनों तक क़ुरआन पाक की तिला-वत के लिए बिठादेना।

☆ सवाब और मग़्फ़िरत की ग़र्ज़ से क़ब्रों पर क़ुरआनी आयात वाली चादरें बिछाना।

☆ मरने वाले के साथ अपनी मोहब्बत और अक़ीदत के तौर पर क़ब्र पर फूल पत्तियाँ बिखेरना,और उस ताल्लुक़ के इज़्हार के लिए क़ब्र को बोसे देना,और माथा,रुख़्सार या जिस्म को क़ब्र से लगाना।

☆ क़ब्रों की तरफ़ मुँह करके दुआएं माँगना।

☆ क़ब्रों पर नमाज़ पढ़ना या कोई और इबादत करना।

☆ क़ब्र वाले को सज्दा करना या क़ब्रों का तवाफ़ करना।

☆ किसी नबी,वली या बुज़ुर्ग की क़ब्र पर दुआ करते हुए उनके नाम की क़सम खाना, और उनकी क़ब्र को वसीला बना कर दुआ माँगना।

☆ अपनी हाजतें पूरी करवाने की दर्ख़ासतें लिख कर मज़ारों पर डाल आना।

☆ मस्जिद में क़ब्र या मज़ार बनाना।

© AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

☆ क़ब्रों और मज़ारों पर खाने के चढ़ावे चढ़ाना, क़ब्र पर रुपे पैसे डाल आना।

☆ मदफ़ून लोगों के लिए दुआए मग़्फ़िरत करने और ख़ुद इब्रत हासिल करने की बजाए क़ब्रों पर “हाज़्रियाँ और ज़यारत” करने जाना और वहाँ बुज़ुर्गों के नामों की नज़र नियाज़ें और मन्नतें मानना।

☆ क़ब्रों पर मेले और उर्स वग़ैरा लगाना।

☆ क़ब्र पर सदक़ा ख़ैरात तक़्सीम करना।

☆ मज़ारों और क़ब्रों पर जानवर ज़िबह करना।

वहाँ बाल,धागे,रंग बिरंगे कपड़े और झंडे वग़ैरा लगाना।

☆ अर्क़ियात या दूध वग़ैरा से मज़ारों की धुलाई करना।

☆ मख़्सूस दिनों को ज़यारते क़ुबूर के लिए मुक़र्रर करना।

☆ क़ब्र पर अगरबत्तियाँ वग़ैरा जलाना या ख़ुशबू मलना।

☆ ज़यारते क़ुबूर के बाद उलटे पाँव वापिस पलटना।

☆ ढोल धमालों के साथ जुलूस की शक्ल में चादरें,झंडे और सजी हुई “डालियाँ” लेकर मज़ारों पर जाना।

## रूह से मुताल्लिक़ बिदआत और ग़ैर इस्लामी रसूमात

☆ ये अक़ीदा रखना कि मरने वाले की रूह चालीस रोज़ तक घर आती है,इस वजह से चालीस रातें अपने घर में रोशनी जलाए रखना।

☆ इसी ज़ईफ़ अक़ीदे के ज़ेरे अस़र मरने वाले के लिए सात फल,सात ख़ुश्क मेवे और मिठाइयाँ वग़ैरा क़ब्र पर लेजाकर तक़्सीम करना।

☆ मरने के बाद रूह को सवाब पहुँचाने के लिए क़ब्रों के किसी मुजावर वग़ैरा का खाना लगवा देना,

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

☆ और घरवालों का मुसलसल चालीस रोज़ तक बेहतरीन और मुरग़ग़न खाना पका कर उसे भेजना।
(इस मौक़े पर एक और अजीब क़िस्म की तवाहम परस्ती का मुज़ाहेरा किया जाता है वो ये कि खाने में हर चीज़ फ़क़त एक अदद ही दी जाए। इस से ज़्यादा दे दिया तो ख़ान्दान में किसी दूसरे फ़र्द की मौत वाक़े हो जाएगी)

## ईसाले सवाब की बिदआत और ग़ैर इस्लामी रसूमात

☆ मय्यत के ईसाले सवाब की ग़र्ज़ से बेशुमार ग़ैर मस्नून काम किए जाते हैं,जिनका दीन से कोई ताल्लुक़ नहीं होता, मस्लन..

☆ ख़ास दिनों,ख़ास औक़ात और ख़ास इंतिज़ामात के साथ मरने वाले के घर में जमा होना।

☆ इन इजतिमात पर बड़े बड़े खानों का बंदोबस्त करना।

☆ इन मौक़ों के नाम ये है: सोयम/क़ुल,फ़ातेहा ख़्वानी,ख़त्म दिलाना,जुमेरातें,सातवां, दसवां चालीसवां,बरसी वग़ैरा। इसके अलावा वफ़ात के बाद आने वाली पहली ईदें और शाबान,रमज़ान भी इन सिल्सिलों में शामिल हैं।

इन तमाम अय्याम में बिदअत के खुल्लम-खुल्ला मुज़ाहेरे शुरू हो जाते हैं,बाज़ बिदअती उमूर ख़ुद मय्यत के एहलो अयाल अपने तौर पर अदा करते हैं,और अक्सर औक़ात ये रसूमात ताज़ियत के लिए आने वाले “ख़ैर ख़्वाहों के” मशवरे पर सवाब जान कर अदा की जाती हैं,बल्कि बाज़ औक़ात मरने वाला ज़िंदगी में ख़ुद भी ऐसी ग़ैर मस्नून रसूमात अदा करने से मुताल्लिक़ वसियत छोड़ जाता है, मस्लन:

☆ “मेरे मरने के बाद माले विरासत में से उन मख़्सूस दिनों और तेहवारों वग़ैरा पर ख़त्म दिलाते रेहना,या मेरी तरफ़ से फ़ुलां मज़ार पर चादर चढ़ाया करना वग़ैरा”।

© ALHUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

दीन के हवाले से ईसाले सवाब की इन मेहफ़िलों की हक़ीक़त व हेसियत क्या है? ये मालूम करने की ज़ेहमत नहीं की जाती। इन बिदअती मशग़लों को अपनाने वाले लोगों में से अक्सरियत का मक़्सद सिर्फ़ दिखावा और तमाम रिशतेदारों में सुर्ख़रुई इख़्तियार करना होता है। यहाँ तक के ब्रादरी में नाक बचाने की ख़ातिर क़र्ज़ भी लेना पड़े तो उस से भी गुरेज़ (बचना) नहीं किया जाता,ख़ुसूसन ग़रीब तबक़े को मेंहगाई के दौर में जीना तो दुशवार था ही अब मरना भी दुशवार नज़र आने लगा है ।

## दिल का फ़त्वा

अल्लह के रसूलﷺ ने फ़रमाया, "(वाज़ेह एहकामात के इलावा) हर काम के लिए अपने दिल से भी फ़त्वा लिया करो। जिस बात पर दिल मुत्मईन हो वो जाइज़ है और जिस पर दिल ना ठुके,क़ल्ब में ख़लिश हो तो उस से बचो ख़्वा लोग तुम्हें जवाज़ ही का फ़त्वा दे दें"।(एहमद)

© AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

## एहम तरीन रस्म "चालीसवां"

☆ मयय्त के ईसाले सवाब के तौर पर अदा की जाने वाली रसूमात में सब से बड़ी और एहम रसम चालीसवां या चेहलम है। ये दिन वफ़ात से 40 रोज़ बाद बाक़ायदा मनाया जाता है,और इसमें लोगो को बाक़ायदा बुलाया जाता है (अख़्बार में इश्तेहार लगाने के अलावा ना सिर्फ़ अब दावती कार्ड भी छपने लगे हैं,बल्कि इस इज्तिमा के लिए बाज़ औक़ात शादी हॉल भी बुक कराया जाता है। )

☆ गुज़िश्ता चालीस दिनों के दौरान मरहूम के क़राबत दारों और मोल्वी ने जितने भी क़ुरआने पाक मरहूम के ईसाले सवाब की गर्ज़ से ख़त्म किए,उन्हें ऊँची आवाज़ के साथ सारी ब्रिादरी के सामने मरने वाले की रूह को हदिया के तौर पर पेश करने का ऐलान किया जाता है।

☆ गुठलियों पर पढ़ने का जो सिल्सिला सोयम से शुरू हुआ था अब इख़्तिताम को पहुँचता है ।

☆ ❖चेहलम पर मरहूम के ईसाले सवाब के लिए जो जोड़े कपड़े वग़ैरा बनवाए गए थे वो बाक़ायदा अज़ीज़ों को दिखाकर ख़ैरात किए जाते हैं।

इसके बाद पुर्तकल्लुफ़ खाना तमाम मेहमानों को खिलाया जाता है,लवाहेक़ीन साहिबे हैसियत हों या क़र्ज़ लेना पड़े,खाना पूरे लवाज़मात के साथ तैयार किया जाता है,जिस का मक़्सद मरहूम की रूह को ख़ुश करना,बिरादरी वालों के सामने मरहूम के साथ अपनी गहरी वाबस्तगी और ताल्लुक़ जताना,ख़ान्दान भर में इस से पहले गुज़र चुकने वाले चालीसवों से ख़ूबतर चालीसवां मनाना और बर्सी की आमद तक के लिए एक बड़े "फ़र्ज़" से सुबुक्दोश हो जाना होता है।

☆ ❖इस रसम को अदा करने में इस बात का ख़ुसुसन ख़्याल रखा जाता है कि ऐन चालीसवें के दिन या एक दो दिन पहले ये रसम अदा करदी जाए,मगर 40 दिन से एक दिन भी ऊपर ना होने पाए,इस बात को भी बदशगूनी समझा जाता है और वहम किया जाता है कि अगर इस रसम में ताख़ीर हुई तो ख़ानदान में किसी शख़्स की मौत वाक़े हो जाएगी।

## दस्तार बंदी

☆ चालीसवें के मौक़े पर इस रसम को अदा करना,मरने वाला सरबराहे ख़ाना था, तो अब उसके बड़े बेटे के सर पर ख़ान्दान का कोई बुज़ुर्ग "दस्तार" बाँधता है। इस से मुराद ये होती है कि ये अपने बाप के जानशीन के तौर पर ख़ान्दान का कफ़ील मुक़र्रर कर दिया गया है।

☆ इस मौक़े पर "जानशीन" की तरफ़ से सारे ख़ान्दान वालों को कपड़े तक़्सीम करना।

## पहली ईद पर सोग मनाना

☆ अक्सर घरानों में मौत के बाद आने वाली पहली ईद को 'यौमे सोग' के तौर पर मनाया जाता है,इस दिन मय्यत के एहले ख़ाना ना तो अच्छे कपड़े पहनते हैं और ना ही ईद की ख़ुशी मनाते हैं।

☆ ख़ुसूसन दौराने इद्दत ईद आजाए तो बेवा को काले या सफ़ेद लिबास का ही हदिया दिया जाता है।

© AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

## बरसी मनाना

☆ फ़ौतशुदा की मौत का एक साल मुकम्मल होने पर बरसी की रसम अदा होती है। इस मौक़े पर फिर से तमाम अज़ीज़ो अक़ारिब जमा होते हैं, अफ़सोस के अल्फ़ाज़ फिर से दोहराए जाते हैं।

☆ बाक़ायदा दावती पैग़ाम दिए जाते हैं।

☆ मय्यत की तरफ़ से इस ख़ास मौक़े के लिए फिर सालाना के जोड़े तैयार किए जाते हैं।

☆ आने वालों के लिए पुर्तकल्लुफ़ खाने का एहतमाम किया जाता है वग़ैरा।

☆ बॉज़ घरानों में बरसी मनाने का सिल्सिला सालों तक जारी रहता है।

ग़ैर इस्लामी अक़ाइदो नज़्रियात पर मब्नी ये तमाम रसूमात सरासर वो बिदअतें हैं जिनका दीन से दूर का भी वास्ता नहीं, और इनको बिला तेहक़ीक़ बाप दादा की पैरवी करते हुए अपना लिया जाता है। इनको अपनाने में ना सिर्फ़ इस्राफ़ का पेहलू नुमायां रहता है बल्कि रयाकारी और दिखावा भी पेश पेश होता है ,क्योंकि ईसाले सवाब के लिए जितना ख़र्च किया जाता है उसमें ग़रीबों के लिए सदक़ा ख़ैरात का हिस्सा कम और उन लोगों के खाने, कपड़े और तबर्रुक पर खर्च ज़्यादा किया जाता है जिनके पास ये नेमतें पेहले ही वाफ़र मिक़दार में मौजूद होती हैं।

## बुज़ुर्गों की क़ब्रें

बिदआत के शिर्क की हद तक बढ़े हुए नज़ारे हमारे यहां बुज़ुर्गों और नेक लोगों की क़ब्रों पर देखने को मिलते हैं।

ये सब वो बुज़ुर्ग और नेक हस्तियाँ थीं जो हमें तौहीद और इत्तिबाए सुन्नत की तालीम दे गईं और जिन्होंने अपनी ज़िंदगियाँ लोगों को शिर्क की दलदलों से निकालने में सर्फ़ करदीं, उन्हीं की क़ब्रों पर मक़्बरे, मज़ार और ख़ान्क़ाहें तामीर कर दी गईं, अब गुलाब के अर्क़ और दूध से उन्हें धोया जाता है।

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ख़ूबसूरत चादरों और ग़िलाफ़ों से उन्हें सजाया जाता है,रंगबिरंगे कपड़े और धागे वग़ैरा उन मज़ारों और उनके इर्द गिर्द के दरख़्तों पर बाँधे जाते हैं और वहाँ के पत्थरों को भी मुतबर्रिक माना जाता है। ज़ाइरीन हाथ बाँध कर और सर झुका कर निहायत अज्ज़ो इंकिसारी से मज़ारों पर हाज़री देते हैं नीज़ वहाँ क़व्वालियाँ,उर्स, मेले और तमाम ग़ैर शरई प्रोग्राम मुनअक़िद कराने के लिए बाक़ाएदा फ़ंड इकट्ठा किया जाता है जिसके लिए मज़ार के गिर्दो पेश में डब्बे रखे होते हैं ताकि तमाम ज़ाइरीन हसबे तौफ़ीक़ उन नेक कामों के लिए हिस्सा डालकर सवाब कमाऐं ।

## सोचने का मक़ाम

एक बुराई ख़त्म ना की जाए तो तबियत दूसरी बुराई पर आमादा होने लगती है,फिर तीसरी और फिर..बुराई,बुराई ही नहीं लगती,उसे “रस्म” ये “रिवाज” का नाम दे दिया जाता है ।

गुलाब के अर्क़ और दूध से मज़ारों को धोने की “रस्म” अदा करने वालों को ये ख़्याल तक नहीं आता कि ये बिदअत ही नहीं,इन्तिहाई दर्जे का इस्राफ़ भी है। यही मुल्क जहां बहुत से लोग ख़ास कर बच्चे दूध और दूसरी ग़िज़ाई तंगी के सबब कम्ज़ोर सहत और कम उमर की मौत का शिकार हैं वहाँ इस क़ीमती नेमत को यूँ ज़ाए करके एक बहुत बड़ा गुनाह किया जारहा है। जब्कि सहाबा कराम ؓ जैसी जलीलुल्क़द्र हस्तियाँ अपने कफ़्न तक के ख़र्च के लिए नए कपड़ों से गुरेज़ करते थे और नए कपड़े के लिए ज़िंदों को मुर्दों से ज़्यादा हक़्दार समझते थे ।

सय्यदना अबूबकर सिद्दीक़ ؓ से उनकी ज़िंदगी में जब कपड़ों में से कफ़्न के इंतिख़ाब के बारे में दर्याफ़्त किया गया तो उन्होंने फ़रमाया:
“नए कपड़ों का ज़िंदा ज़्यादा मुस्तहिक़ है मेरे लिए बस ये पुराने ही काफ़ी होंगे”। (बुख़ारी)

## ये रसूमातो बिदआत हमारे साफ़ सुत्थरे दीन का हिस्सा कब बनीं ?

ये चंद दिनों महीनों या सालों में नहीं हुआ बल्कि इसमें उन सदियों का अमल दख़ल शामिल है जो हमने ग़ैर मुस्लिमों के साथ मिलकर गुज़ारी हैं यही मख़्लूत माशरत रसूमातो बिदआत की छोटी बड़ी बहुत सी पगडंडियों को शिर्क की शाहराह पर

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ला मिलाने का सबब बनी।

हमारे यहाँ मुस्लमानों के साथ ये बदक़िस्मती भी हुई कि उन्हें बहैसियत मेहकूम क़ौम, तालीम से दूर रखा गया और यूँ जहालत के अंधेरों से निकलने ना दिया गया। इलावा अज़ीं बुतपरस्ती और कुफ़्रो शिर्क में घिरी क़ौम के साथ सदियों एक साथ रहने से उनके बहुत से रस्मो रिवाज और शिर्किया काम मुसलमानों पर ग़ैर मेहसूस तरीक़े से असर अंदाज़ होता चला गया। आज़ादी मिली भी तो क़ौम ज़ाहिरी और दुन्यवी तामीर और तरक़्क़ी के मंसूबों में मसरूफ़ हो गई,लेकिन दीन की बुन्यादें मज़बूत करने की तरफ़ तवज्जो कम ही रही। इसी लिए दीन की इमारत की तामीर ढाँचे से आगे ना बढ़ सकी। बल्कि ये ढाँचा भी दीनी अक़ीदों के बिगाड़,जमातों की ना इत्तिफ़ाक़ी और फ़िर्क़ा वारियत के तूफ़ानों से हिचकोले ही खाता रहा।

बहरहाल ख़ुलासा ये कि अभी भी वक़्त है की हम बेदीनी को मज़ीद सैराब करने की बजाए तमाम क़ाबिले इस्लाह मामलों की तरफ़ तवज्जो दें तो ख़ैर के बहुत से चमन आबाद हो सकते हैं।

रसूमातो बिदआत के हवाले से बड़े बड़े क़ाबिले इस्लाह उमूर यही हैं।

(1) कम इल्म आबाओ अज्दाद की जाहिलाना रिवायात की पाबंदी।

(2) दीनी जमातों की नाइत्तेफ़ाक़ी और उनके अक़ीदों का बिगाड़।

(3) दरामद शुदा ग़ैर मुस्लिम रसूमात की तक़्लीद।

अल्हम्दुलिल्लाह! चंद पुरख़ुलूस दीनी ख़िदमत गुज़ारों की साल्हासाल की बेलौस और अंथक कोशिशों से अब हमारे मुल्क में भी लोगों के सोचने और समझने के अंदाज़ में तब्दीली आरही है।

ख़ुसूसन तालीम याफ़्ता तब्क़े में ये सलाहियत बेदार होती चली जारही है कि दीनी मसाइलो मॉमलात को ख़ालिस अक़ीदे तौहीद की कसौटी से जाँच कर और इत्तिबाए सुन्नत की रोशनी में परख कर अमल में लाया जाए। लिहाज़ा वो वक़्त दूर नहीं जब मुसलमानों के पाक ख़ित्ते से शिर्को बिदअत का ख़ात्मा होजाएगा,इन शा अल्लाह।

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

# ईसाले सवाब के मस्नून तरीक़े

सय्यदना अबू हुरैराؓ कहते हैं कि रसूल अल्लाहﷺ ने फ़रमाया:

“मरने के बाद इंसान के आमाल (के सवाब का सिल्सिला) मुन्क़ते (कट जाता) हो जाता है,सिवाए तीन चीज़ों के जिनका सवाब मय्यत को पहुँचता रहता है:

(1) सदक़ए जारिया,

(2) लोगों को फ़ायदा देने वाला इल्म,

(3) नेक औलाद जो मय्यत के लिए दुआ करती रहे।” (मुस्लिम)

## (1) सदक़ए जारिया

दीनी भलाई के काम,मस्जिद,मदरसा,कुतुब ख़ाना,मुसाफ़िर ख़ाना या शिफ़ा ख़ाना की तामीर,पानी पिलाने का इन्तिज़ाम,साया दार या फलदार दरख़्त लगाना,ये सब सदक़ए जारिया के काम हैं जो इंसान अपनी ज़िंदगी में ख़ुद कर जाए या उसकी वफ़ात के बाद उसके लवाहेक़ीन करें,इनका अज्र इंसान को मरने के बाद मिलता रहता है।

सदक़ए जारिया की एक शक्ल “वक़्फ़” भी है।

**वक़्फ़:** (मंदरजा ज़ैल हदीस वाज़ेह करती है कि वक़्फ़ क्या है)

अब्दुल्लाह बिन उमरؓ ने रिवायत किया है कि सय्यदना उमरؓने रसूल अल्लाहﷺ के ज़माने में अपने एक माल (समग़) को वक़्फ़ करदिया। वो खजूर का एक बाग़ था। उमर ؓ ने अर्ज़ किया,“या रसूल अल्लाहﷺ मुझे एक उमदा माल हासिल हुआ है। मैं चाहता हूँ कि उसको सदक़ा करदूँ”।

नबी करीमﷺ ने फ़रमाया, “तुम चाहो तो असल जायदाद को रखो और उसका फ़ायदा ख़ैरात करदो।

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ना वो बिके,ना हिबा हो सके,ना मीरास हो अल्बत्ता उसका फल (अल्लाह की राह में) ख़र्च हो"।

तो उमरؓ ने उसको अल्लाह की राह में इस तरह वक़्फ़ किया कि उसकी आमदनी (फ़ी सबीलिल्लाह) ग़ुलामों के आज़ाद कराने,मोहताजों और मेहमानों की ख़िदमत और मुसाफ़िरों और क़राबत दारों पर ख़र्च की जाने लगी और (फ़रमाया) जो उसका इन्तिज़ाम करे वो उसमें से दस्तूर के मुताबिक़ खाया करे और अपने दोस्तों को भी खिलाए मगर दौलतमंदी के लिए उसमें से जमा जोड़ ना करे (ज़रूरत का ही ले)। (बुख़ारी)

## तारीफ़

अपने माल (अस्बाब,मकान,दुकान,फ़ेक्टरी,बाग़,कुँवा,कान,अराज़ी,सवारी या जायदाद वग़ैरा) को अल्लाह की राह में मुस्तक़िल तौर पर इस तरह ख़ास कर देना कि!

☆ असल जायदाद बाक़ी रहे मगर उसकी आमदनी,पैदावार,फ़ायदा सदक़ा की जासके।

☆ वक़्फ़ को ना फ़रोख़्त किया जा सकता है।

☆ और ना हिबा किया जा सकता है।

☆ और ना ही विरासत में तक़्सीम किया जा सकता है।

☆ ना ही वक़्फ़ करने वाला दोबारा उसे ख़रीद सकता है।

अब्दुल्लाह बिन उमरؓ रिवायत करते हैं कि सय्यदना उमरؓ ने अल्लाह की राह में इस्तेमाल करने के लिए एक घोड़ा रसूल अल्लाहﷺ को दिया,ताकि आपﷺ उस पर किसी को सवार करें। फिर सय्यदना उमरؓ को ये ख़बर मिली कि जिस शख़्स को घोड़ा मिला था उसने उसे बेचने को खड़ा किया है,सय्यदना उमरؓ ने रसूल अल्लाहﷺ से उसके ख़रीदने की बाबत पूछा तो आपﷺ ने फ़रमाया:

"उसको हर्गिज़ ना ख़रीदो और अपना सदक़ा ना लौटाओ"। (बुख़ारी)

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

## वक़्फ़ की मुख़्तलिफ़ सूरतें

☆ माले वक़्फ़ मोहताज़ औलाद या रिश्तेदारों के लिए भी ख़ास किया जा सकता है।

अनस ؓ रिवायत करते हैं कि जब (सूरह आले इमरान की)आयतः

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ

“तुम हरगिज़ नेकी को नहीं पहुँच सकते जब तक के तुम (अल्लाह की राह में) वो ख़र्च ना करलो जो तुम्हें सबसे प्यारा है ”नाज़िल हुई तो अबू तलहा ؓ रसूल अल्लाह ﷺ के पास आए और अर्ज़ करने लगे, या रसूल अल्लाह! अल्लाह ताला ने अपनी किताब में यूँ फ़रमाया है कि:

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ ”और मेरे जितने भी माल हैं उनमें 'बैरहा' मुझे ज़्यादा पसंद है, (बैरहा एक बाग़ था जिस में नबी करीम ﷺ जाया करते और वहाँ साये में बैठते औरवहाँ का पानी पीते)।

तो अबू तलहा ने कहा 'मैं ये बैरहा अल्लाह अज़्वजल और उसके रसूल ﷺ की तरफ़ अपने सवाब और ज़खीरए आख़िरत की उम्मीद में रखता हूँ, तो ऐ रसूल ﷺ! आप जैसे मुनासिब समझें इसे ख़र्च करें”।

रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, “वाह ऐ अबू तलहा! ये तो (दुनिया व आख़िरत में) बड़ा फ़ायदा देने वाला माल हुआ। ये माल हम क़ुबूल करके तुम्हीं को लौटाते हैं ताके तुम अपने (मुस्तहिक़) रिश्तेदारों को दे दो”।तो अबू तलहा ने वो बाग़ अपने रिश्तेदारों को दे दिया। (बूख़ारी)

☆ वक़्फ़ करने वाला चाहे तो बॉज़ सूर्तों में वक़्फ़ी चीज़ का फ़ायदा इस्तेमाल कर सकता है,मस्लन अगर उसने शिफ़ा ख़ाना,कुतुब ख़ाना या पानी वग़ैरा का इन्तेज़ाम किया है तो दूसरे लोगों की तरह ख़ुद भी ज़रूरतन उससे फ़ायदा उठा सकता है।

☆ फ़ौत शुदा रिश्तेदार को सवाब पहुँचाने के लिए भी वक़्फ़ किया जा सकता है।

©AL HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

☆ वक़्फ़ की हुई जायदाद को अपनी निग्रानी में रखा जासकता है,और उस निग्रानी की मुनासिब उज्रत ख़ुद भी ले सकता है।

☆ किसी मुन्तज़िम या निग्रान के हवाले कर सकता है और मुन्तज़िम को उसी की आमदनी में से मुनासिब सी उज्रत देने की वसियत कर सकता है ।

नबीﷺ ने फ़रमाया, “मैं एक दीनार भी छोड़ जाऊँ तो मेरे वारिस उसे तक़्सीम नहीं कर सकते बल्कि मेरे छोड़े हुए में से मेरी बीवियों और अमला (इन्तेज़ाम करने वालों) का ख़र्च निकालकर जो बचे वो तमाम अल्लाह की राह के लिए है”। (बुख़ारी)

(इस हदीस से ये मालूम हुआ कि अंबिया का तर्का अल्लाह की राह में वक़्फ़ होता है)।

☆ कुछ भी वक़्फ़ करते वक़्त ही तहरीरी (लिखा हुआ) तौर पर तैय कर लिया जाए ताकि बाद में कोई झगड़ा ना हो ।

## वक़्फ़ कीअक़्साम

वक़्फ़ दो तरह का हो सकता हैः

1-वक़्फ़े ख़ास 2-वक़्फ़े आम

**-वक़्फ़े ख़ास,** में किसी जगह,तामीर,इदारे,फ़र्द या किसी चीज़ वगैरा को या उसके फ़ायदे या आमदनी को किसी के लिए मख़्सूस कर दिया जाता है। इसे शर्ती वक़्फ़ भी कहा जाता है। मस्लन:

☆ किसी ने कोई इमारत इस लिए वक़्फ़ की के उसमें यतीम बच्चों की पर्वरिश हो,तो उसे किसी और मक़्सद के लिए इस्तेमाल नहीं किया जाएगा या किसी ने कोई सवारी अल्लाह की राह में (दीनी भलाई के के कामों में भाग दौड़ के लिए) वक़्फ़ की तो अब उसे ज़ाती या दुनियवी मक़ासिद के लिए इस्तेमाल नहीं किया जाएगा,या किसी बस्ती में कोई कुँवा/टयुब वेल इस लिए वक़्फ़ कराया गया कि उस से वहाँ के लोगों की घरेलू ज़रूरियात पूरी हों तो अब उसके पानी से कोई अपने खेतों को सैराब नहीं कर सकता,वग़ैरा।

© AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

ज़ूबैर ِ बिन अवाम ने अपने घरों को वक़्फ़ करदिया था। उनकी बेटियों में से कोई लौटाई जाती (बेवा या मुतल्लक़ा) तो उसे कहते के इस में रहो,ना सताई जाओ और ना नुक़्सान दी जाओ। और अगर कोई ख़ाविंद वाली बेटी होती तो उसे वहाँ रहने का हक़ ना होता । (बुख़ारी)

इसी तरह इब्ने उमर ِ ने अपने वालिद सय्यदना उमर ِ के घर (जिसे वो वक़्फ़ कर गए थे) के एक हिस्से में अपनी कुछ मोहताज औलाद को रहने दिया था। (बुख़ारी)

☆ वालिदैन,उस्ताद या बुज़ुर्ग अज़ीज़ की ख़िदमत के लिए औलाद या किसी फ़र्द को वक़्फ़ किया जाए तो वो उसी काम के लिए वक़्फ़ होगा मस्लन..

अनस बिन मालिक ِ रिवायत करते हैं कि जब रसूल अल्लाह ﷺ मदीना तशरीफ़ लाए तो उन के पास कोई ख़िदमतगार नहीं था। अबू तल्हा (जो अनस ِकी वालिदा के दूसरे शौहर थे) ने मेरा हाथ पकड़ा और रसूल अल्लाह ﷺ के पास ले गए और कहने लगे,या रसूल अलाह! अनस एक समझदार लड़का है,ये आपकी ख़िदमत में रहेगा। अनस ِ कहते हैं कि फिर मैं सफ़र और हज़र दोनों में आपकी ख़िदमत करता रहा। (बूख़ारी)

**वक़्फ़ आम** में फ़लाह,फ़ायदा या आमदनी का इस्तेमाल हर रिश्तेदार,ग़ैर रिश्तेदार, मुसाफ़िर,मुक़ीम,अमीरो ग़रीब,सबके लिए हो सकता है। मस्लन:

☆ मस्जिद और मद्रसे के लिए ज़मीनो तामीर का बंदोबस्त वक़्फ़े आम की मिसाल है।

रसूल अल्लाह ﷺ मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ लाए तो आप ﷺ ने वहाँ मस्जिद बनाने का हुक्म दिया और बनू नजार से फ़रमाया, "तुम लोग इस अराज़ी की मुझ से क़ीमत लेलो"। तो उन्होंने कहा,वल्लाह! 'हम तो इसकी क़ीमत सिवाए अल्लाह के किसी से नहीं लेंगे'।

(तबक़ाते इब्ने साद की रिवायत के मुताबिक़ नबी ﷺ ने बाद में ये ज़मीन दस दीनार में ख़रीद ली और अबू बकर ِने ये क़ीमत अदा की। ये इस लिए किया गया क्योंकि उस में दो यतीम बच्चों का भी हिस्सा था)

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

याद रहे! मस्जिद पर ज़कात की मद से रक़म ख़र्च नहीं की जासकती मगर इसके लिए ज़मीन वक़्फ़ की जासकती है ख़्वा ज़मीन वक़्फ़ करने वाले का ही नाम रहे या जिस फ़र्द या इदारे को वक़्फ़ की जारही हो उसके नाम लगा दी जाए बेहरहाल वक़्फ़ कर सकते हैं।

☆ पानी का इन्तेज़ाम भी बेहतरीन सदक़ए जारिया है। वक़्फ़े आम के कामों में पानी पिलाने के इन्तेज़ाम को बहुत एहमियत हासिल है।

मदीना मुनव्वरा में जब मुसलमानों के लिए पानी की कमी थी तो सय्यदना उस्मानؓ ने रोमा का कूँआ खुदवाया और उसे आम मुसलमानों के लिए वक़्फ़ किया,जिस पर रसूल अल्लाहﷺ ने उनको जन्नत की बशारत भी दी। (बुख़ारी)

सादؓ बिन उबादा की वालिदा फ़ौत होगईं तो सादؓ ने नबी करीमﷺ से पूछा, 'मेरी वालिदा फ़ौत होगईं हैं तो क्या में उनकी तरफ़ से ख़ैरात कर सकता हूँ?' फ़रमाया: "हां"। सादؓ ने अर्ज़ किया 'कौन सी ख़ैरात बहतर रहेगी ?' फ़रमाया, "पानी पिलाने का इन्तेज़ाम"। (नसाई)

☆ इंसानों के अलावा हैवानों जैसे बारबर्दार जानवरों के लिए पानी पीने के लिए हौज़ों का इन्तेज़ाम,मुजाहिदीन के घोड़ों,ऊँटों के लिए चरागाहें,तालाब वग़ैरा भी वक़्फ़े आम की सूरतें हैं।(अज्रो सवाब के ज़ुमरें में गर्मी के मौसम में घर के सेहन या बाग़ीचे में परिंदों के पीने के लिए पानी का प्याला वग़ैरा रखना भी बहुत नेक अमल है)।

## सदक़ए जारिया की कुछ और अशकाल

सदक़ए जारिया की एक शक्ल ये है कि दीन में किसी ऐसी सून्नत को ज़िंदा किया जाए जो भुलाई जा चुकी थी। ऐसा करने वाले के लिए उसका अपना और उस आदमी का भी अज्र शामिल होगा जो बाद में उसपर अमल करे,बाद वालों के अपने अज्र में भी कोई कमी नहीं होगी। (बहवाला मुस्लिम)

(बिदआत में तफ़्सील बयान हो चुकी है)

©AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

ज़िंदगी में 'अमर बिल मारूफ़ और नही अनिल मुन्कर' की तल्क़ीन करना और उसकी वसियत छोड़ जाना भी बेहतरीन सदक़ए जारिया है। ख़ुसूसन आज के दौर में इसकी बेहद ज़रूरतो एहमियत है। अगर्चे फ़ित्नों से घिरे हुए माहौल और ख़्वाहिशात की अंधा धुंद पैरवी करने वालों के दर्मियान दुरुस्त अक़ीदे को अपनाना और उसी के मुताबिक़ अमल करना बेहद मुश्किल हो चुका है,जबकि नेकी और ख़ैर के कामों में मॉविन भी दस्तियाब नहीं। आख़िरत की याद से ग़फ़्लत और इसकी तैयारी से लापर्वाही का ये आलम है कि मर भी रहा हो तो शायद ही कोई ये सोचता हो कि उसने अपने वास्ते क्या अमले ख़ैर आगे भेजा अल्बत्ता ये ज़रूर पूछा जाता है कि उसने क्या माल छोड़ा?

## (2) लोगों को फ़ायदा देने वाला इल्म

ये इसाले सवाब की दूसरी क़िस्म है। ज़िंदगी में ऐसा नाफ़े इल्म सिखा जाना,जिस पर दर्सो तद्रीस और अमल का सिल्सिला बाद में भी जारी रहे ख़ासू क़ुरआन की तालीम  और दीनी इस्लाह और तर्बियत वग़ैरा ।

अलावा अज़ी दुनिया में इंसानियत की भलाई के उमूर में मदद देने वाला इल्म भी इस में शामिल है। मस्लन..कोई फ़ायदामंद साइंसी या मेडीकल इजाद वग़ैरा,जिस से लोग नसल दर नसल फ़ायदा उठाते रहें ।

इल्म के हवाले से दीन की नशरो अशात के काम भी बहतरीन सदक़ए जारिया हो सकते हैं। दरहक़ीक़त इल्म एक ऐसा नूर है जिसकी ना कोई हद है और ना ही वो कभी ख़त्म होने वाला है इसी लिए ये दुनिया के साथ-साथ आख़ेरत में भी फ़ायदा देता रहता है। अल्लाह सुब्हानहु व ताला फ़रमाते हैः

يَرْفَعِ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا مِنكُمْ وَالَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ دَرَجَاتٍ  (المجادله:١١-)

जो लोग तुम में से ईमान लाए हैं और जो इल्म दिए गए हैं अल्लाह ताला उनके दर्जे बुलंद फ़रमाएगा "

©ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

सय्यदना अबू हुरैराؓ से रिवायत है कि नबी करीमﷺ ने फ़रमाया:

“जो कोई इल्म की तलाश में एक राह पर चलता है तो अल्लाह ताला भी उसके लिए जन्नत की एक राह आसान कर देते हैं। जो लोग किसी जगह मिलबैठ कर क़ुरआन की तालीमो मुज़ाकरा करने में मश्ग़ूल होते हैं तो फ़रिश्ते उन्हें घेर लेते हैं, रहमतेइलाही उनका एहाता करलेती है और सकीनत उनपर नाज़िल होती है,फिर अल्लाह ताला अपने मुक़र्रब मलाएका में उनका तज़्किरा फ़रमाते हैं। जिस किसी को उसके अमल ने पीछे कर दिया,उसे उसका नसब आगे नहीं कर सकता”। (मुस्लिम, अबू दाऊद,तिर्मिज़ी)

मॉवियाؓ बयान करते हैं कि रसूल अल्लाहﷺ ने फ़रमाया:

“जिस शख़्स के साथ अल्लाह ताला भलाई का इरादा फ़रमाते हैं उसे इल्मे दीन की समझ अता कर देते हैं”। (मुत्तफ़िक़ अलैह)

अब्दुल्लाहؓ बिन मसूद कहते हैं कि नबी करीमﷺ ने फ़रमाया,“दो ख़स्लतों पर रश्क किया जासकता है,एक तो वो जिसको अल्लाह ने दौलत दी और वो नेक कामों में उसको ख़र्च करता है,दूसरा जिसको अल्लाह ने हिक्मत (क़ुर्आनो हदीस़ के इल्म) से नवाज़ा और वो उसी इल्मी सूझबूझ के साथ,जो उसने पाई,फ़ैसले करता है और लोगों को भी सिखाता है”। (बुख़ारी)

इल्मो हिदायत की बातें सीखने और सिखाने को ज़र्खेज़ ज़मीन से तश्बीह दी जाती है जो ख़ुद भी सर्सब्ज़ होती है और दूसरों को भी अनाज,घास,चारा वग़ैरा मोहैया करती रहती है।

सय्यदना उमरؓ फ़रमाते थे कि इस से पहले के तुम्हें (मॉशरे में) बुज़ुर्गी का मक़ाम मिले इल्मे दीन की समझ हासिल करलो। (बुख़ारी)

सय्यदना अलीؓ ने फ़रमाया,“इल्म माल से बहतर है क्योंकि माल की तुम्हें निगहबानी करनी पड़ती है मगर इल्म ख़ुद तुम्हारा निगहबान होता है,माल ख़र्च करने से ख़त्म हो जाता है मगर इल्म ख़र्च करने से बढ़ता है,इल्म हाकिम है और माल मेहकूम मालदार चल बसे लेकिन इल्म वाले ज़िंदा हैं और रहती दुनिया तक ज़िंदा रहेंगे,

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

बेशक उनके जिस्म मिट गए मगर उनके कारनामे कभी मिटने वाले नहीं"।

इसी बात को सय्यदना अलीؓ ने शेर की शक्ल में यूँ भी बयान किया:

رَضِيْنَاقِسْمَةَالْجَبَّارِفِيْنَا لَنَاعِلْمٌ وَّلِلْجِهَّامَالٌ

हम राज़ी हैं उस फ़ैसले पर अल्लाह जब्बार ने हमारे लिए किया है

के हमारे हिस्से में इल्म आया और जाहिलों के हिस्से में माल आया है

فَاِنَّ الْمَالَ يَفْنى عَنْ قَرِيْب وَاِنَّ الْعِلْمَ يَبْقىَ لاَيَذَالٌ

तो बेशक माल ही जल्दी ख़त्म हो जाने वाला है

और यक़ीनन इल्म ही हमेशा बाक़ी रह जाने वाला है

(जामे ब्यानुल इल्म)

## अंबिया का इल्म

उल्मा को अंबिया का वारिस इसी लिए कहा गया कि अंबिया ने दिर्हमो दीनार नहीं छोड़े थे बल्कि अल्लाह की तरफ़ से अता किया हुआ इल्म (इल्मे वही) छोड़ा,और अल्लाह ही की अता की हुई हिक्मत से उस इल्म का अमली नमूना भी बनकर दिखाया।

अंबिया की आमद का सिल्सिला बंद होजाने के बाद जिसने भी इस इल्मो हिक्मत को हासिल कर लिया बड़ी दौलत का मालिक बन गया और ये फ़ज़ीलत उसी वक़्त है जब उसपर अपनी भरपूर मेहनत से अमल भी करलिया। बेअमल आलिम की नसिहत दिल पर असर ही नहीं करती या फिर जल्द दिलसे उतर जाती है,कहाँ ये कि वो सदक़ए जारिया बने। सुहैलؓ बिन साद बयान करते हैं कि रसूल अल्लाहﷺ ने सय्यदना अलीؓ से फ़रमाया:

"वल्लाह! बिला शुबा अल्लाह पाक तेरे ज़रिए से किसी एक आदमी को भी हिदायत फ़र्मा दे तो तेरे लिए सुर्ख़ ऊँटों से बेहतर है"। (मुत्तफ़िक़ अलैह)

© AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

### पाँच सवालात

अल्लाह के रसूलﷺ ने फ़रमाया,..(क़यामत के दिन) इंसान कि क़दम (अपनी जगह से) हट ना सकेंगे जब तक कि उस से पाँच बातों के लिए सवाल ना कर लिया जाएः

1-उमर कैसे और किन कामों में खत्म की..
2-जवानी कहाँ सर्फ़ की............................
3-माल कहाँ से कमाया ..........................
4-माल कहाँ ख़र्च किया.........................
5-जो इल्म हासिल किया उसपर कहाँ तक अमल किया....................(तिर्मिज़ी)

## (3) नेक औलाद जो मय्यत के लिए दुआ करती रहे

मय्यत के लिए ज़िंदों की तरफ़ से ईसाले सवाब की सूरत में तीसरी नफ़ाबख़्श चीज़ उसके लिए दुआए इस्तिग़फ़ार करना है। जिस तरह ज़िंदा इंसान खाने पीने के मोहताज होते हैं उसी तरह मुर्दे दुआ के इंतहाई मोहताज होते हैं।रसूल अल्लाहﷺ ने फ़रमाया:

“अल्लाह अज़्वजल जन्नत में नेक आदमी का दर्जा बुलंद फ़रमाएंगे तो आदमी अर्ज़ करेगा, 'या अल्लाह! ये दर्जा मुझे कैसे हासिल हुआ'?

अल्लाह ताला फ़रमाएंगे: “तेरे बेटे ने तेरे लिए इस्तिग़फ़ार किया था”। (मुस्नद एहमद)

इसके इलावा नेक औलाद के आमाल का सवाब बग़ैर नियत के भी वालिदैन को ज़िंदगी में और ज़िंदगी के बाद पहुँचता रहता है। सय्यदा आएशाؓ से रिवायत है कि रसूल अल्लाहﷺ ने फ़रमाया:

“सब से पाकीज़ा तर खाना जो तुम खाते हो अपनी कमाई से है और तुम्हारी औलाद भी तुम्हारी कमाई में शामिल है” । (सुन्न अबी दाऊद)

औलाद को क़ुरआन व सुन्नत का ताबे बनाकर मरने वाला क़यामत तक उसकी कमाई को वसूल करता रहेगा ।

©AL-HUDA INTERNATION WELFARE FOUNDATION

## जिसकी औलाद नहीं उसके लिए दुआ कौन करे..

एहले ख़ाना,रिश्तेदार,दोस्त,पड़ोसी,उस्ताद,शागिर्द वग़ैरा सब अल्लाह ताला की तरफ़ से नेमत होते हैं।इन सब लोगों के साथ दुख सुख में हमदर्दी और अच्छे ताल्लुक़ात रखने चाहिएं और अगर इन में से कोई वफ़ात पाजाए तो उन्हें ना सिर्फ़ अपनी दुआओं में याद रखें बल्कि उन के अच्छे कामों का दुसरों के सामने तज़्किरा करें और उनके बुरे कामों या ज़्यादतियों को भुलादें। अगर आपके दिल में मरने वालों के लिए ऐसे जज़्बात होंगे तो अल्लाह ताला आपकी मौत पर दुसरे लोगों के दिलों में भी आपके लिए ऐसे ही जज़्बात पैदा फ़रमादेगा और यूँ उनकी तरफ़ से आपकी मग़्फिरत के लिए दुआएं आपको क़ब्र में और क़यामत के दिन पुलसिरात पर फ़ायदा देंगी और जन्नत में आपके दर्जात की बुलंदी का बाइस बनेंगी ।

बे औलाद लोगों के ख़ुसुसन ये निहायत कारआमद तज्वीज़ है।

## एहले दुनिया की दुआओं के मुंतज़िर

وَالَّذِينَ جَاءُوا مِن بَعْدِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا
وَلِإِخْوَانِنَا الَّذِينَ سَبَقُونَا بِالْإِيمَانِ ..(الحشر:١٠

“और वो लोग जो उनके बाद आए दुआ करते हैं “ऐ हमारे पर्वरदिगार!
हमें और हमारे भाइयों को जो हमसे पहले ईमान लाए थे बख़्श देना”।

रसूल अल्लाहﷺ से मुर्दों के हक़ में दुआ फ़रमाना बहुत सी अहादीस से साबित है। ऐसी दुआओं की क़ुबुलियत के बारे में आपﷺ ने तल्क़ीन करते हुए फ़रमाया:

“एक मुसलमान जब अपने भाई की ग़ैर मौजूदगी में उसके लिए दुआ करता है तो वो क़ुबूल होती है,उस आदमी के पास एक निग्रान फ़रिश्ता होता है,जब भी आदमी अपने भाई के हक़ में दुआ करता है तो निग्रान फ़रिश्ता आमीन कहता है और कहता है तुझे भी ऐसा ही मिले”। (मुस्लिम)

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

## दुआ से पहले क़ुरआने करीम की तिलावत

तिलावत व क़िराते क़ुरआन को दुआ की क़ुबूलियत का वसीला व सबब बनाकर मय्यत के लिए अल्लाह ताला से मग़्फ़िरत व रहमत तलब करना फ़ायदामंद हो सकता है,मगर क़ुरआन का “ख़त्म” कराना और सिर्फ़ ख़ास दिनों में क़ुरआन पे क़ुरआन ख़त्म करने की दौड़ में हिस्सा लेना और ये समझना के उससे मय्यत को कोई फ़ायदा पहुंचेगा ऐसा किसी हदीस से साबित नहीं।

ये किताबे हिदायत है और हिदायतो अमल की ज़रूरत ज़िंदों को होती है। मरने वाले पर अमलो हिदायत का दर्वाज़ा,ज़िंदगी ख़त्म होने के साथ ही बंद होजाता है, अब उसे बख़्शिश और दर्जात में बुलंदी पाने के लिए ज़िंदों की तरफ़ से दुआओं की ज़रूरत होती है। और दुआएं अल्लाह ताला के अच्छे अच्छे नामों,बाबर्कत कलाम और नेक कामों को वसीला बनाकर माँगी जाएं तो उसके हां ज़रूर क़ुबूल होती है, इसलिए क़ुरआने पाक़ की तिलावत करना और इतनी करना जितनी आसानी से समझ कर और उमदा तरीक़े से की जासके,दुआ की मक़्बूलियत के लिए बेहतर है। इबादत के मामले में अल्लाह ताला के हुज़ूर कसरत के मुक़ाबले में इख़्लास की ज़्यादा क़द्र की जाती है।

अल्लाह ताला के पैग़म्बर यूनुस(अ)ने मछली के पेट में आयते करीमा कितनी बार पढ़ी? कहीं भी दर्ज नहीं। हां दुआ में तज़र्रो,पूरा इख़्लास और आजिज़ी ज़रूर शामिल होगी जो फ़ौरन क़ुबूलियत के दर्जे को जा पहुँची।

इसी तरह अगर हम भी अपने अज़ीज़ो अक़ारिब के लिए ख़ुद दुआ करें तो जो इख़्लास हमारे दिल में हो सकता है वैसा किसी दूसरे के दिल में नहीं हो सकता और ये बिल्कुल फ़ित्री सी बात है। मस्लन हम जब भी किसी ग़ैर क़राबत दार की वफ़ात का सुनते हैं, तो जो मेहसूसात मय्यत के अफ़्रादे ख़ाना के होते हैं वो हमारे नहीं होते गोया कि अपने क़रीब तरीन और प्यारे अज़ीज़ जिस चाहत,संजीदगी और इख़्लास से तिलावत और दुआ कर सकते हैं उस जज़्बे से ये काम कोई और नहीं कर सकता।

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

हक़ीक़त की नज़र से देखा जाए तो "ख़त्मे क़ुरआन" की मेहफ़िल में क़ुरआन मजीद के अदब को भी मद्दे नज़र नहीं रखा जाता और गुफ़्तगू ही आम होती है। हालाँकि मोहब्बत के क़रीनों में अदब पहला क़रीना है। फिर काफ़ी गैर संजीदा और लापर्वाई के मनाज़िर भी देखने को मिलते हैं ।

मस्लन कहीं दो,दो लोग बयक वक़्त एक ही पारा इस तरह पढ़ रहे होते हैं के एक सफ़्हा एक फ़र्द और उसके सामने वाला सफ़्हा दूसरा फ़र्द पढ़ रहा होता है। या फिर दो-दो मिल कर आधा-आधा पारा बाँट कर पढ़ रहे होते हैं,हालाँके ऐसा करना बिल्कुल ग़लत और आदाबे क़ुरआन मजीद के मनाफ़ी है। कुछ कमर में तक्लीफ़ या किसी और वज्ह से मज्बूरन बैठे होते हैं जब्कि किसी को ग़ैर ज़रूरी मशक़्क़त में डालना भी इस्लामी आदाब के ख़िलाफ़ है ।

अल्लाह ताला सूरत मुज़म्मिल आयत:20 में फ़रमाते हैं:

पस जितना क़ुरआन आसानी से पढ़ सको पढ़ लिया करो ।.....فَاقْرَءُوْا مَاتَيَسَّرَمِنْهُ

कुछ माएं साथ आए छोटे बच्चों को बहलाने में बार बार क़ुरआने पाक छोड़ने पर मज्बूर होती हैं। इन तमाम चीज़ों से संजीदगी से पढ़ने वाली ख़्वातीन की तवज्जो पर भी असर अंदाज़ होती है। अगर यही तिलावत घरों में सुकून और सहूलत से फ़राग़त के औक़ात में बैठ कर और मरहूम के साथ अपने ताल्लुक़, मोहब्बत और अपनी इस्ति-ताअत के मुताबिक़ करली जाए तो ना सिर्फ़ सबके लिए बेहतर हो बलके सही तरीक़े से क़ुरआन पढ़ने का हक़ भी अदा हो जाए ।

इंसानों के लिए एहकामात और क़वानीन बनाने वाली ज़ाते आली ने ऐसे किसी तर्ज़े अमल को फ़र्ज़ क़रार ही नहीं दिया जो इंसानों के लिए निभाना मुश्किल हो या उसकी अदाएगी में बेज़ारी का कोई पेहलू निकलता हो ।

अल्बत्ता क़ुरआन ख़्वानी की मेहफ़िल से बहतरीन इस्तिफ़ादा यूँ किया जासकता है कि उसे दुआ के इलावा दर्सो तद्रीस का रंग दे दिया जाए ताकि यहाँ से उठकर जाने वाले इल्म ईमान के इज़ाफ़े से फ़ैज़्याब हों। मर्ग वाले घर में लोगों दिल नर्म ख़शियत इलाही की तरफ़ निस्बतन ज़्यादा माइल होते हैं ।

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ऐसे मौक़े पर उन्हें अल्लाह,क़ुरआन और सुन्नते रसूलﷺसे जोड़ना निहायत मुफ़ीद हो सकता है। नीज़ ऐसे माहौल में लोग दीन की बातें सुन्ना भी चाहते हैं लिहाज़ा उन्हें निहायत सलीक़े और हिक्मत के अंदाज़ से अल्लाह के पैग़ामात (क़ुरआन) सीखने की दावत दें,बल्कि हो सके तो छपा हुआ कुछ इल्मी मवाद भी फ़ी सबील अल्लाह तक़्सीम किया जाना चाहिए ।

# ईसाले सवाब के कुछ और तरीक़े

इसके इलावा कुछ और मुस्तहब (पसंदीदा) तरीक़े और सूरतें भी हैं जिनके ज़रए अपने बिछड़ने वाले को सवाब बतौरे हदिया भेजा जा सकता है।

## क़र्ज़ चुकाने में मदद

अपने और मय्यत के लिए सवाब के तौर पर सबसे पहले तो मय्यत के क़र्ज़ की अदाएगी का मामला साफ़ कराना है। अगर मरने वाला इतना मक़रूज़ था कि उसके छोड़े हुए माल में से वो क़र्ज़ पुरा अदा नहीं हो पारहा तो ये उसके साथ बड़ी नेकी होगी कि कोई साहिबे इस्तिताअत अज़ीज़ या कुछ वारिस और अज़ीज़ मिल कर उसके क़र्ज़ की अदाएगी करादें ताकि उसकी रूह क़र्ज़ के साथ “मोअल्लक़” (लटकी हुई) ना रहे और अपने मुक़द्दर किए हुए मक़ाम तक पहुँच जाए ।

तफ़्सीलात “मय्यत का क़र्ज़” के नाम से पेज नंबर (110) पर मुलाहेज़ा फ़रमाएं ।

## हज की नज़र और अल्लाह का क़र्ज़

इसी तरह शरई नज़र,(मर्हूम ने अगर ज़िंदगी में कोई नज़र मानी थी) जिसे “अल्लाह का क़र्ज़” कहा गया है,भी वारिस या क़राबत दार पूरी करदें तो मय्यत के हक़ में फ़ायदामंद होगी ।

सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बासؓ से रिवायत है कि क़बीला जुहैना की एक औरत नबी करीमﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुई और अर्ज़ की,

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

"मेरी वालिदा ने हज की नज़र मानी थी,लेकिन हज करने से पहले ही फ़ौत हो गईं। क्या में उनकी तरफ़ से हज अदा करूँ?"

नबी करीमﷺ ने फ़रमाया, "हां,उनकी तरफ़ से हज अदा करो" (उसे सवाब मिल जाएगा और नज़र भी अदा होजाएगी) और हां सुनो! "अगर तुम्हारी वालिदा पर क़र्ज़ होता तो क्या तुम उसे अदा करतीं ?"

उसने अर्ज़ किया, 'जी हां' ।

फिर नबी करीमﷺ ने फ़रमाया, "अल्लाह का क़र्ज़ (यानी नज़र) अदा करो,क्योंकि अल्लाह ज़्यादा हक़्दार है कि उसका क़र्ज़ अदा किया जाए"। (बुख़ारी)

सय्यदना फ़ज़ल(इब्ने अब्बास) से रिवायत करते हैं कि क़बीला ख़सम की एक औरत ने अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह! "मेरे बूढ़े बाप पर हज फ़र्ज़ है लेकिन वो ऊँट पर सवार होने की हिम्मत नहीं रखता'। रसूल अल्लाहﷺ ने फ़रमाया :

"तुम अपने बाप की तरफ़ से हज अदा करो"।(मुस्लिम)

**वज़ाहत**: ज़िंदा वालिदैन की तरफ़ से भी फ़र्ज़ या नफ़्ली नज़र माना हुआ हज (ब वज्ह उज़्रे हक़ीक़ी वो ख़ुद ना कर सकें तो) औलाद या किसी भी दूसरे मुत्तक़ी अज़ीज़ की तरफ़ से अदा हो सकता है। बशर्त ये कि वो ख़ुद अपना फ़र्ज़ हज पहले अदा कर चुका हो,इसे मारूफ़ में हज बदल कहते हैं और हज बदल करने वाले का ये अपना नफ़्ली हज होगा। (अल्लाहु आलम)

## रोज़े

मुसलमान के लिए लाज़िम है कि अगर वो आर्ज़ी मगर हक़ीक़ी उज़्र (सफ़र,आर्ज़ी बीमारी या तक्लीफ़) की वज्ह से माहे रमज़ान के या नज़र माने हुए रोज़े नहीं रख सका तो उज़्र के रफ़ा होते ही उन्हें पूरा करे।

अगला माहे रमज़ान आने से पहले गुज़िश्ता फ़र्ज़ रोज़ों की क़ज़ा और फ़िदया की अदाएगी हो जानी चाहिए,

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

इसी तरह रोज़ा तोड़ने का कफ़्फ़ारा और उसकी क़ज़ा जितनी जल्द हो सके अदा कर दिये जाएं।

अगर उज़्रे हक़ीक़ी मुस्तक़िल है मस्लन बुढ़ापे की कम्ज़ोरी या शदीद बीमारी से जांबर होने की उम्मीद और क़ज़ा पूरी करने की सकत नहीं है तो बेहतरीन नेकी ये है कि वली/वारिस उसकी तरफ़ से हस्बे इस्तेदाद ये रोज़े पूरे करदे या फ़िदया देदे।

(हाएज़ा या नफ़ास वाली क़ज़ा रोज़ों की गिन्ती पूरी करेंगी,फ़िदया लाज़िम नहीं)

## मय्य्त के रोज़े

इसी तरह मय्यत की तरफ़ से भी दौराने अलालत (बीमारी) फ़र्ज़ या नज़र के रोज़ों की क़ज़ा रहती थी और विर्सा को इसका इल्म हो या वसियत में इसका ज़िक्र मिले तो विर्सा वो रोज़े रख कर ईसाले सवाब के तौर पर उसकी मदद कर सकते हैं।

सय्यदा आएशा ؓ से रिवायत है कि रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया:

"जो शख़्स वफ़ात पा जाए और उसके ज़िम्मे रोज़े हों,तो उसका वली (औलाद, वारिस,क़रीबी रिश्तेदार) रोज़ा रखे"। (बुख़ारी)

सय्यदना इब्ने अब्बास ؓ से रिवायत है कि एक शख़्स नबी करीम ﷺ के पास आकर अर्ज़ करने लगा,या रसूल अल्लाह! मेरी वालिदा फ़ौत हो गई हैं और उनके ज़िम्मे एक माह के रोज़े थे। क्या मैं उनकी तरफ़ से रोज़े रख सकता हूँ'? आप ﷺ ने फ़रमाया:

"हां! अल्लाह का क़र्ज़ ज़्यादा हक़ रखता है के उसे पूरा किया जाए" (बुख़ारी)

किसी ख़ातून की दौराने हैज़ या दौराने निफ़ास फ़र्ज़ रोज़ों के दर्मियान वफ़ात होजाए तो उस सूरत में फ़िदया (मिस्कीन को खाना) देना या वली की तरफ़ से रोज़े की क़ज़ा अदा करनी होगी।

## क़ुर्बानी

ईसाले सवाब के लिए मय्यत की तरफ़ से क़ुर्बानी करने की दलील भी हमें एक हदीसे मुबारक से मिलती है।

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

सय्यदना अबू हुरैराؓ से रिवायत है कि रसूल अल्लाहﷺ जब क़ुर्बानी का इरादा फ़रमाते तो दो मोटे,बड़े,लम्बे सींग वाले,काले और सफ़ेद रंगत,ख़सी मेंढे ख़रीदते। एक अपनी उम्मत के हर उस शख़्स की तरफ़ से जो अल्लाह को अकेला समझता है और मुहम्मदﷺ की पैग़म्बरी का भी इक़्रार करता है और दुसरा मुहम्मदﷺ) और आले मुहम्मदﷺ की तरफ़ से ज़िब्ह करते"। (इब्ने माजा)

(पहली बात ये मालूम हुई के जिस ने तौहीद और रिसालत का इक़्रार किया वही आपﷺ की उम्मत में दाख़िल है,गो दुसरे मामलात में कितना ही इख़्तिलाफ़ करता हो बशर्त येकि उसका दर्जा कुफ़्र तक ना पहुँचता हो। दूसरी बात ये कि उम्मत में उस वक़्त के मुसलमानों के इलावा वो लोग भी शामिल थे जो मुसलमान होकर वफ़ात पा चुके थे,और वो तमाम मुसलमान भी जो आइंदा पैदा होकर दुनिया में आने वाले थे)

© AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

## सदक़ा व ख़ैरात

मय्यत के ईसाले सवाब के लिए उसकी तरफ़ से सदक़ा,ख़ैरात करना भी अहादीस से साबित है।

एक आदमी ने नबी करीमﷺ से अर्ज़ किया, 'मेरी वालिदा अचानक फ़ौत होगईं और कोई वसियत ना करसकीं,मेरा गुमान है कि अगर वो बोल सकतीं तो सदक़ा करने को केहतीं। क्या अब मैं उनकी तरफ़ से सदक़ा करूँ तो उनको अज्र मिलेगा और साथ साथ क्या मुझे भी (उनको सवाब पहुँचाने का) अज्र मिलेगा?

आपﷺ ने फ़रमाया, "हाँ"।

तो फिर उसने अपनी वालिदा की तरफ़ से सदक़ा किया। (बुख़ारी)

साद बिन उबादाؓ की वालिदा उनकी ग़ैर मौजूदगी में वफ़ात पा गई थीं,तो वो नबी करीमﷺ के पास आए और अर्ज़ किया, 'या रसूल अल्लाह! 'मेरी वालिदा फ़ौत हो गईं और मैं मौजूद ना था,क्या मेरी तरफ़ से अब सदक़ा करना उनको फ़ायदा देगा' ? आपﷺ ने फ़रमाया "हाँ"। तो सादؓ ने कहा,

'मैं आपको गवाह करता हूँ कि मेरा फलदार बाग़ उनकी तरफ़ से सदक़ा है'।(बुख़ारी)

सय्यदना अबू हुरैरा से रिवायत है कि एक शख़्स ने अर्ज़ किया, 'ऐ अल्लाह के रसूलﷺ! मेरा बाप फ़ौत हो गया है' कोई वसियत भी नहीं की। अगर मैं उसकी तरफ़ से ख़ैरात करूँ तो क्या ये उसकी कोताहियों का कफ़्फ़ारा होगी' ?

आपﷺ ने फ़रमाया, "हाँ"। (मुस्लिम)

एक और हदीस के मुताबिक़:-

आस बिन वाइल सहमी ने वसियत की के उसकी तरफ़ से सौ ग़ुलाम आज़ाद करदिए जाएं,उनके बेटे हिशाम ने पचास ग़ुलाम आज़ाद कर दिए। उनके दूसरे बेटे उमरो ने बाक़ी पचास ग़ुलाम आज़ाद करने का इरादा किया। उन्होंने सोचा कि पहले रसूल अल्लाहﷺ से पूछ लूँ चुनांचे उन्होंने रसूल अल्लाहﷺ की ख़िदमत में हाज़िर होकर दर्याफ़्त किया कि मेरे भाई ने पचास ग़ुलाम आज़ाद कर दिए,अब मेरे ज़िम्मे पचास बाक़ी हैं,क्या मैं अपने वालिद की तरफ़ से ये अदा करदूँ ? रसूल अल्लाहﷺ ने फ़रमाया, "अगर वो मुसलमान था तो फिर तुम चाहे उसकी तरफ़ से ग़ुलाम आज़ाद करो,सदक़ा करो,या हज करो सबका अज्र उसे मिल जाएगा"। (सुनन अबी दाऊद)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

## आमाल का मुहासिबा

अल्लाह के रसूलﷺ ने फ़रमाया, "तुम में से हर शख़्स से इस तरह मुहासिबा होगा कि अल्लाह और उस बंदे के दर्मियान कोई वकालत और तर्जुमानी करने वाला ना होगा। वो अपने दाएं तरफ़ देखेगा तो उसको अपने आमाल के सिवा कोई और नज़र ना आएगा फिर बाएं तरफ़ देखेगा तो उधर भी सिवाए अपने उन आमाल के किसी और को ना पाएगा। फिर वो आगे नज़र डालेगा तो जहन्नम को अपने सामने मौजूद पाएगा ।

तो ऐ लोगो! आग से बचने की फ़िक्र करो ख़्वाह खजूर का आधा हिस्सा ही तुम्हारे पास हो,उसको ही (सदक़े में) देकर" (मुत्तफ़िक़ अलैह)

## मुफ़्लिस को क़र्ज़ माफ़ करना

सय्यदना अबू हुरैराؓ रिवायत करते हैं कि रसूल अल्लाहﷺ ने फ़रमाया, “एक शख़्स लोगों को क़र्ज़ दिया करता तो अपने नोकर से कहता,देखो! जिस को तुम मुफ़्लिस पाना उसको क़र्ज़ माफ़ कर देना शायद के ऐसे अल्लाह ताला हमारे भी क़ुसूर माफ़ करदे”। फिर आपﷺ ने फ़रमाया:

“जब वो (वफ़ात पाकर) अल्लाह से मिला तो अल्लाह ने उसे बख़्श दिया”। (बुख़ारी)

## ग़ुलाम आज़ाद करना

किसी गर्दन को ग़ुलामी से छुड़ाना या किसी बेगुनाह मुसलमान क़ैदी को आज़ाद कराना बहुत अज्रो सवाब का काम है। अल्लाह ताला फ़रमाते हैं:

فَلَا اقْتَحَمَ الْعَقَبَةَ ۝ وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْعَقَبَةُ فَكُّ رَقَبَةٍ ۝
أَوْ إِطْعَامٌ فِي يَوْمٍ ذِي مَسْغَبَةٍ ۝ يَتِيمًا ذَا مَقْرَبَةٍ ۝
أَوْ مِسْكِينًا ذَا مَتْ ۝ (البلد :13 11,12)

“तो उसने दुशवार गुज़ार घाटी से गुज़रने की हिम्मत ना की। और तुम क्या जानो कि क्या है वो दुशवार गुज़ार घाटी। किसी गर्दन को ग़ुलामी से छुड़ाना या फ़ाक़े के दिन किसी क़रीबी यतीम या ख़ाक नशीन मिस्कीन को ख़ाना खिलाना”।

रसूल अल्लाहﷺ ने फ़रमाया,“जो शख़्स किसी मुसलमान ग़ुलाम को आज़ाद करदे, अल्लाह ताला उसके हर उज़्व को ग़ुलाम के हर उज़्व के बदले दोज़ख़ से आज़ाद कर देगा”। (बुख़ारी)

अबू ज़र ग़फ़्फ़ारीؓ कहते हैं कि मैं ने रसूल अल्लाहﷺ से पूछा,'कोन सा अमल अफ़्ज़ल है?
आपﷺ ने फ़रमाया, “अल्लाह पर ईमान लाना और उसकी राह में जिहाद करना”।

मैं ने पूछा, 'कोन सा ग़ुलाम आज़ाद करना अफ़्ज़ल है ?

फ़रमाया जिसकी क़ीमत ज़्यादा हो और वो उसके मालिक को बहुत पसंद भी हो” (बुख़ारी)

© AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

रसूल अल्लाहﷺ ने आस बिन वाइल के बेटे उमरोؓ को अपने (मरहूम) वालिद की तरफ़ से उनकी वसियत के मुताबिक़ ग़ुलाम आज़ाद करने की इजाज़त देते हुए फ़रमाया था, “अगर तुम्हारा वालिद मुसलमान था तो फिर तुम चाहे उसकी तरफ़ से ग़ुलाम आज़ाद करो, सदक़ा करो,या हज करो सब अज्र उसे मिल जाएगा”। (अबी दाऊद)

## ईफ़ाए एहद

वफ़ात पाजाने वाले की तरफ़ से कीए गए वादे का पास करना ताकि उसका वादा पूरा होने पर इसे भी अज्र और दुआ मिले,ये भी मुसलमान का हक़ है।

सय्यदना जाबिरؓ बयान करते हैं कि नबी करीमﷺ ने मुझसे फ़रमाया था कि बहरैन की तरफ़ से माल आगया तो तुम्हें इतना-इतना और इतना दूँगा लेकिन नबीﷺ रहलत फ़रमा गए और उनकी ज़िंदगी में माल ना आया। अबू बक्रؓ के एहदे ख़िलाफ़त में जब बहरैन से माल आया तो उन्होंने मुनादी करने का हुक्म सादिर फ़रमाया कि जिस शख़्स से रसूल अल्लाहﷺ ने माल देने का वादा कर रखा था या जिस ने आप से क़र्ज़ लेना था तो वो हमारे पास आए। चुनाँचे मैं गया (और अहवाल अर्ज़ किया)

अबू बक्रؓ ने कहा, अच्छा एक लप (दोनों हाथ मिलाकर भरकर) लेलो। मैं ने उनको गिना तो पाँच सौ निकले। अबू बक्रؓ ने मुझे एक हज़ार और दे दिए तो ये तीन लप होगए” (बुख़ारी)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

### दीन,ईमान

सय्यदना अनसؓ बयान करते हैं कि कम ही ऐसा हुआ के रसूल अल्लाहﷺ ने हम से ख़िताब किया होः

**और ये ना कहा हो:**

**“जो आमानत दार नहीं वो ईमान दार नहीं**

और एहदो पैमाँ की पाबंदी नहीं करता उसका कोई दीन नहीं”। (बहैक़ी)

# उमर में बर्कत
## (सिला रहमी)

### सिला रहमी क्या है?

वालिदैन और दूसरे तमाम रिश्तेदारों से दर्जा बदर्जा एहसान,हुस्ने सुलूक और नेकी का मामला रखना और हस्बे तौफ़ीक़ व इस्तिताअत उनके हुक़ूक़ को फ़र्ज़ समझ कर अदा करना "सिला रहमी" कहलाता है।

### क़ता रहमी

रिश्ते और क़राबत दारियाँ सब अल्लाह ताला ने बनाई हैं, वही अपने दस्ते क़ुद्रत से उनको बाँध कर रखता है। फ़ित्रत की इस गिरह को इंसान जान बूझ कर ताल्लुक़ात में बिगाड़ पैदा करके यानी "बिल्वास्ता" तोड़दे या जहालत के हथ्कंडे मस्लन ग़ीबत, बोहतान,चुग़ली,हसद,बदगुमानियाँ फैलाकर नीज़ जादू वग़ैरा जैसे शर इस्तेमाल करके " बिलावास्ता" तोड़ डाले,ये "क़ता रहमी" है।

### वईद

وَيَقْطَعُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَن يُوصَلَ وَيُفْسِدُونَ
فِي الْأَرْضِ أُولَٰئِكَ لَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوءُ الدَّارِ –
(الرعد٢٥)

"और काटते हैं उन रिश्तों को जिनके मिलाने का अल्लाह ने हुक्म दिया है और ज़मीन में फ़साद मचाते हैं,यही लोग हैं के जिन पर लानत है और उनके लिए बुरा घर है"।

अल्लाह के रसूलﷺ ने फ़रमाया:

"रिश्ता काटने वाला जन्नत में दाख़िल ना होगा"। (मुत्तफ़िक़ अलैह)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

## फ़ज़ीलत

अल्लाह ताला फ़रमाते हैं..

وَالَّذِينَ يَصِلُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَن يُوصَلَ وَيَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ
وَيَخَافُونَ سُوءَ الْحِسَابِ ۝ وَالَّذِينَ صَبَرُوا ابْتِغَاءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ
وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَأَنفَقُوا مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً وَيَدْرَءُونَ
بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عُقْبَى الدَّارِ ۝ (الرعد:21,22)

"और वो जो मिलाते हैं इन (रिश्तों) को जिन के बारे में अल्लाह ने हुक्म दिया है कि उन्हें मिलाया जाए और डरते हैं अपने रब से,और ख़ौफ़ रखते हैं सख़्त अज़ाब का। और जो अपने रब की रज़ा जोई के लिए (इस राह) के मसाइब पर सब्र करते हैं और नमाज़ क़ाइम करते और जो हमने उन्हें दिया उस में से छुपा कर और ऐलानिया ख़र्च करते हैं और बुराई को भलाई से दूर करते हैं,यही वो लोग हैं कि जिनके लिए आख़िरत का घर है"।

आख़िरत में अच्छे बदले के अलावा दुनिया में भी बर्कात नसीब होती हैं ।

अल्लाह के रसूलﷺ ने फ़रमाया, "जिसको ये पसंद हो कि उसकी रोज़ी में वुसत और उसकी उमर में बर्कत हो उसको चाहिए कि वो सिला रहमी करे"। (मुत्तफ़िक अलैह)

एक और हदीसे रसूलﷺ हैः

"सिला रहमी,वालिदैन के साथ हुस्ने सुलूक,हमसायों के साथ अच्छा सुलूक और हुस्ने ख़ल्क़ ऐसी चीज़े हैं जिनसे उमरें ज़्यादा होती हैं और घर आबाद रहते हैं"। (एहमद)

## उमर में बर्कत कैसे?

रोज़ी देने वाला अल्लाह तबारक ताला है,अस्बाब की इस दुनिया में उसने ये नेमते रिज़्क़ बंदों पर एक दूसरे के तवस्सत (वजह) से बाँध रखी है।

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

क़राबत को जोड़ कर रखने और उनकी ज़रूरियात पूरी करने के नतीजे में अल्लाह ताला बंदे की कमाई और रिज़्क़ में उन क़राबत दारों का भी हिस्सा डालकर वुस्अत बर्कत पैदा फ़रमा देता है। इसके इलावा जब वो अपने उस भाई से राज़ी होते हैं तो लाज़मी तौर पर उसके लिए दुआगो भी रहते हैं और फिर अल्लाह ताला भी अपने इस बंदे से राज़ी रह कर उसके हक़ में माँगी जाने वाली उन दुआओं को क़ुबूल फ़रमाता है और यूँ उसके मालो जान में इज़ाफ़ा और बर्कत अता की जाती है ।
'वल्लाहू आलम'

## सिला रहमी के साथ दुआ की क़ुबूलियत

अबू सईद ख़ुदरी ने कहा कि नबी करीमﷺ ने फ़रमाया, "जो भी आदमी कोई दुआ करे जिसमें गुनाह या क़ता रहमी न हो तो अल्लाह ताला उसको तीन चिज़ों में से एक ज़रूर दे देता है:

1-जल्द ही उसकी दुआ क़ुबूल होजाती है,

2-उस दुआ को आख़िरत के ज़ख़ीरे में जमा कर दिया जाता है,

3-उसके बराबर उस से कोई मुसीबत दूर कर दी जाती है"। (मुस्नद एहमद)

## सिला रहमी के अव्वल हक़्दार

इर्शादे बारी तआला है:

وَأُولُو الْأَرْحَامِ بَعْضُهُمْ أَوْلَىٰ بِبَعْضٍ فِي كِتَابِ اللَّهِ
إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ......(الانفال:75)

"और ख़ून के रिश्तेदार अल्लाह के हुक्म की रू से एक दुसरे के ज़्यादा हक़्दार हैं। कुछ शक नहीं कि अल्लाह हर चीज़ से वाक़िफ़ है"।

ख़ालिक़ो मालिक ने अपने हक़ के बाद मख़्लूक़ के हक़ में सबसे पहले वालिदैन का हक़ रखा। क़ुरआन पाक में सिला रहमी के हक़्दारों की तर्तीब इन आयात से वाज़ेह होती है:

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

لَا تَعْبُدُونَ إِلَّا اللَّهَ وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا وَذِي الْقُرْبَىٰ
وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسَاكِينِ وَقُولُوا لِلنَّاسِ حُسْنًا (البقره٨٣.)

"अल्लाह के सिवा किसी की इबादत ना करना और वालिदैन,
क़राबत दारों,और यतीमों और मोहताजों के साथ भलाई करते
रहना और लोगों से अच्छी बात कहना"

قُلْ تَعَالَوْا أَتْلُ مَا حَرَّمَ رَبُّكُمْ عَلَيْكُمْ أَلَّا تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا
٢١٥ وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا(الانعام: ١٥١)

"कहो के (लोगो)! आओ मैं तुम्हें वो चीज़ें पढ़ कर सुनाऊँ जो तुम्हारे रब ने
तुम पर हराम करदी हैं। वो ये कि किसी चीज़ को अल्लाह का शरीक ना
बनाना और माँ बाप से अच्छा सुलूक करते रहना"

يَسْأَلُونَكَ مَاذَا يُنفِقُونَ قُلْ مَا أَنفَقْتُم مِّنْ خَيْرٍ فَلِلْوَالِدَيْنِ
وَالْأَقْرَبِينَ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسَاكِينِ وَابْنِ السَّبِيلِ (البقره:٢١٥)

"(मोहम्मद ﷺ) लोग आप से पूछते हैं कि(अल्लाह की रज़ा के लिए)
कैसे माल ख़र्च करें कह दीजिए! जो भी ख़र्च करो तो वो मां बाप
और क़रीब के रिश्तेदारों को और यतीमों को और मोहताजों को
और मुसाफ़िरों को सब को दो"....

सय्यदना अबू हुरैराؓ से रिवायत है कि एक शख़्स रसूल अल्लाहﷺ के पास आया और पूछने लगा,या रसूल अल्लाह! "मुझ पर किसका हक़ सब से ज़्यादा है कि मैं उसके साथ हुस्ने सुलूक करूँ" फ़रमाया,"तुम्हारी माँ का" पूछा,'फिर किसका' फिर फ़रमाया, "तुम्हारी माँ का"। पूछा,'फिर किसका' फ़रमाया,"तुम्हारी मां का"। पूछा, 'फिर किसका' फ़रमाया, "तुम्हारे बाप का" (बुख़ारी)

अस्मा बिन्ते अबू बकरؓ कहतीं हैं कि मेरी वालिदा नबी करीमﷺ के एहद में मदीना आई थीं। (वो इस्लाम नहीं लाई थीं) मेरे नाना भी उनके साथ थे,मैं ने आप ﷺसे पूछा,

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

"मोरी वालिदा आई हैं और वो इस्लाम से फिरी हुई हैं, 'क्या मैं उनके साथ सिला रहमी करूँ' तो फ़रमाया, "हां अपनी वालिदा से सिला रहमी करो (अगरचे वो मुसलमान ना भी हों)"। (बुख़ारी)

रसूल अल्लाहﷺ ने फ़रमाया, "अल्लाह ताला ने तुम पर माओं की नाफ़र्मानी (उनको सताना),और जो चीज़ें देना चाहिए उनको रोकना,लोगों से सवाल करना, बेटियों को ज़िंदा गाड़ना,बे फ़ायदा गुफ़्तुगू करना और माल ज़ाए करना हराम कर दिया है" । (बुख़ारी)

## नसब और सुस्राल

सिला रहमी में रहम के या ख़ूनी रिश्ते ही शामिल नहीं बल्कि अज़्दवाजी और सुस्राली रिश्ते भी शामिल हैं। अव्वलुज़्जिक्र रिशते हर कोई निभा ही लेता है,नेकी और बहादुरी ये है कि अल्लाह की रज़ा के लिए सुस्राली रिश्तों को भी निभाया जाए और उनसे भी उसी लुत्फ़ो मोहब्बत का मामला किया जाए। इस लिए भी के ये रिश्ता अल्लाह ताला ही की तरफ़ से मुक़द्दर किया हुआ और (निकाह की सूरत में) उसी की गवाही के साथ जोड़ा गया होता है ।

क़ुरआने पाक में इर्शाद होता है :

وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ مِنَ الْمَاءِ بَشَرًا فَجَعَلَهُ نَسَبًا وَصِهْرًا
وَكَانَ رَبُّكَ قَدِيرًا – (الفرقان:٥٤)

"वो (अल्लाह ही) है जिसने इंसान को पानी से पैदा किया,
फिर उसे नसब वाला और सुस्राली रिश्तों वाला कर दिया
बिला शुबा आप का रब (हर चीज़ पर) क़ादिर है"

ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي تَسَاءَلُونَ بِهِ وَالْأَرْحَامَ
إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبًا – (النساء:١)

"और अल्लाह से डरो जिस का वास्ता देकर तुम एक दूसरे से अपना हक़ माँगते हो (निकाह करते हो) और रिश्ता और क़राबत के ताल्लुक़ात को बिगाड़ने से भी

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

परहेज़ करो,बेशक अल्लाह तुम पर निगहबान है" ।

अज़्दवाजी ज़िम्मेदारियाँ और सुस्राली ताल्लुक़ निभाने का हुकुम मर्दों और औरतों के लिए यक्सां है। रसूल अल्लाह ﷺ की हयाते तय्यबा से उसकी वाज़ेह मिसालें मिलती हैं जबकि हमारे माशरे में यक तरफ़ा तौर पर औरतों से ही ना सिर्फ़ इसकी ज़्यादा तवक़्क़ो की जाती है बल्कि इब्तिदा ही से उनकी अपने वालिदैन और बहन भाइयों से ताल्लुक़ रखने की हौसला शिकनी की जाती है और मर्दों को अपने सुस्राल से ताल्लुक़ जोड़ कर रखने से बरिउज़्ज़िम्मा समझा जाता है ।

एक हदीसे क़ुदसी है:

"रहम (शिकमे मादर) रहमान से मुश्तक़ (निकला) है,इसलिए मोहब्बत वाले अल्लाह ने रहम को मुख़ातिब करके फ़रमाया:"जो तुझ को मिलाएगा उसे मैं मिलाऊँगा और जो तुझ को काटेगा उसको मैं काटूँगा"। (बुख़ारी)

एक और रिवायत में दुसरे अल्फ़ाज़ के साथ युँ है:

"रहमे इंसानी ने अर्श को पकड़ कर कहा, "जो मुझ से मिलाए उसको अल्लाह मिलाए और जो मुझ को काटे अल्लाह उस को काटे"। (मुस्लिम)

## क़ता रहमी का जवाब सिला रहमी

बिल्फ़र्ज़ कोई अज़ीज़ रिश्तेदार अपने इस फ़र्ज़ को नहीं निभाता तो उसके मुक़ाबिल रिश्तेदारों को ये मुनासिब नहीं कि ये भी अपने इस क़राबत के हक़ (सिला रहमी) को पूरा ना करें बल्कि असल में सिला रहमी इसी का नाम है कि जो कोई क़राबत के हक़ को अदा ना करे उसके हक़ को अदा किया जाए ।

इर्शादे बारी ताला है:

وَلَا تَسْتَوِي الْحَسَنَةُ وَلَا السَّيِّئَةُ ادْفَعْ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ

©AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

فَإِذَا الَّذِي بَيْنَكَ وَبَيْنَهُ عَدَاوَةٌ كَأَنَّهُ وَلِيٌّ حَمِيمٌ - وَمَا يُلَقَّاهَا إِلَّا
الَّذِينَ صَبَرُوا وَمَا يُلَقَّاهَا إِلَّا ذُو حَظٍّ عَظِيمٍ(٣٤,٣٥:حم السجده)

“भलाई और बुराई बराबर नहीं हो सकती,तो (सख़्त कलामी का) ऐसे तरीक़े से जवाब दो जो बहुत अच्छा हो (ऐसा करने से) जिस में और तुम में अदावत थी वो तुम्हारा गर्म जोश दोस्त बन जाएगा और ये बात उन्हीं लोगों को हासिल होती है जो बर्दाश्त करने वाले हैं और उन्हीं को मिलती हैं जो साहबे नसीब हैं”।

नबी करीमﷺ ने फ़रमाया,“जो बदले के तौर पर सिला रहमी करता है,वो असल में सिला रहमी करने वाला नहीं है बल्कि टूटे हुए रिश्तों का जोड़ने वाला सिला रहमी करने वाला है”। (बुख़ारी)

लेकिन इसके बावजूद भी फ़रीक़ैन में से कोई एक फ़रीक़ दूसरे से क़ता रहमी पर ही डटा रहे और दीनो ईमान के लिए नुक़्सान ही का सबब बनता रहे तो ऐसी सूरतेहाल के लिए मंदर्जा ज़ैल आयात से रहनुमाई भी मिलती है

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا عَلَيْكُمْ أَنفُسَكُمْ لَا يَضُرُّكُم مَّن ضَلَّ إِذَا اهْتَدَيْتُمْ
(المائده:١٠٥)

“ऐ ईमान वालो! अपने (आमाल और इख़्लाक़) की फ़िक्र
(और हिफ़ाज़त) करो। जब तुम हिदायत पर हो तो कोई
गुम्राह तुम्हारा कुछ भी बिगाड़ नहीं सकता”

इस हवाले से एक हदीसे मुबार्का है:

अमरो ؓ बिन आस कहते थे कि मैं ने नबी करीमﷺ को एलानिया ये फ़रमाते सुना, “फ़ुलां की आल औलाद (अपने उन रिश्तेदारों के नाम लिए जो मुसलमान ना थे और तरह तरह से सताते थे) मेरे अज़ीज़ नहीं हैं। वली तो मेरा अल्लाह है और अज़ीज़ मेरे वही हैं जो मोमिनों में नेक और सालेह हैं ।

© ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

(अगरचे उन से नसबी रिश्ता ना भी हो) अल्बत्ता उन से नाता है। अगर वो तर रखेंगे तो मैं भी तर रखूँगा यानी वो नाता जोड़ेंगे तो मैं भी जोड़ दूँगा"(रिश्तेदारी तर रखने से तर रहती है,जैसे दो ख़ुश्क काग़ज़ नहीं जुड़ते,गीले काग़ज़ जुड़े रहते हैं)।(बुख़ारी)

हुसने मॉशरत बहतरीन ख़ुशगवार ताल्लुक़ात का नाम है जो फ़रीक़ैन की जानिब से सिला रहमी का हक़ अदा करने से वजूद में आती है ।

हमारे यहाँ छोटी छोटी रंजिशों और ग़ल्त फ़हमियों को सुल्झाने की बजाए अना का मस्ला बना दिया जाता है और जज़्बाती उज्लत में ताल्लुक़ात बिगाड़ने के बाद आख़री जुमला ये बोला जाता है:

"मर जाऊँ तो फ़ुलाँ को मेरा मुँह ना दिखाना"या "मेरा मुँह देखने ना आना" यानी मरने के बाद भी क़ता रहमी की ही वसियत छोड़ी जाती है। क्या चहरा ना देखने से दोनों की तरफ़ से तमाम बदसलूकियों और हक़ तल्फ़ियों का कुफ़्फ़ारा अदा हो जाता है?... हालाँकि ये वक़्त क़रीबुल्मर्ग और क़राबत दारों के दर्मियान हुक़ुक़ुलइबाद की कमज़ोरियों, कोताहियों के बख़्शवाने का होता है ।

© AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

## अहादीसे नब्वी ﷺ

"वालिद जन्नत का बहतरीन दरवाज़ा है,चाहो तो इस दरवाज़े को ज़ाए करदो चाहो तो मेहफ़ूज़ करलो"। "बेशक जन्नत मां के क़दमों तले है"। (मुसनद एहमद)

"किसी मुसलमान के लिए हलाल नहीं कि वो अपने भाई को तीन दिन से ज़्यादा छोड़े रहे"। (मुत्तफ़िक़ अलैह)

अपने भाई की मदद करो ख़्वाह वो ज़ालिम हो या मज़्लूम,किसी ने अर्ज़ किया, "मज़्लूम की एआनत(मदद) तो मालूम है मगर ज़ालिम की एआनत (मदद) का क्या मतलब है?" फ़रमाया, "ज़ालिम की एआनत ये है कि उसे ज़ुल्म से बाज़(रोको) रखो" (बुख़ारी)

"रहम करने वालों पर रहमान रहमत करता है,तुम ज़मीन वालों पर रहम करो आस्मान वाला तुम पर रहम करेगा"(अबू दाऊद)

# बेवा की इद्दत

## इद्दत क्या है ?

इद्दत के लुग़वी मानी शुमार या गिनती करने के हैं। शरई इस्तिलाह में वो अर्सा जिस्में किसी औरत को ख़ाविंद की वफ़ात के बाद अपने नफ़्स को दूसरे निकाह से रोके रखने का हुक्म, "ज़मानए इद्दत" कहलाता है ।

## इद्दत की मुद्दत

बेवा औरत की इद्दत चार माह दस दिन है,जैसा कि क़ुरआने पाक में हुक्म होता है।

وَالَّذِينَ يُتَوَفَّوْنَ مِنكُمْ وَيَذَرُونَ أَزْوَاجًا يَتَرَبَّصْنَ بِأَنفُسِهِنَّ
أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَعَشْرًا (البقره:٢٣٤)

"और जो तुम में से फ़ौत होजाए और बीवियाँ छोड़ जाए तो वो (बीवियाँ) चार माह दस दिन तक इंतिज़ार करें"

बेवा हामला हो तो इद्दत का अर्सा वज़ए हमल तक है ख़्वाह वो उस चार माह दस दिन से पहले फ़ारिग़ हो या उस से कई माह बाद। इर्शादे बारी ताला है:

وَأُولَاتُ الْأَحْمَالِ أَجَلُهُنَّ أَن يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ (الطلاق:٤)

"और वो औरतें जो हामेला हों,उनकी इद्दत ये है कि बच्चा जन लें"

## सोग क्या है?

हदिसे पाक है, रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमायाः

"जो औरत अल्लाह और आख़िरत पर ईमान लाचुकी है उसके लिए तीन दिन से ज़्यादा सोग करना हलाल नहीं है अल्बत्ता अपने ख़ाविंद (की वफ़ात) पर चार माह दस दिन सोग करेगी" । (मुत्तफ़िक़ अलैह)

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

सोग ये है कि:

## (1)ज़ीनत से परहेज़

इद्दत गुज़ारने वाली बेवा,दौराने इद्दत किसी क़िस्म का बनाव सिंघार और ज़ीनत नहीं करेगी नीज़ वो ख़ूब्सूरत और शौख़ रंगों के लिबास नहीं पहनेगी। मेहंदी सुरमा से लेकर हर क़िस्म का मेकअप उसके लिए मना होगा,इसी तरह ना ख़ुशबू लगाएगी और ना ज़ेवरात से सजेगी।

**हिक्मत:** शौहर की जुदाई के बाद उसकी रफ़ाक़त में गुज़ारे हुए दिनों का एहतराम नीज़ फ़ौरन दूसरे निकाह की पेशकश से बचे रेहना,उस सादगी इख़्तियार करने की हिक्मत है।

## (2)बाहर निकलने से परहेज़

इद्दत के दौरान औरत अपने घर से बाहर ना जाएगी। अल्बत्ता किसी निहायत ज़रूरी काम से जाना पड़े (जिसके ज़रूरी होने का ताय्युन तक़्वे की बुनियाद पर वो ख़ुद कर सकती है) तो वो रात अपने उसी घर ही में आकर गुज़ारेगी जहाँ ख़ाविंद की वफ़ात के वक़्त थी।

एक औरत ने रसूल अल्लाहﷺ से शौहर की वफ़ात के बाद वहाँ से अपने मैके जाने की इजाज़त तलब की तो अपﷺ ने फ़रमाया:

“जिस घर में तुम्हें अपने ख़ाविंद की मौत की ख़बर आई उसी में रहो यहाँ तक कि इद्दत पूरी होजाए”। (सुनन अबी दाऊद)

**वज़ाहत:** हदीस के अल्फ़ाज़ से ये मुराद नहीं कि अगर औरत ने शौहर की मौत की ख़बर किसी और जगह मस्लन पड़ोसी या किसी अज़ीज़ के घर सुनी है तो वो अपनी इद्दत उसी पड़ोसी या अज़ीज़ के घर पूरी करे।

### क़ल्ब-व-अमल

रसूल अल्लाहﷺ ने फ़रमाया, “अल्लाह तुम्हारी सूरतों और माल को नहीं देखता बल्कि तुम्हारे दिलों और तुम्हारे आमाल को देखता है”। (मुस्लिम)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

## माशी ज़रूरियात

दौराने इद्दत औरत को किसी ऐसी मज्बूरी या अशद ज़रूरत के वज्ह से बाहर जाने की रुख़्सत है,मस्लन इलाज की गर्ज़ से डॉक्टर तक जाने के लिए,बच्चे को स्कूल छोड़ने या घर का सौदा सल्फ़ वग़ैरा लाने के लिए,जबकि घर में वाक़ई उसके सिवा कोई और ये काम करने वाला मौजूद ना हो ।

इसी तरह अगर औरत रोज़गार के मामले में मोहताज है और कोई दुसरा ज़रिए मॉश ना होने की वज्ह से उसे कमाने के लिए निकलना पड़ता है,या अपनी नौकरी को बहाल रखने की ग़र्ज़ से,या जैसे गाओं की औरतों को खेती बाड़ी करने या मवेशी संभालने के लिए घर से निकलना पड़ता है तो उसके लिए ऐसा करने की गुंजाइश है। बशर्तयेकि वो इद्दत की दूसरी शराइत की पाबंदी निभाए,यानी बग़ैर किसी ज़ीनत व सिंघार के निहायत सादगी से बाहर निकले और शाम से पहले घर वापस लौट आए। (अल्लाहू आलम)

## बैरूने मुल्क या दौराने हज

बैरूने मुल्क मुस्तक़िल मुक़ीम होने या आर्ज़ी क़याम के दौरान अगर औरत बेवा हो जाए और वहाँ के क़वानीन की रू से मज़ीद ठहरना मुम्किन ना हो तो औरत को वतन वापस आना पड़ेगा। इसी तरह दौराने हज शौहर की मौत वाक़े हो जाए तो लाज़मी बात है कि उसके लिए वहाँ ठहरने यानी इद्दत वहाँ गुज़ारने की पाबंदी नहीं वो अपने मुल्क वापस आएगी और यहाँ अपने घर में इद्दत गुज़ारेगी।

© AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

### आसानियाँ

उम्मुल मुमिनीन सय्यदा आएशा ؓ से रिवायत है,“जब भी रसूल अल्लाह ﷺ को मामले के दर्मियान किसी एक मामले को इख़्तियार करना होता तो आप हमेशा दोनों में से आसान मामले को लेलेते थे जब तक वो गुनाह ना हो। पस अगर वो गुनाह होता तो आप सब से ज़्यादा उस से दूर रहते” । (बुख़ारी)

# बेवा की ख़िदमत

## इस्लाम का एहसान

बेवा औरत को इस्लाम ने इज़्ज़त का मक़ाम अता किया है। ज़माने जाहिलियत में (और अभी भी दीनी तालीमात से मेहरूम बॉज़ घरानों में) बेवा को मनहूस और नफ़्रत के क़ाबिल समझा जाता था। ख़ुसुसन ख़ुशी के मौक़े पर लोग उस से बचना चाहते थे। उसे ना ससुराल में रहने दिया जाता था,ना ही माएके में बाइज़्ज़त मक़ाम मिलता। इस्लाम का औरतों पर एक ये भी एहसान है कि उसने बेवा को भी जीने का हक़ दिया और अल्लाह की ख़ातिर उसके हुक़ूक़ अदा करने और उसकी ख़िदमत व मदद करने को अल्लाह और उसके रसूलﷺ ने बहुत पसंद फ़रमाया। हदिसे पाक हैः

“बेवा और मिस्कीन के लिए दौड़ धूप करने वाला और उन की ख़िदमत करने वाला ऐसा है,जैसा कि अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने वाला,जैसा वो नमाज़ी जो नमाज़ से नहीं थकता और जैसा वो रोज़ेदार जो कभी रोज़े से नाग़ा नहीं करता”। (बुख़ारी)

अल्लाह के रसूलﷺ जो भी हुक्म फ़रमाते,पहले ख़ुद उसका अमली नमूना बनकर दिखाते ।

मंदर्जा ज़ैल हदीस से मालूम होता है। आपﷺ के ख़ुमुस से भी मोहताजो और बेवाओं पर ख़र्च करने का इतना ख़्याल होता कि उनकी ज़रूरियात को अपने एहले बैत के आराम पर भी मुक़द्दम रखते थे ।

एक मर्तबा जब सय्यदा फ़ातिमाؓ ने क़ैदियों में से एक क़ैदी ख़िदमत गुज़ार के तौर पर अपने मोहतरम वालिदﷺ से मांगा और अपनी तक्लीफ़ का ज़िक्र किया,जो अनाज पीसने और आटा गूँधने में होती थी तो आपﷺ ने उनका काम अल्लाह पर रखा (और उन क़ैदियों को बेच कर उनकी क़ीमत उन बेवाओं और ज़रूरत मंदों पर ख़र्च करने को तर्जीह दी) और सय्यदा फ़ातिमाؓ से फ़रमायाः

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

“जब तुम अपने बिस्तर पर जाओ तो चौंतीस (34) बार 'अल्लाहु अक्बर' तैंतीस (33) बार 'अलहम्दुलिलाह' और तैंतीस (33) बार 'सुब्हान अल्लाह' कहा करो। ये तुम्हारे लिए उस से बहतर है जो तुम माँगती हो”। (बुख़ारी)

## बेवा का निकाहे सानी

बेवा की रज़ामंदी और बच्चों की किफ़ालत की ख़ातिर ज़रूरत हो तो इद्दत काटने के बाद उसका निकाहे सानी करा देना चाहिए। क़ुरआने पाक में इर्शाद होता है:

وَاَنْكِحُوا الْاَيَامٰى مِنْكُمْ (النور:٣٢)

“और अपने में से बेनिकाह मर्द व औरत का निकाह कर दिया करो”

बेवा निकाहे सानी के लिए आमादा होजाए तो रिश्ते के मामले में सकी इजाज़त व रज़ामंदी लेना ज़रूरी है। अल्लाह ताला इर्शाद फ़रमाते हैं:

يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا يَحِلُّ لَكُمْ اَنْ تَرِثُوا النِّسَاءَ كَرْهًا...... (النسا:١٩)

ऐ मोमिनो! “तुम्हारे लिए जाइज़ नहीं कि औरतों को तरके का माल समझ कर ज़बरदस्ती उनपर क़ब्ज़ा करलो”।

तो हुआ ये था कि जाहिलियत के ज़माने में ये (बुरा) दस्तूर हुआ करता था कि जब कोई मर जाता तो उसके वारिस उसकी बीवी के भी हक़दार बन जाते। अब उनका इख़्तियार होता,चाहते तो ख़ुद उससे निकाह कर लेते (अगर्चे वो राज़ी ना भी होती) चाहते तो किसी दूसरे से अपनी मर्ज़ी पर उसका निकाह करा देते,चाहते तो यूँही लटका कर रखते और किसी से निकाह ना करने देते। ये मय्यत के वारिस उस औरत पर औरत के वारिसों से ज़्यादा हक़ रखते,तब अल्लाह ताला ने ये आयत उतारी। (बुख़ारी)

कोई बेवा औरत इज़्ज़त और माल के तहफ़्फ़ुज़ की मौजूदगी में अपने छोटे छोटे बच्चों की पर्वरिश में लगी रहे और निकाह के बंधन से आज़ाद रहे तो उसकी भी बड़ी फ़ज़ी-लत है।

©AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

# यतीम के साथ हुस्ने सुलूक

## यतीम किसे कहते हैं?

बुलुग़त से पहले जिस बच्चा या बच्ची का वालिद फ़ौत हो जाए,उसे यतीम कहते हैं।

## यतीम कब तक ?

लड़की और लड़के के बालिग़ होने और अक़्ल में पुख़्तगी आने तक यतीमी की हालत रहती है। बुलुग़त के बाद हालते यतीमी ख़त्म हो जाती है।

## यतीम के हुक़ूक़

वालिद की वफ़ात के बाद उसके रिश्तेदारों और दीग़र मुताल्लिक़ीन का फ़र्ज़ है कि अल्लाह से डरते हुए यतीम के साथ एहसान और हर मुम्किन भलाई का मॉमला रखें। क़ुरआन मजीद में जहाँ जहाँ क़राबत दारों,ज़रूरत मंदों और मुस्तहक़ीन की तरफ़ तवज्जो दिलाने वाली आयात मिलती हैं वहाँ साथ ही यतीमों के बारे में अद्ल एहसान और उनके हुक़ूक़ की हिफ़ाज़त का ज़िक्र और हुक्म भी मिलता है:

وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا وَبِذِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسَاكِينِ.....
وَالْجَارِ ذِي الْقُرْبَىٰ وَالْجَارِ الْجُنُبِ وَالصَّاحِبِ بِالْجَنبِ
وَابْنِ السَّبِيلِ وَمَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ........ النساء:٣٦

"माँ बाप और क़राबत दारों और यतीमों और मिस्कीनों और रिश्तेदार हमसायों और अज्नबी हमसायों और रुफ़क़ाए पेहलू (पास बैठने वालों) और मुसाफ़िरों,जो लोग तुम्हारे ज़ेरे दस्त हों सबके साथ एहसान करो"

मुसलमान मॉशरे में यतीम बच्चा या बच्ची तीन मुख़्तलिफ़ अंदाज़ में आस-पास बसने वाले मुसलमानों की तवज्जो और नेक सुलूक के मुस्तहिक़ हो सकते हैं।

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

## (1) फ़ौरी दिलजोई

बाप के साये से मेहरूम होते ही बच्चों को उस ग़मनाक माहौल के असरात से मुम्किन हद तक बचाने के लिए कोशिश की जाए। उस वक़्त बच्चों की वालिदा ख़ुद भी शौहर की जुदाई के अल्मिए से होश में नहीं होती।

बच्चे उस मौक़े पर दूसरों की हमदर्दी और तवज्जो के मुस्तहिक़ होते हैं,ऐसे मौक़े पर उन यतीमों की हर मुम्किन दिल जोई की जाए ताकि वो सदमे से शऊरी कोशिश के साथ जल्द ही निकल सकें। अल्लाह ताला यतीमों के बारे में इंसान को यही सोच देकर होश दिलाते हैं ।

وَلْيَخْشَ الَّذِينَ لَوْ تَرَكُوا مِنْ خَلْفِهِمْ ذُرِّيَّةً ضِعَافًا خَافُوا
عَلَيْهِمْ فَلْيَتَّقُوا اللَّهَ وَلْيَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا ــ النساء:٩

"और लोगों को चाहिए (वो इस बात से) डरें कि अगर वो भी अपने पीछे ननहें बच्चे छोड़ जाते तो उनको इस बारे में ख़ौफ़ होता (कि उनके मरने के बाद इन बिचारों का क्या होगा) पस चाहिए कि अल्लाह से डरते हुए जची तुली दुरुस्त बात कहा करें"।

नबी करीमﷺ ख़ुद पैदाइशी यतीम थे और यतीमों की मेहरूमियों को ख़ूब समझते थे,इसी लिए यतीमों के साथ ख़ुद भी ज़िंदगी भर हद दर्जे शफ़क़्क़तो रहमत फ़रमाते रहे और दूसरों को भी इसकी ख़ुसूसी तल्क़ीन करते रहे ।

सय्यदना जाफ़रؓ की शहादत के बाद नबी करीमﷺ आले जाफ़र के पास तशरीफ़ लाए तो फ़रमायाः "आज के बाद मेरे भाई को ना रोना और मेरे दोनों भतीजों को बुलाओ" अब्दुल्लाह बिन जाफ़रؓ बयान करते हैं कि जब हम आपﷺ की ख़िदमत में हाज़िर किए गए तो बहुत छोटे थे,आपﷺ ने फ़रमाया, "हज्जाम के बुलाओ" हज्जाम ने आकर हमारे सर मूँड दिए (बच्चों की ज़ाहिरी हालत दुरुस्त रखने को)

© AL HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

फिर आपﷺ फ़रमाने लगे,“मोहम्मदؓ तो बिल्कुल हमारे चचा अबू तालिब का हमशक्ल है और अब्दुल्लाहؓ शक्ल और अख़्लाक़ में मुझ से मिलता जुलता है ” फिर मेरा हाथ बुलंद करके दुआ फ़रमाई, “ऐ अल्लाह! ख़ान्दाने जाफ़र का वली बनजा, अब्दुल्लाह के हाथ (कमाई) में बर्कत डाल दे (ये दुआ तीन बार दोहराई)। फिर आपﷺ मेरी वालिदा से फ़रमाने लगे “ तुम्हें इनकी तंगदस्ती का फ़िक्र क्यों है ? मैं ख़ुद दुनिया और आख़िरत में इनका सर्परस्त हूँ”। (मुस्नद एहमद)

## (2) इज़्ज़तो अख़्लाक़ का बर्ताव

कमसिन यतीम के साथ ऐसी नरमी और अख़्लाक़ का बरताओ रखें जिस से ना कभी उसकी इज़्ज़ते नफ़्स मजरूह हो और ना ही वो बाप की कमी महसूस करे। ख़ुसूसन ईद वग़ैरा जैसे त्योहारों पर,तालिमी इदारों में दाख़िले के वक़्त जब वल्दियत की ख़ाना पूरी के लिए किसी सर्परस्त की ज़रूरत हो या घर में किसी ख़ुशी के मौक़े वग़ैरा पर उनके साथ हुस्ने तदबीर से मॉमला करना चाहिए। इर्शादे बारी ताला हैः

وَقُولُوا لَهُمْ قَوْلًا مَّعْرُوفًا(النساء:٨)

“और (यतीमों से भी) शीरीं कलामी (मीठी बात) से पेश आया करो”

فَأَمَّا الْيَتِيمَ فَلَا تَقْهَرْ(الضحى:٩)

“पस तुम यतीम पर सख़्ती ना किया करो”

وَأَمَّا إِذَا مَا ابْتَلَاهُ فَقَدَرَ عَلَيْهِ رِزْقَهُ فَيَقُولُ رَبِّي أَهَانَنِ - كَلَّا بَل لَّا تُكْرِمُونَ الْيَتِيمَ( الفجر:١٨,١٧ )

“और जब वो (अल्लाह) उस (इंसान) को आज़माता है तो उसकी रोज़ी तंग कर देता है तो वह (इंसान) कहने लगता है कि मेरे रब ने मेरी एहानत की,

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

हरगिज़ नहीं बल्कि तुम लोग यतीमों की इज़्ज़त नहीं करते हो."

रसूल अल्लाहﷺ भी यतीम के साथ हुस्ने सुलूक और उसके हुक़ूक़ की हिफ़ाज़त करने की कई मर्तबा ताकीद फ़रमाते। एक बार फ़रमाया,"ऐ अल्लाह! मैं दो कमज़ोरों (यतीम और औरत) के हक़ का ख़्याल ना रखने से डराता रहता हूँ"। (निसाई)

एक बार एक शख़्स ने अपनी सख़्त दिली की शिकायत नबी करीमﷺ से की तो आपﷺ ने फ़रमाया, "यतीम के सर पर हाथ फेरा करो और मिस्कीन को खाना खिलाया करो,तुम्हारा दिल नर्म हो जाएगा"। (मुस्नद एहमद)

तो अंदाज़ा हुआ कि यतीम के साथ अच्छा सुलूक करना और अख़्लाक़ से पेश आना कितना पसंदीदा है।

## (3) पर्वरिश और तालीमो तर्बियत

वालिद के वफ़ात पाजाने के बाद चूँकि ज़रिए माश नहीं रहता और ना तालीमो तर्बियत अकेली माँ के इख़्तियार की बात होती है लेहाज़ा इसी बात के पेशे नज़र कि यतीम बच्चा मेहरूमियों का शिकार होकर हाथ फैलाने पर मजबूर ना होजाए या फिर उसकी तालिमो तर्बियत में कोई कमी बेशी ना रह जाए,इस्लाम ने आम मुसलमानों पर ये ज़िम्मेदारी आइद करदी के उनकी,इस्लाह और तर्बियत का इन्तिज़ाम करें ।

وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْيَتَامَىٰ قُلْ إِصْلَاحٌ لَّهُمْ خَيْرٌ (البقرہ:٢٢٠)

"और आप (ﷺ) से यतीम के बारे में दर्याफ़्त करते हैं,

कह दीजिए कि उनकी (हालत की) इस्लाह बुहत अच्छा काम है"

وَيُطْعِمُونَ الطَّعَامَ عَلَىٰ حُبِّهِ مِسْكِينًا وَيَتِيمًا وَأَسِيرًا (الدهر:٨)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

"नेक बख़्त हैं वो लोग जो अल्लाह की मोहब्बत में यतीम,मिस्कीन और क़ैदियों को खाना खिलाते हैं"।

रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, "मैं और यतीम की पर्वरिश का ज़िम्मेदार दोनों जन्नत में इस तरह साथ रहेंगे जिस तरह ये दोनों हैं"। और शहादत और दर्मियान वाली उँगली इशारा करके बताई और दर्मियान में बहुत कम फ़ासला बहुत कम फ़ास्ला रखा। (बुख़ारी)

नबी करीमﷺ ने खुद भी यतीमों के साथ हुस्ने सुलूक की मिसालें क़ाइम कीं।

बशरؓ बिन अक़्बा जहनी कहते हैं कि जंगे ओहद के दिन मेरी रसूल अल्लाह ﷺ से मुलाक़ात हुई तो मैं ने पूछा के मेरे वालिद का क्या हुआ?

आपﷺ ने फ़रमाया, "वो तो शहीद हो गए अल्लाह ताला उनपर रहम फ़रमाए"।

मैं ये सुनकर रोने लगा। नबी ﷺ ने मुझे पकड़ कर मेरे सर पर हाथ फेरा और अपने साथ सवारी पर सवार कर लिया और फ़रमाया, "क्या तुम इस पर राज़ी नहीं हो कि मैं तुम्हारा बाप बन जाऊँ और आएशा तुम्हारी माँ"। (बुख़ारी)

## सिर्फ़ ज़रूरतन मुनासिब सख़्ती

अस्मा बिन उबैदؓ फ़रमाते हैं कि मैं ने इब्ने सीरीन से अर्ज़ किया कि मेरे पास एक यतीम है तो उन्होंने फ़रमाया,उसके साथ ऐसा ही मॉमला करो जैसा तुम अपने बेटे के साथ मॉमला करते हो (तर्बियत की ख़ातिर ज़रूरत पड़े तो) उसको उतना ही मारो जितना तुम अपने बेटे को मारते हो (उस से ज़्यादा नहीं)।

(الادب المفرد از امام بخاری)

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

## मालदार यतीम

यतीम के लिए उसके वालिद ने अगर इतना माल छोड़ा है कि किसी और को उस माल की देख भाल और इन्तेज़ाम दारी का ज़िम्मा उठाना पड़ता है,तो उस ज़िम्मेदार शख़्स का फ़र्ज़ है कि उन यतिमों को बेआसरा और कमज़ोर समझ कर उन का माल खाने या दीगर हक़ तल्फ़ियाँ करने का मुर्तकिब ना हो और अल्लाह ताला से डरते हुए उसके बताए हुए एहकामात के मुताबिक़ उस माल की हिफ़ाज़त करे और उनपर ख़र्च करे ।

وَابْتَلُوا الْيَتَامَىٰ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغُوا النِّكَاحَ فَإِنْ آنَسْتُم مِّنْهُمْ رُشْدًا
فَادْفَعُوا إِلَيْهِمْ أَمْوَالَهُمْ وَلَا تَأْكُلُوهَا إِسْرَافًا وَبِدَارًا أَن يَكْبَرُوا
وَمَن كَانَ غَنِيًّا فَلْيَسْتَعْفِفْ وَمَن كَانَ فَقِيرًا فَلْيَأْكُلْ بِالْمَعْرُوفِ
فَإِذَا دَفَعْتُمْ إِلَيْهِمْ أَمْوَالَهُمْ فَأَشْهِدُوا عَلَيْهِمْ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ حَسِيبًا –
(النساء:٦)

“और यतीमों को बालिग़ होने तक काम काज में मस्रूफ़ रखो फिर अगर उनमें अक़्ल की पुख़्तगी देखो तो उनका माल उनके हवाले करदो और इस ख़ौफ़ से के वो बड़े होकर (अपना माल वापस) ले लेंगे उसको फ़ुज़ूल ख़र्ची और जल्दी में ना उड़ादेना जो शख़्स आसूदा हाल हो उसको (ऐसे माल से बिल्कुल) पर्हेज़ करना चाहिए और जो मुफ़्लिस हो वो मुनासिब तौर पर (यानी बक़दरे ख़िदमत) कुछ लेले और जब उनका माल उनके हवाले करने लगो तो गवाह करलिया करो और हक़ीक़त में अल्लाह ही हिसाब लेने वाला काफ़ी है”।

وَآتُوا الْيَتَامَىٰ أَمْوَالَهُمْ وَلَا تَتَبَدَّلُوا الْخَبِيثَ بِالطَّيِّبِ وَلَا
تَأْكُلُوا أَمْوَالَهُمْ إِلَىٰ أَمْوَالِكُمْ إِنَّهُ كَانَ حُوبًا كَبِيرًا –
(النساء:٢)

“और यतीमों का माल उनको वापस करदो और उनका पाकीज़ा (उमदा) माल अपने नाक़िस माल से ना बदलो।

© AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

और ना ही उनका माल अपने माल में मिला कर खाओ कि ये बड़ा सख़्त गुनाह है"।

إِنَّ الَّذِينَ يَأْكُلُونَ أَمْوَالَ الْيَتَامَىٰ ظُلْمًا إِنَّمَا يَأْكُلُونَ فِي بُطُونِهِمْ
نَارًا ۖ وَسَيَصْلَوْنَ سَعِيرًا – (النساء:١٠)

"बेशक जो लोग यतीमों का माल (नाजाइज़ तौर पर) ज़ुल्म से खाते हैं वो अपने पेटों में आग भरते हैं और वो दोज़ख़ में डाले जाएंगे"।

सय्यदना अबू हुरैराؓ नबी करीमﷺ से रिवायत करते है:

"सात हलाक करदेने वाली चीज़ों से बचो"। सहाबा करामؓ ने अर्ज़ किया कि वो क्या है? तो आपﷺ ने फ़रमाया:

"अल्लाह के साथ शिर्क करना और जादू करना और किसी जान का क़त्ल जिसे अल्लाह ने क़त्ल करना हराम ठहराया हो (अल्बत्ता किसी हक़ के साथ जाइज़ है) और सूद खाना और यतीम के माल को खाना और लड़ाई के दिन सफ़ों से भाग जाना और पाक दामन मोमिन औरतों पर तोहमत लगाना"। (मुत्तफ़िक़ अलैह)

## रबीबा

यतीम बच्ची जो अभी निकाह और रुख़्सती की उमर को नहीं पहुँची,अपनी वलिदा के निकाहे सानी के बाद सोतेले वालिद की "रबीबा" कहलाती है।

रबीबा उस शख़्स के ज़ेरे पर्वरिश होने या ना होने दोनों ही सूरतों में उसकी बेटी ही की मसल (तरह) है यानी बीवी की बेटी हर हाल में निकाह के लिए हराम है।

सय्यदा उम्मे हबीबाؓ और सय्यदा उम्मे सलमाؓ की भी पहले शोहरों से बच्चियाँ थीं जिनको नबी करीमﷺ ने अपने साए शफ़क़त में ले लिया और इस तरह उन्होंने आग़ोशे नबुव्वत में पर्वरिश व तर्बियत पाई और अपने वक़्तों की बेहतरीन फ़क़ीहा और मुअल्लिमा साबित हुईं। (बहवाला सीरा सहाबियात)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

# बच्चे की मौत

औलाद के लिए वालिदैन की मोहब्बत किसी तार्रुफ की मोहताज नहीं, इंसान तो क्या बेज़रर चरिंद परिंद से लेकर वेहशी तरीन हैवान तक अपने बच्चों के मॉमले में इंतेहा दर्जा शफ़क़्क़त और दिल में नर्म तरीन गोशा रखते हैं,

इस मोहब्बत और ताल्लुक़ का एक नमूना या मुज़ाहिरा हमें रोज़ की ज़िंदगी में रुनुमा होने वाले इस रिक़्क़त आमेज़ मंज़र में भी नज़र आता है जब मौत किसी इंसान या हैवान वालिदैन से उस की औलाद छीन ले जाती है

## बहतरीन सिला

मुसलमान वालिदैन के लिए उन बेसुध कर देने वाले लम्हात में भी अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने अमल की राह रखी है और उस राह पर सब्रो तस्लीम से चलने वाले के लिए अपनी जन्नत इनाम करने का वादा फ़रमाया है,सच है जितनी बड़ी मशक़्क़त उतना बड़ा सिला।

औलाद की जुदाई के सदमें से जहाँ बड़े बड़े पहाड़ जैसे मज़्बूत दिल लोगों को पिघल्ते देखा गया है वहाँ तारीख़ के पसे मंज़र में ऐसे ही एक मौक़े पर ग़ैर मामूली सब्रो ज़ब्त और बरदाश्त की क़ाइम की गई इस मिसाल को याद रखना भी ज़रूरी है जो औलाद के बिछड़ जाने पर ग़मज़दा वालिदैन को सब्र का बहतरीन सबक़ देती है ।

सय्यदना अनस ؓ फ़रमाते हैं:

सय्यदना अबू तल्हा ؓ का एक बच्चा (अबू उमैर) बीमार हुआ,फिर इन्तिक़ाल कर गया,इन्तिक़ाल की उनको ख़बर ना थी,उनकी एहलिया (उम्मे सुलैम ؓ) ने देखा के बच्चा वफ़ात पा गया है तो (नेहला धुलाकर) घर के एक तरफ़ लिटा दिया फिर कुछ खाना पकाया,अबू तल्हा ؓ आए तो पूछा “बच्चा कैसा है” उन्होंने अर्ज़ किया, “अब तो पुर सुकून मालूम होता है,मेरा ख़्याल है आराम कर रहा होगा” फिर खाना हाज़िर किया और बिस्तर लगा दिया (रात शौहर ने सोहबत भी की)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

सुब्ह जब उठे तो ग़ुस्ल किया बाहर जाने लगे तब बच्चे के इन्तिक़ाल की ख़बर दी।

अबू तल्हा ने सुब्ह नबी करीम ﷺ के साथ नमाज़ पढ़ी और ख़िदमते अक़्दस में सारा क़िस्सा अर्ज़ किया। नबी ﷺ ने दुआ दी कि अल्लाह ताला उस रात में तुम्हारे लिए बर्कत अता फ़रमादें चुनाँचे (उस रात की बर्कत से उनके बेटा पैदा हुआ और उस समैत) अबू तल्हा के नौ बच्चे पैदा हुए और सब के सब क़ुरआन करीम के आलिम हुए" (बुख़ारी)

उम्मे सुलैम की अदा शनासी देखिए के किस तरह उन्होंने अपने शौहर को एक बड़ी ज़हनी कोफ़्त से बचाया जब्कि वो थके मांदे घर आए थे। उन्हें पुर सुकून देखने पर ये ख़बर दी और साबित किया कि बच्चे की जुदाई पर मैं भी सब्र का पैकर हूँ।

## जन्नत के हक़्दार

ईमान लाने वालों पर हर हाल में अल्लाह सुभानहू व ताला अपनी रेहमत इनाम करता है, वालिदैन वफ़ात पा जाएं तब भी नेक औलाद ज़िंदगी भर दुआओं और नेक आमाल के ज़रिए उनके वासते अज्र और दरजात में बुलंदी का बाइस बनती है,और वालिदैन जिंदा हों और औलाद वफ़ात पाजाएं तब भी वो वालिदैन के लिए पेशरो बनकर उन्हें अज्र दिलाती है।

अगले सफ़्हात पर दर्जे ज़ैल अहादीस से पता चलता है कि मोमिनों के बच्चे जो बालिग़ होने से पहले ही वफ़ात पा जाते हैं ख़ुद भी जन्नत में भेजे जाएंगे और उनके वालिदैन भी उनके सब्र करने की वज्ह से जन्नत के हक़्दार होंगे।

बरा कहते हैं,जब इब्राहीम (फ़रज़ंदे रसूल ﷺ) फ़ौत हुए तो रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमायाः

"इब्राहीम को जन्नत में दूध पिलाने वाली अन्ना मौजूद है"। (बुख़ारी)

©AL HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

## ग़मज़दा बाप के लिए बशारत

क़ुर्रतुल मज़नीؓ बयान करते हैं कि नबीﷺ जब तशरीफ़ रखते तो कई एक सहाबा करामؓ आपﷺ की ख़िदमत में आकर बैठ जाते। इनमें से एक साहब का छोटा सा बच्चा था वो उसे पुश्त पर उठा कर लाया करते और अपने सामने बिठा लेते। एक रोज़ रसूल अल्लाहﷺ ने दर्याफ़्त फ़रमाया, “क्या तुम इस से मोहब्बत करते हो?”

उन्होंने अर्ज़ किया, 'या रसूल अल्लाह! अल्लाह ताला आप से ऐसी मोहब्बत फ़रमाए जैसी मैं इस से मोहब्बत करता हूँ'।

अब हुआ ये कि वो बच्चा फ़ौत होगया चुनाँचे वो सहाबी अपने बेटे की याद और ग़म की वज्ह से बहुत दिनों तक रसूल अल्लाहﷺ की मेहफ़िल में हाज़िर ना होसके। आपﷺ ने जब उनको कुछ रोज़ ना देखा तो दर्याफ़्त फ़रमाया, “मैं फ़ुलाँ आदमी को नहीं देख रहा?” सहाबा कराम नेؓ बताया के उनका जो बच्चा आप ने देखा था वो फ़ौत हो गया है। चुनाँचे आपﷺ ने उनसे मुलाक़ात की और बच्चे के बारे में उन्हें तसल्ली देते हुए फ़रमायाः

“कोन सी सूरत तुम्हें पसंद है,तुम दुनयावी ज़िंदगी में उससे फ़ायदा हासिल करते या तुम्हें ये ज़्यादा पसंद है कि कल को (आख़िरत में) वो आगे बढ़कर तुम्हारे लिए जन्नत का दरवाज़ा खोलदे?” उन्होंने अर्ज़ किया! 'या नबी अल्लाह 'बल्कि मुझे ये ज़्यादा पसंद है कि वो आगे बढ़कर मेरे लिए जन्नत का दरवाज़ा खोल दे'। इसपर आपﷺ ने फ़रमायाः

“ये तो तुम्हारे लिए तैय हो ही चुका है”।

एक अंसारी ने दर्याफ़त किया, 'ऐ अल्लाह के रसूल (अल्लाह मुझे आप पर फ़िदा करे)! 'क्या ये इन ही की ख़ुसुसियत है या हम सब के लिए है ?'

आपﷺ ने इर्शाद फ़रमाया, “बल्कि तुम सबके लिए है”। (निसाई,मुस्तदरक हाकिम)

© ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

एक और मौक़े पर अल्लाह के रसूलﷺ ने फ़रमाया, 'ये छोटे बच्चे अपने बाप का दामन पकड़लेंगे और जब तक उसे जन्नत में ना पहुँचादें उसका दामन ना छोड़ेंगे"। (मुस्लिम)

एक और क़ाबिले ज़िक्र हदिसे क़ुदसी है,अबू मूसा अश्अरीؓ कहते हैं,रसूल अल्लाहﷺ ने फ़रमाया,जब मोमिन का बच्चा फ़ौत होता है तो अल्लाह ताला फ़रिशतों से पूछते हैं (हालाँकि सब कुछ जानते हैं) "क्या तुमने मेरे बंदे के बच्चे की रूह क़ब्ज़ करली?"

फ़रिशते कहते हैं, "जी हाँ"।

अल्लाह ताला फ़रमाते हैं, क्या तुमने मेरे बन्दे के जिगर का टुकड़ा ले लिया

फ़रिशते कहते हैं, "जी हाँ"।

अल्लाह ताला फ़रमाते हैं, "फिर मेरे बंदे ने क्या कहा?"

फ़रिशते कहते हैं, 'उसने आपकी हम्द बयान की और पढ़ा "اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا~اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ"

फिर अल्लाह ताला इर्शाद फ़रमाते हैं "मेरे बंदे के लिए जन्नत में एक घर बनादो और उसका नाम "बैतुल्हम्द" रखो"। (मुस्नद एहमद)

बू हुरैराؓ ने रसूल अल्लाह ﷺ से रिवायत किया हैः

"जिस मुसलमान के तीन बेटे वफ़ात पा जाएं जो गुनाह (की उमर यानी जवानी) को नहीं पहुंचे तो अल्लाह ताला सिर्फ़ उन बच्चों की रेहमत की वजह से उसको जन्नत में लेजाएंगे"। (बुख़ारी)

## ग़मज़दा माँ के लिए बशारत

मंदर्जा ज़ैल अहादिसे मुबार्का में आपﷺ माओं को उनकी औलाद की वफ़ात पर जन्नत और वहाँ ज़खिरा होने वाले अज्र की खुशख़बरी सुनाकर तसल्ली देते हैं।

उसामा बिन ज़ैदؓ फ़रमाते हैं कि रसूल अल्लाहﷺ की किसी साहबज़ादीؓ ने पैग़ाम भेजा कि बच्ची या बच्चा हालते नज़ा में है (एक और रिवायत के मुताबिक़ बीमार का नाम उमैमा बिन्त ज़ैनब था)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

चुनाँचे आप हमारे हाँ तशरीफ़ ले आएं। आपﷺ ने वापसी पैग़ाम में सलाम भेजकर फ़रमायाः "अल्लाह ताला जो भी लेता है या देता है,वो सब उसी का है और हर चीज़ का एक वक़्त मुक़र्र है,लिहाज़ा सब्र करो और अज्र की तलबगार रहो"। (बुख़ारी)

अबू सईदؓ कहते हैं कि औरतों ने नबी करीमﷺ की खिदमत में अर्ज़ किया, 'आप हमारे लिए (वाज़ो नसिहत का) एक दिन मुक़र्रर फ़रमा दीजीए'। तो आपﷺ ने उन को नसिहत करते हुए फ़रमाया, "जिस औरत के तीन बच्चे फ़ौत होजाएं (और वो सब्र करे) तो वो बच्चे उसके लिए जहन्नम की आग से रुकावट होंगे"।

एक औरत ने पूछा,जिस औरत के दो बच्चे फ़ौत हों ---

इरशाद फरमायाः दो बच्चे भी जहन्नम की आग से रुकावट होंगे- (बुख़ारी)

एक अंसारी औरत के बच्चे की वफ़ात के बाद रसूल अल्लाहﷺ ने उस से फ़रमायाः

"मुझे मालूम हुआ के तुमने अपने बच्चे पर जज़ा फ़ज़ा की है"। फिर आपﷺ ने उसे अल्लाह के तक़्वा और सब्र की तल्क़ीन फ़रमाई। वो कहने लगी, 'या रसूल अल्लाह! मैं क्यों ना जज़ा फ़ज़ा करूँ, मैं ऐसी औरत हूँ जो "रक़ूब"है (जिसका बच्चा ज़िंदा ना बचे) और मेरा सिर्फ़ यही बच्चा था।

आपﷺ ने फ़रमाया, "रक़ूब तो वो है जिसका बच्चा बाक़ी रहे"। फिर फ़रमायाः

"जिस मुसलमान औरत या मर्द के तीन बच्चे फ़ौत होजाएं और वो अल्लाह से अज्र का तलबगार रहे तो अल्लाह ताला उसे बच्चों की वज्ह से जन्नत में दाख़िल करेंगे"।

सय्यदना उमरؓ ने मालूम किया, 'मेरे वालिदैन आप पर क़ुर्बान और दो बच्चों का क्या हुक्म है?'

आपﷺ ने फ़रमाया, "हाँ दो की वजह से भी"। (अल्हाकिम)

(छोटे बच्चों की वफ़ात पर इतना अज्र है तो पाल पोस कर बड़े किए हुए बच्चों की वफ़ात पर और भी ज़्यादा अज्र होगा,बशर्तयेकि सब्र किया जाए, वल्लाहुआलम)

© AL HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

## ग़ुस्ल व तक्फ़ीन

मुसलमान के नाबालिग़ बच्चे के लिए भी ग़ुस्ल ऐसे ही ज़रूरी है जैसे बालिग़ मुसलमान के लिए,ख़्वा उसका सारा जिस्म मेहफ़ूज़ है या किसी वज्ह से जिस्म का कुछ हिस्सा ही रह गया है (सिवाए मैदाने जंग में शहीद होने वाले मुसलमान के)

ग़ुस्ल देने के लिए छः साल या उस से कम उमर के लड़के को औरत नहला सकती है, मगर मर्द नाबालिग़ बच्ची को ग़ुस्ल नहीं दे सकता। उल्मा ने इसे ग़ैर दुरुस्त क़रार दिया है ।

बच्चों की मय्यत को (नए कपड़े पहनाने कि बजाए) कफ़न ही में लपेट कर दफ़्नाना चाहीए,नए कपड़ों के हक़्दार मुर्दा की बजाए ज़िंदा बच्चे हैं।

## नमाज़े जनाज़ा

इब्ने शहाब का क़ौल है कि हर बच्चे पर जो फ़ौत होजाए,जनाज़े की नमाज़ पढ़ी जाएगी अगरचे वो जाइज़ औलाद ना भी हो,इस लिए कि वो इस्लाम की फ़ित्रत पर पैदा हुआ। उसके माँ बाप दोनों मुसलमान हों या सिर्फ़ बाप मुसलमान हो अगरचे उसकी माँ मुसलमान ना हो। जब बच्चा पैदा होते वक़्त आवाज़ निकाले तो उसपर नमाज़े जनाज़ा पढ़ी जाए और अगर आवाज़ ना निकाले तो नमाज़ नहीं है क्योंकि वो "कच्चा बच्चा" (Pre mature) है । (बुख़ारी)

**वज़ाहतः** कच्चा बच्चा से मुराद है मरा हुआ पैदा हुआ और साँस लेना भी शुरू नहीं किया था। अल्बत्ता फ़ित्रते इस्लाम पर पैदा होने का मतलब इस हदीसे रसूलﷺ से वाज़ेह हैः

फ़रमाया, "हर एक बच्चा फ़ित्रते इस्लाम यानी तौहीद पर पैदा होता है फिर उसके माँ बाप उसको यहूदी,नस्रानी या पारसी बना देते हैं"। (बुख़ारी)

एक और हदीसे रसूलﷺ से ये भी यही हुक्म साबित हैः

"बच्चे की नमाज़े जनाज़ाह अदा की जाएगी और उसके वालिदैन के लिए मग़फिरत व रहमत की दुआ की जाएगी"। (अबी दाऊद)

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

हसन बसरीؓ ने एक बच्चे पर नमाज़े जनाज़ाह पढ़ी जिसमें सूरह-अल्फ़ातिहा के बाद ये दुआ कीः

اَللّٰھُمَّاجْعَلْہُ\اجْعَلْھالَنَاسَلَفًاوَّفَرَطًاوَّذُخْرًاوَّأَجْراً

“ऐ अल्लाह! बनादे इस बच्चे/बच्ची को हमारे लिए पेशवा
और पेशरो और ज़ख़ीरा और बाइसे अज्र” (बुख़ारी)

मुग़ीराؓ बिन शोबा से मरवी है कि रसूल अल्लाहﷺ ने फ़रमाया, “सवार जनाज़े के पीछे चले और पैदल की जहाँ मरज़ी हो चले और छोटे बच्चे पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ी जाए”। (सुनन निसाई)

उम्मुल मोमिनीन सय्यदा आएशाؓ से मरवी है कि रसूल अल्लाहﷺ की ख़िदमत में अंसार के एक बच्चे का जनाज़ाह लाया गया ताकि आप उस पर नमाज़े जनाज़ाह पढ़ें। सय्यदा आएशाؓ फ़रमाती हैं, 'मैं ने उसके लिए यूँ कहा कि ये जन्नत की चिड़ियों में से एक चिड़िया है जिसने ना तो कोई गुनाह किया है ना गुनाह वाले कामों की समझ है (यानी छोटा मासूम बच्चा है)'। इसपर नबीﷺ ने फ़रमायाः

“ऐ आएशा! इसके अलावा मज़ीद भी (कुछ कहना है मुझे) और वो ये कि अल्लाह ताला ने जन्नत बनाई और उस में रहने वाले भी पैदा फ़रमा दिए और उनको उनके आबाओ अज्दाद की पुशतों से पैदा फ़रमाया”। (सुनन निसाई)

## हक़ीक़ी ख़ैरख़्वाह कौन?

इंसान के हक़ीक़ी ख़ैरख़्वाह और उससे बेलोस मोहब्बत करने वाले उसके वालिदैन होते हैं। उनमें से कोई एक भी उसके साथ क़ब्र में दाख़िल नहीं होता,बल्कि उनमें से किसी एक को ये ख़बर तक नहीं होती के उसके लख़्ते जिगर के साथ क़ब्र में क्या पेश आरहा है। अगर उसे वहाँ अज़ाब हो रहा हो तो वो उसकी कोई मदद नहीं कर सकते। अगर माँ बाप अपने प्यारे बच्चे की क़ब्र में कुछ मदद नहीं कर सकते तो दूसरा कौन है जो ऐसी हिम्मत करे ? इस इंसान को नेक अमल के साथ अपनी मदद आप करना चाहिए। और ज़िंदगी में कोई ऐसा अमल नहीं करना चाहिए जो क़ब्र में बुरे साथी की सूरत में उसके साथ रहे।

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

# शहादत

## (अज़ीम मारकए हयात)

### शहादत क्या है?

मैदाने जंग में जो मुसलमान जानो माल से सिर्फ़ अल्लाह की ख़ातिर लड़ता है,और कुफ़्रो शिर्क को मिटाने और अल्लाह की वेहदानियत का बोलबोला करने के लिए क़त्ल करता है और उस मारके में ख़ुद भी क़त्ल हो जाता है वो 'शहीद' है।

### क़ुरआन में शहादत की फ़ज़ीलत

शहीद अल्लाह के हाँ ख़ास तक़र्रुब और इम्तियाज़ी दर्जा पाते हैं,उन्हें पहला एज़ाज़ ये हासिल होता है कि मौत की बजाए एक नई ज़िंदगी अता करदी जाती है जो हमारी ज़िंदगी से मुख़्तलिफ़ है और वो वहाँ रिज़्क़ दिए जाते हैं।

इर्शाद बारी ताला है:

وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ قُتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَاتًا ۚ بَلْ أَحْيَاءٌ عِندَ رَبِّهِمْ
يُرْزَقُونَ - فَرِحِينَ بِمَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِن فَضْلِهِ - (आले इम्रान:169,170)

"और जो लोग अल्लाह की राह में क़तल किए गए,उन्हें मुर्दा मत समझो,बल्कि ज़िंदा हैं अपने रब के पास रिज़्क़ दिए जाते हैं,अल्लाह के दिए हुए फ़ज़्ल पर ख़ुश हैं"।

وَلَا تَقُولُوا لِمَن يُقْتَلُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَاتٌ ۚ بَلْ أَحْيَاءٌ
وَلَٰكِن لَّا تَشْعُرُونَ – (अल बक़रा:154)

"और अल्लाह की राह में क़त्ल होने वालों को मुर्दा ना कहो,बल्कि वो ज़िंदा हैं,लेकिन तुम (ऐसी ज़िंदगी का) शऊर नहीं रखते"।

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَالَّذِينَ قُتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَلَن يُضِلَّ أَعْمَالَهُمْ – سَيَهْدِيهِمْ
وَيُصْلِحُ بَالَهُمْ - وَيُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ عَرَّفَهَا لَهُمْ – (मोहम्मद:4,5,6)

“जो लोग अल्लाह की राह में मार दिए जाते हैं,अल्लाह उनके आमाल हरगिज़ ज़ाए ना करेगा,उन्हें राह दिखाएगा,और उनके हालात की इस्लाह कर देगा और उन्हें उस जन्नत में ले जाएगा जिस से उन्हें शनासा कर दिया गया है”।

## हदीस में शहादत की फ़ज़ीलत

एक हदीस मुबार्का में हमें शहादत के फ़ज़ाइल यूँ बताए गए हैं:

(1) पहला क़तरा गिरते ही बख़्शिश हो जाएगी ।

(2) जन्नत में अपना ठिकाना देख लेगा,और अज़ाबे क़ब्र से महफ़ूज़ करदिया जाएग।

(3) क़यामत की घब्राहट से महफ़ूज़ रखा जाएगा ।

(4) ज़ेवरे ईमान से आरास्ता होगा ।

(5) सत्तर क़रीबी रिश्तेदारों के हक़ में उसकी शफ़ाअत (सिफ़ारिश) अल्लाह के इज़्न से क़ुबूल होगी ।

(6) ख़ूबसूरत आँखों वाली हूरों से निकाह होगा। (सुनन इब्ने माजा)

## आख़िरत को दुनिया पर तर्जीह

जिहाद फ़ीसबीलिल्लाह में जान जैसी प्यारी चीज़ का नज़्राना पेश करने वाले मुजाहिद का मत्मए नज़र ना दुनिया का माले जाह होता है और ना ही उसको घर,ख़ानदान,आराम वग़ैरा का ख़्याल अल्लाह के रास्ते में जाने से रोकता है बल्कि अल्लाह का वादए इनामात उसे आख़िरत को दुनिया की ज़िंदगी पर तर्जीह देने पर उभारता रेहता है ।

इर्शादे बारी ताला है:

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ﭐ فَالَّذِينَ هَاجَرُوا وَأُخْرِجُوا مِن دِيَارِهِمْ وَأُوذُوا فِي سَبِيلِي وَقَاتَلُوا وَقُتِلُوا لَأُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَلَأُدْخِلَنَّهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ثَوَابًا مِّنْ عِندِ اللَّهِ وَاللَّهُ عِندَهُ حُسْنُ الثَّوَابِ –

आले इमरान:195

..तो जो लोग मेरी ख़ातिर घर छोड़ गए और अपने घरों से निकाले गए और मेरी राह में अज़ियत दिए गए और लड़े और क़त्ल किए गए, मैं उनके गुनाह दूर कर दूँगा और उनको जन्नतों में दाख़िल करूँगा, जिन्के नीचे नहरें बहतीं हैं। यही अल्लाह के हाँ बदला है और अल्लाह के हाँ अच्छा बदला है ...।

وَلَئِن قُتِلْتُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَوْ مُتُّمْ لَمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللَّهِ وَرَحْمَةٌ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ –

(आले इमरान:157)

और अगर तुम अल्लाह के रास्ते में क़त्ल किए जाओ या अपनी (तबई) मौत मर जाओ,तो जो (माल) लोग जमा करते हैं, उससे अल्लाह की बख़्शिश और रहमत कहीं बेहतर है..।

فَلْيُقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ الَّذِينَ يَشْرُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا بِالْآخِرَةِ وَمَن يُقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَيُقْتَلْ أَوْ يَغْلِبْ فَسَوْفَ نُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا – (अल निसा:74)

तो जो लोग आख़िरत (को ख़रीदते और उस) के बदले दुनिया की ज़िंदगी को बेचना चाहते हैं, उनको चाहिए कि अल्लाह की राह में जंग करें।और जो शख़्स अल्लाह की राह में जंग करे, फिर शहीद होजाए या ग़ल्बा पाए हम अन्क़रीब उसको बड़ा सवाब देंगे ..।

## बिला ताख़ीर शहादत

अल्लाह ताला की राह में जिहाद का शौक़ रखने वाले,आख़िरत का अज्र पाने की

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

कोशिशों में कितनी जल्दी करते हैं। जाबिर बिन अब्दुल्लाह अंसारी कहते हैं एक शख़्स (मुस्लिम की रिवायत में उस शख़्स का नाम उमैर बिन हमाम बताया गया है) ने जंग ओहद के दिन अल्लाह के रसूलﷺ से अर्ज़ किया, फ़रमाइए! अगर मैं मारा जाऊँ तो(मारे जाने के बाद) कहाँ जाऊंगा'?

आपﷺ ने फ़रमाया,"बहिश्त में" उस शख़्स ने ये सुनकर जो खजूरें खा राहा था उन को अपने हाथ से फेंक दिया फिर लड़ता रहा यहाँ तक कि मारा गया (शहीद होगया)। (बुख़ारी)

## वापस आने की तमन्ना

रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, "जन्नत में दाख़िल होने वालों को ज़मीन पर जो कुछ है अगर वो सब देदिया जाए तो फिर भी वो इस दुनिया में आना नहीं चाहेंगे, सिवाए शहीद के। वो उस इज़्ज़तो इक्राम की बिना पर जो उसे मिला तमन्ना करेगा कि वो दुनिया में फिर वापस जाए और दस बार (अल्लाह की राह में इसी तरह) मारा जाए"। (मुत्तफ़िक़ अलैह)

## लज़्ज़ते शहादत

हदीस पाक हैः

जो शख़्स नेक अमल करके दुनिया से जाता है उसे अल्लाह के हाँ इस क़दर पुरलुत्फ़ और पुरकैफ़ ज़िंदगी मयस्सर आती है कि वो कभी दुनिया में वापस आने की तमन्ना नहीं करता,मगर शहीद उस से मुस्तस्ना है,वो तमन्ना करता है कि फिर दुनिया में भेजा जाए और फिर उस लज़्ज़त,उस सुरूर और नशे से लुत्फ़ अंदोज़ हो जो राहे ख़ुदा में जान देते वक़्त हासिल होता है"। (मुस्नद एहमद)

## आर्ज़ूए शहादत

एक सच्चा मोमिन शहादत की मौत के लिए दिल से आर्ज़ू रखता है और ऐसा करना मस्नून है। नबी करीमﷺ ने ख़ुद अपनी ज़ाते अत्हर के लिए भी फ़रमायाः

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

"उस ज़ात की क़स्म जिसके हाथ में मेरी जान है,मैं पसंद करता हूँ कि अल्लाह की राह में क़त्ल किया जाऊँ,फिर ज़िंदा किया जाऊँ,फिर क़त्ल किया जाऊँ,फिर ज़िंदा किया जाऊं,फिर क़त्ल किया जाऊं,फिर ज़िंदा किया जाऊं,फिर क़त्ल किया जाऊं," (बुख़ारी)

## दुआए शहादत

शहादत की मौत के लिए दुआ करते रहना भी मुस्तहब है। सय्यदेना उमरؓ ये दुआ फ़रमाया करते थेः

اللّٰهُمَّ ارْزُقْنِیْ شَهَادَةً فِیْ سَبِیْلِكَ
وَجْعَلْ مَوْتِیْ فِیْ بَلَدِرَسُلِكَ

"ऐ अल्लाह!मुझे अपने रास्ते में शहादत दें और मेरी मौत आप के नबीﷺ के शहर में होः" बुख़ारी

> रसूल अल्लाहﷺ ने फ़रमायाः "जो यूँ मरा कि उसने ना जिहाद किया और ना दिल में उस का इरादा ही किया वो निफ़ाक़ के एक शोबे पर मरा"(मुस्लिम)

रसूल अल्लाहﷺ ने फ़रमाया, "जो सच्चे दिल से शहादत की दुआ माँगता है अल्लाह ताला उसको शोहदा के मर्तबों पर पहुँचा देंगे अगरचे उसे मौत अपने बिस्तर पर ही आए"।(मुस्लिम)

## इख़्लासे नियत

शहादत की मौत के लिए आर्ज़ू हो तो नियत का अल्लाह के लिए ख़ालिस होना ज़रूरी है।

सय्यदेना अबू हुरैराؓ कहते हैं कि रसूल अल्लाहﷺ ने फ़रमायाः "क़्यामत के दिन सब से पहले एक शहीद लाया जाएगा। अल्लाह ताला उसे अपनी नेमतें गिनवाएंगे और शहीद उन नेमतों का इक़्रार करेगा,अल्लाह ताला उस से पूछेंगे, "तूने उन नेमतों का हक़ अदा करने के लिए क्या अमल किया? "वो कहेगा, 'मैं ने तेरी राह में जंग की हत्ता के शहीद होगया' अल्लाह ताला (उसकी नियत का हाल पहले से जानते हुए) फ़रमाएंगे, "तू झूटा है,तूने बहादुर कहलवाने के लिए जंग की सो दुनिया में तूझे बहादुर कहा गया"।

© AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

फिर फ़रिश्तों को हुक्म होगा और वो उसे मूँह के बल घसीट कर जहन्नम में डाल देंगे। (मुस्लिम)

अबू मूसा से रिवायत है कि एक देहाती नबी ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया, 'या रसूल अल्लाह! एक आदमी तो माले ग़नीमत के लिए लड़ता है,एक इस लिए लड़ता है कि उसका चर्चा हो,एक लड़ता है ताकि उसका मक़ाम पहचाना जाए। दूसरी रिवायत में है कि कोई बहादुरी दिखाने के लिए लड़ता है,कोई क़ौमी व क़बाइली असबियत के लिए लड़ता है। एक और रिवायत में ये है कि कोई शख़्स (ज़ाती) ग़ुस्से के पेशे नज़र लड़ता है। पस उन में कौन अल्लाह के रास्ते में लड़ने वाला है?'

तो रसूल अल्लाहﷺ ने फ़रमाया, “जो शख़्स इस लिए लड़ता है कि अल्लाह का कलिमा बुलंद हो वही शख़्स अल्लाह की राह में लड़ने वाला है”। (मुत्तफ़िक़ अलैह)

## शहादत की आर्ज़ू और लड़ने की आर्ज़ू में फ़र्क़

बेहरहाल शहादत की आर्ज़ू और दुश्मन से लड़ने की आर्ज़ू रखने में इस तरह नुमायां फ़र्क़ है कि मोमिन लड़ने में पहल ना करे,अल्बत्ता अगर दुश्मन से मुडभेड़ हो जाए तो फिर शहादत की आर्ज़ू रखते हुए मुक़ाबले पर जम जाए ।

मंदर्जा ज़ैल हदीस से इसकी मज़ीद वज़ाहत हो जाती हैः

रसूल अल्लाहﷺ ने अपने बाज़ ऐसे दिनों में,जब आप का मुक़ाबला दुश्मनों से हुआ, इन्तिज़ार फ़रमाया यहाँ तक कि सूरज ढल गया। फिर आपﷺ ने लोगों को खड़े होकर फ़रमायाः

“ऐ लोगो! दुश्मन से लड़ने की आर्ज़ू मत करो और अल्लाह से आफ़ियत का सवाल करो लेकिन जब तुम्हारा उनसे मुक़ाबला हो जाए तो फिर साबित क़दम रहो और जान लो कि जन्नत तलवारों की छाँव में है। फिर यूँ दुआ फ़रमाईः “ऐ अल्लाह! किताब नाज़िल करने वाले,बादलों को चलाने वाले,दुश्मन के लशकरों को शिकस्त देने वाले,उनको शिकस्त दीजिए और उनके मुक़ाबले में हमारी मदद फ़रमाइए”। (मुत्तफ़िक़ अलैह)

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

## दुश्मन के शर से अल्लाह की पनाह

अबू मूसाؓ से रिवायत है कि नबी करीमﷺ किसी क़ौम से ख़ौफ़ महसूस करते तो ये दुआ फ़रमातेः

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَجْعَلُکَ فِیْ نُحُوْرِهِمْ وَنَعُوْ ذُ بِکَ مِنْ شُرُوْرِهِمْ (ابوداؤد)

"ऐ अल्लाह! हम आपको इनके मदमुक़ाबिल करते हैं और आप से इनकी शरारतों पर पनाह मांगते हैं" ।

## शहीद और क़र्ज़

मय्यत के क़र्ज़ की अदाएगी के लिए इस क़द्र ताकीद आई है कि शहादत जैसा रुतबा पाने वाला भी उस से बरिउज़्ज़िम्मा नहीं। अब्दुल्लाह बिन उमरो बिन अलआसؓ से रिवायत है कि रसूल अल्लाहﷺ ने फ़रमायाः "क़र्ज़ के अलावा शहीद के सारे गुनाह मॉफ़ कर दिए जाते हैं"। (मुस्लिम)

## ग़ुस्ल से मुबर्रा

अल्लाह की राह में शहीद होने वाले को ग़ुस्ल नहीं दिया जाएगा।

सय्यदना जाबिरؓ बिन अब्दुल्लाह से रिवायत है कि अल्लाह के रसूलﷺ ने ओहद के दिन शहीदों को ग़ुस्ल नहीं दिया और फ़रमायाः "मैं इनका गवाह हूँ,इन्हें ख़ून समैत लपेट दो। जो भी अल्लाह की राह में ज़ख़्म खाएगा वो क़यामत के दिन इस हाल में आएगा कि ख़ून टपक रहा होगा। जिसका रंग तो ख़ून का होगा लेकिन ख़ूशबू कस्तूरी की सी होगी"। (बैहक़ी)

एक और रिवायत में फ़रमायाः

"इन्हें ग़ुस्ल मत दो,इनके हर ज़ख़्म से रोज़े क़यामत कस्तूरी की ख़ूशबू भड़केगी"।

आपﷺ ने उनकी नमाज़े जनाज़ाह भी अदा नहीं फ़रमाई। (मुस्नद एहमद)

एक ग़ज़वा में नबीﷺ को अल्लाह ताला ने बहुत सारा माले ग़नीमत इनायत फ़रमाया,आपﷺ ने उसको तक़्सीम करने से पहले तमाम साथियों की मौजूदगी के मुताल्लिक़ दर्याफ़्त फ़रमाया ।

© AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

मालूम हुआ जुलैबीबؓ नज़र महीं आरहे। आपﷺ ने उन्हें तलाश करने का हुक्म फ़रमाया तो वो मक़्तूलीन में पाए गए उन सात आदमियों के क़रीब जो जुलैबीबؓ के हाथों क़त्ल हुए थे।

रसूल अल्लाहﷺ तशरीफ़ लाए और उनके क़रीब खड़े होकर फ़रमायाः

"इस ने सात आदमियों को क़त्ल किया,फिर उन्होंने इसे शहीद कर दिया,ये मेरा है और मैं इसका हूँ" ये बात आपﷺ ने दो तीन मर्तबा दोहराई। फिर आपﷺ ने अपने बाज़ूओं को फैला लिया,रावी का बयान है कि आपﷺ ने उन्हें अपने बाज़ूओं पर उठालिया। रसूल अल्लाहﷺ के बाज़ू ही उसकी चारपाई थे,(क़ब्र तक लेजाकर) उनको क़ब्र में लिटा दिया गया,रावी ने ग़ुस्ल का तज़्किरा नहीं किया। (मुस्लिम)

## फ़रिश्तों से ग़ुस्ल

ओहद के रोज़ हंज़लाؓ बिन आमिर की शहादत बयान करते हुए अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैरؓ रिवायत करते हैं कि रसूल अल्लाहﷺ ने इर्शाद फ़रमायाः "तुम्हारे साथी को फ़रिश्ते ग़ुस्ल दे रहे हैं,इनकी एहलिया से दर्याफ़्त करो" उनकी (एहलिया ने) बताया कि वो निदाए जिहाद सुनते ही निकल गए,हालाँकि वो जुँबी थे। तब रसूल अल्लाहﷺ ने इर्शाद फ़रमाया, "इसी लिए उन्हें फ़रिश्तों ने ग़ुस्ल दिया है"।

(तब से वो غَسِيْلُ الْمَلَـٰٓئِكَة मशहूर हुए) (हाकिम)

## शहीद का कफ़न

शहीद को वरदी समैत कफ़न की चादर में लपेटा जाएगा,इसकी दलील हमें मंदर्जा ज़ैल रिवायात से मिलती हैः

ख़ब्बाबؓ से रिवायत है कि मअसबؓ बिन उमैर ग़ज़वए ओहद में शहीद होगए। उन्होंने कुछ भी ना छोड़ा जिसमें कफ़न दिया जासकता। बस एक छोटी सी धारीदार चादर थी जिस से अगर हम उनका सर ढाँपते तो पाँव नंगे हो जाते और पाँव छुपाते तो सर बरहना (सर खुल जाता) हो जाता।

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

इस मौक़े पर रसूल अल्लाहﷺ ने फ़रमायाः “चादर को सर की तरफ़ डाल दो” एक दूसरी रिवायत में है कि फ़रमाया, “चादर से उसका सर ढाँप दो और पाँव पर अज़्ख़र घास रखदो”। (बुख़ारी)

सय्यदना अनसؓ का बयान है कि ओहद के मआर्के में मक़्तूलीन ज़्यादा थे और कपड़े कम। दो तीन को नबी करीमﷺ एक क़ब्र में जमा फ़रमा रहे थे और दर्याफ़्त फ़रमाते थे, 'क़ुरआन किसे ज़्यादा हिफ़्ज़ था?” फिर उसे लेहद में मुक़द्दम करदेते और दो तीन को एक ही कपड़े में कफ़न देते । (तिर्मिज़ी)

## शहीद के लिए नमाज़े जनाज़ाह

अल्लाह की राह में मारे जाने वाले (शहीद) की नमाज़े जनाज़ाह वाजिब होने की कोई वाज़ेह दलील नहीं मिलती। क्योंकि रसूल अल्लाहﷺ ने शोहदा पर बाज़ औक़ात नमाज़ पढ़ी और बाज़ शोहदा पर नहीं भी पढ़ी ।

सय्यदना शिदादؓ बिन अलहाद रिवायत करते हैं कि दिहात के रहने वालों में से एक शख़्स नबी पाकﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ,ईमान लाया और आपﷺ की इत्तिबा की फिर कहने लगा, 'मैं आपﷺ के साथ हिज्रत करूँगा,' नबीﷺ ने उस के मुताल्लिक़ बाज़ सहाबा करामؓ को वसियत फ़रमादी ।

फिर जब एक ग़ज़वा में चंद क़ैदी बतौर ग़नीमत हासिल हुए तो नबी करीमﷺ ने उन क़ैदियों को तक़्सीम फ़रमाया और उस शख़्स का हिस्सा भी मुतय्यन फ़रमाया । आपﷺ के सहाबा ؓउसका हिस्सा उसको पहुँचाने आए और वो उन (सहाबा करामؓ) के सवारी के जानवर चराया करता था। जब वो उसका हिस्सा देने लगे तो उसने दर्याफ़्त किया कि ये क्या है 'उन्होंने बताया कि ये तुम्हारा हिस्सा है जो नबीﷺ ने तुम्हें बख़्शा है' ।

उसने ये हिस्सा ले लिया और उसे लेकर नबी करीम के पास हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया, 'या रसूल अल्लाह! 'ये क्या है?'आपﷺ ने फ़रमाया,“मैं ने तुम्हारा हिस्सा निकाला है”।

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

उसने अर्ज़,'किया कि मैं मालो दौलत जमा करने की ग़र्ज़ से आप पर ईमान नहीं लाया था बल्कि मैं ने आप की पैरवी मेहज़ इसलिए की है कि (अल्लाह की राह में) मेरी इस जगह हलक़ पर तीर मारा जाए (हलक़ की तरफ़ इशारा किया) और मैं मरूँ फिर मैं जन्नत में दाख़िल हो जाऊँ'।

आपﷺ ने फ़रमायाः

“तुम सच्चे दिल से अल्लाह की तस्दीक़ करोगे तो अल्लाह भी तुम्हें सच्चा करेगा”

फिर कुछ अरसे के बाद लोग जिहाद के लिए उठे। (जिन में ये शख़्स भी शामिल हुआ) इतने में कुछ लोग उसे उठाए हुए नबीﷺ की ख़िदमते अक़्दस में लाए,उसे उसी जगह तीर लगा था जहाँ उसने हलक़ पर इशारा किया था। नबीﷺ ने दर्याफ़्त फ़रमाया, “क्या ये वही शख़्स है? ”लोगों ने बताया,“जी हाँ”।

आपﷺ ने फ़रमायाः

“अल्लाह ताला ने मुजाहिदीन की जो सिफ़ात इर्शाद फ़रमाई थीं इसने उनकी अमलन तस्दीक़ की और अल्लाह ने भी उसे सच्चा किया”। फिर नबीﷺ ने अपने जुब्बे में उसे कफ़न दिया,फिर उसे आगे रखा और उसकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ी तो आपﷺ की नमाज़ में जितना लोगों को सुनाई दे सका वो ये थाः

اَلّٰهُمَّ هٰذَاعَبْدُكَ خَرَجَ مُهَاجِرًا فِيْ سَبِيْلِكَ
فَقُتِلَ شَهِيْدًا اَنَا شَهِيْدًا عَلٰى ذٰلِكَ

“ऐ अल्लाह! ये आपका बंदा है,आपकी राह में हिज्रत करके निकला,
फिर शहादत पाई,मैं इस बात पर गवाह हूँ”। (सुनन निसाई)

नमाज़े जनाज़ाह दर्असल मय्यत के लिए अल्लाह ताला से की जाने वाली दुआए इस्तग़फ़ार है और शहीद
اولاً :अल्लाह ताला के इर्शाद के मुताबिक़ “मय्यत” यानी मुर्दा नहीं है,

ثانياً :अल्लाह ताला ने ख़ुद ही (इंसानों की तरफ़ से बख़्शिश तलब किए बग़ैर) शहीद के तमाम गुनाह (सिवाए क़र्ज़ के)

©ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

उसके ख़ून का पहला क़तरा गिरते ही मॉफ़ फ़रमा देने और अपने हाँ से फ़ज़्ल और इनामो इक्राम देने का वादा फ़रमाया है इस लिए उसपर नमाज़े जनाज़ा पढ़ने की ज़रूरत वाजिब नहीं समझी गई,अल्बत्ता शरअन जाइज़ है,वल्लाहू आलम।

सही बुख़ारी की एक रिवायत से आठ साल बाद ओहद के शहीदों के लिए नबीﷺ की तरफ़ से दुआए इस्तिग़फ़ार करने की जो हदीस मिलती है,तो वो आपﷺ की अपनी वफ़ात से क़ब्ल उन शहीदों की जानों की क़ुर्बानियों पर गवाही और एक अल्विदाई दुआ थी।

## शहादत की दूसरी अक़्साम

बारगाहे इलाही में इख़्लासे नियत से जान का नज़्राना पेश करने वाले हक़ीक़ी शहीदों के अलावा भी कुछ लोग हैं जो रुत्बए शहादत से नवाज़े जाएंगे और जिन्हें शहीदों की तरह अज्र दिए जाने की ख़ुशख़ब्री दी गई है,अल्बत्ता उनके लिए नमाज़े जनाज़ाह भी पढ़ी जाएगी और उन्हें ग़ुस्ल भी दिया जाएगा।

रसूल अल्लाह ﷺ अबदुल्लाह बिन रवाहा رضی की अयादत को तशरीफ़ लाए,वह इस्तक़बाल के लिए बिस्तर से उठ ना सके।

रसूल अल्लाहﷺ ने पूछा, 'तुम्हें मालूम है मेरी उम्मत के शोहदा कौन कौन हैं?"

सहाबा कराम ने अर्ज़ किया, 'मुसलमान का क़त्ल होना शहादत है' आपﷺ ने फ़रमायाः

"इस सूरत में तो मेरी उम्मत के शोहदा कम ही हुए। (बेशक) मुसलमान का क़त्ल होना तो ऐन शहादत है,अल्बत्ता ताऊन से मरना भी शहादत है और जो औरत बच्चे की पैदाइश के सबब फ़ौत होजाए तो ये भी शहादत है"। (मुसनद एहमद)

जाबिर رضی बिन अतीक रसूल अल्लाहﷺ से रिवायत करते हैं कि,"फ़ी सबीलिल्लाह क़त्ल के अलावा शहीद सात क़िस्म के हैं।

ताऊन से मरने वाला,ग़र्क़ होने वाला,पहलू के दर्द से मरने वाला,

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

पेट की बीमारी से मरने वाला,जल जाने वाला,मल्बे के नीचे दब कर मरने वाला और वो औरत जो बच्चे की (ज़च्गी की) की वजह से मर जाए। ये सब के सब शहीद हैं"। (अबू दाऊद)

इसके अलावा दीगर अहादीस में तपेदिक़ से मरने वाला,जिस शख़्स का माल नाहक़ तरीक़े से लेने की कोशिश की जाए फिर वो उसका दिफ़ा (बचाव) करते हुए मारा जाए,जो एहलो अयाल की इज़्ज़त का दिफ़ा करते हुए मारा जाए,जो अपने दीन की दिफ़ा में मारा जाए और जो अपने ख़ून के दिफ़ा में मारा जाए,ये सब शहीद हैं। (बहवाला अबूदाऊद,तिर्मिज़ी,निसाई)

ज़ालिम हाकिम को नसिहत करने के जवाब में क़त्ल किए जाने वाला भी शहादत का रुतबा पाएगा,

रसूल अल्लाहﷺ ने फ़रमायाः

"सय्यदना हमज़ाؓ बिन अब्दुल मुत्तलिब सय्यदुश शोहदा हैं और वो आदमी भी जिसने ज़ालिम इमाम (हाकिम) को नेकी की तल्क़ीन की और बुराई से रोका तो हाकिम ने उसे क़त्ल करदिया"। (मुस्तदरक हाकिम)

يُجَاهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا يَخَافُوْنَ لَوْمَةَ لَآئِمٍ ط (المائدہ: 54)

"वो अल्लाह की राह में जिहाद करते हैं और किसी मलामत करने वाले की मलामत से नहीं डरते"

## मुजाहिदा की अक़्साम

रसूल अल्लाहﷺ ने फ़रमाया,"जिस शख़्स ने ना ख़ूद को अल्लाह की राह में पेश किया,या किसी को उस राह में सामान देकर तैयार नहीं किया,या किसी ग़ाज़ी के पीछे उसके घर वालों की बेहतर तरह देख भाल नहीं की, अल्लाह ताला उसे रोज़े क़यामत से पहले किसी बड़ी मुसीबत या हादसे से दोचार करेंगे" (अबु दाऊद)

नीज़ ये फ़रमाया, "मुशरिकीन से अपनी जानों,मालों,और ज़ुबानों के साथ मुजाहिदा करो"। (अबू दाऊद)

अल्लाह के रसूलﷺ ने एक मौक़े पर फ़रमाया, "मुहाजिर वो है जो बुराई को छोड़ दे और मुजाहिद वो है जो अपनी ख़्वाहिशात से जिहाद करे"। (इब्ने माजा अज़ जामे)

© AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

# क़त्ले मोमिन

## (नाहक़ ख़ून)

### गुनाह कबीरा

क़ुरआन और हदीस से मालूमात की रोशनी में मोमिन को क़त्ल करना उन गुनाहों में से एक है जो गुनाहे कबीरा कहलाते हैं। हुक़ूक़अल्लाह में ख़लल डालने वाला पहला बड़ा जुर्म शिर्क है तो हुक़ूक़ुलइबाद में ख़लल डालने वाला बड़ा जुर्म क़त्ले मोमिन है।

### ख़ालिक़ और जान की हुर्मत

### नाहक़ क़त्ल पर

एक माँ अपने फ़रमाँबर्दार और प्यारे बच्चे को ज़रा सी तक्लीफ़ में नहीं देख सकती तो अल्लाह ताला जो सत्तर माओं से भी ज़्यादा प्यार करने वाला है और जान का ख़ालिक़ मालिक भी है भला अपनी तख़्लीक़ की हुई इस जान को नाहक़ तलफ़ होते कैसे देख सकता है?

जान भी ऐसी जो उसकी फ़र्मांबर्दार हो और उसपर ईमान लाचुकी हो। ऐसा करने वाला रब्बुल इज़्ज़त के ग़ज़ब को भड़काता और उसकी तरफ़ से सख़्त तरीन सज़ा का मुस्तहिक़ ठेरता है। क़ुरआने पाक में इर्शाद है:

وَمَن يَقْتُلْ مُؤْمِنًا مُّتَعَمِّدًا فَجَزَاؤُهُ جَهَنَّمُ خَالِدًا فِيهَا وَغَضِبَ
اللَّهُ عَلَيْهِ وَلَعَنَهُ وَأَعَدَّ لَهُ عَذَابًا عَظِيمًا – (अल-निसा:93)

"और जिसने किसी मोमिन को जान बूझ कर क़त्ल किया तो उसकी सज़ा जहन्नम है जिस में हमेशा रहेगा। उसपर अल्लाह का ग़ज़ब और लानत है और अल्लाह ने उसके लिए बड़ा अज़ाब तैयार कर रखा है"।

© ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

## हक़ के साथ क़त्ल पर

ﵟ وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ ـ (अल-अनआमः151)

“और किसी जान को जिसे अल्लाह ने हराम किया है क़त्ल ना करो मगर हक़ के साथ”।

हक़ के साथ क़त्ल करना क्या है? इसकी तफ़्सीर एक दूसरी आयत से हो जाती है।

أَنَّهُ مَن قَتَلَ نَفْسًا بِغَيْرِ نَفْسٍ أَوْ فَسَادٍ فِي الْأَرْضِ
فَكَأَنَّمَا قَتَلَ النَّاسَ جَمِيعًاۚ (मायदाः32)

“जिसने किसी जान को जान के बदले या ज़मीन में फ़साद फैलाने के अलावा किसी और वज्ह से क़त्ल किया तो उसने गोया तमाम इंसानियत को क़त्ल किया”।

“जान के बदले जान” के अलावा “ज़मीन में फ़साद फैलाने की” मज़ीद वज़ाहत इस हदीसे पाक से मिलती है, फ़रमायाः

“तीन तरीक़ों के अलावा किसी मुसलमान का ख़ून हलाल नहीं हैः

(1) शादी शुदा ज़ानी

(2) जान के बदले जान

(3) मुर्तद (अपना दीन तर्क करके जमाअत से जुदा होने वाला)”। (मुत्तफ़िक़ अलैह)

(जमाअत से जुदा होने से मुराद है सहाबा कराम रिज़्वान अल्लाह ताला अन्हुम अज्मईन की जमाअत जैसे अक़ाइदो आमाल से मुन्हरिफ़ होने वाला)।

## ज़मीन में फ़साद फैलाने की रोक थाम

फ़साद के हुक्म में महारिबीन,(लोगों पर क़ातिलाना हमला करके माल लूटने वाला गिरोह) ज़ंदीक़ (जो शख़्स ज़ाहिर में कलिमा गो हो मगर क़ुरआन,रिसालत और मौत के बाद दोबारा ज़िंदा होनो का मुंकर हो) जादूगर,गुस्ताख़े अल्लाह और रसूलﷺ और नमाज़ का तारिक (मुंकर होकर या तहक़ीर के तौर पर पाँच नमाज़ें तर्क करने वाला) शामिल है। इस लिए कि ये तमाम कुफ़्रिया उमूर हैं। हुक्काम की तरफ़ से

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

पहले उनको समझाया जाएगा फिर तौबा का मौक़ा दिया जाएगा। अगर इंकार करें तो फिर उनपर क़त्ल की हद नाफ़िज़ करना जाइज़ है।

इर्शादे बारी ताला हैः

إِنَّمَا جَزَاءُ الَّذِينَ يُحَارِبُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيَسْعَوْنَ
فِي الْأَرْضِ فَسَادًا أَن يُقَتَّلُوا أَوْ يُصَلَّبُوا أَوْ تُقَطَّعَ أَيْدِيهِمْ
وَأَرْجُلُهُم مِّنْ خِلَافٍ أَوْ يُنفَوْا مِنَ الْأَرْضِ ۚ (अलमाएदाः33)

"उनकी सज़ा जो अल्लाह और अल्लाह के रसूल ﷺ के साथ महारिबत करते हैं और ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं, ये है कि वो क़त्ल करदिए जाएं या सूली पर चढ़ाए जाएं या मुख़ालिफ़ जानिब से उनके हाथ पाँव काट दिए जाएं, या उन्हें जिला वतन कर दिया जाए"।

क़ुरआन करीम में एक जगह और इर्शाद होता हैः

فَقَاتِلُوا الَّتِي تَبْغِي حَتَّىٰ تَفِيءَ إِلَىٰ أَمْرِ اللَّهِ (अलहुजरातः9)

"उस गिरोह से लड़ो जो ज़्यादती करता है हत्ता कि वो अल्लाह के हुक्म की तरफ़ लौट आए"।

إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا مِن قَبْلِ أَن تَقْدِرُوا عَلَيْهِمْ
فَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ – (अलमाएदाः34)

"मगर वो तुम्हारे उनपर क़ाबू पालेने से पहले तौबा करलें,तो जानलो कि अल्लाह बहुत ज़्यादा बख़्शिश वाला और रहमो करम वाला है"।

उन वाजिबुल क़त्ल लोगों की मय्यतों को (सज़ा के बाद) ना ही ग़ुस्ल दिया जाएगा, ना उनपर नमाज़े जनाज़ा पढ़ी जाएगी,और ना मुसलमानों के क़बरिस्तान में दफ़्न किया जाएगा नीज़ उनका माले विरासत भी उनके वारिसों की बजाए क़ौमी तहवील में रफ़ाही कामों पर ख़र्च किया जाएगा।

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

## अल्लाह के रसूलﷺ और जान की हुर्मत

रहमते दो आलम सय्यदना मोहम्मदﷺ से ज़्यादा मोमिन की जान की क़द्रो क़ीमत जानने वला कौन हो सकता है? ख़ुसूसन इस्लाम के इब्तिदाई ज़माने में की गईं तमाम तर मुख़ालिफ़तों,दुश्मनियों और नफ़्रतों के दर्मियान एक एक इंसान को इस्लाम की दावत देना,फिर हर एक मुसलमान के ईमान के साथ आब्यारी करके उसे मोमिन के रुतबे तक पहुंचाना और फिर एक मौक़े पर काअबा मोअज़्ज़म को मुख़ातिब करके फ़रमानाः

“ऐ काअबतुल्लाह! तू किस क़द्र पाकिज़ा है,तेरी ख़ुशबू किस क़द्र उमदा है,तू कितने बुलंद मक़ाम वाला है और तेरी हुर्मत किस क़द्र ज़्यादा है,क़सम है उस ज़ात की जिसके
क़ब्ज़े में मेरी जान है,मोमिन के मालो ख़ून की हुर्मत अल्लाह के नज़्दीक तेरे इस मक़ामे हुरमत से कहीं ज़्यादा है”। (इब्ने माजा)

मोमिन की जान की अज़्मतो हुर्मत का ज़िक्र एक और दफ़ा मैदाने अरफ़ात में 9 ज़िलहज्जा को हज्जतुल्विदा के मौक़े पर एक लाख़ से ज़्यादा मुसलमानों की मौजूदगी में नबी करीमﷺ ने यूँ

फ़रमायाः “ऐ लोगो! ये कौन्सा दिन है?”

लोगों ने अर्ज़ किया,' हुर्मत वाला दिन'।

आपﷺ ने पूछा, “ये कौन्सा शहर है?”

अर्ज़ किया गया,' हुर्मत वाला शहर'

फिर पूछा “ये कौन्सा महीना है?”

बताया गया, 'हुर्मत वाला महीना'।

इस पर आपﷺ ने वो तारीख़ी जुमला इर्शाद फ़रमाया, “यक़ीनन तुम्हारा ख़ून, तुम्हारे माल और तुम्हारी इज़्ज़तें तुम पर आपस में इसी तरह हराम हैं जैसे इस दिन की हुर्मत (ख़ास) तुम्हारे इस शहर की हुदूद में, इस मुक़द्दस माह के दौरान”(बुख़ारी)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

## मस्जिद या मक़्तल?

अल्लाह ताला की इबादत और हम्दो तस्बीह करने वाली जानों का ख़ून करना ख़ुसूसन मस्जिदों में नमाज़ियों पर क़ातिलाना हमला करना,ये अल्लाह ताला को किस क़द्र नाराज़ करने वाला जुर्म है इसकी तस्दीक़ इस हदीस से होती है। अबू हुरैरा ؓ कहते हैं कि मैं ने रसूल अल्लाह को ये फ़रमाते सुनाः

“ऐसा हुआ के एक नबी(ﷺ) को एक च्युंटी ने काट खाया,तो उनके हुक्म पर च्योंटियों का सारा जत्था जला दिया गया। तब अल्लाह ताला ने उनको वही भेजी, “तुझे एक च्युंटी ने काटा और तूने मेरी इतनी ख़ल्क़त जलादी जो मेरी तस्बीह करती थी”(बुख़ारी)

इंसान अश्रफ़ुल मख़्लूक़ात है और मस्जिद ज़मीन पर अल्लाह का घर और ऐसे पाकीज़ा और हुर्मत वाले घरों में ऐसे नापाक अज़ाइम ?

## मस्जिद और इस्लाहे मॉशरा

इंसानों के बाहमी इख़्तिलाफ़ात और रंजिशें छेटी बड़ी दुश्मनियों को जनम देती हैं। जिनमें फ़िर्क़ा वारियत और ग्रोही मुख़ालिफ़तें भी शामिल हैं। अगर क़ुव्वते बर्दाश्त कमज़ोर हो और ज़ब्ते नफ़्स की आदत ना हो तो बॉज़ औक़ात यही दुश्मनियाँ ग़ुस्सा और ग़ज़ब की इंतिहा इख़्तियार करके क़त्ल जैसे घिनावने अंजाम तक जा पहुंचाती हैं।

इसी लिए इस्लाम बाहमी इख़्तिलाफ़ातो मॉमलात को दिन में पाँच बार अल्लाह के घर मुलाक़ात के वक़्त (नमाज़ के औक़ात में मस्जिदों में) हिक्मतो समझबूझ से सुल-झाने का मौक़ा फ़राहम करता है।

फिर भी अगर अक़्ल पर जहालत का पर्दा पड़ ही जाए तो उस वक़्त इंसान सिर्फ़ ये ही सोचले कि वो तो एक मेहदूद इख़्तियारात रखने वाला कमज़ोर और बेबस इंसान है और जिसका क़ानून तोड़ कर उसकी पैदा की हुइ मख़्लूक़ को जान से ख़त्म करके नाफ़रमानी का मुर्तकिब हो रहा है वो ज़ातेअक़्दस तो तमाम इख़्तियारात और क़ुव्वतों का मालिक है। उसकी सज़ा और पकड़ से भला वो कैसे बच सकेगा?

©ALHUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

## जल्द बाज़ी से मना

अल्लाह की फ़र्मांबर्दारी का तक़ाज़ा ये है कि मॉमला ख़्वा कितना ही संगीन क्यों ना हो उसके क़ानून को अपने हाथ में ना लिया जाए। मस्लन एक मर्द का अपनी बीवी, बेहन,बेटी या बहू वग़ैरा को किसी ग़ैर के साथ क़ाबिले एतराज़ हालत में देखना किस क़द्र ग़ज़बनाक कर सकता है,मगर उस मौक़े पर भी जो हुक्म मिलता है वो इस हदीस से समझ आसकता है। अबू हुरैरा꣱ कहते हैं, साद꣱ बिन उबादा ने अर्ज़ किया:

रसूल अल्लाह! अगर मैं अपनी बीवी को किसी ग़ैर मर्द के साथ (नाजाइज़ हालत में) देखूँ तो क्या उस वक़्त तक उसे कुछ ना कहूँ जब तक चार गवाह ना ले आऊँ?' आपﷺ ने इर्शाद फ़रमाया, “हाँ”। साद꣱ कहने लगे 'हर्गिज़ नहीं! उस ज़ात की क़सम जिसने आप को हक़ के साथ भेजा है' मैं तो गवाह लाने से पहले ही उसे फ़ौरन तलवार से क़त्ल करदूँगा'। नबीﷺ ने फ़रमाया:

(लोगो) सुनो “तुम्हारा सरदार क्या कह रहा है?” वो (साद) वाक़ई ग़ैरतमंद है लेकिन मैं इस से ज़्यादा ग़ैरतमंद हूँ और अल्लाह मुझसे भी ज़्यादा ग़ैरतमंद है”। (मुस्लिम)

यानी फ़ौरन क़त्ल करना जाइज़ नहीं,इससे मज़ीद फ़ित्ना बढ़ता है लिहाज़ा अल्लाह के बताए गए क़ानून के मुताबिक़ सोच समझ कर क़दम उठाना चाहिए। मंदर्जाबाला हदीस जो हिक्मत सिखाती है उस से ग़ल्त फ़हमी और शुकूको शुब्हात की बुन्याद पर सर्ज़द होने वाले बहुत से जराइम का सद्देबाब हो सकता है, वर्ना बसा औक़ात उज्लतो जल्दबाज़ी तमाम ज़िंदगी का पछतावा बन जाती है ।

## तबाह कुन गुनाह

अल्लाह के रसूल ﷺ ने मोमिनों को ख़बरदार करते हुए फ़रमाया:

“सात क़िस्म के तबाह कुन गुनाहों से दूर रहो” पूछा गया, 'या रसूल अल्लाह! वो कौन से हैं?'

फ़रमाया, “अल्लाह के साथ शिर्क करना,जादू करना,नाहक़ किसी जान को क़त्ल करना जिसे अल्लाह ताला ने हराम ठहराया हो,यतीम का माल खाना,सूद खाना, दौराने जिहाद जान बचाकर भगना,सीधी सादी और पाक दामन मोमिना ख़्वातीन

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

पर ज़िना की तोहमत लगाना"। (मुत्तफ़िक़ अलैह)

एक और मौक़े पर फ़रमाया, "एक मुसलमान के (नाहक़) क़त्ल के मुक़ाबले में पूरी दुनिया का तबाह व बर्बाद होजाना अल्लाह ताला के नज़्दीक़ ज़्यादा मामूली बात है"। (तिर्मिज़ी)

## क़त्ल बिल्वास्ता या बिलावास्ता

क़त्ल के जुर्म में ख़्वा एक शख़्स की नियतो अमल शामिल हो या एक से ज़्यादा की नियत और एक का अमल या बहुत से लोग इस में नियत और अमल के साथ मुलव्विस हों उनके गुनाह का वबाल आपस में सब पर तक़्सीम होकर भी हल्का ना होगा बल्कि हर एक को अलग अलग जहन्नम में झोंके जाने की सज़ा बताई गई है। रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमायाः

"अगर ज़मीनो आसमान के तमाम बसने वाले एक मोमिन के ख़ून (क़त्ल) में शरीक होजाएं तो अल्लाह ताल ज़रूर उन सबको ओंधे मूँह जहन्नम में धकेल देंगे"(तिर्मिज़ी)

## जला कर मार डालना

क़त्ल के इरादे से कोई भी तरीक़ा इस्तेमाल करके जान तल्फ़ करना बज़ाते ख़ुद बड़ा गुनाह है,मगर जला कर क़त्ल करना इसकी संगीनी को और बढ़ाता है। अल्लाह के नाफ़र्मानों को आग के अज़ाब की सज़ा में मुब्तिला करना सिर्फ़ अल्लाह क़हार जब्बार का हक़ है। इस तरीक़े से इंसानों को मना किया गया है ।

सय्यदना अली رضي الله عنه ने कुछ लोगों को (जो सज़ा के मुस्तहक़ थे) आग से जलवाया।

अब्दुल्लाहؓ बिन अब्बास को ये ख़बर पहुँची,उन्होंने कहा, 'अगर मैं अली की जगह (ख़लीफ़ा) होता तो कभी उनको ना जलवाता क्योंकि नबी करीमﷺ ने फ़रमाया, "अल्लाह के अज़ाब से अज़ाब ना दो"। अल्बत्ता मैं सज़ा में क़त्ल करवा डालता। जैसा के आपﷺ फ़रमाते थेः

"जो अपना दीन बदल डाले उनको मार डालो"। (बुख़ारी)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

## दुश्मन को क़त्ल करने के आदाब

इस्लाम, दुश्मन को क़त्ल करने के आदाब भी सिखाता है जैसा कि रसूल अल्लाﷺ ने फ़रमायाः
“ईमान वाले (ज़रूरत पड़े तो अल्लाह के दुश्मनों को) क़त्ल करने में सब से बहतर तरीक़ा अपनाते हैं”। (सुनन अबी दाऊद)

असकी वज़ाहत यूँ है कि रसूल अल्लाहﷺ किसी को “अमीरे लशकर” मुक़र्रर करके रवाना करते तो उसे उसकी ज़ात और मुसलमानों के बारे में अच्छी वसियतें फ़रमाते। मस्लनः ज़ईफ़ों,बूढ़ों,छोटे बच्चों और औरतों को क़त्ल ना किया जाए। दुश्मन को आग में ना जलाया जाए,दुश्मन मक़्तूलों का मुस्ला (जिस्म के हिस्से वग़ैरा काटकर लाश ख़राब करना) ना किया जाए”। (सुनन अबी दाऊद)

## करे कोई भुगते कोई

रसूल अल्लाहनﷺ ने फ़रमाया, “मोमिन अपने दीन में बढ़ता रहता है,जब तक कि किसी हराम ख़ून का इर्तेकाब ना करे”। (बुख़ारी)

लेकिन दीन से दूरी और आख़िरत से लापर्वाही दरअस्ल उसे ऐसे गुनाहों पर दिलेर रखती है जिनसे उसका किया हुआ बहुत से बेगुनाहों को भुगतना पड़ता है। ख़ानदान का एक फ़र्द चले जाने से दूसरे तमाम एहले ख़ाना क़राबत, किफ़ालत, तहफ़्फ़ुज़ और बेशुमार दूसरी मेहरूमियों का एक साथ शिकार होजाते हैं और बात एक ख़ानदान तक नहीं रहती।

अगर मक़्तूल के रिश्तेदार मॉफ ना करें तो क़सास (जान का बदला जान) के तहत फिर दूसरा ख़ानदान भी इन्हीं मेहरूमियों और मुशकिलात का शिकार हो सकता है और यूँ एक इंसान के ज़ुल्म की वज्ह से बहुत से इंसानों को इब्तिला व आज़्माइश झेलनी पड़ती है और इंसानों के बॉज़ गिरोहों और बस्तियों में तो ये सिल्सिला सदियों तक नस्ल दर नस्ल जारी रहता है।

©AL HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

## अल्लाह की अदालत में पहला मुक़दमा

माशरती मॉमलात और हुक़ूक़ुलइबाद के हवाले से इस क़बीह फ़ेल को बड़ी नोइयत का जुर्म होने के सबब रोज़े क़यामत सब से पहले फ़ैसले के लिए लाया जाएगा। हदीसे रसूल ﷺ है:

"क़यामत के दिन सब से पहला फ़ैसला जो लोगों के दर्मियान मॉमलात के बारे में होगा वो ख़ून के बारे में होगा"। (मुत्तफ़िक़ अलैह)

एक और मौक़े पर इर्शाद फ़रमाया, "इंसान से सबसे पहले नमाज़ का हिसाब होगा और आपस के मॉमलात (के लिहाज़ से) पहले ख़ून का फ़ैसला होगा"। (सुनन निसाई)

मालूम होकि हुक़ुक़ुल्लाह में नमाज़ का और हुक़ुक़ुलइबाद में ख़ून (क़त्ल) का हिसाब पहले होगा।

©AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

## क़त्ल के लिए सज़ा और ख़ून बहा

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِصَاصُ فِي الْقَتْلَى
الْحُرُّ بِالْحُرِّ وَالْعَبْدُ بِالْعَبْدِ وَالْأُنثَىٰ بِالْأُنثَىٰ ۚ فَمَنْ عُفِيَ
لَهُ مِنْ أَخِيهِ شَيْءٌ فَاتِّبَاعٌ بِالْمَعْرُوفِ وَأَدَاءٌ إِلَيْهِ بِإِحْسَانٍ
ۗ ذَٰلِكَ تَخْفِيفٌ مِّن رَّبِّكُمْ وَرَحْمَةٌ ۗ فَمَنِ اعْتَدَىٰ بَعْدَ ذَٰلِكَ
فَلَهُ عَذَابٌ أَلِيمٌ - وَلَكُمْ فِي الْقِصَاصِ حَيَاةٌ يَا أُولِي
الْأَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ (अलबक़रा:178,179)

"मोमिनों! तुम को मक़तूलों के बारे में क़सास (यानी ख़ून के बदले ख़ून) का हुक्म दिआ जाता है, (इस तरह के) आज़ाद के बदले आज़ाद (मारा जाए) और ग़ुलाम के बदले ग़ुलाम,और औरत के बदले औरत। और जिस किसी को उसके भाई की तरफ़ से कुछ मॉफ़ी देदी जाए उसे भलाई की इत्तिबा करनी चाहिए और आसानी के साथ दियत अदा करनी चाहिए, तुम्हारे रब की तरफ़ से ये तख़्फ़ीफ़ और रहमत है इसके बाद जो भी सर्कशी करे उसे दर्दनाक अज़ाब होगा,अक़्लमंदों! क़सास में तुम्हारे लिए ज़िंदगी है इस वज्ह से तुम (क़त्ले नाहक़ से) रुकोगे"।

## क़त्ले ख़ता के लिए ख़ूंबहा और कफ़्फ़ारा

अल्लाह रब्बुल आलमीन का इर्शाद है:

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ اَنْ يَّقْتُلَ مُؤْمِنًا اِلَّا خَطَأً ج وَمَنْ قَتَلَ مُؤْمِنًا خَطَأً
فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ وَّدِيَةٌ مُّسَلَّمَةٌ اِلٰى اَهْلِهٖ اِلَّآ اَنْ يَّصَّدَّقُوْا ط فَاِنْ
كَانَ مِنْ قَوْمٍ عَدُوٍّ لَّكُمْ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ط وَاِنْ
كَانَ مِنْ قَوْمٍ م بَيْنَكُمْ وَ بَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ فَدِيَةٌ مُّسَلَّمَةٌ اِلٰى اَهْلِهٖ وَ
تَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ج فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ ز
تَوْبَةً مِّنَ اللّٰهِ ط وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْماً حَكِيْماً o (النساء : 92)

"किसी मोमिन को दूसरे मोमिन का क़त्ल करदेना ज़ैबा नहीं मगर ग़ल्ती से हो जाए तो जो शख़्स किसी मोमिन को बिला क़सद मार डाले,उसपर एक ग़ुलाम की गर्दन आज़ाद करना और मक़्तूल के अज़ीज़ों को ख़ूंबहा पहुँचाना है,इल्ला ये कि वो बतौरे सदक़ा मॉफ़ करदें और अगर मक़्तूल तुम्हारी दुश्मन क़ौम का हो,और हो भी वो मुसलमान तो सिर्फ़ एक मोमिन ग़ुलाम की गर्दन आज़ाद करना लाज़मी है और अगर मक़्तूल उस क़ौम से हो कि तुम में और उनमें एहदो पैमां है तो ख़ूंबहा लाज़िम है,जो उसके कुन्बे वालों को पहुँचाया जाएगा और एक मुसलमान ग़ुलाम का आज़ाद करना (भी ज़रूरी है), फिर जो ना पाए (उसकी इस्तिताअत) उसके ज़िम्मे दो महीने के लगातार रोज़े हैं अल्लाह ताला से बख़्शवाने के लिए और अल्लाह ताला बख़ूबी जानने वाला और बड़ी हिक्मत वाला है"।

©AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

# ख़ुदकुशी

## (नेमते हयात की नाशुक्री)

### ज़िंदगी एक अमानत

ज़िंदगी अल्लाह ताला की तरफ़ से अता करदा वो नेमत है जो हमारे पास उसकी तरफ़ से एक अमानत है। क्योंकि हम इस जान या ज़िंदगी के मालिक नहीं सिर्फ़ अमीन हैं लिहाज़ा इस अमानत का कोई हिस्सा जैसे सेहत,क़ुव्वत,सलाहियत,उमर या पूरी जान को अगर ख़ुद अपने हाथों ज़ाए करना चाहें तो ना सिर्फ़ उस नेमत की नाशुक्री और अमानत में ख़्यानत है। बल्कि ख़ूद ख़ालिक़ की तरफ़ से भी उसकी इजाज़त नहीं है ।

रब्बे कायनात का फ़रमान हैः

وَلَا تَقْتُلُوا أَنفُسَكُمْ إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيمًا (अलनिसा:29)

“और अपनी जानों को हलाकत में ना डालो,
यक़ीनन अल्लाह तुम पर बेहद महरबान है”

### आमाल की आज़माइश

ज़िंदगी की मोहलत कम या ज़्यादा भी उसी ज़ाते अक़्दस की तरफ़ से मुक़र्रर है ताहम उसकी दी हुई इस मोहलत से फ़ायदा उठाकर ज़्यादा से ज़्यादा नेक आमाल कर लेना चाहिए ।

अल्लाह सुभानहू व ताला फ़रमाते हैः

الَّذِي خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيَاةَ لِيَبْلُوَكُمْ أَيُّكُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا
وَهُوَ الْعَزِيزُ الْغَفُورُ ـ (अलमुल्क:2)

“वो जिस (अल्लाह) ने मौत और हयात को इस लिए पैदा किया कि तुम्हें आज़माए कि तुम में से अच्छे काम कौन करता है और वो ग़ालिब (और) बख़्शने वाला है”।

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

## सख़्त वईद

तक्लीफ़ों,मुसिबतों,मेहरूमियों,नाकामियों,बीमारियों वग़ैरा से तंग आकर ज़िंदगी ख़त्म कर लेना,दुनिया के साथ आख़िरत की ख़ैर से भी मेहरूम होजाना है ।
एक हदीसे क़ुदसी में अल्लाह ताला फ़रमाते हैंः

“मेरे बंदे ने जान निकालने में मुझ पर जल्दी की,इसकी सज़ा में मैं ने उसपर जन्नत हराम करदी”। (बुख़ारी)

हदीसे रसूलﷺ है कि सहाबा करामؓ रसूल अलालाहﷺ के साथ जंगे हुनैन में थे,आपﷺ ने एक शख़्स के मुताल्लिक़ जो मुसलमान होने का दावा करता था, फ़रमायाः “ये जहन्नम वालों में से है”। लड़ाई का वक़्त आया तो वो शख़्स ख़ूब लड़ा और ज़ख़्मी होगया। लोगों ने कहा,'या रसूल अल्लाह! आप ने जिस शख़्स को जहन्नमी फ़रमाया था वो तो आज ख़ूब लड़ा और मर गया'।

रसूल अल्लाहﷺ ने फ़रमायाः“जहन्नम में गया”।

बॉज़ मुसलमानों को इसमें शक (ताज्जुब) होने को था (क्योंकि ज़ाहिर में उसका जन्नती होना ही पाया था) इतने में ख़बर आई कि वो मरा नहीं अभी ज़िंदा है,लेकिन बहुत सख़्त ज़ख़्मी है। जब रात हुई तो वो ज़ख़्मों की तक्लीफ़ बर्दाश्त ना कर सका और उसने तलवार का क़बज़ा ज़मीन पर रखा और नोक सीने के दर्मियाँन में फिर उसपर ज़ोर दिया और अपने आप को मार डाला ।
उसकी मौत की ख़बर सुनकर रसूल अल्लाहﷺ ने फ़रमायाः “बसा औक़ात आदमी लोगों के नज़्दीक़ (बज़ाहिर) जन्नतियों के काम करता है और वो जहन्नमी होता है,और बॉज़ औक़ात कोई ज़ाहिर में जहन्नमियों के से काम कर रहा होता है और वो जन्नती होता है” । (मुस्लिम)

हसन (रह) से रिवायत है,वो कहते थे कि “अगले वक़्तों में एक शख़्स के फोड़ा निकला, उसको जब बहुत तक्लीफ़ हुई तो अपने तर्कश से एक तीर निकाला और फोड़े को चीर दिया ।

© AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

उस से फिर ख़ून बंद ना हुआ यहाँ तककि वो मरगया" तब अल्लाह ताला ने फ़रमाया, "मैं ने हराम किया इसपर जन्नत को"।

फिर हसन (रह) ने अपना हाथ मस्जिद की तरफ़ बढ़ाया और ये कहा,"क़सम अल्लाह की! ये हदीस़ मुझसे जुंदब ने बयान की,रसूल अल्लाहﷺ से (सुनकर) इस मस्जिद में" । (मुस्लिम)

एक और हदीसे पाक में अल्लाह के रसूल ﷺ ने इस जुर्म के मुर्तकिब होने वाले के बारे में ये वईद सुनाईः

"जिसने अपने आपको पहाड़ से गिरा कर हलाक किया वो जहन्नम में जाएगा,और हमेशा अपने आपको इसी तरह गिराता रहेगा,जहन्नम में हमेशा उसकी यही हालत रहेगी,जिसने ज़हर खाकर अपने आपके हलाक किया,जहन्नम में वही ज़हर उसके हाथ में होगा जिसे खाता रहेगा और हमेशा इसी हालत में रहेगा,जिसने आपने आप को किसी हथ्यार से हलाक किया वही हथ्यार जहन्नम में उसके हाथों में होगा जिसे वो अपने पेट में मारता रहेगा,जहन्नम में वो हमेशा इसी हालत में रहेगा"(बुख़ारी)

## मौत की आर्ज़ू

अनस बिन मालिक नबी करीमﷺ से रिवायत करते हैः

"तुम में से कोई आदमी तक्लीफ़ या मुसीबत पहुँचने की वज्ह से मौत की आर्ज़ू ना करे और अगर उसके बग़ैर चारा नज़र ना आए,तो यूँ कहना चाहियेः

اَللّٰھُمَّ اَحۡیِنِیۡ مَا کَانَتِ الۡحَیَاۃُ خَیۡرًا لِیۡ وَتَوَفَّنِیۡ اِذَا کَانَتِ الۡوَفَاۃُ خَیۡرًا لِیۡ .

"या अल्लाह! मुझे उस वक़्त तक जिंदा रखना जब तक मेरे ज़िंदा रहने में भलाई है और मुझे उस वक़्त वफ़ात देना जब वफ़ात में मेरे लिए भलाई हो"।(बुख़ारी)

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

## नमाज़े जनाज़ाह पढ़ने से इंकार

इन तमाम अहादीसे मुबार्का की रू से ख़ुदकुशी या ख़ुदसोज़ी हमारे दीन में हराम फ़ेल और गुनाहे कबीरा है। इसी लिए अल्लाह के रसूलﷺ ख़ुदकुशी करने वाले की नमाज़े जनाज़ा नहीं पढ़ते थे।

सय्यदना जाबिरؓ बिन समरा से रिवायत है कि एक आदमी ने तेज़ धार आले से ख़ुदकुशी करली,तो नबी करीमﷺ ने उसकी नमाज़े जनाज़ा नहीं पढ़ी।(मुस्लिम)

दूसरी रिवायत में है फ़रमायाः "मैं तो इसकी नमाज़े जनाज़ा नहीं पढ़ूँगा"।(मुस्लिम)

तक़्रीबन तमाम एहले इल्म का इस बात पर इत्तेफ़ाक़ है कि इमामे वक़्त और नेक लोगों को ख़ुदकुशी करने वाले की नमाज़े जनाज़ा में शरीक़ नहीं होना चाहिए, (अल्बत्ता आम लोग उसका जनाज़ाह पढ़ाकर दफ़्न करदें) ताकि दूसरों के लिए इब्रत का सामान रहे।

## किन मौक़ों पर जान ख़ुद पेश कर सकते हैं

किसी नागहानी हादसे में जहां बहुत से मुसलमानों की जान बचाने के लिए एक दो मुसलमानों को अपनी जान ख़ुद ख़तरे में डालनी पड़े,या जैसे जंग के हालात में अल्लाह की राह में लड़ते हुए अपनी जान का नज़राना पैश करना पड़े,ये जिहाद है और इसमें अपनी जान देने वाला " शहीद " है जो अफ़ज़ल तरीन मौत है और ये ख़ुदकुशी वाले मामले से बिल्कुल मुख़्तलिफ़ सूरत है।

### क़ौले सय्यदना उमर रज़ी अल्लाहू अन्हू

"तुम्हारी मोहब्बत जुनून की शकल ना इख़्तियार करने पाए और तुम्हारी दुश्मनी इज़ारसानी ना बनने पाए"। पूछा गया, 'या अमीरुल मोमिनीन! वो कैसे?' फ़रमाया जब मोहब्बत करने लगो तो बच्चों की तरह चिमटने और तिफ़्लाना हरकतें करने लगो और जब किसी से नाराज़ हो तो उसकी जानो माल और बर्बादी के दरपे हो जाओ"। (अलअदब अलमुफ़्रिद)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

# इन्सिदादे ख़ूदकुशी

## आज़्माइशें बरहक़ हैं

हर फ़र्द, ख़ानदान और मॉशरा कभी ना कभी ऐसी सूरतेहाल से दोचार होता है जब ख़ैर व शर,ख़ुशहाली व ग़ुर्बत,अता और मेहरूमी दोनों सूरतें आज़्माइश बन जाती हैं।

क़ुरआने पाक में इर्शादे बारी ताला है:

وَنَبْلُوكُم بِالشَّرِّ وَالْخَيْرِ فِتْنَةً ۖ وَإِلَيْنَا تُرْجَعُونَ – (अलअंबिया:35)

"और हम अच्छे और बुरे हालात में डालकर तुम सबकी आज़्माइश कर रहें हैं आख़िरकार तुम्हें हमारी ही तरफ़ पलटना है"।

## मोमिन के लिए अज्र

अल्लाह ताला पर ईमान रखने वालों के लिए दोनों ही तरह की आज़्माइशें सरासर ख़ैर हैं। ख़ुशी पाकर वो अपने रब से शुक्र गुज़ारी के ज़रिए वफ़ा का हक़ अदा करता है जब्कि तक्लीफ़ में सब्र और इस्तिक़ामत का मुज़ाहेरा करके अज्र कमाता है,ये बात मोमिन के सिवा किसी को हासिल नहीं।

## मायूसी कुफ्र

मुसलमान मॉशरे में आज अगर कोई ख़ुदकुशी या ख़ुदसोज़ी जैसा मायूस कुन क़दम उठाता है जबकि इस्लाम में ख़ुदकुशी तो दूर की बात है,मौत की दुआ तक मांगने से मना किया गया है। तो ग़ौर करने की ज़रूरत है कि आख़िर ऐसा क्यों हुआ?

एक बाशऊर और होशमंद इंसान को जबकि वो किसी दिमाग़ी आर्ज़े में मुब्तिला भी ना था,जान जैसी क़ीमती और एहम चीज़ से हाथ धो बैठने की नोबत क्योंकर आई, क्या उसका ईमान कमज़ोर था? या क्या वो दीन के इल्म से बेहरा व मेहरूम था?

© AL HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

# इलाज

दीन के शऊर को बेदार करना इंफ़िरादी और इज्तिमाई दोनों सतह पर बहुत ज़रूरी है ना इन्साफ़ियाँ,बेएतेदालियाँ और नाहमवारियाँ तक़ीबन हर मॉशरे का हिस्सा रही हैं। मुस्लिम मॉशरे में ये ख़राबियाँ कोई लाइलाज मर्ज़ नहीं। किताब और सुन्नत को थामने वाले लोगों को चाहिए कि:

(1)अल्लाह पर भरोसा करना सीख जाएं,

(2)इस्लामी तालीमात को आम करें,

(3)मुल्की क़यादत की सिम्त दुरुस्त करलें तो कोई एक शख़्स भी बदहाली का शिकार ना हो।

## (1) अल्लाह पर भरोसा

इस्लाम हमें हर मुश्किल घड़ी में अल्लाह पर भरोसा करना सिखाता है,ऐसे में बंदा अल्लाह से जैसा गुमान और जैसी उम्मीद रखता है उससे वैसा ही मॉमला फ़रमाता है। लेकिन इसका ये मतलब नहीं कि हाथ पर हाथ धर कर बैठ रहा जाए और सिर्फ़ उम्मीदों और आर्ज़ूओं के ख़्याली मेहल तामीर करते करते क़ीमती वक़्त गवां दिया जाए और जब होश आए तो अमल की मोहलत ख़त्म हो चूकी हो इस इंसानी कम्ज़ोरी को अल्लाह के रसूलﷺ ने बहुत ख़ूबसूरत तरीक़े से वाज़ेह करके समझाया।

अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ؓ बयान करते हैं,'नबी करीमﷺ ने (ज़मीन पर) एक मुरब्बा (चोकोर) बनाया उसके बीच में एक लकीर लगाई जो मुरब्बे (चोकोर) से बाहर भी निकल रही थी। उस लकीर के अंदरूनी बाज़ू पर जहाँसे लकीर शुरू हुई छोटी-छोटी

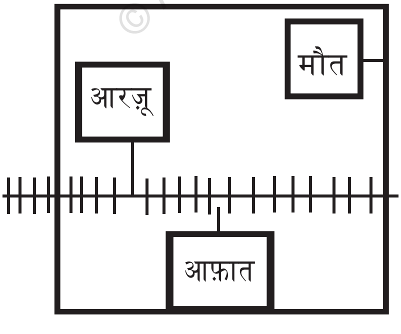


कई लकीरें खीचीं-फिर फ़रमायाः

“इस मुरब्बे (चोकोर) के अंदर इंसान है और मुरब्बा उसकी मौत है जो उसको चारों तरफ़ से घेरे हुए है,

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

और लम्बी लकीर जो मुरब्बे से बाहर निकल गई है आदमी की आर्ज़ू (उम्मीद) है, और ये छोटी लकीरें आर्ज़ी आफ़ात की हैं अगर एक आफ़त से बच गया तो दूसरी ने आदबाया,अगर उस से भी बच गया तो तीसरी ने आन दबोचा"(गोया ज़िंदगी का सफ़र आर्ज़ूओं के पनपने और आफ़ात से निमट्ने में ही तमाम हो गया) । (बुख़ारी)

बेहरहाल इंसान को जो भी वसाइल मयस्सर हों,उनके साथ कोशिश और महनत को शामिल किया जाए फिर ख़ुलूसे दिल से अल्लाह से मदद तलब की जाए और आख़िर में सारा मॉमला उसी के सुपुर्द कर दिया जाए। मसाइब पर क़ाबू पाने का ये इस्लामी फ़ारमूला ज़िंदगी के हर शोबे और तब्क़े में उसी वक़्त सौ फ़ीसद काम-याब हो सकता है जब लोगों के अख़्लाक़ो किर्दार की तर्बीयत की जाए ।

## (2) इस्लामी तालीम को आम करना

हमारा दीन मज़्बूत दीन है,किताब अल्लाह मज़्बूत किताब है फिर हमारे हाथ भी मज़्बूत ही होने चाहिऐं। ये उसी वक़्त मुम्किन है जब सब मुसलमान एक दूसरे का हाथ थाम लें ।

इस्लाम हमें एक दूसरे के दुख सुख की ख़बर रखने,हुक़ूक़ अदा करने,फ़राइज़ निभाने और बाहम ख़ैरख़्वाह बन कर ज़िंदगी गुज़ारने की तालीम देता है। मुस्लिम मॉशरे की बुन्याद ही क़राबत दारों पड़ोसियों,ज़रूरत मंदों के हुक़ूक़ की अदाइगी व हिफ़ाज़त पर इस्तवार है। ज़रूरत इस अमर की है कि इन तालीमात को अपनी ज़िंदगियों में नाफ़िज़ किया जाए। घर,मुहल्ला,मस्जिद,स्कूल,बाज़ार ग़र्ज़ हर जगह बुन्यादी इस्लामी इक़्दार और बाहम तालीमो तल्क़ीन का एहतमाम किया जाता रहे। इस बात की एहमियत हमें क़ुरआन पाक की इस सूरत से साबित हो जाती हैः

وَالْعَصْرِ ۝ إِنَّ الْإِنسَانَ لَفِي خُسْرٍ ۝ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا
الصَّالِحَاتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ۝(العصر)

ज़माने की क़सम! बेशक इंसान नुक़्सान में है अलावा उन लोगों के जो ईमान लाए



© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

और नेक अमल करते रहे और आपस में हक़ (बात) की तल्क़ीन और सब्र की ताकीद करते रहे।"

## (3) ज़िम्मेदार क़यादत

आम इंसान की बुन्यादी ज़रूरत का पूरा ना होना,बेरोज़गारी,मेहंगाई,अदम तहफ़्फ़ुज़ वग़ैरा ये सब इज्तिमाई बिगाड़ और अवाम की बेचैनी का सबब बनते हैं। इसी बेचैनी और मायूसी से बात बढ़कर एक दूसरे की हक़ तल्फ़ी,जराइम और फिर ख़ुदकुशी व ख़ुदसोज़ी की नौबत आने तक जा पहुँचती है।

इस्लाम में मुल्की क़यादत का तसव्वुर "हुक्मरानी" की बजाए "ख़िदमत" है। हुकूमत और रियासत अपने फ़राइज़ की अदाएगी के बग़ैर "इस्लामी" होने का दावा नहीं कर सकती। मुल्की वसाइल और सरकारी ख़ज़ाने पर सबसे पहला हक़ मुल्क के ग़रीबों, मिस्कीनों,यतीमों और मफ़्लूकुलहाल इंसानों का होता है। हुकूमत की शाह ख़र्चियाँ, नित नए क़र्ज़ों के प्रोग्राम,चंद नुमाइशी काम,मुल्की ख़ज़ाने से अक़्रबा पर्वरियाँ वग़ैरा कभी भी ग़ुर्बतो इफ़्लास और ज़ुल्मो इस्तेहसाल को ख़त्म नहीं कर सकतीं।

ख़ुदकुशी का बढ़ता हुआ रुहजान अल्लाह के रास्ते से हटने और हुक़ूक़ुलइबाद पूरे ना करने के अलावा ऐसे ही लोगों के हाथों में मुल्की इख़्तियारातो इन्तेज़ामात देने की वज्ह से भी अमल में आता है जो अल्लाह से ग़ाफ़िल और उसके बंदों के मसाइलो मसाइब से बेपरवाह हैं और अपनी वो ज़िम्मेदारी नहीं निभाते जिसके लिए उन्हें चुना जाता है। वो हर रोज़ एक बार अपने ज़मीर को झिंजोड़ कर सोच लिया करें के एक दिन उन्हें अल्लाह के सामने जवाबदेह होना है,तो बहुत से मसाइल हल होजाएं।

> नबी करीमﷺ ने फ़रमाया, "क्या मैं तुम्हें ना बताऊँ कि जन्नत के हक़्दार कौन हैं? हर वो लोग जो कम्ज़ोर हैं और उन्हें कम्ज़ोर समझा जाता है,अगर वो अल्लाह की क़सम उठाते हैं तो अल्लाह ताला उनकी क़सम को पूरा फ़रमाते हैं"। फिर फ़रमाया, " क्या मैं तुम्हें ना बताऊँ के दोज़ख़ी कौन है? वो सर्कश बख़ील,मुतकब्बिर लोग हैं"। (मुत्तफ़िक़ अलैह)

© AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

# नसल कुशी
## (अज़ीम ख़सारा)

ज़मानए क़दीम से अब तक हर मॉशरा जिन मुश्तरिका क़िस्म की इख़्लाक़ी गिरावटों का शिकार रहा, उनकी फ़ेहरिस्त में क़त्ले औलाद भी शामिल है इसे रब्बे कराम ने ऐसा नुक़्सान क़रार दिया है जो इंसान ख़ुद अपनी जिहालत और हिमाक़त की वज्ह से उठाता है ।

قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ قَتَلُوا أَوْلَادَهُمْ سَفَهًا بِغَيْرِ عِلْمٍ .......(الانعام:١٤٠)

“यक़ीनन ख़सारे में पड़ गए वो लोग जिन्होंने अपनी औलाद को हिमाक़त और नादानी की बिना पर क़त्ल किया”।

ये ख़सारा या नुक़्सान दुन्यवी भी हो सकता है और आख़िरत का भी। आख़िरत की ख़ैर से महरूमी सबसे बड़ी तबाही है (क़ुरआने पाक में उन भटकी हुइ क़ौमों के लिए भी बिल्आख़िर ख़सारे में पड़ जाने का ज़िक्र मिलता है,जो दुनिया में बज़ाहिर बहुत ख़ुश्हाल और ख़ुश व ख़ुर्रम नज़र आती हैं)।

### जदीद जहालत

ये कोन्सी जहालत और नादानी की तरफ़ इशारा हैः

इस्लाम से पहले के जमाने में तो जहालत की वज्ह से लोग सिर्फ़ बच्चियों को ज़िंदा दरगोर करते थे। लेकिन आज की तरक़्क़ी याफ़्ता और तालीम याफ़्ता क़ौमें,बेटा हो या बेटी दोनों ही से जान छुड़ाने की तदबीरें सोचते हैं। ये तो ज़मानए जहालत से भी बदतर मिसाल हुई ।

### तरक़्क़ी याफ़्ता तदाबीर

नस्ल कुशी और क़त्ले औलाद की मुख़्तलिफ़ सूरतें और तदबीरें दूसरे हर मैदान में

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

तरक़्क़ी के साथ बराबर तरक़्क़ी के ज़ीने पर हैं। मस्लनः

(1) ख़ुश्हाल तब्क़े से ताल्लुक़ रखने वाली ख़्वातीन की ये सोच के ज़्यादा बच्चे कम तवज्जो और कम बच्चे ज़्यादा तवज्जो से पर्वरिश पासकते हैं,इसके लिए एहतयाती तदाबीरें करना और अगर किसी वज्ह से ये तदाबीर कारगर ना हो सकीं तो फिर ठहरने वाले हमल को ज़ाए करवा देना ।

(2) मुफ़्लिसी, ग़ुर्बत या तंगीए रिज़्क की वज्ह से “बच्चे दो ही अच्छे” या “बच्चे कम ख़ुश्हाल घराना” जैसे मारूफ़ नारों को बुन्याद बनाकर बच्चे को क़ब्ल अज़ पैदाइश ज़ाए करा देना।

(3) ज़िंदगी की ग़ैर ज़रूरी सरगर्मियों में ख़ुद को उल्झाए रखने की बिना पर ज़्यादा बच्चों को रुकावट या बोझ समझना नीज़ ज़चगी की बार बार की तक्लीफ़ और महनत से बचने के लिए बच्चों की पैदाइश का सिलसिला मुस्तक़िल तौर पर बंद करवा देना (बावजूद इस ईमान के कि इन तकालीफ़ और मेहनतों पर अज्रो इनाम भी बहुत है)

(4) ज़िना जैसी बदफ़ेली के नतीजे में पैदा होने वाले बच्चों को ज़िंदा दरगोर कर देना ताकि अपनी इज़्ज़त पर हर्फ़ ना आए और गुनाह का एलान किसी तक ना पहुंचे ।

(5) तरक़्क़ी याफ़्ता दौर की एक नई ईजाद अल्टा साऊंड का मनफ़ी इस्तेमाल करते हुए क़ब्ल अज़ विलादत पता लगालेना। अगर बेटी नशोनुमा पारही है तो दुनिया में आने से पहले ही उस से छुटकारा पालेना, जब्कि बेटी के वालिदैन बनने और उसकी पर्वरिश करने वाले के लिए मुख़्तलिफ़ अहादीसे नब्वी ﷺ में जन्नत की बशारत मिलती है ।

नीज़ ज़मानए जाहिलियत की तरह उन्हें क़त्ल करने पर उन वालिदैन को क़ुरआने पाक में रोज़े क़यामत जिस अंदाज़ से सर्ज़निश किए जाने का ज़िक्र मिलता है उससे उस जुर्म क नोय्यत का पता चल जाता है ।

وَإِذَا الْمَوْءُودَةُ سُئِلَتْ ۝ بِأَيِّ ذَنبٍ قُتِلَتْ ۝ (التكوير:٨،٩)

“और जब ज़िंदा गाड़ी हुई लड़की से सवाल किया जाएगा कि किस गुनाह की वज्ह से वह क़त्ल की गई ”

©AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

## कबीरा गुनाह

मज़्कूरा बाला तमाम काम एक ही क़िस्म के गुनाह की मुख़्तलिफ़ सूरतें हैं अल्बत्ता इनमें दर्जे के ऐतबार से बड़ा जुर्म ये है कि औलाद को इस डर से क़त्ल किया जाए कि वो आकर रिज़्क में कमी का बाइस बन जाएगी,इसे ख़ताए कबीर भी कहा गया है।

अल्लाह जो रब्बुल आलमीन है,तमाम जहानों का पालने वाला यानी अपनी पैदा कर्दा तमाम मख़्लूक़ात के रिज़्क़ो रोज़ी का ज़िम्मेदार है वो भला कैसे अपनी मख़्लूक़ की ज़रूरियात और हाजात से ग़ाफ़िल हो सकता है जब्कि पत्थर के अंदर बंद होकर बसने वाले कीड़े को भी वो वहीं ख़ूराक मुहय्या कर देता है।

इर्शादे रब्बे करीम है।

وَلَا تَقْتُلُوا أَوْلَادَكُمْ خَشْيَةَ إِمْلَاقٍ نَّحْنُ نَرْزُقُهُمْ وَإِيَّاكُمْ

إِنَّ قَتْلَهُمْ كَانَ خِطْئًا كَبِيرًا ۝ (بنی اسرائیل:۳۱)

"और अपनी औलाद को मुफ़्लिसी के अंदेशे से क़त्ल ना करो,हम उन्हें भी रिज़्क़ देंगे और तुम्हें भी,हक़ीक़त में उनका क़त्ल एक बड़ी ख़ता है"

हदिसे पाक में भी इसी उज़्र की बिना पर औलाद के क़त्ल को जुर्मे अज़ीम बताया गया है।

अब्दुल्लाहؓ बिन मसूद बयान करते हैं कि मैं ने अल्लाह के रसूलﷺ से दर्याफ़्त किया, 'अल्लाह ताला के नज़्दीक सबसे बड़ा जुर्म कौन सा है?'

आपﷺने फ़रमाया, "(सबसे बड़ा गुनाह) ये है कि तुम अल्लाह के साथ किसी को शरीक बनाओ हालाँकि उसने तुम्हें पैदा किया है"।

मैं ने कहा, 'ये यक़ीनन बहुत बड़ा जुर्म है लेकिन इसके बाद कोन्सा जुर्म सबसे बड़ा होता है?'

आपﷺ ने फ़रमाया, "वो ये है कि तुम अपनी औलाद को इस डर से क़त्ल करो कि वो तुम्हारे साथ खाने में शरीक होगी"। (मुत्तफ़िक़ अलैह)

© AL HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

## औरतों के लिए ख़ुसूसी हुक्म

يٰۤاَيُّهَا النَّبِىُّ اِذَا جَآءَكَ الْمُؤْمِنٰتُ يُبَايِعْنَكَ عَلٰۤى اَنْ لَّا يُشْرِكْنَ
بِاللّٰهِ شَيْئًا وَّلَا يَسْرِقْنَ وَلَا يَزْنِيْنَ وَلَا يَقْتُلْنَ اَوْلَادَهُنَّ وَلَا يَاْتِيْنَ
بِبُهْتَانٍ يَّفْتَرِيْنَهٗ بَيْنَ اَيْدِيْهِنَّ وَاَرْجُلِهِنَّ وَلَا يَعْصِيْنَكَ فِىْ مَعْرُوْفٍ
فَبَايِعْهُنَّ وَاسْتَغْفِرْ لَهُنَّ اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ (الممتحنة:12)

"ऐ नबी! जब मुसलमान औरतें आप ﷺ से इन बातों पर बैत करने आएं कि वो अल्लाह के साथ किसी को शरीक ना करेंगी,चोरी ना करेंगी,ज़िना ना करेंगी, अपनी औलाद को मार ना डालेंगी और कोई ऐसा बोहतान ना बांधेंगी जो ख़ुद अपने हाथों पैरों के सामने घड़लें और किसी नेक काम में तेरी बेहुक्मी ना करेंगी, तो आप ﷺ उनसे बैत कर लिया करें। और उनके वास्ते अल्लाह से मग़फ़िरत तलब करें,बेशक अल्लाह ताला बख़्शने वाला और मॉफ़ करने वाला है।

अल्लाह के रसूल ﷺ क़ुरआन पाक में अल्लाह ताला की तरफ़ से नाज़िल किए गए हुक्म के मुताबिक़ जिन बातों पर बैत लिया करते थे उनमें औलाद को क़त्ल ना करना भी शामिल था ।

## बाद या क़ब्ल अज़ पैदाइश क़त्ल

बच्चे को दुनिया में आने से पहले (ज़िंदगी के इब्तिदाई मराहिल में) तल्फ़ करादेना या दुनिया में आँखें खोलने के बाद मार डालना दोनों सूरतें गुनाहे कबीर के ज़ुमरे में आती हैं। दौराने हमल बच्चा ख़्वाह चंद हफ़्तों का हो या चंद दिनों का,इस्क़ात करवा कर या पैदाइश के बाद उसे इस नियत से किसी ऐसी जगह डाल कर के उसकी क़िस्मत में ज़िंदा रहना हुआ तो कोई उठा कर पाल लेगा और हम उसके क़तल के जुर्म से बरी हो जाएंगे और सगे वालिदैन का पता भी ना चल सकेगा (जब्कि वो बच्चा किसी जानवर का शिकार भी हो सकता है) ये सब क़त्ले औलाद की सूरतें हैं,माँ बाप दोनों बराबर क़ातिल होंगे ।

©AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

## तस्वीर का दूसरा रुख़

औलाद से छुट्कारा पाने के लिए ख़ौफ़ नाक हथकन्डे इस्तेमाल करने वाले ज़रा औलाद से मेहरूम (बाँझ) लोगों से इस नेमत की क़द्रो क़ीमत मालूम करें कि उनके रवैये के बरअक्स वो उसको हासिल करने के लिए क्या क्या इलाज और तदाबीर आज़माते हैं।

बहरहाल अल्लाह और उसके रसूलﷺ पर ईमान लाने का और उनसे प्यार करने का दावा करने वाले मंदर्जा ज़ैल हदीस पढ़कर सोचें कि बक़ाए नस्ल के लिए उनके इस मन्फ़ी रवैये से कहीं इस हदीस की मुख़ालिफ़त तो नहीं होती।

एक सहाबी रसूल अल्लाहﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हो कर कहने लगे, 'या रसूल अल्लाह! मुझे एक हसब नसब,इज़्ज़तो मर्तबा और मालदार औरत से मोहब्बत है, लेकिन उस औरत में एक ख़ामी है और वो ये कि वो बाँझ है,तो क्या मैं उस से शादी करलूँ?'

आपﷺ ने उन्हें मना फ़रमा दिया,वो फिर दोबारा आए और यही बात दोहराई।

आपﷺ ने फिर पहले वाला जवाब दिया,वो साहब फिर तीसरी मर्तबा आए,तो अल्लाह के रसूलﷺ ने उनसे इर्शाद फ़रमायाः

"तुम लोग ऐसी औरत से शादी करो जो बहुत ज़्यादा बच्चे जनने वाली हो,इस लिए कि तुम्हारी कस्रत की वजह से मैं और उम्मतों पर फ़ख़्र करूँगा"। (सुनन अबूदाऊद)

© AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

> **रहमते दो आलम मोहम्मद ﷺ ने फ़रमायाः**
>
> "मैं क़यामत के दिन औलादे आदम का सरदार हुँगा,और क़यामत के दिन सबसे पहले मैं क़ब्र से उठूँगा,और सबसे पहले मैं ही सिफ़ारिश करूँगा,और सब से पहले मेरी सिफ़ारिश क़ुबूल होगी"। (मुस्लिम)

# اَلدُّعَاء

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ عَدَدَ خَلْقِهٖ

अल्लाह की पाकी और तारीफ़ बयान करता हूँ,
उसकी मख़्लूक़ की गिन्ती के बराबर

وَرِضٰى نَفْسِهٖ وَزِنَةَ عَرْشِهٖ

और उसकी ज़ात की ख़ूशनुदी के म्वाफ़िक़
और उसके अर्श के वज़न

وَمِدَادَكَلِمَاتِهٖ

और उसके कलिमात की स्याही के बराबर

© AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

" اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَاصَلَّيْتَ

عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ.

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَابَارَكْتَ

عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ "

# اَلدُّ عآء

## हमारा माँगना अल्लाह को पसंद है

दुआ की बर्कात से किसी मुसलमान को इंकार नहीं,अल्लाह ताला अपने बंदों को बग़ैर माँगे भी नवाज़ता है और उसका माँगना भी पसंद फ़रमाता है। इर्शादे पाक हैः

اُدْعُوْنِیْۤ اَسْتَجِبْ لَكُمْ o (المؤمن:60)

तुम मुझको पुकारो मैं तुम्हारी हुआएं क़ुबूल करूँगा"

اُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ o (البقره:186)

मैं जवाब देता हूँ पुकारने वाले की पुकार का जब वो मुझे पुकारता है"

रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, "अल्लाह के नज़्दीक़ दुआ से ज़्यादा इज़्ज़तो इक्राम वाली चीज़ कोई और नहीं"। (तिर्मिज़ी)

## ख़ुशी और ग़मी दोनों में मांगें

नबी करीम ﷺ ने फ़रमायाः

जो शख़्स ये पसंद करता है कि मसाइबो आलाम और तकालीफ़ के वक़्त उसकी दुआ क़ुबूल हों तो उसे चाहिए कि ख़ुशी के ज़माने में ज़्यादा दुआ मँगता रहे"।(तिर्मिज़ी)

## सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह से माँगें

لَهٗ دَعْوَةُ الْحَقِّ ط وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ لَا يَسْتَجِيْبُوْنَ لَهُمْ بِشَیْءٍ

اِلَّا كَبَاسِطِ كَفَّيْهِ اِلَى الْمَآءِ لِيَبْلُغَ فَاهُ وَمَاهُوَبِبَالِغِهٖ ط ...(الرعد:14)

उसी को पुकारना बरहक़ है और ये लोग उसको छोड़ कर जिन हस्तीयों को पुकारते हैं

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

वो उनकी दुआओं का कोई जवाब नहीं दे सकते। उनको पुकारना तो ऐसा है जैसे कोई शख़्स अपने दोनों हाथ पानी की तरफ़ फैलाकर चाहे कि पानी (ख़ुद ही) उसके मूँह में आ पहुंचे हालाँकि पानी उस तक कभी नहीं पहुंच सकता”।

सय्यदना इब्ने अब्बासؓ रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने फ़रमायाः

“जब तुम सवाल करो तो अल्लाह से सवाल करो और जब मदद तलब करो तो अल्लाह से मदद तलब करो”। (तिर्मिज़ी)

## फ़र्ज़ इबादत से अल्लाह के क़ुर्ब के बाद,नवाफ़िल इबादात से दुआ की क़ुबूलियत

रसूल अल्लाहﷺ ने फ़रमाया, “अल्लाह जल्ले जलालहू इर्शाद फ़रमाते है किः

“जो शख़्स मेरे किसी वली (दोस्त) से दुश्मनी रखे मैं उसे ये ख़बर किए देता हूँ कि मैं उस से लड़ूँगा और मेरा बंदा जिन जिन इबादतों से मेरा क़ुर्ब हासिल करता है उन में से कोई इबादत मुझे इस से ज़्यादा पसंद नहीं है जो मैं ने उस पर फ़र्ज़ की हैं।

और मेरा बंदा फ़राइज़ (जैसे नमाज़,रोज़ा,हज,ज़कॉत) अदा करने के बाद नफ़्ली इबादतें करके मुझ से इतना क़रीब होजाता है कि मैं उस से मोहब्बत करने लगता हूँ। फिर तो ये हाल हो जाता है कि मैं ही उसका कान होता हूँ जिस से वो सुनता है और मैं ही उसकी आँख होता हूँ जिस से वो देखता है और उसका हाथ होता हूँ जिस से वो पकड़ता है और पाँव होता हूँ जिस से वो चलता है।

फिर अगर वो मुझ से कुछ माँगता है तो मैं उसको देता हूँ। वो अगर किसी (दुश्मन या शैतान) से मेरी पनाह चाहता है तो मैं उसको उनसे महफ़ूज़ रखता हूँ और मुझको किसी काम में,जिसे मैं करना चाहता हूँ,इतना तरद्दुद नहीं होता जितना मुसलमान बंदे की जान निकालने में होता है” (बुख़ारी)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

# आदाबे दुआ

इर्शादे बारी ताला हैः

وَاَقِيۡمُوۡا وُجُوۡهَكُمۡ عِنۡدَ كُلِّ مَسۡجِدٍ وَّادۡعُوۡهُ مُخۡلِصِيۡنَ

لَهُ الدِّيۡنَ (الاعراف:29)

"और हर इबादत में उसी की तरफ़ रुख़ रखो और उसी को इख़्लास से पुकारो"

## बावुज़ू और क़िब्ला रुख़ होना,हाथ बुलंद करना

रसूल अल्लाहﷺ ने बाज़ मौक़ों पर ख़ुसूसी दुआओं से क़ब्ल पानी मंगवाकर वुज़ू किया। (बहवाला बुख़ारी,अबू दाऊद)

रसूल अल्लाहﷺ से ख़ुसूसी दुआ के वक़्त क़िब्ला रुख होना या बग़ैर क़िब्ला रुख़ हुए दुआ करना दोनों तरह साबित है नीज़ आपﷺ दुआ के वक़्त हाथ बुलंद फ़रमाते। (बहवाला बुख़ारी,अबू दाऊद)

## अस्माए हुस्ना के साथ

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त से माँगने के आदाब में ये ज़रूरी शामिल है कि उसे तारीफ़ी कलिमात और उसके अच्छे अच्छे नामों के साथ पुकार कर दुआ माँगी जाए ।

وَلِلّٰهِ الۡاَسۡمَآءُ الۡحُسۡنٰى فَادۡعُوۡهُ بِهَا (الاعراف:180)

"तमाम अच्छे नाम अल्लाह ही के लिए हैं सो उसको उन अच्छे नामों के साथ पुकारा करो"।

> **الاسمآءُ الحسنىٰ**
>
> अल्लाह के रसूलﷺ ने फ़रमाया, 'अल्लाह के निनानवे नाम है,एक कम सौ,जिसने उन्हें (दिमाग़ में) महफ़ूज़ करलिया,वो जन्नत में दाख़िल हो गया"(बुख़ारी)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

## हम्दो सना के साथ

नबी करीम ﷺ ने एक शख़्स को इस तरह दुआ करते सुना कि 'ऐ अल्लाह! मैं तुझ से सवाल करता हूँ इस बिना पर के सारी तारीफ़ तेरे लिए है,तेरे सिवा कोई माबूद नहीं,तू अकेला है तेरा कोई शरीक नहीं,तू मन्नान (बहुत एहसान करने वाला) है, ऐ आसमानों और जमीन को पैदा फ़रमाने वाले,ऐ अज़्मतो बुज़ुर्गी के मालिक,ऐ ज़िंदा जावेद हस्ती,ऐ पूरी काएनात को संभालने वाले,मैं तुझ से सवाल करता हूँ जन्नत का और तेरी पनाह तलब करता हूँ जहन्नम से'।

आपﷺ ने सहाबा करामؓ , से फ़रमाया,"तुम्हें मालूम है कि इसने किस चीज़ का वास्ता देकर दुआ माँगी है?"

सहाबाؓ ने अर्ज़ किया,अल्लाह और अल्लाह का रसूल ज़्यादा जानते हैं।

आपﷺ ने फ़रमाया,"क़सम उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़ए क़ुद्रत में मेरी जान है,इस शख़्स ने अल्लाह को उसके इस्मे आज़म का वास्ता देकर पुकारा है। ये एक ऐसा नाम है कि जब इसके ज़रिए से सवाल किया जाता है तो जो माँगे वो मिल जाता है"। (अबू दाऊद,निसाई व अदब अलमुफ़्रद लिलबुख़ारी)

## दरूद शरीफ़ के साथ

फ़ज़ालाؓ कहते है कि नबी करीमﷺ मस्जिद में तशरीफ़ फ़रमा थे कि एक शख़्स आया,उसने नमाज़ के बाद कहा "اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِ"
(ऐ अल्लाह! मेरी मग़फिरत फ़रमा)

नबी करीमﷺ ने ये सुना तो फ़रमाया, "तुम ने माँगने में जल्द बाज़ी से काम लिया जब नमाज़ अदा कर बैठो तो पहले अल्लाह की हम्दो सना बयान किया करो फिर दरूद पढ़ो और फिर माँगो"। आपﷺ ये फ़रमा ही रहे थे कि एक दूसरा आदमी आया,उसने नमाज़ पढ़कर अल्लाह की हम्दो सना बयान की फिर दरूद शरीफ़ पढ़ा।

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

नबी ﷺ ने फ़रमाया "अब दुआ माँगो,दुआ क़ुबूल होगी"। (तिर्मिज़ी)

## दुआ से क़ब्ल मग़्फ़िरत तल्बी और तौबा

अल्लाह ताला को बंदे का ग़ल्ती करके पलटना और तौबा इस्तिग़्फ़ार करना पसंद है। तौबा से अल्लाह की रहमत जलवा गर होती है और वो उस बंदे की दुआ की तरफ़ ख़ुसूसी तवज्जो फ़रमाते हैं ।

नबी करीमﷺ रहमत लिलआलिमीन होने के बावजूद दिन रात में सत्तर बार तौबा इस्तिग़्फ़ार किया करते थे और युँ दुआ फ़रमातेः

رَبِّ اغْفِرْ لِی خَطِیْئَتِیْ وَ جَھْلِیْ وَاِسْرَافِیْ فِیْٓ اَمْرِیْ كُلِّهٖ وَمَآ
اَنْتَ اَعْلَمُ بِهٖ مِنِّیْ . اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ خَطَايَایَ وَعَمْدِیْ وَجَھْلِیْ
وَھَزْلِیْ وَ كُلُّ ذٰلِکَ عِنْدِیْ . اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِیْ مَا قَدَّمْتُ وَمَآ
اَخَّرْتُ وَمَآ اَسْرَرْتُ وَمَآ اَعْلَنْتُ اَنْتَ الْمُقَدِّمُ وَاَنْتَ الْمُؤَخِّرُ
وَاَنْتَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ .(بخاری)

ऐ मेरे पर्वरदिगार "बख़्श दीजिए मेरी खताएं और मेरी जहालत और मेरे मॉमले में मेरी ज़्यादती को और उस चीज़ (गुनाह) को भी जिसे आप मुझसे ज़्यादा जानते हैं। ऐ अल्लाह! बख़्श दीजिए मेरी भूल चूक को और जो (ग़लत) काम मैंने दानिस्ता किए और मेरी नादानी और ग़ैर संजीदगी भी और ये सभी कुछ मुझ में मौजूद है। या अल्लाह "मेरे अगले,पिछले,छुपे और खुले सब गुनाहों को बख़्श दीजिए,आप जिसे चाहें आगे करदें और जिसे चाहें पीछे डाल सकते हैं। आप सब कुछ कर सकते हैं"।

## अल्लाह की ख़ातिर किए हुए नेक आमाल का वास्ता देना

अल्लाह रब्बुल आलमीन फ़रमाते हैंः

اِلَیْهِ یَصْعَدُ الْكَلِمُ الطَّیِّبُ وَالْعَمَلُ الصَّالِحُ یَرْفَعُهٗ ؕ(الفاطر:10)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

"उसी (अल्लाह) की तरफ़ पाकीज़ा कलिमात चढ़ते हैं और नेक आमाल उन्हें बुलंद करते हैं"।

## दुआ ज़ाए नहीं होती

नबी करीमﷺ ने फ़रमाया, "जब मुसलमान दुआ करता है जिस में कोई गुनाह की बात नहीं होती और ना क़ता रहमी की बात होती है तो अल्लाह ताला ऐसी दुआ को ज़रूर क़ुबूल फ़रमाते हैं, (इस तरह) कि या तो इस दुनिया ही में उस दुआ का मक़्सद पूरा फ़रमादेते हैं या आख़िरत में उसके बदले में ज़ख़ीरा बना देते हैं या उसपर कोई मुसीबत आने वाली होती है जिसे वो उस दुआ की बदौलत दूर फ़रमादेते हैं"।(एहमद)

## मुख़्तसिर और सादा अंदाज़ में

अब्दुल्लाह बिन अब्बास कहते हैं कि देखो, 'दुआ में सजाने और क़ाफ़िया बंदी से पर्हेज़ किया करो,मैंने नबी करीमﷺ और आपके सहाबाؓ को देखा है कि वो इन चीज़ों से पर्हेज़ करते थे'। (बुख़ारी)

## आजिज़ी व इंकिसारी के साथ

اُدْعُوْارَبَّكُمْ تَضَرُّعاً (الانعام:٦٣)

"अपने रब को आजिज़ी व ज़ारी के साथ पुकारो"

नबी करीमﷺ ने फ़रमाया, "सब से बड़ा आजिज़ वो है जो दुआ करने में आजिज़ हो"। (तबरानी)

## पस्त आवाज़ के साथ

ادْعُوا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ – (الاعراف:٥٥)

"पुकारो अपने रब को गिड़गिड़ाते हुए और चुपके चुपके बेशक वो हद से बढ़ने वालों को पसंद नहीं फ़रमाता"।

नबी करीमﷺ ने फ़रमाया, "पस्त आवाज़ से (अल्लाह को) पुकारो तुम किसी बहरे

© AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

या ग़ायब हस्ती को नहीं पुकार रहे हो बल्कि तुम एक समी और बसीर ज़ात को पुकार रहे हो"। (मुत्तफ़िक़ अलैह)

## इसरार करके

अब्दुल्लाह बिन मस्ऊदؓ से रिवायत है कि नबी करीमﷺ जब अपने रब से सवाल करते या दुआ माँगते तो तीनी तीन बार दोहराया करते थे। (अबू दाऊद, निसाई)

## क़ुबूल होने का यक़ीन और तवज्जो के साथ

नबी करीमﷺ ने फ़रमाया, "अपनी दुआओं के क़ुबूल होने का यक़ीन रखते हुए दुआ किया करो,अल्लाह ताला ग़ाफ़िल और लापरवाह दिल की दुआ क़ुबूल नहीं फ़रमाते"(तिर्मिज़ी)

## जल्द क़ुबूल होने का शिकवा दुरुस्त नहीं

रसूल अल्लाहﷺ ने फ़रमाया, "तुम में से हर किसी की दुआ तब क़ुबूल होती है जब तक वो जल्दी ना मचाए। यूँ ना कहे मैं ने दुआ की लेकिन क़ुबूल नहीं हुई"। (बुख़ारी)

## ख़ाली हाथ लौटाते अल्लाह शरमाता है

नबी करीमﷺ ने फ़रमाया, "अल्लाह ताला हयादार और सख़ी है,जब कोई बंदा अपने दोनों हाथ उसके सामने फैलाता है तो नाकाम और ख़ाली लौटाने में उसे शर्म आती है"। (अबू दाऊद,तिर्मिज़ी)

## आमीन

रसूल अल्लाहﷺ ने फ़रमाया, "जब पढ़ने वाला आमीन कहे तो तुम भी आमीन कहो इस लिए कि फ़रिशते भी आमीन कहते हैं। फिर जिसकी आमीन फ़रिशतों की आमीन से मिल गई उसके गुज़िश्ता गुनाह सब बख़्श दिए जाएंगे"। (बुख़ारी)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

इस किताब के तमाम मोज़ू पर हवाला कर्दा क़ुरआनी और मस्नून दुआएं यहां लिखी जारही हैं।

## सूब्ह व शाम दुआओं के ज़रिए अल्लाह ताला से हर क़िस्म की हिफ़ाज़त और आफ़ियत तलब करना-

सुब्ह के लिए

اَللّٰھُمَّ بِکَ اَصْبَحنَا وَبِکَ اَمْسَیْنَا وَبِکَ نَحْیٰی
وَبِکَ نَمُوْتُ وَ اِلَیْکَ النُّشُوْرُ. (ابن ماجہ)

“इलाही! आपकी इनायत से हम सुब्ह में दाख़िल हुए और आपकी मदद से हम शाम तक पहुंचते हैं और आपकी रज़ा से ही ज़िंदा रहते और मरते हैं और आप ही की तरफ़ उठकर हाज़िर होना है”।

शाम के लिए

اَللّٰھُمَّ بِکَ اَمْسَیْنَا وَبِکَ اَصْبَحْنَا وَبِکَ نَحْیٰی
وَبِکَ نَمُوْتُ وَاِلَیْکَ الْمَصِیْرُ. (ابن ما جہ)

“ऐ अल्लाह! आपकी बर्कत से हमने शाम की और आपकी मदद से सुब्ह करेंगे और आपके हुक्म से ही हम ज़िंदा रहते और मौत पाते हैं और आपकी तरफ़ ही वापस आना है”।

### दोनों औक़ात में या दिन के किसी भी हिस्से में

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِیْکَ لَهٗ لَهُ الْمُلْکُ
وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَعَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ . (بخاری)

“अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं,वो अकेला है उसका कोई शरीक नहीं,उसी की बादशाही है और वह तमाम तारीफ़ के लाइक़ है और वही हर चीज़ पर क़ुद्रत रखने वाला है”।

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِیْکَ لَهٗ لَهُ الْمُلْکُ وَلَهُ الْحَمْدُ
بِیَدِهِ الْخَیْرُ یُحْیِیْ وَیُمِیْتُ وَهُوَ عَلٰی کُلِّ شَیْیءٍ قَدِیْرٌ(طبرانی)

“अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं,वो अकेला है उसका कोई शरीक नहीं,उसी की बादशाही है और वही तमाम तारीफ़ के लाइक़ है,भलाई उसी के हाथ में है,वही ज़िंदा करता है और वही मौत देता है और वो हर चीज़ पर क़ादिर है”।

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

بِسْمِ اللّٰہِ الَّذِیْ لَایَضُرُّمَعَ اسْمِہٖ شَیْءٌ فِی الْاَ رْضِ
وَ لَا فِی السَّمَآءِ وَھُوَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْم. (ابوداؤد)

“शुरू अल्लाह के नाम से,जिसके नाम की बर्कत के साथ ज़मीन और आसमान में कोई चीज़ नुक़्सान नहीं पहुंचा सकती और वो सुनने वाला और जानने वाला है”।

اَللّٰھُمَّ عَافِنِیْ فِیْ بَدَ نِیْ اَللّٰھُمَّ عَافِنِیْ فِیْ سَمْعِیْ
اَللّٰھُمَّ عَافِنِیْ فِیْ بَصَرِیْ لَآاِلٰہَ اِلَّا اَنْتَ.(ابوداؤد)

“ऐ अल्लाह! मेरे बदन को तंदरुस्त रखिए। ऐ अल्लाह! मेरी समाअत आफ़ियत से रखिए। ऐ अल्लाह! आफ़ियत से रखिए मेरी बसारत,कोई माबूद नहीं आप के सिवा”।

اَعُوْذُ بِکَلِمَا تِ اللّٰہِ التَّآمَّا تِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ. (مسلم)

“मैं पनाह में आता हूँ अल्लाह के मुकम्मल कलिमात के साथ,
तमाम मख़्लूक़ की शरारतों से”।

حَسْبِیَ اللّٰہُ لَآ اِلٰہَ اِلَّا ھُوَ ط عَلَیْہِ تَوَکَّلْتُ وَھُوَرَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِیْمِ .(ابو داؤد)

“मुझे अल्लाह काफ़ी है उसके सिवा कोई माबूद नहीं,मैंने उसी पर
भरोसा किया और वही अर्शे अज़ीम का मालिक है”।

اَللّٰھُمَّ اَنْتَ رَبِّیْ لَآ اِلٰہَ اِلَّآاَنْتَ خَلَقْتَنِیْ وَاَنَا عَبْدُکَ وَاَنَاعَلٰی
عَھْدِکَ وَوَعْدِکَ مَااسْتَطَعْتُ اَعُوْذُبِکَ مِنْ شَرِّمَاصَنَعْتُ
اَ بُوْءُ لَکَ بِنِعْمَتِکَ عَلَیَّ وَاَ بُوْءُ بِذَ نْبِیْ فَاغْفِرْ لِیْ فَاِ نَّہٗ لَا
یَغْفِرُ الذُّ نُوْبَ اِلَّآ اَنْتَ. (بخاری) (اس دعا کو سید الاستغفار کہتے ہیں)

“ऐ अल्लाह! आप मेरे रब हैं,आपके सिवा कोई माबूद नहीं,आप ने मुझे बनाया और मैं बंदा हूँ आपका,और मैं आपसे किए हुए एहद और वादे पर अपनी हिम्मत के मुताबिक़ क़ाइम हूँ,मैं आपकी पनाह चाहता हूँ,बुरे कामों के वबाल से जो मैंने किए हैं। मुझे इक़्रार है इस एहसान का

© ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

का जो मुझपर आपका,और मुझे एतराफ़ है अपने गुनाहों का,पस बख़्श दीजिए मेरे गुनाह क्योंकि कोई नहीं बख़्शता गुनाह आपके सिवा”।

اَللّٰھُمَّ اِنِّیۡۤ اَسۡئَلُکَ الۡعَافِیَۃَ فِی الدُّ نۡیَا وَالۡاٰخِرَۃِ اَللّٰھُمَّ اِنِّیۡۤ

اَسۡئَلُکَ الۡعَفۡوَ وَالۡعَافِیَۃَ فِیۡ دِیۡنِیۡ وَدُنۡیَا یَ وَاَھۡلِیۡ وَمَا لِیۡ

اَللّٰھُمَّ اسۡتُرۡعَوۡ رَا تِیۡ وَاٰمِنۡ رَّوۡعَا تِیۡ. اَللّٰھُمَّ احۡفَظۡنِیۡ مِنۡ

بَیۡنَ یَدَ یَّ وَ مِنۡ خَلۡفِیۡ وَ عَنۡ یَّمِیۡنِیۡ وَ عَنۡ شِمَا لِیۡ وَ مِنۡ

فَوۡ قِیۡ وَاَعُوۡذُ بِعَظۡمَتِکَ اَ نۡ اُ غۡتَا لَ مِنۡ تَحۡتِیۡ. (ابوداؤد)

"ऐ अल्लाह! मैं आपसे दुनिया और आख़िरत की आफ़ियत माँगता हूँ, ऐ अल्लाह! मैं माँगता हूँ आपसे गुनाहों की माफ़ी और आफ़ियत मेरे दीन,दुनिया और एहलो माल में,इलाही ढाँप लीजिए मेरे ऐब और मुझे ख़ौफ़ की चीज़ों से बेफ़िक्र कर दीजिए। ऐ अल्लाह! हिफ़ाज़त कीजिए मेरी,मेरे सामने से और मेरे पीछे से,और मेरे दाएं से,और मेरे बाएं से और मेरे ऊपर से और मैं पनाह लेता हूँ आपकी अज़्मत की इस से कि मैं हलाक किया जाऊँ नीचे से"।

اَللّٰھُمَّ اِنِّیۡۤ اَسۡئَلُکَ عِلۡمًا نَّا فِعًا وَّعَمَلاً مُّتَقَبَّلاً وَّرِزۡقًا طَیِّبًا.(ابن ما جہ)

ऐ अल्लाह! मैं आप से सवाल करता हूँ फ़ायदे मंद इल्म और क़ुबूल किए जाने वाले अमल का और पाकीज़ा रिज़्क का"।

رَضِیۡتُ بِاللّٰہِ رَبًّا وَّبِمُحَمَّدٍ رَّسُوۡلًاوَّبِالۡاِسۡلَامِ دِ یۡنًا (مسلم)

मैं राज़ी हूँ अल्लाह की रबूबियत पर और दीने इस्लाम पर और मोहम्मदﷺ की रिसालत पर”

یَا حَیُّ یَا قَیُّوۡمُ بِرَحۡمَتِکَ اَسۡتَغِیۡثُ اَصۡلِحۡ لِیۡ

شَاۡنِیۡ کُلَّہٗ وَلَا تَکِلۡنِیۡ اِلٰی نَفۡسِیۡ طَرۡفَۃَ عَیۡنٍ (حاکم)

ऐ ज़िंदा क़ाइम रहने वाली हस्ती! मैं आपकी रहमत से फ़र्याद करता हूँ। मेरी हर

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

क़िस्म की हालत दुरुस्त कर दीजिए और एक आँख झपकने के बराबर भी मुझे मेरे नफ़्स के सुपुर्द ना कीजिए"।

لَا حَوْ لَ وَ لَا قُوَّ ةَ اِلَّا بِا للّٰهِ . (بخاری)

"ना गुनाह छोड़ने की हिम्मत है और ना नेकी करने की
ताक़त मगर सिर्फ़ अल्लाह की मदद के साथ"

اَللّٰهُمَّ رَبَّنَا اٰتِنَا فِى ا لدُّ نْيَا حَسَنَةً وَّ فِى ا لْاٰ خِرَ ةِ حَسَنَةً

وَّ قِنَا عَذَ ا بَ ا لنَّا رِ . (بخاری)

ऐ अल्लाह! हमारे परवरदिगार हमारी दुनिया भी अच्छी
करदेना और हमारी आख़िरत भी संवार देना और हमें आग
के अज़ाब (जहन्नम) से बचा लेना"

سُبحَا نَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ . سُبحَا نَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِ هٖ . (بخاری)

पाक है अल्लाह,अज़ीम है। पाक है अल्लाह और उसी की तारीफ़ें हैं"

قُلْ هُوَاللّٰهُ اَحَدٌ o اَللّٰهُ الصَّمَدُ o لَمْ يَلِدْ o وَلَمْ

يُوْلَدْ o وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ o (الاخلاص)

"(ऐ नबी) कहदो कि वो (अल्लाह) यक्ता है,अल्लाह बेनियाज़ है।
उस से कोई पैदा नहीं हुआ और ना वो किसी से पैदा हुआ और ना
ही कोई उसकी बराबरी करने वाला है"।

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ ا لْفَلَقِ o مِنْ شَرِّمَا خَلَقَ o وَمِنْ شَرِّغَا سِقٍ اِذَا وَقَبَ o

وَمِنْ شَرِّا لنَّفّٰثٰتِ فِى الْعُقَدِ o وَمِنْ شَرِّحَاسِدٍ اِذَ ا حَسَدَ o (الفلق)

"कहो कि मैं सुब्ह के रब की पनाह लेता हूँ तमाम मख़्लूक़ात के शर से और अंधेरी रात के शर से जब वो आजाए और गिरहों पर दम करने वालियों के शर से और हसद करने वाले के शर से जब वो हसद करने पर आजाए"।

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ o مَلِكِ النَّاسِ o اِلٰهِ النَّاسِ o مِنْ شَرِّا لْوَسْوَاسِ

الْخَنَّاسِ o الَّذِىْ يُوَسْوِسُ فِىْ صُدُ وْرِالنَّاسِ o مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ o (الناس)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

"कहो मैं लोगों के रब,लोगों के बादशाह,लोगों के माअबूद की पनाह लेता हूँ उस वसवसा डालकर पीछे हट जाने वाले के शर से जो लोगों के दिलों में वसवसा डालता है जिन्नात में से हों या आदमियों में से"।

اَللّٰهُمَّ اَجِرْنِیْ مِنَ النَّارِ

"ऐ अल्लाह! मुझे आग से पनाह दीजिए"

اَللّٰهُمَّ اَنِّیْ~اَسْئَلُكَ الْجَنَّةُ الْفِرْدَوْسِ

"ऐ अल्लाह! मैं आप से जन्नतुल फ़िरदौस का सवाल करता हूँ"।
(अबू याअला फ़ी "मुसनदा")

## दुआए आसियाؓ

"ऐ मरे रब! मेरे लिए अपने पास जन्नत में घर बना दीजिए" (التحريم:١١).

## जन्नत की सिफ़ारिश

रसूल अल्लाहﷺ ने फ़रमाया,"जिस किसी ने अल्लाह से तीन मर्तबा जन्नत की दुआ की उसके बारे में जन्नत सिफ़ारिश करती है कि,ऐ अल्लाह इसे मेरे पास पहुँचादे,और जिस किसी ने आग से तीन मर्तबा पनाह माँगी जहन्नम उसके बारे में सिफ़ारिश करती है कि,ऐ अल्लाह इसे मुझसे महफ़ूज़ फ़रमादे" (तिर्मिज़ी)

## जन्नत की ज़मानत

रसूल अल्लाहﷺ ने फ़रमाया, "मैं जन्नत के अतराफ़ में घर का ज़ामिन हूँ उस शख़्स के लिए जो हक़ पर होने के बावजूद बहसो मुबाहसे से इज्तिनाब करे,और दर्मियान जन्नत में घर का ज़ामिन हूँ उस शख़्स के लिए जो मज़ाक़ में भी झूट ना बोले और आला तरीन जन्नत में घर का ज़ामिन हूँ उस शख़्स के लिए जिसके अख़्लाक़ उमदा और ख़ूबसूरत हों"। (अबू दाऊद)

## जन्नतुल फ़िरदौस

रसूल अल्लाहﷺ ने फ़रमाया,"लोगो! तुम अल्लाह से जन्नत माँगो तो जन्नतुल फ़िरदौस माँगा करो,क्योंकि वो तमाम जन्नतों से बुलंद है। जन्नतुल फ़िरदौस के ऊपर अल्लाह ताला का अर्शे मुक़द्दस है"। (इब्ने माजा)

©AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

# सोने से पहले पढ़े जाने वाले मसनून अज़्कार

सूरत अलबकरा की आख़री दो आयात,मुअव्विज़ात (सूरत अल इख़्लास,अलफ़लक, अलनास),आयतुल कुर्सी और 33 बार अल्लाहु अक्बर,33 बार सुबहान अल्लाह, 33 बार अलहम्दुलिल्लाह। (बुख़ारी)

اَللّٰھُمَّ بِاسْمِکَ اَمُوْتُ وَاَحْیٰی (بخاری)

“इलाही! आप ही के नाम से मरता और ज़िंदा होता हूँ”

سُبْحَانَکَ اَللّٰھُمَّ رَبِّیْ وَضَعْتُ جَنْبِیْ وَبِکَ اَرْفَعُہٗ .

اِنْ اَمْسَکْتَ نَفْسِیْ فَا غْفِرْلَھَا وَاِنْ اَرْسَلْتَھَا فَاحْفَظْھَا

بِمَا تَحْفُظُ بِہٖ عِبَادَکَ الصّٰلِحِیْنَ (مسلم)

“आप ही के नाम के साथ ऐ मेरे रब! मैंने अपना पहलू रखा और आप ही की मदद से उसे उठाऊँगा। अगर आपने रोक ली मेरी जान तो उसपर रहम फ़रमाइए और उसे वापस भेज दिया तो उसकी हिफ़ाज़त फ़रमाइए, जैसे कि आप अपने नेक बंदों की हिफ़ाज़त फ़रमाते हैं”।

اَللّٰھُمَّ اَسْلَمْتُ نَفْسِیْٓ اِلَیْکَ وَوَجَّھْتُ وَجْھِیْٓ اِلَیْکَ

وَفَوَّضْتُ اَمْرِیْٓ اِلَیْکَ وَالْجَأْ تُ ظَھْرِیْٓ اِلَیْکَ رَغْبَۃً

وَّرَھْبَۃً اِلَیْکَ لَامَلْجَآءَ وَلَامَنْجیٰ مِنْکَ اِلَّااِلَیْکَ اٰمَنْتُ

بِکِتَابِکَ الَّذِیْٓ اَنْزَلْتَ وَ نَبِیِّکَ الَّذِیْ اَرْسَلْتَ (بخاری)

“ऐ अल्लाह! मैंने अपने नफ़्स को आपके ताबे कर लिया और अपना चहरा आपकी तरफ़ फैरलिया और अपना काम आपके सुपुर्द करदिया,आपही की तरफ़ रग़बत करते हुए और आपसे डरते हुए,ना आपके (अलावा) पनाह की जगह है और नाही कोई जगह है भाग कर जाने की मगर आपकी तरफ़,मैं ईमान लाया आपकी किताब पर जो आपने उतारी और आपके नबी पर जिन्हें आपने भेजा”।

(ये दुआ पढ़कर सोने वाला अगर वफ़ात पा जाए तो उसो ईमान पर ख़ातमें की खूशख़बरी दी गई है।)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

रसूल अल्लाहﷺ सोने लगते तो अपना दायाँ हाथ दाए गाल के नीचे रखकर तीन बार फ़ारमाते:

اَللّٰهُمَّ قِنِیْ عَذَابَکَ یَوْمَ تَبْعَثُ عِبَادَکَ (ابوداؤد، ترمذی)

"ऐ अल्लाह! मुझे अपने अज़ाब से बचाना जिस दिन आप अपने बंदों को जमा करेंगे"

## रात पहलू बदलते वक़्त की दुआ

لَآاِلٰهَ اِلَّااللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ، رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا

بَیْنَهُمَا الْعَزِیْزُ الْغَفَّارُ (حاکم، نسائی)

"अल्लाह के अलावा कोई इबादत के लाइक नहीं जो अकेला ज़बर्दस्त है। आसमानों और ज़मीन और उनके दर्मियान की चीज़ों का रब जो बहुत इज़्ज़त वाला बख़्शने वाला है"।

## आधी रात की दुआ की फ़ज़ीलत

रसूल अल्लाहﷺ ने फ़रमाया, "हमारे पर्वरदिगार तबारक ताला हर रात को जब तिहाई हिस्सा रात का रह जाता है तो आसमाने दुनिया (पहले आसमान) पर उतरते हैं और फ़रमाते हैं: कौन मुझ से दुआ करता है कि मैं उसकी दुआ क़ुबूल करूँ,कौन मुझसे सवाल करता है कि मैं उसे अता करूँ,कौन मुझसे मग़फ़िरत तलब करता है कि मैं उसे बख़्श दूँ"। (बुख़ारी)

## तहज्जुद के वक़्त की दुआएं

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ عَافَانِیْ فِیْ جَسَدِیْ وَرَدَّ عَلَیَّ رُوْحِیْ

وَاَذِنَ لِیْ بِذِکْرِهٖ (ترمذی)

"सब तारीफ़ अल्लाह के लिए है जिसने मुझे मेरे जिस्म में आफ़ियत दी और मेरी रूह मुझे वापस की और मुझे अपनी याद की इजाज़त दी"।

اَللّٰهُمَّ لَکَ الْحَمْدُ اَنْتَ قَیِّمُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَنْ فِیْهِنَّ

وَلَکَ الْحَمْدُ لَکَ مُلْکُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَنْ فِیْهِنَّ

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَ لَکَ الْحَمْدُ اَنْتَ نُوْرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَنْ فِیْهِنَّ وَلَکَ الْحَمْدُ
اَنْتَ مَلِکُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَکَ الْحَمْدُ اَنْتَ الْحَقُّ وَ وَعْدُکَ
الْحَقُّ وَ لِقَآؤُکَ حَقٌّ وَقَوْلُکَ حَقٌّ وَالْجَنَّةُ حَقٌّ وَالنَّارُ حَقٌّ وَالنَّبِیُّوْنَ
حَقٌّ وَمُحَمَّدٌ ﷺ حَقٌّ وَالسَّاعَةُ حَقٌّ اَللّٰهُمَّ لَکَ اَسْلَمْتُ وَبِکَ اٰمَنْتُ
وَعَلَیْکَ تَوَکَّلْتُ وَاِلَیْکَ اَنَبْتُ وَبِکَ خَاصَمْتُ وَاِلَیْکَ حَاکَمْتُ
فَاغْفِرْ لِیْ مَا قَدَّمْتُ وَمَآ اَخَّرْتُ وَمَآ اَسْرَرْتُ وَمَآ اَعْلَنْتُ اَنْتَ الْمُقَدِّمُ
وَاَنْتَ الْمُؤَخِّرُ لَا اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ. (بخاری)

“ऐ अल्लाह! आप के लिए तमाम तारीफ़ है,आप ही क़ाइम करने वाले हैं आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ उनमें है और आप ही के लिए तमाम तारीफ़ है,आप ही के लिए बादशाहत है आसमानों और ज़मीन की और जो कुछ इनमें है और आप ही के लिए तमाम तारीफ़,आप नूर हैं आसमानों और ज़मीन का और जो कुछ इनमें है और आप ही के लिए तमाम तारीफ़ है,आप ही बादशाह हैं आसमानों ज़मीन के और आप ही के लिए तमाम तारीफ़ है। आप ही हक़ (असल सच्चाई) हैं और आप का वादा भी सच्चा है और आप से मुलाक़ात भी हक़ है और आप का क़ौल हक़ है,जन्नत हक़ है,और जहन्नम हक़ है,और अँबिया हक़ हैं और मोहम्मद ﷺ हक़ हैं,क़यामत की घड़ी हक़ है। ऐ अल्लाह! आपके लिए ख़ुद को सुपुर्द करता हूँ और आप ही पर ईमान लाता हूँ और आप पर ही मेरा भरोसा है और आप ही की तरफ़ रुजू करता हूँ और आप की ख़ातिर झगड़ता हूँ और आप ही से फ़ैसला चाहता हूँ। पस बख़्श दीजिए मुझसे जो आइंदा होने वाले हों (गुनाह) और जो पहले कर चुका और जो पोशीदा और जो जानबूझ कर हो चुके हों। आप ही आगे करने वाले हैं और आप ही पीछे करने वाले हैं। नहीं कोई माबूद सिवाए आपके और नहीं गुनाह से बचने की हिम्मत और ताक़त मगर अल्लाह ही की तौफ़ीक़ से”।

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ
عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَ سُبْحَانَ اللّٰهِ . وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ
وَاللّٰهُ اَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ (بخاری)

“अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं,वो यक्ता है,उसका कोई शरीक नहीं,उसी की बादशाहत है और उसी के लिए सब तारीफ़ है और वो हर चीज़ पर क़ादिर है, अल्लाह पाक है सब तारीफ़ अल्लाह के लिए है और अल्लाह के सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं,अल्लाह सबसे बड़ा है और अल्लाह की मदद के बग़ैर ना (किसी चीज़ से बचने की) ताक़त है और ना कुछ करने की क़ुव्वत,ऐ मेरे रब! मुझे बख़्श दीजिए”।

## सोते में बेचैनी,घबराहट और वहशत की दुआ

اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّآمَّاتِ مِنْ غَضَبِهٖ وَعِقَابِهٖ ، وَ شَرِّ عِبَادِهٖ،
وَمِنْ هَمَزَاتِ الشَّيَاطِيْنِ وَاَنْ يَّحْضُرُوْنِ . (ترمذی)

“मैं अल्लाह के तमाम कलिमात की पनाह पकड़ता हूँ उसके ग़ुस्से,उसकी सज़ा और उसके बंदों के शर और शैतानों के वसवसों से और इससे कि वो मेरेपास हाज़िर हों”।

## बेदारी

अल्लाह सुब्हानहु ताला का इर्शाद है:

اَللّٰهُ يَتَوَفَّى الْاَنْفُسَ حِيْنَ مَوْتِهَا وَالَّتِيْ لَمْ تَمُتْ فِيْ مَنَامِهَا ۚ
فَيُمْسِكُ الَّتِيْ قَضٰى عَلَيْهَا الْمَوْتَ وَ يُرْسِلُ الْاُخْرٰٓى اِلٰٓى
اَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ٥ (الزمر : 42)

“वो अल्लाह ही है जो मौत के वक़्त रूहें क़ब्ज़ करता है और जिस की मौत ना हो उसकी रूह उसकी नीन्द में (क़ब्ज़) करता है। फिर जिनके लिए मौत का फ़ैसला हो चुका है, उनकी रूहें एक मुक़र्रर वक़्त के लिए भेज देता है। बेशक इसमें ग़ौरो फ़िक्र करने वालों के लिए बड़ी निशानियाँ हैं”।

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

सय्यदना अबू हुरैराؓ रिवायत करते हैं कि नबी करीमﷺने फ़रमाया,“जब कोई शख़्स सो जाता है तो शैतान उसके सिर्हाने बैठकर उसकी गुद्दी पर तीन गिरहें लगा देता है। हर गिरह के साथ ये बात फूँकता है कि बहुत लम्बी रात पड़ी है,मज़े से सोते रहो। अगर ये शख़्स जाग जाए और अल्लाह का नाम ले तो एक गिरह खुल जाती है,फिर जब वुज़ू करता है तो दूसरी गिरह खुल जाती है और जब वो नमाज़ पढ़ता है तो तीसरी गिरह भी खुल जाती है और इंसान हशाश बशाशऔर पाकीज़ा नफ़्स रहता है वरना बदमिज़ाज और सुस्त रहता है”। (बुख़ारी)

## बेदारी के वक़्त की मसनून दुआएं

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْٓ اَحْیَا نَا بَعْدَ مَآ اَمَا تَنَا وَاِلَیْهِ النُّشُوْرُ (متفق علیه)

“सब तारीफ़ अल्लाह ताला के लिए है जिसने हमें मारने (सुलाने) के बाद फिर ज़िंदा (बेदार) किया और जी उठने के बाद उसी की तरफ़ लौटना है”।

اَللّٰھُمَّ اجْعَلْ فِیْ قَلْبِیْ نُوْرًا وَّ فِیْ بَصَرِیْ نُوْرًا وَّ فِیْ سَمْعِیْ نُوْرًا
وَّعَنْ یَّمِیْنِیْ نُوْرًا وَّعَنْ یَّسَا رِیْ نُوْرًا وَّ فَوْقِیْ نُوْرًا وَّ تَحْتِیْ نُوْرًا
وَّ اَمَا مِیْ نُوْرًا وَّ خَلْفِیْ نُوْرًا وَّا جْعَلْ لِّیْ نُوْرًا.وَفِیْ لِسَا نِیْ نُوْرًا
وَّعَصَبِیْ نُوْرًا وَّ لَحْمِیْ نُوْرًاوَّدَ مِیْ نُوْرًا وَّشَعْرِیْ نُوْرًا وَّبَشَرِیْ
نُوْرًاوَّاجْعَلْ فِیْ نَفْسِیْ نُوْرًاوَّ اَعْظِمْ لِیْ نُوْرًا.اَللّٰھُمَّ اَعْطِنِیْ نُوْرًا (بخاری)

“ऐ अल्लाह! कर दीजिए नूर मेरे दिल में,मेरी निगाहों में,मेरी समाअत में,मेरे दाएं तरफ़ और मेरे बाएं तरफ़,मेरे ऊपर नूर और मेरे नीचे नूर,मेरे आगे नूर और मेरे पीछे नूर। और कर दीजिए नूर को मेरे लिए मेरी ज़ुबान और मेरे पट्ठों में,मेरे गोश्त,मेरे ख़ून और मेरे बालों में और मेरे जिस्मो जाँ में भी नूर कर दीजिए। और नूर को मेरे लिए बढ़ा दीजिए। ऐ अल्लाह! मुझे नूर अता कर दीजिए”।

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

# बीमारियों का पाकीज़ा कलाम से इलाज

## बहतरीन दम

हर बीमार पर "بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ط" के साथ सूरत फ़ातिहा पढ़कर दम करें,रसूल अल्लाहﷺ का इर्शाद है कि:"सूरत फ़ातिहा दम है"(बुख़ारी)

## बीमार पुर्सी के वक़्त की दुआएं और दम

नबी अल्लाहﷺ जब बीमार के पास तशरीफ़ ले जाते तो इस तरह उसकी तसल्ली फ़रमाते:

لَابَأْ سَ طَهُوۡ رٌ اِنۡ شَآءَ اللّٰهُ . (بخاری)

"कोई हर्ज नहीं,अल्लाह ने चाहा ते ये बीमारी पाक करने वाली है"

कोई मुसलमान ऐसे मरीज़ की बीमार पुर्सी करे जिस की मौत का वक़्त ना आ पहुँचा हो और सात दफ़ा ये कहे,तो उसे आफ़ियत दी जाती है।

اَسۡأَلُ اللّٰهَ الۡعَظِيۡمَ رَبَّ الۡعَرۡشِ الۡعَظِيۡمِ اَنۡ يَّشۡفِيَکَ (ترمذی)

"मैं बड़ी अज़्मत वाले अल्लाह,अर्शे अज़ीम के रब से सवाल करता हूँ कि वो आपको शिफ़ा दे"।

सय्यदा आएशाॕ रिवायत करती हैं कि जब हम में से कोई बीमार पड़ जाता तो नबी करीमﷺ ये दुआ करते और मरीज़ पर अपना दायाँ हाथ फैरते..।

اَذۡهِبِ الۡبَاۡسَ رَبَّ النَّاسِ اَشۡفِ وَاَنۡتَ الشَّافِىۡ لَا شِفَآءَ

اِلَّا شِفَآؤُکَ شِفَآءً لَّا يُغَادِرُ سَقَمًا (بخاری)

"इस तक्लीफ़ को दूर कीजिए,ऐ लोगो के पर्वरदिगार! इसे शिफ़ा इनायत कीजिए,आप ही शिफ़ा देने वाले हैं,आपकी शिफ़ा के सिवा शिफ़ा नहीं,ऐसी शिफ़ा दीजिए के बीमारी का नामो निशान ना रहे"।

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

## सहर ज़दा और नज़रे बद के मरीज़ पर

अब्दुल्लाह बिन अब्बासؓ से रिवायत है कि नबी करीमﷺ ने फ़रमाया, “नज़र बरहक़ है अगर कोई चीज़ तक़्दीर पर ग़ालिब आनेवाली होती तो नज़र होती”।

सय्यदा आएशाؓ से रिवायत है कि रसूल अल्लाहﷺ ने इर्शाद फ़रमाया, “जब नज़रे बद हो जाए तो दम करलेना जाएज़ है”।(बुख़ारी)

## क़ुर्आनी कलिमात से नज़रे बद के लिये दम

وَاِنْ يَّكَادُالَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَيُزْ لِقُوْنَكَ بِاَبْصَارِهِمْ لَمَّا سَمِعُوْاالذِّكْرَ

وَيَقُوْلُوْنَ اِنَّهٗ لَمَجْنُوْنٌ o وَمَاهُوَاِلَّاذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ. (القلم :51,52)

“और अगरचे क़रीब था कि ये काफ़ीर तुम्हारे क़दम अपनी नज़रों से उखाड़ देते, जब क़ुर्आन सुनते है तो कहते हैं 'ये तो ज़रूर दिवाना है' हालाँकि ये तो एक नसिहत है जहान वालों के लिए”।(बुख़ारी)

## मस्नून कलिमात से

اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّآ مَّةِ مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ وَّهَامَّةٍ وَّمِنْ كُلِّ

عَيْنٍ لَّامَّةٍ (بخارى)

“मैं तुम को अल्लाह के बेऐब कलिमात की पनाह में देता हूँ हर शैतान और मौज़ी से और हर नज़रे बद से”।

بِاسْمِ اللّٰهِ يُبْرِيْكَ وَمِنْ كُلِّ دَآءٍ يَّشْفِيْكَ وَمِنْ

شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ وَشَرِّ كُلِّ ذِىْ عَيْنٍ.(مسلم)

“शुरूअ अल्लाह के नाम के साथ कि वो आपको बरकत दे और हर बीमारी से शिफ़ा दे और हासिद के शर से (पनाह में देता हूँ) जब वो हसद करे और हर नज़र लगने के शर से”।

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

एक मर्तबा नबी करीमﷺ बीमार होगए तो जिबरईल (अ) ने आकर पूछा, 'ऐ मोहम्मदﷺ! क्या आप बीमार हो गए?'आपﷺ ने फ़रमाया 'हाँ'। तो जिबरईल (अ) ने इस दुआ से नबी ﷺ पर दम किया:

بِاسْمِ اللّٰهِ اَرْقِیْکَ مِنْ کُلِّ شَیْءٍ یُّؤْذِیْکَ مِنْ شَرِّ کُلِّ نَفْسٍ

اَوْعَیْنِ حَاسِدٍ اَللّٰهُ یَشْفِیْکَ بِاسْمِ اللّٰهِ اَرْقِیْکَ . (مسلم)

"मैं अल्लाह के नाम से आपको झाड़ता हूँ हर चीज़ से जो आपको अज़ियत दे और नफ़्स और हासिद की नज़र के शर से अल्लाह आपको शिफ़ा दे। मैं अल्लाह के नाम पर आपको झाड़ता हूँ"।

## हर क़िस्म के दुशमन के शर से अल्लाह की पनाह

अबू मूसाؓ कहते हैं कि नबी करीमﷺ किसी क़ौम से ख़ौफ़ महसूस करते तो ये दुआ करते:

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَجْعَلُکَ فِیْ نُحُوْرِهِمْ وَنَعُوْ ذُ بِکَ مِنْ شُرُوْرِهِمْ (ابو داؤد)

"ऐ अल्लाह! हम आप ही को इनके मदमुक़ाबिल करते हैं और आप से ही इनकी शरारतों पर पनाह माँगते हैं"।

## ख़ुद पर दम करना

नबी करीमﷺ जब (सहर के असर से) बीमार हुए तो सूरत इख़्लास,सूरत फ़लक़ और सूरत नास पढ़कर ख़ुद पर दम फ़रमाते और अपने हाथ मुबारक जिस्म पर फेरते ।(मुत्तफ़िक़ अलैह)

### जादू करने या कराने वाले को हलाकत की ख़बर

इमरानؓ बिन हुसैन ने मरफ़ूअन बयान किया कि रसूल अल्लाहﷺ ने फ़रमाया:

❖"जो शख़्स ख़ुद फ़ाल निकाले या किसी के लिए निकाली जाए,
❖जो नजूमी या काहिन बने या कोई दूसरा इसके लिए ये करे,
❖कोई ख़ुद जादूगर हो या उसके लिए कोई दूसरा करे,वो हम में से नहीं"। (तिब्रानी)

रसूल अल्लाहﷺ ने फ़रमाया,"सात हलाकत ख़ेज़ गुनाहों से बचो! जिन में से एक जादू करना (या कराना भी) है"। (बहवाला बुख़ारी)

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَسَارِعُوْٓا اِلٰی مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ... ( الِ عمران:133)

# तौबा इस्तिग़फ़ार की दुआ

रसूल अल्लाहﷺ ने फ़रमाया, “वल्लाह, मैं हर रोज़ सत्तर बार से भी ज़्यादा अल्लाह ताला से इस्तिग़फ़ार और उसकी बारगाह में तौबा करता हूँ”। (बुख़ारी)

## सय्यदुल इस्तिग़फ़ार

नबी अल्लाहﷺ ने फ़रमाया,"सय्यदुल इस्तिग़फ़ार ये हैः (पेजः309 देखिए)

फिर फ़रमाया,“जो कोई ये दुआ इसपर यक़ीन रख कर दिन को माँगे और उस दिन शाम होने से पहले उसको मौत आजाए तो वो एहले जन्नत में से होगा। और रात को इसपर यक़ीन रख कर पढ़े और उसी रात को सुब्ह होने से पहले उसे मौत आजाए तो वो भी एहले जन्नत में से होगा”। (बुख़ारी)

सय्यदना अबू बक्रॗ ने नबी करीम से अर्ज़ किया, 'मुझको कोई ऐसी दुआ बताएं जिस को मैं नमाज़ में पढ़ा करूँ'। आपﷺ ने फ़रमाया, “यूँ कहा करोः

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ ظَلَمْتُ نَفْسِیْ ظُلْمًا کَثِیْرًا وَّ لَا یَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّآ اَنْتَ

فَاغْفِرْلِیْ مَغْفِرَةً مِّنْ عِنْدِکَ وَارْحَمْنِیْٓ اِنَّکَ اَنْتَ الْغَفُوْرُالرَّحِیْمُ

(بخاری)

“ऐ अल्लाह..मैं ने अपनी जान पर बुहत ज़ुल्म किया और गुनाहों का बख़्शने वाला आप के सिवा कोई नहीं है। आप अपनी (ख़ास) मग़फ़िरत से मेरे गुनाह बख़्श दीजिए और मुझ पर रहम कीजिए। बेशक आप ही बहुत बख़्शने वाले मेहरबान हैं”।

اَسْتَغْفِرُاللّٰهَ الَّذِیْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَالْحَیُّ الْقَیُّوْمُ وَ اَتُوْبُ اِلَیْهِ (ابو داؤد، ترمذی)

“मैं बख़्शिश तलब करता हूँ अल्लाह से जिसके अलावा कोई इबादत के लाइक़ नहीं और मैं उसी की तरफ़ तौबा करता हूँ ”।

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

# मुख़्तलिफ़ दर्दों से निजात के लिए दुआएं

## दाँत और कान का दर्द

जो कोई छींक के बाद कहा करे:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ عَلٰى كُلِّ حَالٍ مَّاكَانَ

"जो भी हालात हों हर हाल में सब तारीफ़ अल्लाह रब्बुल आलमीन के लिए है"। तो उसको दाँत और कान के दर्द से बचाओ रहेगा। (अलअदब अलमुफ़्रद लिलबुख़ारी)

## किसी भी क़िस्म का दर्द

उस्मानؓ बिन अबी अलआस रिवायत करते हैं, 'जिस्म में दर्द की शिकायत के लिए नबी करीमﷺ ने मुझे ये अमल तल्क़ीन फ़रमाया कि दर्द की जगह पर अपना हाथ रखकर तीन बार बिस्मिल्लाह पढ़ो और सात बार ये दुआ माँगो,अल्लाह के फ़ज़्ल से दर्द दूर हो जाएगा।

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ وَقُدْرَتِهٖ مِنْ شَرِّ مَآ اَجِدُ وَاُحَاذِرُ (مسلم)

"अल्लाह के जलाल और उसकी क़ुद्रत की पनाह तलब करता हुँ इस तक्लीफ़ के शर से जो इस वक़्त मुझे लाहक़ है और जिसके आइंदा होने का अंदेशा है"।

## ज़ख़्म या फोड़ा

जब कोई शख़्स बीमार होता या किसी को ज़ख़्म या फोड़ा वग़ैरह लाहक़ होता तो नबीﷺ अपनी अँगुश्त मुबारक पर लुआबे दहन लगाकर ज़मीन पर रखते फिर उठाकर तक्लीफ़ की जगह पर फेरते और ये दुआ पढ़ते:

بِسْمِ اللّٰهِ تُرْبَةُ اَرْضِنَابِرِيْقَةِ بَعْضِنَا يُشْفٰى بِهٖ سَقِيْمُنَا بِاِذْنِ رَبِّنَا (بخاری)

"अल्लाह के नाम के साथ हमारी ज़मीन की ख़ाक और हम में से किसी के लुआबे दहन की बर्कत से हमारा मरीज़ शिफ़ा पाएगा, हमारे रब के इज़्न से"।

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

## साँप और बिच्छू का ज़हर

सय्यदा आएशा ॓ से रिवायत है उन्होंने फ़रमाया कि नबी करीमﷺ ने हर ज़हरिले जानवर के डसने पर दम करने की इजाज़त इनायत फ़रमाई है। (बुख़ारी)

अबू सईद खुदरी ॓ से रिवायत है कि एक शख़्स को साँप या बिच्छू ने डस लिया तो नबी करीम ﷺ के एक सहाबी ॓ ने उसका इलाज सूरतुल फ़ातिहा से किया। ये साहब सूरतुल फ़ातिहा पढ़कर उसपर दम करते रहे और ज़ख़्म पर अपना लुआबे दहन लगाते रहे। देखते ही देखते मरीज़ शिफ़ायाब हो गया और उसपर तक्लीफ़ काज़रा भी असर बाक़ी ना रहा और वो तंदरुस्त होकर चलने फिरने लगा। (मुस्लिम)

## दुख,कर्ब,बेक़रारी,बेचैनी,सरासीमगी और रंजो ग़म वग़ैरह के इलाज के लिए

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ عَبْدُکَ ابْنُ عَبْدِکَ ابْنُ اَمَتِکَ نَاصِیَتِیْ بِیَدِکَ مَاضٍ
فِیْ حُکْمُکَ عَدْلٌ فِیَّ قَضَآؤُکَ اَسْئَلُکَ بِکُلِّ اسْمٍ هُوَ لَکَ
سَمَّیْتَ بِهٖ نَفْسَکَ اَوْ اَنْزَلْتَهٗ فِیْ کِتَابِکَ اَوْ عَلَّمْتَهٗ اَحَدًا مِّنْ خَلْقِکَ
اَوِ اسْتَأْثَرْتَ بِهٖ فِیْ عِلْمِ الْغَیْبِ عِنْدَکَ اَنْ تَجْعَلَ الْقُرْاٰنَ رَبِیْعَ
قَلْبِیْ وَ نُوْرَ صَدْرِیْ وَ جَلَآءَ حُزْنِیْ وَذَهَابَ هَمِّیْ . (احمد)

इलाही! मैं आपक बंदा हूँ,आपके बंदे का बेटा,आपकी बंदी का बेटा हूँ। मेरी पेशानी आपके क़ाबू में है। मेरे हक़ में आपका हुक्म जारी है। आपका फ़ैस्ला मेरे बारे में इंसाफ़ के साथ है। मैं सवाल करता हुँ आपसे उस नाम के साथ जो आपने पसंद किया या अपनी मख़्लूक़ में से किसी को सिखाया या अपने इल्मे ग़ैब में से आपने इसको इख़्तियार कर रखा है, कि क़ुरआन को मेरे दिल की फ़रहत व ख़ुशी और मेरे सीने की रोशनी और मेरे रंजो ग़म को दूर करने वाला और परेशानियों को लेजाने वाला कर दीजिए "।

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

## सख़्ती और मुसीबत के वक़्त

لَآ اِلٰهَ اِلَّا للّٰهُ الْعَظِيْمُ الْحَلِيْمُ لَااِلٰهَ اِلَّا للّٰهُ رَبُّ السَّمٰوٰتِ

وَالْاَرْضِ، رَبُّ العَرْ شِ الْعَظِيْمِ . (بخاری)

अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं,वो अज़्मत वाला बुर्दबार है। अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं,वो पर्वरदिगार है आस्मानों और ज़मीन का रब है अर्शे अज़ीम का"

## दुआए निजाते क़र्ज़

اَللّٰهُمَّ اكْفِنِىْ بِحَلَا لِكَ عَنْ حَرَا مِكَ وَاَ غْنِنِىْ بِفَضْلِكَ

عَمَّنْ سِوَاكَ .(ترمذی)

ऐ अल्लाह! मुझे अपने हलाल के साथ अपने हराम किए गए के मुक़ाबले में काफ़ी हो जाना और मुझे अपने फ़ज़्ल से अपने अलावा सबसे ग़नी कर देना"(मेरा भरोसा आप ही पर हो)

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْهَمِّ وَالْحَزَنِ وَالْعَجْزِ وَالْكَسَلِ

وَالْبُخْلِ وَالْجُبْنِ وَضَلَعِ الدَّ يْنِ وَ غَلَبَةِ الرِّجَالِ. (بخاری)

ऐ अल्लाह! मैं हर फ़िक्र और ग़म से और आजिज़ी और सुस्ती से और बुख़्ल और बुज़्दिली से और क़र्ज़ के ग़ल्बे से और लोगों के मुसल्लत हो जाने से आप ही की पनाह तलब करता हुँ "।

## किसी बीमारी या तक्लीफ़ से तंग आजाएं तो मौत की तमन्ना करने की बजाए यूँ दुआ करें

اَللّٰهُمَّ اَحْيِنِىْ مَا كَانَتِ الْحَيَاةُ خَيْرًا لِّىْ

وَ تَوَفَّنِىْ اِذَا كَانَتِ الْوَفَاةُ خَيْرًا لِّىْ (متفق علیه)

ऐ अल्लाह! मुझे उस वक़्त तक ज़िंदा रखना जब तक ज़िंदगी मेरे लिए बेहतर हो और मुझे मौत उस वक़्त देना, जब मौत मेरे लिए बेहतर हो "।

© AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

## ज़िंदगी मौत के फ़ितनों से बचाव,अज़ाबे क़ब्र से निजात और बुढ़ापे की बेबसी से पनाह

اَللّٰھُمَّ اِنِّیۡۤ اَعُوۡذُبِکَ مِنَ الۡبُخۡلِ وَ اَعُوۡذُبِکَ مِنَ الۡجُبۡنِ

وَ اَعُوۡذُبِکَ اَنۡ اُرَدَّاِلٰۤی اَرۡذَلِ الۡعُمُرِ وَ اَعُوۡذُبِکَ مِنۡ فِتۡنَۃِ الدُّنۡیَا

وَ اَعُوۡذُبِکَ مِنۡ عَذَابِ الۡقَبۡرِ (بخاری)

या अल्लाह! मैं बख़ीली से आपकी पनाह चाहता हूँ,और मैं बुज़्दिली से आपकी पनाह चाहता हूँ,और निकम्मी उमर (बुढ़ापे) से और दुनिया के फ़ितने और क़ब्र के अज़ाब से भी आपकी पनाह चाहता हूँ "।

اَللّٰھُمَّ اِنِّیۡۤ اَعُوۡذُبِکَ مِنۡ عَذَابِ الۡقَبۡرِ وَمِنۡ عَذَابِ النَّارِ وَمِنۡ

فِتۡنَۃِ الۡمَحۡیَا وَالۡمَمَاتِ وَمِنۡ فِتۡنَۃِ الۡمَسِیۡحِ الدَّجَّالِ . (بخاری)

या अल्लाह! मैं आपसे क़ब्र और जहन्नम के अज़ाब,ज़िंदगी और मौत की आज़्माइश और मसीह दज्जाल के फ़ितने से पनाह माँगता हूँ "

## इस्लाम पर ख़ातमे के लिए रोज़ाना सोने से पहले पढ़ी जाए

اَللّٰھُمَّ اَسۡلَمۡتُ نَفۡسِیۡۤ اِلَیۡکَ وَفَوَّضۡتُ اَمۡرِیۡ اِلَیۡکَ وَوَجَّھۡتُ

وَجۡھِیۡۤ اِلَیۡکَ ، وَاَلۡجَاتُ ظَھۡرِیۡۤ اِلَیۡکَ، رَغۡبَۃً وَّرَھۡبَۃً اِلَیۡکَ

لَا مَلۡجَآءَ مِنۡکَ اِلَّاۤ اِلَیۡکَ ، اٰمَنۡتُ بِکِتَابِکَ الَّذِیۡۤ اَنۡزَلۡتَ

بِنَبِیِّکَ الَّذِیۡۤ اَرۡسَلۡتَ. (بخاری)

ऐ अल्लाह! मैं अपनी जान आपके सुपुर्द करता हूँ,और अपना सारा काम भी आपको सोंपता हूँ,और अपना मुँह भी आप ही की तरफ़ करता हूँ,और आप ही पर भरोसा करता हूँ,आपकी इनायतो करम ही की ख़्वाहिश और आपके अज़ाब के डर से भाग कर जाने का ठिकाना या छुट्कारे का मक़ाम सिवाए आप ही के और कहीं नहीं है।मैं आपकी इस किताब पर जो आपने नाज़िल फ़रमाई और पैग़म्बर पर जिनको आपने भेजा,ईमान लाया "।

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

## ख़ातमा बिलख़ैर के लिए मज़ीद दुआएं

فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ قف اَنۡتَ وَلِیّٖ فِی الدُّنۡیَا وَالۡاٰخِرَةِ ج

تَوَفَّنِیۡ مُسۡلِمًا وَّاَلۡحِقۡنِیۡ بِالصّٰلِحِیۡنَ o (یوسف : 101)

ऐ पैदा फ़रमाने वाले आस्मानों और ज़मीन के! आप ही मेरे वली और कारसाज़ हैं,दुनिया में और आख़िरत में भी। आप उठाना मुझे इस दुनिया से फ़र्मांबर्दारी की हालत में और शामिल करलेना आप मुझे अपने बंदों में"।

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكۡبَر ، لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحۡدَهٗ لَاشَرِيۡكَ لَهٗ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ لَهُ الۡمُلۡکُ وَلَهُ الۡحَمۡدُ ، لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَلَاحَوۡلَ

وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ. (ترمذی، ابن ماجه)

"अल्लाह के सिवा कोई बंदगी के लाइक़ नहीं और अल्लाह सब से बड़ा है। अल्लाह के सिवा कोई बंदगी के लाइक़ नहीं,वो अकेला है उसका कोई शरीक नहीं।अल्लाह के सिवा कोई बंदगी के लाइक़ नहीं उसी के लिए बादशाही और तमाम तारीफ़ है। अल्लाह के सिवा कोई बंदगी के लाइक़ नहीं और ना बचने की ताक़त है और ना ही कुछ करने की तौफ़ीक़ मगर अल्लाह की मदद से"।

اَللّٰهُمَّ اِنِّیۡۤ اَعُوۡذُبِکَ مِنۡ یَّوۡمِ السُّوۡٓءِ وَمِنۡ لَّیۡلَةِ السُّوۡٓءِ وَمِنۡ سَاعَةِ السُّوۡٓءِ

وَمِنۡ صَاحِبِ السُّوۡٓءِ وَمِنۡ جَارِالسُّوۡٓءِ فِیۡ دَارُ الۡمُقَامَةِ. (طبرانی)

"ऐ अल्लाह! बेशक मैं बुरे दिन,बुरी रात,बुरी घड़ी,बुरे दोस्त और सुकूनत के घर में बुरे हमसाए से आपकी पनाह माँगता हूँ"।

اَللّٰهُمَّ اِنِّیۡۤ اَسۡئَلُکَ مِنَ الۡخَیۡرِ کُلِّهٖ عَاجِلِهٖ وَاٰجِلِهٖ مَا عَلِمۡتُ

مِنۡهُ وَمَا لَمۡ اَعۡلَمۡ .وَاَعُوۡذُ بِکَ مِنَ الۡشَرِّ کُلِّهٖ عَاجِلِهٖ وَاٰجِلِهٖ مَا

عَلِمۡتُ مِنۡهُ وَمَا لَمۡ اَعۡلَمۡ . (ابنِ ماجه)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

“या इलाही! मैं आपसे तमाम भलाइयाँ माँगता हूँ जल्द मिलने वाली (दुनिया की) और देरसे मिलने वाली (आख़िरत की) जिनको मैं जानता हूँ और जिनको मैं नहीं जानता और आपकी पनाह माँगता हूँ जल्द या देर से मिलने वाली तमाम बुराइयों से जिनको मैं जानता हूँ और जिनको नहीं भी जानता”।

اَللّٰهُمَّ اصْلِحْ لِیْ دِیْنِیَ الَّذِیْ هُوَعِصْمَةُ اَمْرِیْ .

وَاَصْلِحْ لِیْ دُنْیَایَ الَّتِیْ فِیْهَامَعَاشِیْ .

وَاَصْلِحْ لِیْ اٰخِرَتِیَ الَّتِیْ فِیْهَا مَعَادِیْ .

وَاجْعَلِ الْحَیَاةَ زِیَادَةً لِّیْ فِیْ كُلِّ خَیْرٍ

وَّاجْعَلِ الْمَوْتَ رَاحَةً لِّیْ مِنْ كُلِّ شَرٍّ. (مسلم)

“ऐ अल्लाह! आप मेरे दीन को संवार दीजिए जो मेरे काम की हिफ़ाज़त करे,
और मेरी दुनिया भी संवारे रखिए जिस में मेरा रोज़गार है,
और मेरी आख़िरत भी संवार दीजिए,जहाँ मैंने लौटकर जाना है,
और बना दीजिए मेरी ज़िंदगी को बहुत ज़्यादा भलाइयों का सबब
और बना दीजिए मेरी मौत को हर क़िस्म की बुराई से राहत पाने का सबब”.

## दुआए शहादत

اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنِیْ شَهَادَةً فِیْ سَبِیْلِكَ وَاجْعَلْ مَوْتِیْ فِیْ بَلَدِ رَسُوْلِكَ. (بخاری)

“ऐ अल्लाह! मुझे अपने रास्ते में शहादत नसीब अता फ़रमाना और मुझे अपने रसूलﷺ के शहर (मदीना मुनव्वरा) में मौत देना”।

### अब्दुल्लाह बिन मसऊदؓ की दुआ

“ऐ अल्लाह! मैं आप से वो ईमान माँगता हूँ जो अपनी जगह से ना हटे और वो नेअमतें चाहता हूँ जो कभी ख़त्म ना हों और हमेशगी की आला तरीन जन्नत में आपके पैग़म्बर मोहम्मदﷺ कासाथ नसीब हो”(एहमद)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

## बुरी मौत से पनाह के लिए

اَللّٰھُمَّ اِنِّیۡ اَعُوۡذُبِکَ مِنَ ا لتَّرَدِّیۡ وَالۡھَدۡ مِ وَالۡغَرَقِ وَالۡحَرِیۡقِ
وَاَعُوۡذُبِکَ اَنۡ یَّتَخَبَّطَنِیَ الشَّیۡطَا نُ عِنۡدَا لۡمَوۡتِ وَاَعُوۡذُبِکَ
اَنۡ اَمُوۡتَ فِیۡ سَبِیۡلِکَ مُدۡ بِرًاوَّ اَعُوۡذُ بِکَ اَنۡ ا مُوۡ تَ لَدِ یۡغًا. (نسائی)

“ऐ अल्लाह! बेशक मैं आप ही से पनाह तलब करता हूँ,मकान से गिरकर मरनेसे और मकान के नीचे दबकर मरने से और डूबकर मरने से और जल कर मरने से और पनाह माँगता हूँ आपसे कि मरने से क़रीब शैतान मुझको उचक ले और पनाह चाहता हूँ आपसे कि आपकी राह में पीठ फेरकर मरूँ और पनाह चाहता हूँ आपसे कि (किसी ज़हरीले जानवर के) डसने से मेरी मौत वाक़े हो”।

## आख़री दुआ

“ख़ुश नसीब मुसलमान का आख़री कलाम “कलिमा तौहीद” के अलावा ये मस्नून दुआ होनी चाहिए:

اَللّٰھُمَّ اغۡفِرۡ لِیۡ وَارۡحَمۡنِیۡ وَاَلۡحِقۡنِیۡ بِالرَّفِیۡقِ ا لۡاَعۡلٰی .(متفق علیہ)

“ऐ अल्लाह! मुझे बख़्शदेना मुझ पर रहम करना और मुझे बुलंद रफ़ीक़ यानी अपने साथ मिला देना”।

**मरने वाले की रूह निकल जाए तो उसकी आँखें बंद करने के बाद ये दुआ की जाए।**

اَللّٰھُمَّ اغۡفِرۡ لِاَبِیۡ سَلَمَۃَ وَارۡفَعۡ دَرَجَتَہٗ فِی الۡمَھۡدِ یِّیۡنَ وَاخۡلُفۡہُ فِیۡ
عَقِبِہٖ فِی الۡغَا بِرِیۡنَ وَاغۡفِرۡ لَنَا وَلَہٗ یَا رَبَّ الۡعَا لَمِیۡنَ وَافۡسَحۡ لَہٗ فِیۡ
قَبۡرِہٖ وَنَوِّ رۡ لَہٗ فِیۡہِ . (مسلم)

(दुआ के वक़्त अबू सलमाؓकी जगह मय्यत का नाम लिया जाए)

“ऐ अल्लाह! अबू सलमाؓ को बख़्शदेना और उनके दरजे हिदायत याफ़्ता लोगों में बुलंद फ़रमाना और उनके बाद उनके पस्मांदगान की हिफ़ाज़त फ़रमाना। या रब्बल आलमीन! हम को भी बख़्श देना और उनको भी और उनकी क़ब्र उनके लिए कुशादा और मुनव्वर कर देना”।

© AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

# मय्यत की मग़्फ़िरत के लिए मस्नून दुआएं

اَللّٰھُمَّ اغْفِرْلِحَیِّنَا وَمَیِّتِنَا وَصَغِیْرِنَاوَکَبِیْرِنَاوَذَکَرِنَا وَاُنْثَانَا وَشَاھِدِنَا وَغَآئِبِنَا. اَللّٰھُمَّ مَنْ اَحْیَیْتَهٗ مِنَّا فَاَحْیِهٖ عَلَی الْاِیْمَانِ وَمَنْ تَوَفَّیْتَهٗ مِنَّا فَتَوَفَّهٗ عَلَی الْاِسْلَامِ اَللّٰھُمَّ لَا تَحْرِمْنَآ اَجْرَهٗ وَلَا تُضِلَّنَا بَعْدَهٗ (ابو دائود)

“ऐ अल्लाह! हमारे ज़िन्दों व मुर्दों,और छोटे व बड़े और मर्दों और औरतों,और हाज़िर व ग़ाइब की बख़्शिश फ़रमा दीजिए ऐ अल्लाह! हममें से जिसे भी आप ज़िन्दा रखें,उसे इस्लाम पर ज़िन्दा रखें और जिसे मौत दें, उसका ख़ातमा ईमान पर करें। “ऐ अल्लाह! इस जाने वाले (की जुदाई पर सब्र) के अज्र से हमें मेहरूम ना रखना और इसके बाद हमें गुमराह भी ना कर देना”।

اَللّٰھُمَّ اغْفِرْلَهٗ وَارْحَمْهُ وَعَافِهٖ وَاعْفُ عَنْهُ وَاَکْرِمْ نُزُلَهٗ وَوَسِّعْ مُدْخَلَهٗ وَاغْسِلْهُ بِالْمَآءِ وَالثَّلْجِ وَالْبَرَدِ وَنَقِّهٖ مِنَ الْخَطَایَا کَمَا نَقَّیْتَ الثَّوْبَ الْاَبْیَضَ مِنَ الدَّنَسِ وَاَبْدِلْهُ دَارًا خَیْرًا مِّنْ دَارِهٖ وَاَهْلًا خَیْرًامِّنْ اَهْلِهٖ وَزَوْجًا خَیْرًا مِّنْ زَوْجِهٖ وَاَدْخِلْهُ الْجَنَّةَ وَاَعِذْهُ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِوَمِنْ عَذَابِ النَّارِ (مسلم)

“ऐ अल्लाह! इस (मय्यत) की बख़्शिश फ़रमाइए, इस पर रहम कीजिए, इससे दर्गुज़र करके इसे मॉफ़ फ़रमा दीजिए,इसकी महमानी अच्छी तरह फ़रमाइए,इसकी रिहाइश को कुशादा फ़रमा दीजिए,इसके (गुनाह) पानी, बर्फ़,और ओलों से धो दीजिए इसे ख़ताओं से इसतरह साफ़ कर दीजिए जैसे सफ़ेद कपड़ा मैल कुचैल से साफ़ किया जाता है,इसे इसके पहले घर से बेह-तर घर अता कीजिए और इसके एहले ख़ाना से बेहतर ऐहले ख़ाना और इसके साथी से बेहतर साथी इनायत फ़रमा दीजिए,और इसे क़ब्र के अज़ाब और आग के अज़ाब से मेहफ़ूज़ करके जन्नत में दाख़िल फ़रमा दीजिए ”।

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَللّٰھُمَّ عَبْدُکَ وَابْنُ اَمَتِکَ احْتَاجَ اِلٰی رَحْمَتِکَ وَاَنْتَ غَنِیٌّ عَنْ
عَذَابِہٖ اِنْ کَانَ مُحْسِنًا فَزِدْ فِیْ حَسَنَاتِہٖ وَاِنْ کَانَ مُسِیْآءً فَتَجَاوَزْعَنْہُ
(حاکم)

“या अल्लाह आप का ग़ुलाम और आपका ग़ुलाम ज़ादा आपही की रहमत का मोहताज है,आपकी ज़ाते आली अज़ाब देने से बेनियाज़ है। अगर वो अच्छाइयों वाला था तो उसकी उन अच्छाइयों (पर सवाब) बढ़ा दीजिए और अगर बुराइयों पर था तो उस से दरगुज़र फ़रमाइए”।(हाकिम)

اَللّٰھُمَّ اِنَّ (فُلَانَ ابْنَ فُلَانٍ) فِیْ ذِمَّتِکَ وَحَبْلِ جِوَارِکَ فَقِہٖ مِنْ
فِتْنَةِ الْقَبْرِوَعَذَابِ النَّارِ وَاَنْتَ اَھْلُ الْوَفَآءِ وَالْحَقِّ فَاغْفِرلَہٗ وَارْحَمْہُ
اِنَّکَ اَنْتَ الْغَفُوْرُالرَّحِیْمُ (ابو داؤد، ابن ماجہ)

(इस दुआ में फ़ुलाँ बिन फ़ुलाँ की जगह मय्यत और उसके वालिद का नाम लिया जाएगा,जैसे अब्दुल्लाह बिन अज़ीज़)

या इलाही! फ़ुलाँ बिन फ़ुलाँ आपके सुपुर्द और आपकी हिफ़ाज़त में। इसे क़ब्र के फ़ितने और आग के अज़ाब से मेहफ़ूज़ रखिए हक़ और वफ़ा सिर्फ़ आपकी ज़ातमें है,उसकी मग़्फ़िरत फ़रमाइए और उसपर रहम कीजिए। बिलाशुबा सिर्फ़ आपही बख़्शने वाले और मुसलसल रहमत करने वाले हैं”।

**वज़ाहतः** औरत की मय्यत के लिए दुआओं में “हू” की जगह “हा” पढ़ा जाएगा । नमाज़े जनाज़ा में तीसरी तक्बीर के बाद मंदरजा बाला दुआओं में से पढ़ना नबी करीम ﷺ से साबित है ।

## ख़्वातीन के लिए

ख़्वातीन चूँके नमाज़े जनाज़ाह में शरीक ना हो सकने की वज्ह से इस अज्र से मेहरूम रह जाती हैं लिहाज़ा उनके लिए मय्यत के घर में फ़ारिग़ बैठने और दुनिया की बातें करने से बेहतर हैकि यही मसनून दुआएं पढ़ती रहें और मय्यत के लिए और अपने वास्ते अज्र सवाब हासिल करें।

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

## मय्यत के घरवालों के पढ़ने के लिए एक और मस्नून दुआ

اَللّٰھُمَّ اغْفِرْلِیْ وَلَہٗ وَاَعْقِبْنِیْ مِنْہُ عُقْبیً حَسَنَۃً.

(مسلم ، ابو دائود، ترمذی ، نسائی)

“ऐ अल्लाह! मेरी और इस (मरने वाले) की बख़्शिश फ़रमाना और मुझे इसका बेहतरीन बदला अता करना (सब्र करने पर अज्र और नेअमुल बदल दोनों मुराद हैं)”।

## सलाम और दुआए ज़ियारते क़ुबूर

اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ اَھْلَ الدِّیَارِمِنَ الْمُؤْمِنِیْنَ وَالْمُسْلِمِیْنَ.وَاِنَّا

اِنْ شَآءَ اللّٰہُ لَلَاحِقُوْنَ أَسْئَلُ اللّٰہُ لَنَاوَلَکُمُ الْعَافِیَۃَ. (مسلم)

“अस्सलामु अलैकुम! इस घर के रहने वाले मोमिनों और मुसलमानों! हम इन शा अल्लाह तुमसे आ मिलने वाले हैं। हम अल्लाह से अपने और तुम्हारे लिए ख़ैरो आफ़ियत के तलबगार हैं”।

اَلسَّلَامُ عَلٰی اَھْلِ الدِّیَارِ مِنَ الْمُؤْمِنِیْنَ وَالْمُسْلِمِیْنَ وَیَرْحَمُ اللّٰہُ

الْمُسْتَقْدِمِیْنَ مِنَّا وَالْمُسْتَأْخِرِیْنَ وَاِنَّآاِنْ شَآءَ اللّٰہُ بِکُمْ لَلَاحِقُوْنَ

(مسلم)

“मोमिन और मुसलमान घरवालों पर सलामती हो,अल्लाह ताला हमसे पहले पहुँचने वालों और बाद में आने वलों पर रहमत फ़रमाएं और हम भी इन शा अल्लाह तुम से आ मिलने वाले हैं”।

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

# मौत का ख़ात्मा

अब्दुल्लाह बिन उमर ؓ से रिवायत है कि रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमायाः

जब जन्नती लोग जन्नत में पहुँच जाएँगे और जहन्नमी लोग जहन्नम में तो उस वक़्त मौत को लाया जाएगा,फिर जन्नत और जहन्नम के

दर्मियान उसको ज़िबाह करदिया जाएगा,फिर एक मुनादी करने वाला युँ मुनादी करेगाः

“ऐ एहले जन्नत! अब तुमको मौत नहीं और

ऐ एहले जहन्नम! अब तमको भी मौत नहीं है”।

उस वक़्त जन्नतियों को ख़ुशी पर ख़ुशी और जहन्नमियों को रंज पे रंज होगा।

(बुख़ारी)

© AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION